राजस्थान का भाषा-सर्वेक्षण

मूल : डा० जॉर्ज ए. ग्रियर्सन
अनु : डा० आत्माराम जाजोदिया

राजस्थान भासा-प्रचार सभा
जयपुर

भारत का भाषा-सर्वेक्षण

जिल्द नवीं

भारतीय आर्य-परिवार

केन्द्रीय समूह

भाग दूसरा

राजस्थानी और गुजराती के नमूने

[राजस्थानी]

जी० ए० ग्रियर्सन, के सी आइ ई., पीएच डी.
डी लिट्, आइ. सी. एस.

द्वारा

संकलित तथा संपादित

अनुवादक

डा० आत्माराम जाजोदिया

सपादक

रावत सारस्वत

प्रकाशन वर्ष १९[illegible]४ मूल्य २५ ०[illegible]

प्रकाशक

राजस्थान भासा-प्रचार सभा

डो–२८२, मीरां मार्ग, वनीपार्क,

जयपुर-६

श्री राधेश्याम शर्मा द्वारा श्री शङ्कर आर्ट प्रिण्टर, त्रिपोलिया बाजार, जयपुर मे मुद्रित ।

विषय-सूचि

राजस्थानी

नमूने



प्रस्तावनात्मक टिप्पणी

मैं इस अवसर पर उन अनेक मित्रो को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इन पृष्ठो की संरचना में मुझे सहायता दी। विशेष रूप से मेरा सर्वाधिक कृतज्ञता-ज्ञापन जयपुर के रेव जी. मैकालिस्टर, एम. ए., तथा अहमदाबाद के रेव. जी. पी. टेलर, डी. डी. के प्रति है। श्री मैकालिस्टर से तो मैं ने जयपुर रियासत में बोली जाने वाली बोलियो के नमूनो की एक अत्यधिक सपूर्ण शृंखला ही नही ली है अपितु उनकी वह बहुमूल्य पुस्तक भी प्राप्त की है जो उन्होने जयपुर के महाराजा के निवेदन पर लिखी। स्थानाभाव से मै उन बहुसख्यक नमूनो को, जो उन्होने मुझे दिए, ज्यो का त्यो तो उपयोग में नही ला सका पर उन्हे भाषा-सर्वेक्षण के कागज-पत्रो के साथ 'इण्डिया ऑफिस' मे इस दृष्टि से सावधानीपूर्वक संभाल कर रख दिया गया है ताकि वे भविष्य मे शोधार्थियो के लिए उपलब्ध हो सके।

डा. टेलर के प्रति भी मेरी कृतज्ञता समान रूप से अधिक मात्रा में है। उन्होने भी गुजराती बोलियो के नमूने उपलब्ध कराने के साथ-साथ उक्त भाषा-विषयक संपूर्ण विकास-खण्ड के प्रूफ कृपापूर्वक देखे और समीक्षा तथा सुझावो द्वारा उसके मूल्य मे वास्तविक वृद्धि की। उनके इस सशोधन ने इस खण्ड पर अधिकृति की एक ऐसी छाप लगादी है जो मेरे कितने भी श्रम से सम्भव नही हो पाती।

कैम्बरले
२४ फरवरी, १९०८

जॉर्ज ए. ग्रियर्सन

हम राजस्थान के विद्वानो द्वारा किए गए विस्तृत अध्ययन तथा तुलनात्मक निष्कर्षों की प्रतीक्षा मे हैं और चाहते हैं कि समूचे राजस्थानी क्षेत्र का ऐसा कोई सागोपाग अध्ययन पुनः विद्वानो के सामने प्रस्तुत हो सके। तब तक देशी-विदेशी विद्वानो द्वारा किए गए इन अध्ययनो को एक बार हिन्दी माध्यम से पुनः प्रकाशित किया जाना वाछनीय है। इसी शृ खला मे दूसरे अध्ययन भी यदि प्रस्तुत किये जा सकें तो बडा उपादेय कार्य होगा।

इस अनुवाद को प्रकाशित करने की अनुमति देकर डाक्टर जाजोदिया ने राजस्थानी विद्वत् समाज को बड़ा सहयोग दिया है। डाक्टर कन्हैयालाल सहल ने मरुभारती से अनुवाद के कुछ अशों को पुनर्मुद्रित करने की सहमति प्रदान कर हमे अनुगृहीत किया है। भाषा विभाग, राजस्थान के अधिकारी श्री आत्माराम ने ग्रियर्सन के मुद्रित ग्रंथो की प्रतिया उपयोगार्थ सुलभ करवा कर बड़ी सहृदयता तथा आत्मीयता का परिचय दिया है। इन सभी के प्रति हम अपनी कृतज्ञता का ज्ञापन करते हैं।

यदि इस प्रकाशन से राजस्थानी भाषा के अध्ययन मे रुचि रखने वाले लोगो को तनिक भी सुविधा हुई तो हम अपना प्रयास सफल समझेंगे।

रावत सारस्वत

राजस्थानी

भूमिका

राजस्थानी का शाब्दिक अर्थ है राजपूतो के देश राजस्थान या राजवाड़ा की भाषा। एक भाषा का नामबोध कराने के लिए यह नाम इस दृष्टि से प्रकल्पित किया है, जिससे एक ओर पश्चिमी हिन्दी एवं दूसरी ओर गुजराती से इसकी भिन्नता स्पष्ट जाहिर हो जाय। बिहारी एवं अवध की पूर्वी हिन्दी के साथ-साथ इस समूह की विभिन्न बोलियों को भी अब तक यूरोपीय विद्वान् मोटे तौर पर 'हिंदी' नाम ही देते रहे हैं। इनको बोलने वाली जनता भी इन भाषाओं के लिए किसी एक नाम का उपयोग नही करती, बल्कि मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी आदि बोलियों को उन-उन नामों से पुकार कर ही सन्तोप मान लेती है। राजस्थानी के बोलने वालों की संख्या लगभग डेढ़ करोड़ है एव वह लगभग एक लाख अस्सी हजार वर्गमील के क्षेत्र में बोली जाती है। ये आँकडे १८९१ ई० में की गई जन-गणना पर आधारित हैं। १९९१ ई० की जनगणना के अनुसार यह संख्या १,०९, १७,७१२ है, जो १८९१ वाली संख्या से काफी कम है। इस फर्क का कारण यह है कि एक ओर तो पश्चिमी हिन्दी व दूसरी ओर सिंधी तथा राजस्थानी के बीच की विभाजन-रेखाएँ स्पष्ट नही हैं। १८९१ वाली गणना में पश्चिमी हिन्दी तथा सिंधी के भी बहुत से भाषी उन सख्याओं मे शामिल कर लिये गये थे, जिस पर राजस्थानी विषयक मौजूदा सर्वेक्षण के आँकड़े आधारित हैं। दूसरी ओर इस कमी का एक बड़ा कारण राजस्थानी प्रदेश में १९०१ मे पड़े हुए भयकर दुर्भिक्ष के फलस्वरूप हुई मौते भी हैं। इस दृष्टि से १९०१ वाले आँकड़े जिस समय लिये गये उसकी सही संख्या अवश्य बतलाते हैं, पर उनसे राजस्थानी-भाषी जनता की संभावित सख्या का वास्तविक अंदाज नही लग सकता। लेखक की दृष्टि से यह सख्या एक करोड़ बीस लाख के आस-पास होनी चाहिए। परन्तु पूरा भाषा-सर्वेक्षण १८९१ वाले आँकड़ो पर आधारित होने के कारण आगे के पृष्ठो में भी लेखक ने बरबस उन्ही का उपयोग किया है। इनके अतिरिक्त आवश्यक विवरण वाले आँकड़े अन्यत्र कही मिलते भी नही। अतएव सभी यौगिक आँकडो का उपयोग पूर्ण विश्वास के साथ नहीं किया जा सकेगा। राजस्थानी प्रदेश के क्षेत्रफल व राजस्थानी-भाषियो की संख्या की तुलना स्पेन के क्षेत्रफल व वहां की जनसंख्या से की जा सकती है, हालांकि स्पेन

कुछ बडा है और स्पेनिश-भाषी भी राजस्थानी-भाषियो से कुछ अधिक है। (स्पेन की जनसंख्या–१,८६, ०७,५००; क्षेत्रफल–१,६६,००० वर्गमील)

सीमाएँ

राजस्थानी के पूर्व मे (उत्तर से दक्षिण तक) पश्चिमी हिन्दी-समूह की ब्रजभाषा एव बुन्देली बोलियाँ है। दक्षिण मे (पूर्व से पश्चिम तक) बुन्देली, मराठी, भीली खानदेशी तथा गुजराती है। राजस्थान के हार्द-स्थित विन्ध्य एव अरावली के दो पर्वतीय प्रदेशो मे भी भीली बोली जाती है।

पश्चिम मे (दक्षिण से उत्तर तक) सिन्धी एव लहदा, तथा उत्तर मे (पश्चिम से पूर्व तक) लहदा, पजाबी एव पश्चिमी हिन्दी की बाँगरू बोली है। इनमे मराठी, सिन्धी एव लहदा भारतीय-आर्य-भाषा-समूह के बाहरी वृत्त की भाषाएँ है।

पड़ोस की भाषाओं से सम्बन्ध

जैसा कि भारतीय-आर्य-भाषा-समूह के विवरण की भूमिका मे स्पष्ट किया जा चुका है, पजाबी, गुजराती, राजस्थानी आदि मध्य-समूह की भाषाओ के प्रदेश मे किसी जमाने मे बाह्य-समूह की भाषाएँ ही बोली जाती थी। उनके ऊपर मध्य-समूह की भाषाएँ जिनकी विशुद्ध प्रतिनिधि पश्चिमी हिन्दी है, धीरे-धीरे एक लहर की तरह फैलती हुई छा गयी। ज्यो-ज्यो यह लहर अपने मध्य-बिन्दु से दूरतर होती गयी, त्यो-त्यो उसका प्रभाव भी कम होता चला गया। यही कारण है कि राजस्थानी मे, विशेष कर पश्चिमी राजस्थानी मे, अब भी राजपूताना एव मध्यभारत मे किसी जमाने मे बोली जाती बाह्य-समूह की भाषा के चिह्न विशेष रूप से दृष्टिगोचर होते है। उदाहरणार्थ—'अ' का 'ऑ' की तरह उच्चारण—यथा Ball मे, 'ए' एव 'ऐ' का 'ए॔' की तरह उच्चारण—यथा Hat मे, तथा 'औ' का 'ओ' की तरह उच्चारण—यथा Vote मे। उसी प्रकार 'छ' की जगह 'स' उच्चारण और जहाँ वास्तविक स' ध्वनि हो उसका ठीक से उच्चारण न करके उसकी जगह 'ह' उच्चारण करना है। इनके अतिरिक्त अधिकांश बाह्य-समूह-भाषाओ की तरह राजस्थानी मे भी सज्ञा का तिर्यक् रूप—'आ'कारान्त होता है, तथा बँगला के सदृश सबधकारक 'र' लगा कर बनाया जाता है। पूर्वी राजस्थानी मे बाह्य लहदा की भाँति 'स्' वाला भविष्य काल उपलब्ध है और पश्चिमी राजस्थानी में एक वास्तविक कर्मवाच्य दृष्टिगोचर होता है। ये रूप पश्चिमी हिन्दी मे नही मिलते और मिलते भी हो, तो नगण्य मात्रा मे।

राजपूताना एवं गुजरात की आज की आबादी किस तरह से बसी, इस बात का इतिहास भी उपरोक्त मत की पुष्टि करता है। महाभारत के युग मे पाचाल नाम से विख्यात प्रदेश चम्बल के तट से हिमालय के पादप्रदेश स्थित हरद्वार तक फैला हुआ था। उसका दक्षिणी भाग उत्तरी राजपूताना का प्रदेश कहा जा सकता है। पाचालो का भारत में प्रवेश करने वाली आर्य जातियो मे आदिम होना स्वीकृत है; अतएव बहुत सम्भव है कि उनकी भाषा भी भारतीय-आर्य-सस्कृत समूह के

बाह्य–वृत्त (Outer circle) की हो। यदि यह ठीक है तो वही बात दूरतर दक्षिण–राजपूताना के भी लागू पड सकती है। उक्त सिद्धात मे क्रमानुसार हमे यह भी मान लेना होगा कि भीतरी–वृत्त (Inner circle) की भाषाएँ बोलने वाले आर्यजन फैलते एव बलवत्तर होते चले गये व धीरे–धीरे दक्षिण स्थित बाह्य-वृत्त-भाषियो को हटाते-हटाते उन पर छा गये। गुजरात मे भीतरी-वृत्त जन बाह्य-वृत्त वालों को सीमा को लाँघते हुए सागरतट तक पहुँच गये। मध्य-समूह के निवासस्थान 'मध्यदेश' से आगतजनों की गुजरात मे बसाई हुई कई बस्तियो का परम्परागत उल्लेख मिलता है। इनमे सर्वप्रथम महाभारतयुग की द्वारका है। मध्यदेश से गुजरात आने का एकमात्र मार्ग राजपूताना होकर ही है। उससे भी सीधा रास्ता एक है। परन्तु वह बड़े रेगिस्तान की वजह से बन्द है। अपेक्षाकृत आधुनिक युग मे राजपूताना भी मध्यदेश से आये हुए आक्रामको के ही अधिकार मे था। राठौडो ने बारहवी शती के अन्तिम भाग मे दोआबा की कन्नौज बस्ती छोड कर मारवाड बसाया था। जयपुर के कछवाहा अपने को अवध से आया बताते है एव सोलकी पूर्व पजाब से। गुजरात मे यादवों का राज था और उन्ही के भाईवन्द उनके आदिम स्थान मथुरा मे भी विद्यमान थे। केवल मेवाड़ के गहलोत परम्परा के अनुसार बलभी के उजडने पर गुजरात से उठ कर चित्तौड के आस-पास आ बसे बताए जाते है। इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि गागेय दोआब तथा गुजरात की तटवर्ती सीमा के बीच के सारे प्रदेश मे वे नवागन्तुक आर्य जातियाँ बसी हुई है जिन्होने वहा पहले बसे हुए बाह्य-वृत्त के आर्यों को या तो दूर तक दक्षिण की ओर खदेड़ दिया या आत्मसात् कर लिया।

उपभाषाएँ या बोलियाँ

राजस्थानी की पाँच उपशाखाएँ हैं—पश्चिमी, मध्य-पूर्वी, उत्तर-पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी के दो भेद। इनके अनेक उपभेद है, जिनका विवरण तत्सम्बन्धी परिच्छेदो मे आगे दिया है। यहाँ मुख्य बोलियो का सक्षेप मे विवरण दिया जाता है। बोलने वालो की सख्या एव विस्तार के क्षेत्रफल दोनो की दृष्टि से इसमे सबसे महत्त्वपूर्ण पश्चिमी उपभाषा है, जिसे साधारणतया 'मारवाडी' कहा जाता है। यह अपने विभिन्न रूपो मे मारवाड, मेवाड पूर्वी सिन्ध, जैसलमेर, बीकानेर, दक्षिण पजाब एव जयपुर स्टेट के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में बोली जाती है। अन्य सब राजस्थानी उपभाषाओ के क्षेत्रफलो को जोड़ देने पर भी अकेली मारवाडी का क्षेत्रफल उससे अधिक रहता है। मध्य-पूर्वी उपभाषा दो मुख्य नामो से विख्यात है—जयपुरी एव हाड़ौती; इनके अन्य विभेद भी है। हम जयपुर की भाषा को इनमे आदर्श मान सकते है। यद्यपि जयपुरी पूर्वी राजस्थान मे बोली जाती है, फिर भी उसका गुजराती से घनिष्ठतर सम्बन्ध है, जब कि मारवाडी मे उसकी

पश्चिम-स्थित सिन्धी से अधिक साम्य है। उत्तर-पूर्वी राजस्थानी में अलवर, भरतपुर तथा गुड़गाँवा की मेवाती तथा दिल्ली के दक्षिणी व दक्षिण-पश्चिमी अहीर-प्रदेश की अहीरवाटी शामिल है। राजस्थानी के इस रूप मे मध्य-समूह (Central Group) की शुद्धतम प्रतिनिधि पश्चिमी हिन्दी से अत्यधिक साम्य है, यहाँ तक कि कुछ लोगो की तो यह मान्यता है कि उत्तर-पूर्वी राजस्थानी कही जाने वाली भाषाएँ राजस्थानी की उपभाषाएँ न होकर पश्चिमी हिन्दी की उप-भाषाएँ ही कहे जाने योग्य है। वास्तव मे यह एक दोनों के बीच का समूह है। और इसका विवेचन विशेष महत्त्व नही रखता, तथापि लेखक के मतानुसार इसे राजस्थानी के अन्तर्गत रखना ही ठीक है। दक्षिण-पूर्व की मुख्य उपभाषा मालवी है; यह मालवा एव निकटवर्त्ती प्रदेश मे बोली जाती है। इसके पूर्व मे (पश्चिमी हिन्दी की एक बोली) बुन्देली तथा पश्चिम मे गुजराती है और वास्तव मे यह इन दोनो के बीच की बोली है। अतएव इस पर राजस्थानी की छाप उतनी स्पष्ट नही दीखती जितनी जयपुरी पर, बल्कि इसमे कुछ रूप तो ऐसे है जिनका सम्बन्ध स्पष्टतया पश्चिमी हिन्दी से है। दक्षिण-पूर्वी राजस्थानी की दूसरी बोली नीमाडी है। उद्गम की दृष्टि से यह मालवी का ही एक रूप है, परन्तु यह एक ऐसे पर्वतीय प्रदेश की कई अनार्य जातियो द्वारा भी बोली जाती है, जो मालवी के बाकी के क्षेत्र से अलग-सा पड जाता है। इस कारण नीमाडी पर पडोस की भीली एवं खानदेशी का यहाँ तक प्रभाव पड़ा है कि वह एक पृथक् बोली बन गयी है, जिसकी अपनी निजी विशिष्टताएँ है।

बोलने वालों की संख्याएँ

भाषा-सर्वेक्षण के लिए एकत्रित किये गये आकड़ों के अनुसार राजस्थानी की उप-भाषाओं को विभिन्न क्षेत्रो मे मातृ-भाषा के रूप मे बोलने वालो की संख्याएँ इस प्रकार हैं। पहले कहा जा चुका है कि इन सख्याओ के आँकड़े १९०१ की जनगणना पर आधारित नही है। १९०१ वाली संख्याएँ इनसे काफी कम है।

मारवाड़ी	६०,८८,३८९
मध्य-पूर्वी	२९,०७,२००
उत्तर-पूर्वी	१५,७०,०९९
मालवी	४३,५०,५०७
नीमाडी	४,७४,७७७
	१,५३,९० ९७२

[भाषा-सर्वेक्षण के अनुसार अनुमानित, राजस्थानी भाषियो की उस क्षेत्र की कुल सख्या, जहा वह मातृ-भाषा के रूप मे बोली जाती है।]

मारवाड़ी के अतिरिक्त राजस्थानी की अन्य उपभाषाओं के बोलने वाले भारत के अन्य प्रदेशो मे कितने हैं, इसकी संख्या उपलब्ध नही हो सकी। १८९१ ई० मे मारवाड के अतिरिक्त भारत के अन्य सभी भागों मे रहने वाले मारवाडी-भाषियो की सख्या ४,५१,११५ पायी गयी थी। साधारणतया 'मारवाडी' कहने से सारे राजपूताना के निवासी अथवा वहां की किसी भी उपभाषा के बोलने वालों का बोध होता देखा गया है। अतएव इस सख्या मे निश्चित रूप से ऐसे बहुत से इतर प्रांतवासी लोग शामिल होने चाहिए, जिनकी मातृभाषाएँ राजस्थानी की अन्य बोलियां रही हो। जो भी हो, हम यह कह सकते है कि १८९१ ई० मे सारे भारत मे राजस्थानी-भाषियों की सख्या कम से कम १,५८,४२,०८७ तो अवश्य थी।

साहित्य

राजस्थानी साहित्य के इतिहास की चर्चा विभिन्न उपभाषाओ से सम्बन्धित परिच्छेदो मे की गयी है। इनमे से एकमात्र मारवाडी मे काफी बड़े परिमाण में सर्वमान्य साहित्य उपलब्ध होता है। पुरानी मारवाड़ी या उसके काव्य-प्रयुक्त रूप 'डिंगल' मे काफी सख्या मे काव्य-रचना मिलती है, जिसमे से अधिकाश की गवेषणा या विवेचन अभी नही हुए है। इसके अतिरिक्त राजस्थानी के विभिन्न रूपों मे ग्रथित बहुत बडे परिमाण मे, ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण अन्य साहित्य भी विद्यमान है, जिसके विषय मे अब तक नही के बराबर जानकारी प्राप्त हुई है। लेखक का इशारा टॉड कृत 'राजस्थान' मे वर्णित भाट-चारण-रचित इतिहास-सामग्री की ओर है। टॉड संभवत: एकमात्र यूरोपीय विद्वान् थे जिन्होंने इस सामग्री का कुछ महत्वपूर्ण अश सर्वप्रथम पढ़ा। इस अत्यन्त उज्ज्वल इतिहास के एक बहुत सूक्ष्म अंश चन्दबरदाई कृत पृथ्वीराजरासो का संपादन व अनुवाद अवश्य हुआ है, परन्तु बाकी बहुत बड़ी सामग्री ज्यो की त्यों पड़ी हुई है। यह एक ऐसी प्राचीन भाषा मे है जिसे आजकल बहुत कम लोग समझ सकते है। फिर भी यह सारी सामग्री इतिहास व भाषा के अभ्यासी के लिए एक अनावृत कोष या खान के सदृश है। इस सारे साहित्य को प्रकाश मे लाने का कार्य एकाध व्यक्ति की तो सामर्थ्य के बाहर की चीज है; और यदि विद्वज्जनों की कोई पूरी मडली या परिषद् इस कार्य को सुसंबद्ध योजना बनाकर सहयोगपूर्वक कार्य करना शीघ्र ही आरम्भ नही कर देती है, तो मुझे भय है कि आगामी अनेक वर्षो तक राजपूताना के इतिहास का शोध-अभ्यास केवल कागज के कीड़े व दीमके ही करती रहेगी। इस भाट-चारण साहित्य के अतिरिक्त राजस्थानी मे प्रचुर परिमाण में धार्मिक साहित्य भी मिलता है। केवल दादूपंथियो का साहित्य ही ले लिया जाय तो करीब ५ लाख दोहा-प्रमाण से अधिक मिलेगा। यह पूर्णतया स्पष्ट नहीं है कि उक्त साहित्य राजस्थानी की किस उपभाषा मे लिखा गया है। पृथ्वीराजरासो का

अद्यावधि प्रकाशित भाग तो राजस्थानी मे न होकर पश्चिमी हिन्दी के एक प्राचीन रूप मे ग्रथित है। दुर्भाग्य से, यद्यपि यह ग्रन्थ बहुत सुप्रसिद्ध एव ख्यातिपूर्ण है, फिर भी जिस रूप मे यह उपलब्ध है उसकी प्रामाणिकता के विषय मे गभीर सदेह को पूरा अवकाश है। सिरामपुर के पादरियो ने इजील का अनुवाद मारवाडी उदयपुरी (अर्थात् मेवाडी), बीकानेरी (मारवाडी का एक रूप), आदर्श जयपुरी, हाडौती (एक पूर्वी बोली) एव उज्जैनी (अर्थात् मालवी) मे प्रकाशित किया था।

अधिकृत सूत्र

राजस्थानी बोलियो का एक समूह के रूप मे विवेचन अब तक केवल इन पक्तियो के लेखक ने किया है। तत्सबधित निबंध रॉयल एशियाटिक सोसाइटी के जर्नल मे सन् १६०१ मे, पृष्ठ ७८७ व आगे पर 'राजस्थानी की मुख्य बोलियों का विवरण' शीर्षक से छपा है। प्रस्तुत सामग्री का अधिकाश भाग आगे के पृष्ठो मे समाविष्ट कर लिया गया है।

लेखन-प्रणाली

छपी हुई पुस्तको मे देवनागरी लिपि का व्यवहार हुआ है। हाथ की लिखावट के लिए देवनागरी के ही एक बिगडे रूप का प्रयोग किया जाता है जो मराठी मे प्रयुक्त 'मोडी' तथा उत्तर भारत मे प्रचलित 'महाजनी' से सबधित है। इसकी सबसे अधिक ध्यान देने योग्य विशिष्टता 'ड' और 'ड़' ध्वनियो को अलग-अलग व्यक्त करने के लिए बने हुए दो स्वतन्त्र अक्षर हैं।

व्याकरण

विभिन्न बोलियों का व्याकरण तत्सबधित परिच्छेदो मे दिया गया है। यहाँ, ऊपर निर्दिष्ट निबन्ध पर आश्रित, चार प्रमुख बोलियाँ—मारवाड़ी, जयपुरी, मेवाती एव मालवी के व्याकरणो का सक्षिप्त तुलनात्मक विवरण दिया जायगा। नीमाड़ी एक मिश्रित बोली होने के कारण उसके उदाहरण देना अनावश्यक सा है।

उच्चारण

स्वरो का उच्चारण, खास कर पश्चिमी राजस्थानी मे, प्राय: अव्यवस्थित-सा है। कई जगह 'आ' का उच्चारण Ball के a की तरह, 'ए', 'ऐ' का उच्चारण Hat के a की तरह तथा 'औ' का उच्चारण Hot के o की तरह किया जाता है। ह्रस्व 'ए' व 'ओ' (उदा० Promote का o) ध्वनियाँ है अवश्य, पर लेखन में यह फर्क कही भी व्यक्त नही होता। जहाँ मुझे निश्चयात्मक रूप से इनका बोध हुआ है, वहाँ मैंने यह फर्क अलग से लिपिबद्ध किया है, पर जहाँ 'ए' ध्वनि के ह्रस्व होने का पूर्ण निश्चय नही हो सका, वहाँ मैंने उन्हें दीर्घ ही छोड दिया है, हालाँकि इन मे से बहुत सी वास्तव मे ह्रस्व ही हैं।

खास कर पश्चिम एव दक्षिण मे उत्तरी गुजराती एवं भीली बोलियो की तरह 'स' का उच्चारण 'ह' किया जाता है। कुछ अचलो मे 'छ' का उच्चारण

साधारणतया 'स' किया जाता है। प्रायः 'ह' ध्वनि या महाप्राण ध्वनियों का 'ह्' छोड दिया जाता है। उदा० 'हाथ' शब्द 'आत' उच्चारित होता है।

यहाँ मैं 'व' ध्वनि के उच्चारण का कुछ स्पष्टीकरण कर देना चाहता हूँ। मैंने 'व' को कही W कही V रूप में लिपिबद्ध किया है। पचिश्मी हिन्दी तथा उससे आगे की पूर्वी भाषाओ मे यह ध्वनि प्रायः सर्वत्र 'ब' बन जाती है। उदा० वदन (=चेहरा) > बदन, विचार (सोचना) < बिचार इत्यादि। पश्चिम भारत में इस ध्वनि को लिखते समय उच्चारण के ठीक रूप मे व्यक्त किया जाता है। राजस्थानी में सर्वप्रथम यह प्रवृत्ति लक्षित होती है। सर्वेक्षण के मराठी विषयक भाग मे सर्वत्र इस ध्वनि का V रूप मे ही लेखन किया गया है, परन्तु इससे उसके वास्तविक उच्चारण का सही-सही बोध नही होता। अँगरेजी मे V की ध्वनि ऊपर के दाँतो को निचले ओठ पर दबाने से उत्पन्न होती है। इस प्रकार यह एक दन्तोष्ठ्य ध्वनि है। लेखक की जानकारी में यह ध्वनि किसी भारतीय आर्य भाषा मे नही पाई जाती। भारत मे 'व' विशुद्ध ओष्ठ्य ध्वनि मानी गयी है और इसकी उत्पत्ति दांतों को ओठ पर दबा कर नही, बल्कि दोनों ओठों के बीच से श्वास के निकलने से होती है। इन क्रियाओ का प्रयोग कर देखने से सही ध्वनि तुरन्त स्पष्ट हो जाती है। यह अँगरेजी के W तथा अँगरेजी के V इन दोनो के बीच की एक ध्वनि है। स्वभावतः इस ध्वनि मे उसके पश्चात् आने वाले स्वर के अनुसार परिवर्तन हो जाता है। ह्रस्व या दीर्घ अ, उ, ओ, ऐ एवं औ के पहले यह ध्वनि W के नजदीक रहती है, तथा ह्रस्व या दीर्घ इ या ए के पहले यह V के नजदीक लगती है। जब तक W या V व्यञ्जन विशुद्ध ओष्ठ्य या दंतोष्ठ्य ध्वनि है, तब तक उसके उच्चारण पर उसके पश्चात् आने वाले स्वर का प्रभाव अवश्य पडेगा। राजस्थानी ध्वनियों के लेखन में मैंने जहाँ W ध्वनि पाई वहाँ W से उसका लेखन किया है, एव जहाँ V ध्वनि पाई वहाँ V से। पर स्मरण रहे कि इससे अँगरेजी V ध्वनि का कोई सम्बन्ध नही है। उदा० मैंने Marwari लिखा है न कि Marvarı कारण यहाँ W ध्वनि के बाद आ स्वर है, परन्तु Malvi लिखा न कि Malwı क्योकि यहा V ध्वनि के बाद 'ई' स्वर आता है।

गुजराती एवं सिन्धी की भाँति राजस्थानी मे भी मूर्धन्य ध्वनियो की बहुतायत पाई जाती है। पश्चिमी हिन्दी मे शायद ही कभी दृष्टिगोचर होने वाले 'ळ' तथा 'ण' यहा खूब प्रचलित है। प्राकृत की प्रत्येक 'ल' तथा 'न' ध्वनि का, यदि उसका प्राकृत मे द्वित्व न होगया हो, राजस्थानी मे मूर्धन्यीकरण हो जाता है। पर प्राकृत 'ल्ल' तथा 'न्न' का राजस्थानी मे अनुक्रम से 'ल' तथा 'न' ही होता है। यह प्रक्रिया विभिन्न बोलियो के विवरण मे उदाहरणों के साथ विस्तार से समझाई गई है। हाँ, आरंभ-स्थानीय 'ल' तथा 'न' का मूर्धन्यीकरण नही होता।

नीचे दी हुई तालिकाओं मे राजस्थानी रूपो के साथ-साथ तुलना की सुविधा के लिए व्रजभाषा, बुन्देली एव गुजराती के रूप भी दिये गये है ।

लिंग

लिंग के विषय मे राजस्थानी मे साधारणतया पश्चिमी हिन्दी का ही क्रम पाया जाता है । केवल दो ही लिंग दृष्टिगोचर होते है : पु ल्लिग व स्त्रीलिग । पश्चिमी हिन्दी की दो-एक बोलियो मे कही-कही नपु सक लिंग के उदाहरण भी देखे गये है । राजस्थानी मे जैसे-जैसे हम पश्चिम एवं दक्षिण की ओर बढते जाते है, वैसे-वैसे नपु सक लिंग के रूप अधिकतर सख्या मे मिलते जाते है; और गुजराती तक पहुँचते-पहुँचते हमे नपु सक लिंग पूर्णरूप से विद्यमान नजर आता है ।

नामरूप

नीचे दी हुई तालिकाओ मे राजस्थानी की चार प्रमुख उपभाषाओ के नामरूपो के उदाहरण दिये जाते है :—

अ—नामरूप

(क) सबल पु ल्लिग तद्भव संज्ञा शब्द 'घोडो'

	व्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाडी	
एक वचन							
प्रथमा	घोडा	घ्वाडो	घोडो	घोडो	घोडो	घोडो	घोडो
तृतीया	—	—	घोडॆ	घोडे	घोडॆ	घोडॆ	घोडे या घोडाए
तिर्यक् रूप	घोडॆ	घ्वाडॆ	घोडा	घोडा	घोडा	घोडा	घोडा
बहुवचन							
प्रथमा	घोडॆ	घ्वाडॆ	घोडा	घोडा	घोडा	घोडा	घोडा(—ओ)
तृतीया	—	—	घोडाँ	घोडाँ	घोडाँ	घोडाँ	घोडा(—ओ)-ए
तिर्यक् रूप	घोडउँ या घोड़नि	घ्वाडन	घोडाँ	घोडाँ	घोडाँ	घोडाँ	घोडा(—ओ)

(ख) सबल स्त्रीलिग तद्भव संज्ञा शब्द 'घोडी'

	व्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाडी	
एक वचन							
प्रथमा	घोडी	घ्वाड़ी	घोडी	घोडी	घोड़ी	घोडी	घोडी
तृतीया	—	—	घोडी	घोडी	घोडी	घोडी	घोडीए
तिर्यक्	घोड़ी	घ्वाडी	घोडी	घोडी	घोडी	घोडी	घोडी
बहुवचन							
प्रथमा	घोडियाँ	घ्वाडियाँ	घोड़्याँ	घोड्याँ	घोड्याँ	घोड्याँ	घोडी(—ओ)
तृतीया	—	—	घोड़्याँ	घोड्याँ	घोड्याँ	घोड्याँ	घोडी(—ओ,)-ए
तिर्यक् रूप	घोडियौ	घ्वाडिन	घोड्याँ	घोड्याँ	घोड्याँ	घोड्या	घोडी(—ओ)

(ग) निर्बल पुंल्लिग तद्भव संज्ञा—'घर'

	ब्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाड़ी	
एकवचन							
प्रथमा	घर	घर	घर	घर	घर	घर	घर
तृतीया	—	—	घर	घर	घर	घर	घरे
तिर्यक् रूप	घर	घर	घर	घर	घर	घर	घर
बहुवचन							
प्रथमा	घर	घर	घर	घर	घर	घर	घर् (-ओ)
तृतीया	—	—	घराँ	घराँ	घराँ	घराँ	घर् (-ओ,)-ए
तिर्यक् रूप	घरौ या घरनि	घरन	घराँ	घराँ	घराँ	घराँ	घर् (-ओ,)-ए

ऊपर के विवरण मे राजस्थानी एव गुजराती का विशिष्ट–आकारान्त (–एकारान्त की जगह) एकवचन तिर्यक् रूप द्रष्टव्य है। राजस्थानी मे इस–आ–का बहुवचन–आँ होता है। एक और महत्व की बात यह है कि राजस्थानी की सभी उपभाषाओ मे (तिर्यक् रूप मैं–'ने' परसर्ग लगाकर बनाने के बदले) तृतीया का सर्वत्र एक विशिष्ट रूप पाया जाता है। मेवाती एव मालवी मे भी, जो कि पश्चिमी हिन्दी के निकटतम है, –ने या –नइ का उपयोग वैकल्पिक रूप से ही होता है।

मालवी मे होर लगा कर एक और बहुवचन बनाया जाता है जो हमे कन्नौजी ह्वार तथा खस (नैपाली) हरु की याद दिलाता है।

इन सब सज्ञा-शब्दो का एक प्रत्ययसाधित सप्तमी रूप भी होता है जो –ए या –ऐ लगाकर बनाया जाता है। उदा० घरे (=घर मे)।

ब—परसर्ग

	ब्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाड़ी	
तृतीया	ने	नें	नै	ने	—	—	—
षष्ठी	कौ,के, को	को,के, की	को,का, की	रो,रा री, को,का,की	को,का, की	रो,रा, री	नो,ना, नी
चतुर्थी	कौं	खों	नै	ने,के	नै,कै	नैं	ने
पचमी	सों,नें	सों,सें	सैं,तैं	ऊँ,से,सूँ	सूँ,सैं	सूँ, ऊँ	थी

ऊपर के विवरण मे द्रष्टव्य यह है कि षष्ठी का तिर्यक् रूप गुजराती की भाँति-आ-कारान्त है, न कि-ए-कारान्त, जैसा कि ब्रज एव बुन्देली मे पाया जाता

है। —र से आरम्भ होने वाले रूप भी राजस्थानी की अपनी अलग विशिष्टता है। चतुर्थी के–न से आरम्भ होने वाले रूप राजस्थानी–गुजराती के अपने है। तृतीया के––ए या ऐ वाले रूपो के विषय मे भी यही बात है। केवल मेवाती तथा मालवी बोलियाँ ही ऐसी है जिनमे तृतीया का परसर्ग द्वारा साधन वैकल्पित रूप से होता है।

चतुर्थी हमेशा तत्तद् षष्ठी के परसर्ग की सप्तमी करके बनायी जाती है। उदा०-कै-को की सप्तमी है तथा––नै गुजराती– नो की सप्तमी है।

विशेषण

विशेषणो के रूप षष्ठी के परसर्गो के अनुसार चलते है। उदा० आछो (=अच्छा) : स्त्री० आछी; पुं० तिर्यक् आछा। इसके अतिरिक्त विशेषणो का (जिनमे षष्ठी भी शामिल है) एक और रूप होता है। जब संज्ञा शब्द तृतीया या सप्तमी मे होता है, तब विशेषण को भी तिर्यक् रूप में न रखकर, उसी रूप मे चलाया जाता है। उदा० काळे घोडे लात मारी, राजा–के घरे, इत्यादि। कहने का तात्पर्य यह है विशेषणो के रूप विशेष्य संज्ञा शब्दो के अनुसार चलते हैं। संज्ञा शब्द तिर्यक् रूप मे होने पर विशेषण का भी तिर्यक् रूप हो जाता है, एव तृतीया या सप्तमी मे होने पर विशेषण भी उन्ही रूपो मे रख दिया जाता है। उदा० गुजराती मे : बीजे दहाडे (=दूसरे दिन)।

सर्वनाम

अ—व्यक्तिवाचक सर्वनाम

प्रथम पुरुष

	व्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाडी	
एकवचन							
प्रथमा	मैं,हौं	मे,मैं	मैं	मूं,हूं	मैं	हूं,म्हूं	हुं
तिर्यक्	मोहि,मो, मुज	मो, मोय	मूं,मुज	म,म्ह, म्हा	म,मूं,मैं	म्ह,मैं	म,मारा
षष्ठी	मेरौ	मो-को, मे-रो,मो-नो	मेरो	मारो, म्हारो	म्हारो	म्हार,मारो	मारो
बहुवचन							
प्रथमा	हम	हम	हम, हमा	म्हें, आपाँ	म्हे, आपाँ	म्हे,मे आपाँ	अमे,आपणे
तिर्यक्	हमौं,हमनि	हम	हम	म्हाँ,आपाँ	म्हाँ,आपाँ	म्हाँ,माँ, आपाँ	अम,अमारा, आपण,आपणा
षष्ठी	हमारउ	हम-को, हमारो, हमाओ	म्हारो	म्हाँणो आपणो	म्हाँ-को आपणू	म्हारो माँरो आपाँरो	अमारो, आपणो

द्वितीय पुरुष

	व्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाड़ी	
एक वचन							
प्रथमा	तै, तू	तैं, तूं	तू	तूं	तू	तूं, थूं	तुं
तिर्यक्	तोहि,तो, तुज	तो, तोय	तूं,तुज	त,थ,था	त,तू,तैं	थ, तैं	त, तारा
षष्ठी	तेरौ	तो–को, तेरो, तो-नो	तेरो	थारो	थारो	थारो	तारो
बहुवचन							
प्रथमा	तुम	तुम	तुम, तम, थम	थे	थे	थे, तमे	तमे
तिर्यक्	तुम्हौ, तुम	तुम	तम	थाँ	थाँ	थाँ, तमाँ	तम, तमारा
षष्ठी	तुम्हारौ, तिहारौ	तुम-को, तुमारो, तुमाओ	थारो	थाँणो	थाँ-को	थाँरो, तमाँरो	तमारो

ऊपर दिए हुए दो सर्वनामो के विवरण मे राजस्थानी की विशिष्टताएँ प्रथम दृष्टि मे ही सामने आये बिना नही रहतीं। व्रज एव बुन्देली के रूपाख्यान का अग मो–, मुज–, या मे–, तो–, तुज–या ते–दिखाई पडता है। राजस्थानी एवं गुजराती मे यही म– या मूं–; त– या तूं मिलता है। बहुवचन मे हम और तुम की जगह म्हां– और थां– मिलते हैं। राजस्थानी मे एकवचन रूपो में पहले व्यंजन को ह– युक्त कहने की प्रवृत्ति लक्षित होती है, यथा– म्हा– था–। केवल मेवाती मे षष्ठी रूप उसकी पडोसी व्रज के सदृश पाया जाता है; पर बहुवचन मे उसका थम तुम से अलग पड कर गुजराती के तम के नजदीक होता है। मालवी में षष्ठी बहुवचन का प्रत्यय–णो गुजराती सज्ञा-शब्दो के साथ प्रयुक्त –नो से मिलता है; यह –नो आप– की षष्ठी के साथ सभी भारतीय भाषाओ मे मिलता है। राजस्थानी के ह–कार युक्त बहुवचन रूप भी द्रष्टव्य हैं। साथ ही गुजराती के सदृश 'हम' के अर्थ मे 'आप' का प्रयोग जिसमे श्रोता भी शालिल रहता है। यह प्रयोग सम्भवत. मुण्डा या द्राविड़ी भाषाओ से आया हुआ मुहावरा हो सकता है।

दूसरी ओर राजस्थानी मे 'आप' का प्रयोग 'निजका--' के अर्थ में भी होता है जो पश्चिमी हिन्दी के सदृश है। परन्तु यह प्रयोग बहुत अस्थिर सा मिलता है, साधारणतया इसकी जगह सर्वनाम शब्दों की षष्ठी का ही प्रयोग होता है।

निर्देशक सर्वनाम

यह

	व्रज	बुन्देली	राजस्थानी मेवाती	राजस्थानी मालवी	राजस्थानी जयपुरी	राजस्थानी मारवाडी	गुजराती
एकवचन							
प्रथमा	यह	जो	यो, या (स्त्री.)	यो, या (स्त्री.)	यो, या (स्त्री.)	ओ,यो, आ,या (स्त्री.)	आ
तिर्यक्	याहि, या	जा	ऐं	इणी, अणी	ईं	इण,इणी, अणी	आ
बहुवचन							
प्रथमा	ये	जे	यैं	ये	ये	ए,ऐ	आ
तिर्यक्	इन्हौ, इनि	इन	इन	इणाँ, अणाँ	यां	इणाँ,अणाँ, याँ,आँ	आ

वह

	व्रज	बुन्देली	राजस्थानी मेवाती	राजस्थानी मालवी	राजस्थानी जयपुरी	राजस्थानी मारवाडी	गुजराती
एकवचन							
प्रथमा	वो,वह	ऊ,वो	वो,वोह, वा (स्त्री.)	वो, वा (स्त्री)	वो, वा (स्त्री.)	ऊ, वा (स्त्री.)	ए
तिर्यक्	वाहि वा	ऊ,वा	वैं	उणी, वणी	ऊं	उण, उणी, वणी	ए
बहुवचन							
प्रथमा	वे, वै	वे	वैं	वी	वै	वै	ए
तिर्यक्	उन्हौ, उनि	उन	उन	वणाँ	वां	उणाँ, वणाँ, वाँ	ए

अन्य सर्वनाम

	व्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाड़ी	
संबंधवाचक	जो,जौं	जो	जो	जो	जो,ज्यो, जा, (स्त्री.)	जो,जिको, जिका(स्त्री.)	जे
तिर्यक्	जाहि,जा	जा	म्हइं	जणी	जीं	जिण,जण, जणी	जे
नित्यसबंधी	सो	सो	—	—	सो	सो, तिको, तिका(स्त्री.)	ते
तिर्यक्	ताहि,ता	ता	—	—	तीं	तिण,तिणि	ते
प्रश्नवाचक							
पुं०—स्त्री०	को, कौ,	को	कौण	कूंण	कुण	कुण,कण	कोण
तिर्यक्	काहि,का	का	कँह	कणी	कुण	कुण,कण	कोण, को
नपुंसक	कहा,का	का	के	कांई	कांई	कांई	—
अनिश्चय-वाचक							
पुं०—स्त्री०	कोऊ,कोई	कोऊ	कोई	कोई	कोई	कोई	कोई
नपुंसक	कुछ	कछू	किमइं	कांई	क्यों	कांई	कांई कंई

राजस्थानी में सम्बन्धवाची सर्वनाम का निर्देशक या निश्चयात्मक सर्वनाम के रूप में उपयोग विशेष द्रष्टव्य है।

ऊपर वर्णित सर्वनामरूपों में राजस्थानी एवं व्रज-बुंदेली समूह के बीच कोई खास अन्तर नजर नहीं आता, फिर भी (प्रथमा एकवचन स्त्री.लिंग के साथ-साथ) अनेक रूप राजस्थानी के अपने अलग दिखाई पड़ते हैं।

क्रिया

पश्चिमी राजस्थानी क्रिया की एक खास विशिष्टता है वास्तविक कर्मणि वाच्य का पाया जाना। कहीं एकाध उदाहरण को छोड़कर पश्चिमी हिन्दी में यह दुर्लभ है। कर्मणि वाच्य साधने के लिए—इज प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है, उदा० मारणो, मारीजणो (=मारा जाना)। सिन्धी एवं लहदा, जो बाह्य-

समूह की भाषाएँ है, दोनों मे एतादृश रूप मिलते हैं। गुजराती में भी कर्मणि वाच्य विद्यमान है, परन्तु वहाँ वह पश्चिमी हिन्दी की ही भाँति श्रा लगाकर बनाया जाता है, उदा० दिखाना (=दिखलाई पड़ना)।

श्र–सहायक क्रियापद

धातुएँ लगभग वही मिलती है जिनका व्यवहार भारत के श्रन्य भागो में भी होता है। मेवाती का सूँ जयपुरी के छूँ का ध्वन्यात्मक परिवर्तन मात्र है। श्रधिकाश क्रियारूप श्रन्य भारतीय-श्रार्य भाषाश्रो के सदृश ही है। राजस्थानी की द्रष्टव्य विशिष्टताएँ केवल ये हैं :

प्रथम पुरुष बहुवचन श्रनुनासिकान्त होता है। मेवाती के श्रतिरिक्त तृतीत पुरुष बहुवचन का रूप कही श्रनुनासिकान्त नही पाया जाता। भूतकाल बहुवचन रूप के श्रन्त मे साधारणतया विशेषण की भाति-श्रा-श्राता है।

सहायक क्रिया

	ब्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाड़ी	
वर्तमान एकवचन							
१—	हौं	हों,श्रांव	हूँ,सूँ	हूँ	छूँ	हूँ	छू
२—	है	हे,श्राय	हे,सा,सै	हे	छै	है	छे
३—	है	है,श्राय	है,सै	हे	छै	है	छे
बहुवचन							
१—	हैं	हें,श्रांव	हाँ,साँ	हाँ	छाँ	हाँ	छी, श्रे
२—	हौ	हो,श्राव	हों, सो	हो	छो	हो	छो
३—	हैं	हें,श्रांय	हैं,सैं	है	छै	है	छे
भूतकाल एकवचन							
पुंल्लिग	हौ,हुतो	हतो,तो	हो,थो,सो	थो	छो	हो	हतो
बहुवचन							
पुंल्लिग	हे,हुते	हते,ते	हा,था,सा	था	छा	हा	हता

ब–मुख्य क्रिया

दो अपवादों को छोड़ कर राजस्थानी के क्रिया-रूप पंजावी एवं पश्चिमी हिन्दी (व्रज व बुन्देली जिसकी बोलियाँ हैं) के क्रियारूपों के अनुसार ही चलते है। एक अपवाद तो निश्चित वर्तमान का है, इस विषय मे राजस्थानी पश्चिमी हिन्दी के मार्ग को छोड़कर गुजराती का अनुसरण करती है। दूसरा अपवाद अपूर्ण भूत का है; इसका साधन क्रियार्थक संज्ञा की सप्तमी के साथ सहायक क्रिया जोड कर किया जाता है। ये दोनों अपवाद ऊपरी गागेय दोआब प्रदेश की पश्चिमी हिन्दी मे भी मिलते हैं। पर वास्तव मे ये राजस्थानी की खास विशिष्टता है। यहाँ उदाहरणार्थ अकर्मक क्रिया 'चाल' (=जाना) के कुछ मुख्य–मुख्य कालरूप देना पर्याप्त होगा। सकर्मक क्रियाएँ भूत-कृदन्त-साधित कालरूपो के लिए कर्मणि प्रयोग काम मे लाती है।

(अ) **पुरातन वर्त्तमान** :—अन्य समजात भाषाओ की भाँति राजस्थानी मे भी इस काल का प्रयोग प्राय: वर्तमान संभावनार्थ का सा होता है। परन्तु अधिकतर इससे अपने वास्तविक वर्तमान निश्चयार्थ का ही बोध होता है। इसके क्रियारूप लगभग सभी भारतीय आर्य-भाषाओ मे एक सदृश चलते है। राजस्थानी मे केवल एक बात विशेष द्रष्टव्य है; मुख्य क्रिया, साधारण भविष्यत् तथा प्रथम पुरुष बहुवचन के रूप के अन्त मे -आँ मिलता है. एव मेवाती के अतिरिक्त, जो इस विषय में अपनी पड़ोस की व्रज से ज्यादा मिलती है, अन्य सब बोलियो मे तृतीय पुरुष बहुवचनरूप सानुनासिक नही होता।

	व्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाड़ी	
एकवचन							
१	चलौं	चलूं	चलूँ	चलूं	चलूँ	चलूं	चालूं
२	चलै	चले	चलै	चले	चलै	चलै	चाले
३	चलै	चले	चलै	चले	चलै	चलै	चाले
बहुवचन							
१	चलैं	चलें	चलाँ	चलाँ	चलाँ	चलाँ	चालीए
२	चलौ	चलो	चलो	चलो	चलो	चलो	चालो
३	चलैं	चलें	चलै	चले	चलै	चलै	चाले

(ब) आज्ञार्थ—यह क्रियारूप लगभग सभी भारतीय-आर्य-भाषाओं मे एक सदृश है।

	ब्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाड़ी	
एकवचन							
२	चल	चल	चल्	चल	चल्	चल्	चाल
बहुवचन							
२	चलौ	चलो	चलो़	चलो़	चलो़	चलो़	चालो

(ब) भविष्यत्—इस काल के दो रूप मिलते हैं, जिन्हें हम 'साधारण' तथा 'आनुप्रयोगिक' भविष्यत् कह सकते हैं। साधारण भविष्यत् प्राकृत के 'चलिस्सामि' या 'चलिहामि' से सीधा व्युत्पन्न है, उदा० चालस्यूँ या चाल्हूँ। आनुप्रयोगिक भविष्यत् वर्तमान संभावनार्थ रूप मे एक विशेषण, प्राय: कृदंत जोड कर बनाया जाता है, यथा हिन्दी 'चलूँगा' (=अंगरेजी मे I am gone) (गा) That I may go (चलूँ)। कुछ बोलियो मे इनमे से एक रूप है, कुछ मे दूसरा एव कुछ में दोनों मिलते हैं।

साधारण भविष्यत्

	ब्रज	बुन्देली	राजस्थानी				गुजराती
			मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाड़ी	
एकवचन							
१	चलिहौं	चलिहौं	—	—	चलस्यूँ	चलहूँ	चालीस
२	चलिहै	चलिहे	—	—	चलसी	चल्ही	चालसे
३	चलिहै	चलिहे	—	—	चल्सी	चलही	चालसे
बहुवचन							
१	चलिहैं	चलिहें	—	—	चलस्याँ	चलहाँ	चालीशुँ, चालशुँ
२	चलिहौ	चलिहो	—	—	चल्स्यो	चलहो	चालशो
३	चलिहैं	चलिहैं	—	—	चलसी	चलही	चालशे

आनुप्रयोगिक भविष्यत्

	ब्रज	बुन्देली	मेवाती	मालवी	जयपुरी	मारवाड़ी
एक० पुं०-१	चलौंगौ	चलूंगो	चलूँगो	चलूँगा	चलूँलो	चलूँला या-गो
बहु० पुं०-२	चलैंगे	चलाँगा	चलाँगा	चलाँला	चलाँला	चलाँला या-गा

मालवी एव मारवाड़ी में एकवचन के प्रत्यय अनुक्रम से-गा एवं-ला विशेष द्रष्टव्य हैं। साधारणतया इनकी जगह-गो एवं-लो होने का अनुमान होता

है, जो वास्तव मे नहीं पाया जाता। मेवाती एवं मारवाड़ी के–गो तथा जयपुरी के–लो से, भिन्न–गा एवं-ला के रूप अपरिवर्तित रहते है। ये लिंग वचन के साथ-साथ बदलते नही। ये विशेषण नही है, परिनिष्ठित (स्टैण्डर्ड) हिन्दी के–गा मे और इनमे वह स्पष्ट भेद है।

द–आनुयोगिक वर्तमान—यह वही साधारण वर्तमान है जिससे हिन्दुस्तानी मे हम भलीभाँति परिचित है। ब्रज एव बुन्देली के सदृश हिन्दुस्तानी में भी यह काल मुख्य क्रिया के वर्तमान काल के साथ वर्तमान कृदत जोड कर बनाया जाता है। उदा० मैं चलता हूँ। राजस्थानी में उक्त वर्तमान कृदन्त की जगह मुख्य क्रिया के साथ साधारण वर्तमान का रूप चलाया जाता है। गुजराती का भी यही मुहावरा है। उदा० जयपुरी के रूप ले लीजिए :—

एक वचन

१ मै चालूँ छूँ	= मैं चल रहा हूँ
२ तू चालै छै	= तू चल रहा है
३ वो चालै छै	= वह चल रहा है

बहुवचन

१ म्हे चालाँ छाँ	= हम चल रहे है
२ थे चालो छो	= तुम चल रहे हो
३ वै चालै छै	= वे चल रहे है

इस काल के प्रथम पुरुष एक वचन के विभिन्न भाषाओ के रूप इस प्रकार है। ब्रज एव बुन्देली के केवल पुलिंग रूप दिए गए है—

ब्रज—चलतु हौं।
बुन्देली—चलत हो या चलत आँव।
मेवाती—चलूँ हूँ। मालवी–चलूँ हूँ
जयपुरी—चलूँ छूँ।
मारवाडी—चलूँ हूँ।
गुजराती—चालुँ छुँ।

(क) अपूर्ण भूत—राजस्थानी मे साधारणतया यह काल मुख्य क्रिया के भूत के साथ क्रियार्थक सज्ञा के एक–ऐ अन्तिक तिर्यक् रूप को जोड़ कर बनाया जाता है। उदा० जयपुरी मे—मैं चालै छो (=I was on-going या पुरानी अगरेजी का I was a going तुलनीय है।) ऊपरी गांगेय दोआब मे भी ऐसा ही एक मुहावरा प्रचलित है, जो संभवत. राजस्थानी से लिया हुआ है। राजस्थानी से जिस मार्ग हो कर यह उत्तर गया वह स्पष्ट है। केवल मालवी मे इसका प्रयोग नही होता; मालवी पश्चिमी हिन्दी एव गुजराती की भाँति वर्तमान कृदन्त का व्यवहार करती है। वैकल्पिक रूप से वर्तमान कृदन्त का उपयोग मारवाड़ी मे भी होता है। विभिन्न बोलियों के अपूर्ण भूत रूप इस प्रकार है—

ब्रज—हौं चलतु हो।
बुन्देली—मैं चलत तो।
मेवाती—मैं चलै हो।
मालवी—हूँ चलतो थो।
जयपुरी—मैं चलूँ छो।
मारवाड़ी—हूँ चलतो हो, हूँ चलूँ हो।
गुजराती—हूँ चालतो हतो।

ख—कृदन्त एव क्रियार्थक सज्ञा—नीचे राजस्थानी की विभिन्न बोलियो मे साधारणतः प्रयुक्त रूप दिए जाते है.—

	वर्तमान कृदन्त	भूत कृदत	क्रियार्थकसंज्ञाएँ	
ब्रज	चलतु	चल्यौ	चलनौं	चलिबौं
बुन्देली	चलत	चलो	चलन	चलबो
मेवाती	चलतो	चल्यो	चलणू	चलबो
मालवी	चलतो	चल्यो	चलणो	चलबो
जयपुरी	चलतो	चल्यो	चलणो	चलबो
मारवाड़ी	चलतो	चल्यो	चलणो चलणूँ	चलबो
गुजराती	चालतो	चाल्यो	—	चालवुँ

ऊपर के रूपो मे अन्तर बहुत थोडा है, पर जहाँ भी वह लक्षित होता है, वहाँ राजस्थानी बोलियो मे आपस में तथा उनसे गुजराती से साम्य द्रष्टव्य है। दूसरी ओर ब्रज एव बुन्देली के रूप भिन्न मिलते हैं।

वाक्य-विन्यास

पश्चिमी हिन्दी मे वक्ता क्रिया के पश्चात् श्रोता पचमी मे रखा जाता है, परन्तु राजस्थानी में इस जगह चतुर्थी प्रयुक्त होती है। यहाँ भी राजस्थानी एवं गुजराती के मुहावरे मे साम्य दिखाई पड़ता है।

पश्चिमी हिन्दी मे सकर्मक क्रिया का भूतकाल मे पुरुषरहित प्रयोग करते समय क्रिया हमेशा पुलिग मे रखी जाती है, कर्म का लिंग चाहे जो हो। उदा० उसने स्त्री-को मारा (न कि मारी) =शब्दश: अगरेजी मे by him, with reference to the woman, a beating was done इसके प्रतिकूल, गुजराती मे क्रिया का लिंग कर्म के पीछे-पीछे चलता है। उदा० तेणे स्त्री-ने मारी (न कि मार्यो) =शब्दश: by him with reference to the woman, she was struck. राजस्थानी मे ऊपर के प्रयोगों मे से कभी पहले एवं कभी दूसरे का

व्यवहार पाया जाता है, जिससे यह जाहिर हो जाता है कि इस विषय में राजस्थानी पश्चिमी हिन्दी एवं गुजराती के बीच की भाषा है।

राजस्थानी में स्वार्थे या अंगविस्तारक प्रत्ययों का बाहुल्य मिलता है। ये किसी शब्द के साथ उसके अर्थ में परिवर्तन न करते हुए जोड़ दिए जाते हैं। उदा० कतरो या कतरो-क (=कितना)। खाँ-गयो या खाँ-गयो-म (=वह कहाँ गया)। रो-एवं-ड़ो का प्रयोग भी साथ-साथ पाया जाता है, वास्तव में ये ह्स्वार्थे प्रत्यय है, किन्तु प्राय: इनके व्यवहार से अर्थ परिवर्तन बिल्कुल नहीं होता। इन स्वार्थे प्रत्ययों का बहुल प्रयोग राजस्थानी भाषा की एक खास विशिष्टता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजस्थानी बोलियों का एक अलग समूह है जो एक ओर पश्चिमी हिन्दी से तथा दूसरी ओर गुजराती से भिन्नतर दृष्टिगोचर होता है। इसकी अपनी अलग सत्ता है, और इसे एक स्वतन्त्र भाषा-समूह गिनने के पर्याप्त कारण हैं। उदाहरणार्थ यह समूह पश्चिमी हिन्दी से पंजाबी की अपेक्षा भी काफी भिन्नतर नजर आता है और इसे पश्चिमी हिन्दी समूह की उपभाषाओं में रखना बिल्कुल गलत होगा। यदि इन्हें अद्यावधि मान्य किसी भाषा समूह के अन्तर्गत गिनना ही आवश्यक समझा जाय तो इन्हें गुजराती समूह के अन्तर्गत मानना पड़ेगा, न कि पश्चिमी हिन्दी समूह के।

नामरूपो मे राजस्थानी का गुजराती से साम्य है एवं पश्चिमी हिन्दी से भेद है। नामरूप बनाने के लिए प्रयुक्त परसर्ग भी या तो राजस्थानी के अपने स्वतन्त्र हैं या गुजराती से मिलते-जुलते। पश्चिमी हिन्दी से उनका सम्बन्ध नहीं है।

दो व्यक्तिवाचक सर्वनामों का विकास राजस्थानी का अपना निराला है। कहीं-कहीं इनका साम्य दृष्टिगोचर होता भी है तो गुजराती से ही। संकेतार्थ सर्वनामों के रूप गुजराती तथा पश्चिमी हिन्दी दोनों के बीच की सी स्थिति में पाए जाते हैं।

राजस्थानी के क्रियारूप उपरोक्त अन्य भाषाओं से बहुत भिन्न नहीं हैं, पर यहाँ भी प्रथम एव तृतीय पुरुष बहुवचन तथा अपूर्ण भूत के रूपों का राजस्थानी में स्वतन्त्र विकास दृष्टिगोचर होता है। निश्चयार्थ वर्तमान के सदृश महत्वपूर्ण रूप के विकास मे राजस्थानी एवं गुजराती बिल्कुल एकमत हैं। यह रूप पश्चिमी हिन्दी वाले रूप से तुलना मे सर्वथा भिन्न हैं।

जहाँ तक अलग-अलग उपभाषाओं का प्रश्न है, मेवाती का साम्य पश्चिमी हिन्दी से सर्वाधिक है। मालवी में यत्र-तत्र बुन्देली से साम्य दिखाई पड़ जाता है तथा जयपुरी एवं मारवाड़ी का गुजराती से बहुत घना सादृश्य पाया जाता है।

आगे प्रत्येक उपभाषा का विस्तृत विवेचन दिया गया है।

मारवाड़ी

व्यवहार-क्षेत्र

परिनिष्ठित (स्टैण्डर्ड) मारवाड़ी राजपूताना के मारवाड-मालानी स्टेट मे बोली जाती है। अपने थोड़े-बहुत मिश्रित रूप में यह पड़ोस के अजमेर-मेरवाड़ा, किशनगढ तथा मेवाड राज्यों मे बोली जाती है। दक्षिण मे सिरोही एव पालणपुर मे, पश्चिम मे जैसलमेर राज्य एव सिन्ध के थर एव पारकर जिलो मे; उत्तर मे बीकानेर, जयपुर के शेखावाटी विभाग तथा पजाव के दक्षिण मे मारवाडी बोली जाती है। उपर्युक्त सारे प्रदेश मे इसके बोलने वालो की सख्या लगभग ६० लाख है।

सीमाएँ—मारवाडी के पूर्व मे राजस्थानी की पूर्वीय बोलियाँ है जिनमे जयपुरी को हमने परिनिष्ठित माना है। दक्षिण मे मालवी एव कुछ भीली बोलियाँ हैं; दक्षिण-पश्चिम मे गुजराती का क्षेत्र है, पश्चिम मे दक्षिण की ओर सिन्ध एव खैरपुर मे सिन्धी तथा उत्तर मे वहावलपुर राज्य की लहंदा बोली जाती है। उत्तर-पश्चिम मे पंजावी है। भटियाणी नाम की एक बोली से होते हुए, जिसका राजस्थानी से कोई सबध नही है, यह लहदा-पजावी मे परिवर्तित हो जाती है। उत्तर-पश्चिम मे इसका पजावी तथा वागडी से होते हुए पश्चिमी हिन्दी की वागड़ू बोली मे लोप हो जाता है। ठीक उत्तर-पूर्व मे उत्तर की ओर मेवाती बोली जाती है।

जयपुरी से तुलना

परिनिष्ठित मारवाड़ी एवं जयपुरी मे संवध-परसर्ग-को है जब कि मारवाड़ी मे यह–रो है। जयपुरी मे मुख्य क्रिया छूँ (=हूँ), छो (=था) है, जब कि मारवाड़ी में हूँ (=हूँ), हो (=था) है। जयपुरी मे भविष्यत् के दो रूप होते हैं। एक का विशिष्ट मध्य-विन्यस्त प्रत्यय -स् है; उदा० मारस्यूँ (=मैं मारूँगा) दूसरे मे-लो प्रत्यय का व्यवहार होता है। इसका रूप लिंग-वचन के अनुसार वदल जाता है; उदा० मारूँ-लो (=मैं मारूँगा)। मारवाड़ी मे भविष्यत् के तीन रूप पाये जाते है। एक मे -ह का प्रयोग होता है, यथा मार-हूँ (=मैं मारूँगा), दूसरे मे-ला-का प्रयोग होता है, पर इसका रूप लिंग-वचन के साथ नही वदलता; यथा मारूँ-ला (=मैं मारूँगा); तीसरे मे हिन्दी-गा के सदृश-गो का उपयोग होता है, यथा मारूँ-गो।

बोलियाँ

परिनिष्ठित (स्टैण्डर्ड) मारवाड़ी मारवाड़ राज्य के मध्य मे बोली जाती है। मारवाड़ के उत्तर-पूर्व मे किशनगढ़, अजमेर एवं पश्चिमी मेरवाड़ा में मारवाड़ी के साथ कुछ-कुछ जयपुरी का मिश्रण हो जाता है। दक्षिण-पूर्व में मारवाड़ी का एक सुप्रसिद्ध रूप प्रचलित है जिसे प्रदेशानुसार मेवाड़ी या मेरवाडी कहा जाता है। दक्षिण मे सिरोही राज्य तथा गुजरात के पालणपुर राज्य के उत्तर में मारवाड़ी पर गुजराती का प्रभाव पडता है, एव फलस्वरूप एक दक्षिणी बोली बनती है। पश्चिम मारवाड़, जैसलमेर तथा सिन्ध के थर-पारकर जिलो की मारवाड़ी पर सिन्धी का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है। इस तरफ कई छोटी-मोटी बोलियाँ प्रचलित हैं जिनमें थली तथा ढटकी मुख्य हैं; इन्हे पश्चिमी मारवाड़ी के अन्तर्गत माना गया है। उत्तर मे बीकानेर तथा बहावलपुर के पड़ोस के भाग मे एक प्रकार की उत्तरी मारवाड़ी मिलती है; एक ओर जयपुर की शेखावाटी है जिसमे मारवाड़ी धीरे-धीरे जयपुरी मे अन्तर्हित हो जाती है, एव दूसरी ओर उत्तर-पूर्व बीकानेर तथा दक्षिण पजाब की बागड़ी है जो पंजाब में पंजाबी तथा बांगड़ू में अन्तर्हित हो जाती है। एक बात साफ द्रष्टव्य है : मारवाड़ी-भाषी प्रदेश के बिल्कुल मध्य मे मारवाड़ एवं मेवाड़ के बीच स्थित अरावली पर्वतमाला के निवासी विभिन्न भील बोलियाँ बोलते हैं।

बोलने वालों की संख्या

नीचे के चक्र मे उस प्रदेश के मारवाड़ी-भाषियो की सख्याएँ दी गई है, जहाँ मारवाड़ी घर की बोली है।

परिनिष्ठित (स्टैण्डर्ड) मारवाड़ी

मारवाड़		१५,६१,१६०
पूर्वी मारवाड़ी—		
मारवाडी-ढूंढाड़ी (मारवाड़)	४६,३००	
गोड़ावाटी (किशनगढ़)	१५,०००	
मारवाड़ी (अजमेर की)	२,०,८,७००	
मारवाड़ी (मेवाड़ की)	१७,०००	
मेवाड़ी (मेरवाड़ी सहित)	१६,८४,८६४	
		१६,७४,८६४
दक्षिणी मारवाड़ी—		
गोडवाडी (मारवाड़)	१,४७,०००	
सिरोही—		
(सिरोही) १ ६६,३००		

(मारवाड)	१०,०००		
		१,७६,३००	
देवडावाटी (मारवाड़)		८६,०००	
मारवाडी-गुजराती—			
(मारवाड)	३०,२७०		
(पालणपुर)	३५,०००		
		६५,२७०	
			४,'१७,५७०
पश्चिमी मारवाडी—			
थळी—			
(मारवाड़)	३,८०,९००		
(जैसलमेर)	१,००,०००		
		४,८०,९००	
मिश्रित बोलियाँ		२,०४,७४९	
			६,८५,६४९
उत्तरी मारवाड़ी—			
बीकानेरी—			
(बीकानेर)	५,३३,०००		
(बहावलपुर)	१०,७७०	५,४३,७७०	
शेखावाटी		४,८८,१७०	
वागड़ी		३,२७,३५९	
			१३,५९,१४६
मारवाड़ी प्रदेश के मारवाड़ी-भाषियो की कुल सख्या :			६०,८८,३८९

मारवाड़ी भारत के सफल व्यवसायी हैं। भारत के कोने-कोने मे शायद ही कोई ऐसी जगह मिलेगी जहाँ थोडे-बहुत मारवाडी साहूकारी धन्धा न करते पाये जाँय। मारवाड़ियो की घर से दूर इतर प्रातो मे कितनी सख्या है, इसे उपलब्ध करने के लिए आँकडे सुलभ नही है। नीचे दिए हुए अपूर्ण आँकडे १८९१ ई० की जनगणना पर आधारित है। इनमे बहुत से प्रान्तो के आँकडे शामिल है और जहाँ आँकडे दिये गये है, वे भी शकास्पद है, क्योकि नि.सन्देह जयपुरी आदि अन्य उपभाषाओ के बोलने वालो को भी, मारवाडी मे सम्मिलित कर लिया गया है।

राजपूताना तथा अजमेर-मेरवाड़ा के अतिरिक्त बाकी भारत के मारवाड़ी-भाषी—

आसाम	५,४७५	
बंगाल	६,५६१	
बरार	३६,६१४	
देशी राज्यों सहित बम्बई	२,४१,०६४	(प्रांतीय संख्या २,७६,०६ है, जिसमें पालणपुर के ३५,०००कम किये गये हैं)
ब्रह्मा	—	
मध्य-प्रदेश (देशी राज्यों समेत)	२२,५६६	
मद्रास (,, ,,)	१,१०८	
युक्त प्रान्त (,, ,,)	२,२२८	
पंजाब (,, ,,)	१,३०,०००	(अन्दाजन—पृथक् आँकड़े अनुपलब्ध)
निजाम का राज्य	—	(आँकड़े अनुपलब्ध)
बड़ौदा	४,८५९	
मैसूर	५७६	
राजपूताना	—	(आँकड़े अनुपलब्ध)
मध्य भारत	—	,,
कुर्ग	१	
काश्मीर	—	(आँकड़े अनुपलब्ध)
	कुल ४,५१,११५	

ऊपर दी हुई संख्या के अतिरिक्त भारत के कई भागों में यत्र-तत्र कई ऐसी जातियाँ बिखरी मिलेंगी, जो मारवाड़ी का एक या दूसरा रूप बोलती है। उदा० सिन्ध-पंजाब के ओड। इनमें से कुछ एक प्रकार की विकृत-सी मारवाड़ी बोलते है और कुछ अन्य भाषाएँ। अतएव उन्हे मारवाड़ी में न गिन कर यायावर जातियों के समूह मे लेना ही अधिक उपयुक्त जान पड़ता है। इनसे अधिक निश्चित रूप से मारवाड़ी से सम्बन्धित बोलियाँ महेश्री तथा ओसवाळी हैं, ये मध्य-प्रान्त के चांदा जिले में बोली जाती हैं। ये दोनो मारवाड़ी-भाषी व्यापारी जातियों की

वोलियाँ है। अतएव मध्य-प्रान्त के आँकड़ो मे इनकी संख्या शामिल करली गई है। मध्य-प्रान्त के नरसिंहपुर जिले मे वसे हुए कीर भी इसी प्रकार है। ये जयपुर से आये बताये जाते है और खरबूजो की खेती करते है। अनुमान से तो इनकी भापा मे पूर्वी राजस्थानी के उपादान मिलने चाहिए, पर उनकी भापा के जो उदाहरण लेखक को मिले है, वे निश्चित रूप से मारवाडी एव मालवी का एक मिश्रित रूप हैं। मध्य-प्रदेश की एक और वोली भोयारी है, जिसे मारवाडी के अन्तर्गत गिना जाता है। दरअसल यह विकृत बुन्देली के अतिरिक्त कुछ नही है। युक्त-प्रात के फर्रुखावाद के आँकडो मे चूरूवाली नाम से एक वोली का उल्लेख मिलता है। यह वास्तव मे वीकानेर-स्थित चूरू से आये हुए व्यापारी वर्ग चूरूवालो की वोली है। यह एक प्रकार की विकृत वीकानेरी ही है और इसके आँकडे भी मारवाडी मे शामिल कर लिये गये है। इस प्रकार मारवाडी-भाषियो की कुल सख्या नीचे दिये हुये आँकड़ो के अनुसार हो जाती है—

घर मे	६०,८८,३८९
घर से वाहर	४,५१,११५
योग	६५,३९,५०४

अनुपलब्ध आँकड़ो का ध्यान रखते हुए, भारत मे मारवाडी वोलने वालो की कुल सख्या कम से कम ६५,५०,००० मानने मे कोई गलती नही होगी।

मारवाड़ी-साहित्य

मारवाड़ी मे विशाल प्राचीन मारवाडी-साहित्य की रचना हुई है, जिसके वारे मे वहुत कम जानकारी उपलब्ध है। लेखकगण कभी मारवाड़ी मे साहित्य-रचना करते थे और कभी व्रज-भापा मे। मारवाडी रचनाओ की भाषा डिंगल एव व्रज की पिंगल कही जाती थी। डिंगल का कुछ भी साहित्य अब तक प्रकाश मे नही आया है। लेखक ने इस भापा के कुछ छन्द-ग्रन्थ देखे है, और यह निश्चित रूप से विदित है कि इसमे वहुत सा महत्वपूर्ण भाट-चारण साहित्य उपलब्ध है। श्री रॉब्सन ने मारवाड़ी की कुछ नाट्य-रचनाओ का सग्रह प्रकाशित किया है जिसका नीचे उल्लेख किया गया है। प्रसिद्ध कवयित्री मीरावाई मेवाड़ की राजरानी थी, परन्तु उनकी जो रचनाये अवतक लेखक के देखने मे आई, वे व्रज-भापा मे है।

अधिकृत सूत्र—

मारवाड़ी विपयक ग्रन्थ वहुत कम है। लेखक को जितने ज्ञात है वे है—

Robson, Rev. J.—A Selection of Khyals or Marwari Plays, with an Introduction and Glossary. Beawar Mission Press, 1866.

Kellogg, Rev. S.H.—A Grammar of the Hindi Language, in which are treated the High Hindi............also the Colloquial of .... Rajputana .. .... with Copious Philological notes. First Edn. Allahabad and Calcutta 1876. Second Edn. London, 1893.

Fallon, S.W.—A Dictionary of Hindustani Proverbs, including many Marwari, Panjabi, Maggah, Bhojpuri and Tirbuti Proverbs, Sayings Emblems, Aphorisms, Maxims and Similies, by the late S. W. F., edited and revised by Capt. R. E. Temple, assisted by Lala Faquir Chand Vaish of Delhi. Benares and London, 1886.

Pandit Ram Karn Sharma—Marwari Vyakarana. एक मारवाड़ी में लिखित मारवाड़ी व्याकरण। प्रकाशन-तिथि एवं जगह नही दी हुई है। संभवत: जोधपुर ? लगभग १६०१ ई०।

लिपि

छपी हुई पुस्तकों आदि मे देवनागरी का व्यवहार होता है। पत्र-व्यवहार तथा वहीखातो मे उसी के एक विगड़े हुये स्वरूप का उपयोग होता है, जो उत्तरी भारत की 'महाजनी' एवं मराठी की 'मोडी' से मिलता-जुलता है। * इसके कुछ अक्षर विचित्र से है तथा अक्षर-जोड़नी में बड़ी ढिलाई रहती है। अधिकांशत: स्वरो को छोड़ दिया जाता है, जिससे लेखन बड़ा दुर्बोध हो जाता है। इस लिपि के टाइप ढले नहीं हैं। आगे के पृष्ठो मे इसमे लिखे गए कुछ उदाहरणो के हुवहू चित्रांकन दिये गए है।

---

* महाजनी लिपि वास्तव मे यही मारवाड़ी लिपि है, जो व्यापारियो के साथ-साथ सारे भारत मे फैल गई है। स्वरो की अनुपस्थिति से, इसकी दुर्बोधता के विषय मे कई कहानियाँ चल पडी हैं। इनमे से सर्वाधिक प्रचलित दिल्ली जाने वाले मारवाडी सेठ की है। उसके मुनीम ने पत्र मे लिखा—'बाबू अजमेर गयो, वडी वही भेज दीजे।' बिना स्वरो के यह पढ़ा गया—'बाबू आज मर गयो, वड़ी वहू भेज दीजे' क्रियाकर्म करने के लिए।

व्याकरण

आगे दिया हुआ व्याकरण एकत्रित उदाहरणो एवं पंडित रामकर्ण शर्मा रचित 'मारवाड़ी व्याकरण' पर आधारित है। एक बात खास द्रष्टव्य है कि मारवाडी मे क्रिया का एक अगोद्भूत कर्मणि रूप मिलता है। यद्यपि मारवाडी का व्याकरण हम अन्य उपभाषाओ के पहले दे रहे है, तथापि उसका विवेचन इतना सम्पूर्ण नही दिया जा सका जितना मध्य-पूर्वी राजस्थानी का। लेखक ने मध्य-पूर्वी राजस्थानी को राजस्थानी का प्रतिनिधि रूप इसलिए मान लिया है कि उसकी सामग्री व उसका विवेचन हमे अन्य उपभाषाओ की अपेक्षा अधिक परिमाण मे उपलब्ध है। पाठक या विद्यार्थी से भी यह अनुरोध है कि वह पहले मध्य-पूर्वी राजस्थानी की व्याकरण देख जाय क्योकि उसमे मारवाडी के विषय मे कई स्थानो पर तुलनीय उल्लेख है।

उच्चारण

सज्ञाओ के तिर्यक् बहुवचन की विभक्तिओ मे -आ का उच्चारण मोटे तौर पर अंग्रेजी all -आ की तरह विवृत होता है। सयुक्त स्वरो ऐ और औ की दो-दो ध्वनियाँ होती है। तत्सम शब्दो मे इनका उच्चारण संस्कृत-ध्वनि की तरह होता है। तद्भव शब्दो मे उच्चारण अधिक ह्रस्व होता है; ऐ का उच्चारण लगभग Hat के a की तरह, तथा औ का उच्चारण लगभग Hot के o की तरह किया जाता है। अतएव इन विवृत उच्चारणो को अलग दिखाने के लिए 'एॅ, ओॅ' इन चिह्नो का उपयोग किया गया है। प्राय: ए तथा एॅ एव ओ तथा ओॅ ध्वनियो के बीच अधिक अन्तर नही होता।

पूर्वी राजस्थानी की भाँति इ तथा अ स्वर एक दूसरे की जगह आ सकते हैं, उदा० जणॅ-रॅ की जगह जिणॅ-रॅ (=एक व्यक्ति को)। च, छ का उच्चारण साधारणतया स किया जाता है। उदा० चक्की > सक्की; छाछ > सास। यह उच्चारण सर्वत्र निरपवाद रूप से नही मिलता, इसलिए लेखक ने लिपिकरण मे इसे प्रतिनिधित्व नही दिया।

मूर्द्धन्य ल साधारणतया सर्वत्र मिलता है। यह प्राकृत के 'ल' का वशज है। उदा० प्राकृत चलिओ (=गया) मारवाड़ी मे चळिओ हो जाता है। दंत्य ल प्राकृत के ल्ल से आया हुआ है। उदा० प्राकृत चल्लिओ का मारवाडी मे चालियो हो जाता है। प्राय: लेखन मे Ḷ 'ल़' लिखा जाता है न कि 'ळ'।

मारवाडी लिपि मे ड और ड़ के लिए अलग अलग चिह्न हैं। हिन्दी मे ḍ के लिए ड तथा ṛ के लिए उसी के नीचे बिन्दी लगा कर ड़ बना लिया जाता

है, मारवाडी मे ऐसा नही है। मारवाड़ी मे इन दोनो ध्वनियो के लिए स्वतत्र चिह्न हैं, ड के लिए 'उ' तथा ड़ के लिए 'ड'। छपाई में जब उ का टाइप कम पड़ जाता है तब उसकी जगह नागरी के 'म' का उपयोग किया जाता है जिससे बडी गडबडी एवं असुविधा होती है। उदा० 'बमो' को 'बनो' पढा जाय या 'बडो' इसका अनुमान संदर्भ से ही लगाना पडता है। मारवाड़ी उदाहरणो को देवनागरी मे छपते समय लेखक ने d̤ तथा ṛ ध्वनियो के लिए क्रमश: ड तथा ड का ही व्यवहार किया है : ह-कार तथा महाप्राणत्व प्राय: लेखन मे नही दिखाया जाता। उदा० पढणो की जगह पडणो (=पढना), पहिलो की जगह पइलो (=पहला), कहणो की जगह कॅणो (=कहना) इत्यादि।

स का उच्चारण प्राय. अंग्रेजी sh की तरह किया जाता है। यह नियम लगभग सभी बोलियो के लागू होता है।

नामरूप

नामरूप नीचे दिये जाते हैं। यह बात द्रष्टव्य है कि तृतीय रूप के साथ कभी 'ने' परसर्ग नही आता। उसका सप्तमी की तरह अपना एक अलग रूप चलता है।

ओकारान्त तद्भव पुंलिग 'घोडो'

	एक०	बहु०
प्रथ०	घोडो	घोडा
तृ०	घोडे, घोडॅ	घोडाँ
सप्त०	घोडे घोडॅ	घोडाँ
तिर्यक्	घोडा	घोडाँ

व्यंजनांत तद्भव पुंलिग 'घर'

	एक०	बहु०
प्रथ०	घर	घर
तृ०	घर	घराँ
सप्त०	घरे, घरॅ, घरा, घराँ	घराँ
तिर्यक्	घर	घराँ

ईकारान्त स्त्रीलिंग तद्भव 'घोडी'

प्रथ०	घोडी	घोडियाँ, घोड्याँ
तृ०	घोडी	घोडियाँ, घोड्याँ
सप्त०	—	घोडियाँ, घोड्याँ
तिर्यक्	घोडी	घोडियाँ, घोड्याँ

व्यंजनांत स्त्रीलिंग तद्भव 'बात' (=शब्द)

प्र०	बात	बातॉ
तृ०	बात	बातॉं
सप्त०	—	बातॉं
तिर्यक्	बात	बातॉं

कभी-कभी आँ वाला स्त्रीलिंग सप्तमी का रूप भी मिल जाता है, उदा० उण विरियाँ (=उस समय)

अन्य संज्ञा शब्द

	एक०		बहु०	
	प्र०	तिर्यक्	प्र०	तिर्यक्
पुं०	राजा	राजा	राजा	राजावाँ
	मुनि	मुनि	मुनि	मुनियाँ
	तेली	तेली	तेली	तेलियाँ
	साधु	साधु	साधु	साधुवाँ
	बाबू	बाबू	बाबू	बाबुवाँ
स्त्री.	मा	मा	मावाँ	मावाँ
	मूर्ति	मूर्ति	मूर्तियाँ	मूर्तियाँ
	तमाखू	तमाखू	तमाखुवाँ	तमाखुवाँ
	बहू	बहू	बहुवाँ	बहुवाँ
	गउ	गउ	गउवाँ	गउवाँ

मुख्य-मुख्य परसर्ग ये हैं:—

द्वि० च०	नॅं	नॅ	कनॅ	रॅ
तृ० पं०	सूँ	ऊँ	—	—
ष०	रो	को	तणो	हंदो
स०	मे	मॅ	माहें	माई, माँय

इन मे कुछ बातें द्रष्टव्य है : चतुर्थी (एवं द्वितीया) के परसर्ग नॅ (या नॅं) क्रमशः नो एवं रो के सप्तमी रूप है : कनइ कॅ-नॅ का संक्षिप्त रूप है और कॅ-नॅ स्वयं को-नो का सप्तमी रूप है। को, नो, रो आदि सब षष्ठी के परसर्ग है। को तथा रो मारवाड़ी मे एव नो पड़ोस की भाषा गुजराती मे मिलते है। रॅ के विषय मे और अधिक विवेचन आगे किया जायगा।

साधारणतया षष्ठी का परसर्ग रो ही पाया जाता है। तणो एवं हन्दो पुराने हो चुके हैं एवं अब केवल कविता मे पाये जाते है। षष्ठी परसर्ग के रूप मे को का व्यवहार मारवाडी के उन सीमास्थित प्रदेशो मे मिलता है जहाँ आगे मेवाड़ी या मालवी बोली जाती है।

सूक्ष्म भाषातात्त्विक दृष्टि से देखा जाय तो रो, रॅ एव नॅ को जैसा गुजराती मे किया जाता है, संज्ञा शब्द के साथ बिना संयोजक चिह्न (–) लगाये ही लिखना उपयुक्त होगा, जब कि को, तणो एव हन्दो के पहले संयोजक–चिह्न लगाना आवश्यक प्रतीत होता है। उदा० घोडानो, घोडारॅ, घोडानॅ, एवं घोडा-को, घोडा-तणो, घोडा-हन्दो। इसके व्युत्पत्तिमूलक कारण का विवेचन गुजराती भाषा के विवेचन मे दिया गया है। राजस्थानी मे संयोजक चिह्न लगाने व न लगाने, दोनों के उदाहरण है, अतएव इस नियम का अनुसरण करने से पाठक के सामने गड़बड़ी उत्पन्न हो सकती है। इस कारण लेखक ने राजस्थानी मे भी, भाषातात्त्विक शुद्धि को छोड़ कर, सर्वत्र सयोजकचिह्न का व्यवहार किया है, उदा० घोडा-रो, घोडा-रॅ, घोडा-नॅ।

पूर्वी राजस्थान मे षष्ठी के इन परसर्गो मे परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। रो (को, तणो, हन्दो) मे इस प्रकार परिवर्तन हो जाता है:—

पुंलिग संज्ञा के तिर्यक् एकवचन या बहुवचन के पहले—रा (का, तणा, हन्दा)।

किसी भी स्त्रीलिंग सज्ञा के पहले–री (की, तणी, हन्दी), किसी भी पुंलिग संज्ञा शब्द के तृतीया रूप के पहले–रे, रॅ (या कभी-कभी रा)।

×आगॅ, पछॅ आदि परसर्ग वास्तव मे संज्ञा शब्दों के सप्त० रूप है, अतएव वाक्य मे इनसे संबधित संज्ञा शब्द षष्ठी में रखे जाते है। रॅ या रे स्वय भी सप्त० रूप हैं जिनका शाब्दिक अर्थ 'मे का' (in of) होता है।

उदा०—
खेत-रो धान; राजा-रा घोडा-सूँ;
खेत-री काकडियाँ; घर-री पछॅ;
थाँ-रॅ बाप-रॅ घर मॅं; आप-रॅ खेताँ-मॅं;
इण-रॅ हात-मॅं; खेताँ-रॅ पाळी; उण देस-रॅ;
थाँ-रॅ बाबो-सा गोठ कीवी;
उण-रॅ बाप दीठो।

× अपेक्षित चिह्न के अभाव मे प्रेस द्वारा ॅ चिह्न का प्रयोग किया गया है।

चतुर्थी के सभी परसर्ग व्युत्पत्ति की दृष्टि से षष्ठी के परसर्गों के सप्तमी रूप है, (नँ या नँ स्वयं, गुजराती षष्ठी परसर्ग नो का सप्त० रूप है)। अतएव प्राय: रँ का प्रयोग भी चतुर्थी व्यक्त करने के लिए होता है, परन्तु ऐसे स्थलो पर यह परसर्ग तिर्यक् रूप के न लगाया जा कर सप्तमी रूप के लगाया जाता है। उदा० म्हँ उण-रँ बेटॅ-रँ घणा चाबकियाँ-री दीवी हैं (=मैंने उनके लडके के बहुत चाबुके मारी है), एक जणॅ-रँ दोय डावड़ा हा (=एक आदमी के दो लड़के थे), उण-रँ गोठ (=उनके लिए दावत)। पहले उदाहरण मे यह द्रष्टव्य है कि उण-रँ मे रँ का रूप बेटॅ के अनुसार सप्तमी में रखा गया है। इसी प्रकार जब एक षष्ठी रूप का चतुर्थी से संबद्ध प्रयोग होता है, तब रा की जगह रँ का प्रयोग होता है (ऐसी स्थिति में प्राय: चतुर्थी वाले शब्द का परसर्ग स्वय सप्तमी मे व्यवहृत होता पाया जाता है)। उदा० आप-रँ बाप-नँ कयो (=अपने बाप-से कहा) आप-रँ हुकम-नँ लोपियो नही (=आपके हुक्म को तोड़ा नही)।

जब सज्ञा शब्द स्वय मँ परसर्ग के साथ सप्तमी मे ही होता है, तब मँ तिर्यक् रूप के साथ न लगाया जा कर—एँ-अन्तवाले सप्तमी रूप के साथ लगाया जाता है, उदा० कूफँडॅ-मँ, न कि कुफँडा-मँ (=व्यभिचार में)।

ऊपर दिये गये विवरण के अनुसार घोडा शब्द के सब कारक-रूप इस प्रकार है:—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	घोडो	घोडा
तृ०	घोडे, घोडँ	घोडाँ
द्वि०	घोडो, घोडा–नँ	घोडा, घोडाँ–नँ
करण	घोडा–सूँ, घोडा–ऊँ	घोडाँ–सूँ, घोडा–ऊँ
चतु०	घोडा–नँ	घोडाँ–नँ
पं०	घोडाँ–सूँ,–ऊँ	घोडाँ–सूँ, घोडाँ–ऊँ
ष०	घोडा–रो (को,–तणो,–हन्दो)	घोडाँ–री (को,–तणो,–हन्दो)
स०	घोडे, घोडँ, घोडा–मे	घोडाँ, घोडाँ–मे
अष्ट०	हे घोडा	हे घोडाँ

विशेषण

विशेषण प्राय. हिन्दोस्तानी के नियमो के अनुसार ही चलते हैं। ओकारान्त तद्भव विशेषणो का पुलिंग तिर्यक् रूप—आकारान्त हो जाता है तथा स्त्रीलिंग ईकारान्त। उदा०

कालो घोडो हवा–रा जिउँ जाय–है ।

(काला घोड़ा हवा की तरह जाता है ।)

काला घोडा–नैं दोडावो) ।

(काले घोड़े को दौड़ाओ) ।

काली घोडी वडी सैतान है ।

(काली घोड़ी बड़ी शैतान है) ।

काली घोडी–नैं दोडावो ।

(काली घोड़ी को दौडाओ) ।

संज्ञा शब्द तृतीया मे होने पर विशेषण को तृतीया ने ही रखा जाता है । उदा० काळे घोडे लात मारी (=काले घोडे ने लात मारी); नैनक्यँ डावड़ँ गयो (=छोटा लड़का गया) अगरेजी ने शब्दश: By the youngest son it was gone. इसी प्रकार सज्ञा सप्तमी में होने पर विशेषण भी सप्तमी मे रखा जाता है, उदा० छोटॅ घर मॅ (=छोटे घर मे) ।

तुलना करते समय पंचमी का उपयोग किया जाता है, या (गुजराती की तरह) 'करताँ' का 'की अपेक्षा' अर्थ ने व्यवहार किया जाता है । उदा० उच्चारण में मूल स्वराँ करताँ लम्बा बोलीजॅ (=उच्चारण ने वे मूल स्वरों की अपेक्षा दीर्घ बोले जाते हैं ।)

संख्यावाचक विशेषण

संख्यावाची शब्द शब्दावली मे दिए गए है । दोय (=दो) का तिर्यक् एव तृतीया रूप दोयाँ होता है; इसी प्रकार तीन का तीनाँ होता है ।

क्रम संख्यावाचकों के कुछ उदाहरण ये हैं—पॅलो (=पहला); दूजो (=दूसरा); तीजो (=तीसरा); चोथो (=चौथा); पाँचवो (पाँचवाँ); छट्ठो (=छठा); सातवो (=सातवाँ); आठवो (=आठवाँ); नवमो (=नौवाँ); दसवाँ (दसवाँ) इत्यादि । पाँचवों का तृतीया पाँचवें तथा तिर्यक् रूप पाँचवाँ होता है । ओं अन्तवाले अन्य क्रम सख्यावाचकों के रूप एक प्रकार से निरपवाद चलते हैं । (गुजराती की तरह) 'अन्तिम' के लिए 'छेलो' पाया जाता है ।

सर्वनाम

साधारणतया द्वि सर्वनामो के द्वि०–च० एवं ष० के विशेष रूप होते हैं ।

प्रथम पुरुष सर्वनाम के रूप इसी प्रकार होते हैं । उसके दो प्रकार के बहुवचन होते हैं । एक 'आपाँ' जिसमें सम्बोधित व्यक्ति शामिल रहता है, दूसरे 'म्हे' जिसमें सम्बोधित व्यक्ति शामिल नहीं भी हो सकता है । 'म्हे' का अर्थ होता है 'हम' और 'आपाँ का 'आपके साथ हम ।

	एकवचन	बहुवचन	
		सबोधित व्यक्ति शामिल	सबोधित व्यक्ति शामिल नही
प्र०	हूँ, म्हूँ	आपाँ	म्हे, मे
तृ०	म्हँ॑, मँ॑	आपाँ	म्हाँ, माँ
द्वि०-च०	म्ह-नँ॑, म-नँ॑	आपाँ-नँ॑	म्हाँ-नँ॑, माँ-नँ॑
ष०	म्हारो, मारो	आपाँ-रो	म्हाँ-रो, माँरो
तिर्यक्	म्हँ॑, मँ॑, म्हारा, मारा म्हारँ, मारँ	आपाँ	म्हाँ, माँ, म्हाँरा, माँरा म्हाँरँ, माँरँ

द्वितीय पुरुष

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	तूँ, थूँ	थे, तमे
तृ०	थँ॑, तँ॑	थाँ, तमाँ
द्वि०-च०	थ-नँ॑, त-नँ॑	थाँ-नँ॑, तमाँ-नँ॑
ष०	थारो	थाँरो, तमाँ-रो
तिर्यक्	थँ॑, तँ॑, थारा, थारँ	थाँ, थाँरा, थारँ, तमाँ

द्वितीय पुरुष सर्वनाम का आदर-रूप 'आप' है। इसके भी बराबर रूप चलते है। उदा० आप-नँ॑ (=आपको), आप-रो (=आपका)। दूसरा आदरार्थे सर्वनाम 'राज' है जिसके भी बराबर रूप चलते है। आदर व्यक्त करने के लिए किसी संज्ञा शब्द मे 'जी' 'जी-सा', या 'साब' भी जोड़ दिए जाते है, उदा० रावजी-सा, ठाकुर-सा, सेठ-साब—ये सब उपाधियाँ है, बाबो-सा या बाबो-जी (=हे पिताजी)।

निजवाचक सर्वनाम भी 'आप' है, उदा० आप-रो (=अपना)।

तृतीय पुरुष के रूप की जगह निर्देशक सर्वनाम 'ओ' (=यह) तथा 'वो' (=वह) का प्रयोग होता है। इनके स्त्रीलिंग रूप केवल प्रथम एकवचन मे ही मिलते है। रूप-तालिका इस प्रकार होगी—

	यह		वह	
	एक०	बहु०	एक०	बहु०
प्र०	ओ, यो	एँ, ए	वो, ओ, उवो	वँ, वे, उवँ, उवे
द्वि०	(स्त्री०) आ या		(स्त्री०) वा, उवा	—
तृ०	इण	एँ, आँ, याँ, इणाँ	उण	वँ, वाँ, उवाँ, उणाँ वणाँ
द्वि०-च०	ई-नँ इण-नँ, अणी-नँ	—	उ-नँ, उण-नँ, वणी-नँ	—
ष०	इण-रो	—	उण-रो	—
ति०	ई, इण, अणी	एँ, आँ, याँ, इणाँ	ऊ, उण, वणी	वँ, वाँ, उवाँ, उणाँ वणाँ

सम्बन्धवाचक सर्वनाम का प्रयोग प्रायः निर्देशक सर्वनाम के रूप में भी पाया जाता है।

सबन्धवाचक एव नित्यसम्बन्धी सर्वनाम 'जो' या 'जिको' तथा 'सो' या 'तिको' है। इनका प्रथमा मे एक–एक स्त्रीलिंग रूप भी होता है। इनकी रूप-तालिका नीचे दी जाती है—

	सबंधवाचक	नित्यसंबधी
	एकवचन	
प्र०	जो, ज्यो, जिको, जको (स्त्री०) जिका, जका	सो, तिको (स्त्री०) तिका
तृ०	जिण, जण, जणी, जिणी जीं, जिकण, जिकँ	तिण, तिणी
ति०	जिण, जण, जणी, जीं, जिकण	तिण, तिणी
	बहुवचन	
प्र०	जो, ज्यो, जिका, जिकँ, जकँ	सो, तिका, तिकँ
तृ०	जँ, जाँ, ज्याँ, जिणाँ, जणाँ, जिकाँ	तिणाँ, तिकाँ
ति०	जँ, जाँ, ज्याँ, जिणाँ, जणाँ, जिकाँ	तिणाँ, तिकाँ

सम्बन्धवाचक रूप का निर्देशक सर्वनाम के रूप मे प्रयोग लगभग सर्वत्र मिलता है। पूर्वी राजस्थानी मे भी यही स्थिति है। इसके बहुत से उदाहरण आगे दिए हुए भाषा के नमूनो मे मिलेंगे।

प्रश्नवाचक सर्वनाम 'कुण'=कौन (पु०-स्त्री०) काँई =क्या (नपुं०) है। इनके रूप नीचे दिए जाते है:—

	पु०-स्त्री०		नपु०
		एकवचन	
प्र०	कुण, कण		काँई, कँ, कऊँ
तृ०	कुण, कण, कुणी		कुणी
ति०	कणी, किण, कीं		—
		बहुवचन	
प्र०	कुण, कण	—	—
तृ०	कुणाँ, कणाँ, किणाँ	—	—

अनिश्चयवाचक सर्वनामो मे 'कोई, काँई, कँ, या कीं' मिलते है। 'कोई' के तृतीया-तिर्यक् रूप 'किणि, कुणी, कों' मिलते है। कीं के प्रयोग मे परसर्ग के साथ ई अनिवार्य रूप से जोडा जाता है, उदा० कीं-रो-ई (=किसी का भी) काँई, कँ, कीं के रूप नही चलते।

क्रिया की रूप-रचना—

सहायक क्रिया और मुख्य क्रिया वर्तमान काल 'मै हूँ' इत्यादि

	एक०	बहु०
प्र०	हूँ	हाँ
द्वि०	है	हो
तृ०	है	है

भूतकाल मे पुरुष के अनुसार भेद नही होते।

पु० एकवचन—हो, पुं० बहुवचन—हा

स्त्री० ,, ही तथा बहुवचन—ही

'होना' क्रिया के मुख्य-मुख्य भाग ये है:—

धातु—हो (=होना)

वर्तमान कृदन्त— होतो, हूतो, ह्वतो
(पु० बहु०—ता; स्त्री०—ती)

भूत कृदन्त— हुवो, हुयो, ह्वियो,
ह्वीओ (स्त्री० हुई)

विशेषणात्मक भूत-कृदन्त—	हुवोड़ो, हुयोड़ो
संभावनार्थ कृदन्त—	हूयर, हूय-नँ, होकर, हो, ह्वै तो-कनँ, ह्वै र
क्रियार्थक सज्ञा—	होवण, होवणो, होणो, हूँणो ह्वँणो, हैण्ँ, ह्वँवो
करण संज्ञा—	होण-वाळो

साधारण वर्तमान—

(मैं हूँ या मैं हो जाऊँ इत्यादि)

	एक०	बहु०
प्र०	हुऊँ, होऊँ ह्वेऊँ	हुवाँ, हंग्राँ, हंहाँ
द्वि०	हुवँ, ह्वँ	हुवो, हंग्रो, ह्वँहो
तृ०	हुवँ, ह्वँ	हुवँ, ह्वँ

निश्चयात्मक वर्तमान

(मैं हो रहा हूँ)

हुऊँ-हूं या ह्वेऊँ हूँ इत्यादि

अपूर्ण भूत

(मैं मार रहा था)

हिन्दी की तरह—ह्वै तो-हो

पूर्वी राजस्थानी की तरह-हँ-हो

भविष्यत

(मैं होऊँगा)

प्रथम रूप—

	एक०	बहु०
प्र०	ह्वे हूँ	ह्वेहाँ
द्वि०	ह्वेही	ह्वेहो
तृ०	ह्वेही	ह्वेही

द्वितीय रूप—

हुऊँ-ला, ह्वेऊँ-ला इत्यादि

तृतीय रूप—

हुऊँ-गो, ह्वेऊँ-गो इत्यादि

आज्ञार्थ

(हो)

एकवचन—ह्वँ बहुवचन—होवो

अन्य कालो के रूप ऊपर दिए गए उपादानो को लेकर बना लिए जाते है।

मुख्य क्रिया

धातु—मार

वर्तमान कृदन्त—मारतो

भूत कृदन्त—मारियो, मार्‌यो (स्त्री० मारी)

विशेषणात्मक भूत कृदन्त—मारियोडो, मारियो हुवो

सभावनार्थ कृदन्त—मार, मार-कर, मारर, मार-नॅ (या-नॅ), मारूँ-नॅ (या-नॅ), मारतो-कर्नॅ

क्रियार्थक सज्ञा—मारण, मारणो, मारणूँ, मारवो

कारण-सज्ञा—मारणावाळो, मारबावाळो

हिन्दी 'मारा-हुआ' की तरह मारवाडी विशेषणात्मक भूत कृदन्त भी विशेषण की तरह ही प्रयुक्त होता है। जब कृदन्त 'की' क्रियाविशेषण के रूप मे प्रयोग होता है, तब उसमे आँ जोड़ दिया जाता है। उदा० मुल्क-में लियाँ फिरूँ (=देश मे लिए-लिए फिरूँ); म्हारो माल मगावताँ घड़ी न करसी जेज (=मेरा माल मँगाते घडी भर भी देर नही करेगा); आवताँ आवताँ घर नेड़ो आयो (=आते-आते घर नजदीक आया)।

साधारण वर्तमान

(मैं मारता हूँ, मै मार सकता हूँ, मै मारूँगा इत्यादि)

	एक०	बहु०
प्र०	मारूँ	माराँ
द्वि०	मारॅ	मारो
तृ०	मारॅ	मारॅ

इस कालरूप का व्यवहार प्रायः वर्तमान संभावनार्थ या भविष्यत् की तरह भी होता है।

वर्तमान निश्चयार्थ

(मैं मार रहा हूँ, इत्यादि)

यह कालरूप मुख्य क्रिया के साधारण वर्तमान के साथ-साथ सहायक क्रिया के वर्तमान रूप को जोड़ कर बनाया जाता है।

	एक०	बहु०
प्र०	मारूँ–हूँ	माराँ–हाँ
द्वि०	मारँ–हँ	मारो–हो
तृ०	मारँ–हँ	मारँ–हँ

अपूर्ण भूत

(मैं मार रहा था, इत्यादि)

इसके दो भेद होते है। एक तो हिन्दी की तरह वर्तमान कृदन्त के साथ सहायक क्रिया के भूत रूप को जोड कर बनाया जाता है, दूसरा किसी क्रियात्मक सज्ञा के साथ सहायक क्रिया के भूतरूप को लगा कर बनता हैं। उदा०

पहला रूप—

	एक०		बहु०	
	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
१	मारतो–हो	मारती–ही	मारता–हा	मारती–ही
२	मारतो–हो	मारती–ही	मारता–हा	मारती–ही
३	मारतो–हो	मारती–ही	मारता–हा	मारती–ही

दूसरा रूप—

१	मारँ–हो	मारँ–ही	मारँ–हा	मारँ–ही
२	मारँ–हो	मारँ–ही	मारँ–हा	मारँ–ही
३	मारँ–हो	मारँ–ही	मारँ–हा	मारँ–ही

भविष्यत्

(मैं मारूँगा)

भविष्यत् के तीन प्रकार होते है।

पहला—यह रूप धातु से सीधा बनाया जाता है—

	एक०	बहु०
१	मारहूँ, मारसूँ, मारूँ	मारहाँ, माराँ
२	मारही, मारसी, मारी	मारहो, मारो
३	मारही, मारसी, मारी	मारही, मारी

स वाला रूप पूर्वी राजस्थानी का है। मारवाडी मे इसका प्रयोग केवल एकवचन मे होता है।

दूसरा—यह रूप साधारण वर्तमान मे-ला लगा कर बनाया जाता है। ला पूर्वी राजस्थानी के -लो के समान ही है, अन्तर इतना ही है कि -लो का रूप लिंग-वचन के अनुसार बदल जाता है जबकि -ला का नही बदलता।

	एक०	बहु०
	(पु० तथा स्त्री०)	(पु० तथा स्त्री०)
१	मारूँ-ला	माराँ-ला
२	मारॅ-ला	मारो-ला
३	मारॅ-ला	मारॅ-ला

तीसरा—यह साधारण वर्तमान मे -गो लगा कर बनाया जाता है। इस -गो का रूप लिंग एव वचन के अनुसार बदलता रहता है। वास्तव मे यह रूप पूर्वी राजस्थानी का है।

	एक०		बहु०	
	पुं०	स्त्री०	पुं०	स्त्री०
१	मारूँ-गो	मारूँ-गी	मारा़ँ-गा	मारा़ँ-गी
२	मारॅ-गो	मारॅ-गी	मारो-गा	मारो-गी
३	मारॅ-गो	मारॅ-गी	मारॅ-गा	मारॅ-गी

आज्ञार्थ

(तू मार, इत्यादि)

द्वि० एक०—	मार
द्वि० बहु०—	मारो
आदरवाचक रूप—	मारजै, मारीजै, मारज्यो, मारीज्यो

भूतकाल

हिन्दी की तरह भूतकाल के रूप भूत कृदन्तो से ही बनाए जाते हैं। सकर्मक क्रियाओ के लिए कर्मणि या पुरुषहीन रूप का तथा अकर्मक क्रियाओ के लिए कर्तरि या पुरुषहीन रूप का व्यवहार होता है। विभिन्न कालरूप नीचे दिए गए हैं। विशेष रूप से द्रष्टव्य एक बात यह है कि पुरुषहीन वाच्य मे तृतीया मे रखा हुआ कर्त्ता अकर्मक एव सकर्मक दोनो क्रियाओं के साथ प्रयुक्त हो सकता है। उदा० नंनक्यॅ डावड़ॅ गयो (अँगरेजी—by the younger son it was gone, अर्थात् the younger son went.)

नीचे दिए हुए अतिरिक्त कालरूप भी वर्तमान कृदन्त से बनाए जाते हैः—

हूँ मारतो— (=(यदि) मै मारता)
हूँ मारतो-हुऊँ— (=(शायद) मै मारता होऊँ)
हूँ मारतो-हुउँ-ला— (=(शायद) मै मारता होऊँ या होऊँगा)
हूँ मारतो-होतो— (=(यदि) मै मारता होता)

नीचे दिए हुए रूप भूत कृदन्त से बनते है :—

म्हेँ मारियो = मैने (उसको) मारा
हूँ सूतो = मै सोया
म्हेँ मारियो-हेँ = मैने (उसको) मारा है
हूँ सूतो-हूँ = मै सोया हूँ
म्हेँ मारियो-हो = मैने (उसको) मारा था
हूँ सूतो-हो = मै सोया था
म्हेँ मारियो-हुवेँ = मैने (उसको) मारा हो सकता है
हूँ सूतो-हुऊँ = मै सोया होऊँ
म्हेँ मारियो-हुऊँ-ला = मैने मारा होगा
हूँ सूतो-हुऊँ-ला = मै सोया हूँगा
म्हेँ मारियो-होतो = (यदि) मैने मारा होता
हूँ सूतो-होतो = (यदि) मै सोया होता

ऊपर दिए गए रूपो मे 'सूतो', सोवणो' अकर्मक क्रिया का एक अनियमित (irregular) भूत कृदन्त है। सीधा रूप 'सोयो' का भी प्रयोग होता है।

अनियमित क्रियाएँ

करणो (=करना) भूत कृदन्त—कीयो (स्त्री० की या कीवी) या करियो
लेवणो (=लेना) भूत कृदन्त—लीयो (स्त्री० ली या लीवी)
देवणो (देना) भूत कृदन्त—दीयो (स्त्री० दी या दीवी)
पीवणो (=पीना) भूत कृदन्त—पीयो (स्त्री० पी या पीवी)
जावणो (=जाना) भूत कृदन्त—गयो (स्त्री० गई)

कहणो, कँणो या कँवणो (=कहना)—तृ० वर्त० कवँ, भूत कृ० कयो (स्त्री० कही या कई), संभावनार्थ कृदन्त—कँयर

रहणो (=रहना) एव वहणो (=बहना) के रूप कहणो की तरह ही चलते है।

करणो, देवणो एवं लेवणो के भूत कृदन्त कभी-कभी अनुक्रम से कीनो, कीधो या कीदो; दीनो, दीधो या दीदो; लीनो, लीधो या लीदो भी मिलते है।

उसी तरह खावणो (=खाना) का खाधो, मरणो (=मरना) का मरियो या मुयो और देखणो (=देखना) का दीठो रूप पाए जाते है।

कुछ अन्य क्रियाओ के भूत कृदन्त 'ओ' लगा कर बनाए जाते हैं, उदा० कसालो भुगतण लागो (=कमी भुगतने लगा)।

प्रेरणार्थक क्रियाएँ

ये क्रियाएँ साधारणतया हिन्दी की तरह ही बनाई जाती है, केवल -आ प्रत्यय की जगह -आव लगाया जाता है और प्रेरणा का द्वित्व दिखाने के लिए -वा की जगह -वाव प्रत्यय का उपयोग होता है। उदा० उडणो=उड़ना, प्रे० उडावणो, द्वि० प्रे० उडवावणो। धातु के स्वर हिन्दी की तरह ही ह्रस्व हो जाते है, यथा—आ का अ, ई, ए एवं एँ का इ, उ, ओ एव आँ का उ।

मारणो (मरणो=मरना से), खोलणो (खुलणो=खुलना से) आदि प्रेरणार्थक रूप हिन्दी के सदृश ही होते है।

-ह कारान्त धातुओ का ह प्रेरणार्थक रूप बनाते समय लुप्त हो जाता है। उदा० बहणो (=बहना)—प्रे० बवावणो, कहणो (=कहना)—प्रे० कवावणो।

नीचे दिए रूप हिन्दी नियमो का अनुसरण नही करते :—

देवणो=देना, प्रे० दिरावणो, द्वि० प्रे० दिरवावणो
लेवणो=लेना, प्रे० लिरावणो, द्वि० प्रे० लिरवावणो
सीवणो=सीना, प्रे० सिँवावणो
खावणो=खाना, प्रे० खवावणो
पीवणो=पीना, प्रे० पिवावणो

निषेधसूचक वाच्य

वर्तमान कृदन्त के साथ 'रहणो'=रहना क्रिया लगा कर एक प्रकार का निषेधसूचक वाच्य बनाया जाता है; उदाहरण गाताँ रहणो=न गाना; न कि हिन्दी वाला अर्थ—गाते रहना। डॉ० केलॉग इस मुहावरे का यह उदाहरण देते है—किवाड़ जड़-दो कँ मनख माहँ आता रहँ=किवाड़ बन्द कर दो ताकि लोग अन्दर न आएँ।

कर्मणि वाच्य

मारवाड़ी मे एक नियमित धातु-विकसित (inflected) कर्मणि वाच्य पाया जाता है, जो मूल धातु के इज लगा कर बनाया जाता है; उदाहरण मारणो=मारना—मरीजणो=मारा जाना। मूल धातु मे वे ही परिवर्तन होते हैं जो प्रेरणार्थक रूप मे हो जाते है। कुछ और उदाहरण ये है :—

कर्तरि		कर्मणि
करणो = करना		करीजणो
खावणो = खाना		खवीजणो
लेवणो = लेना		लिरीजणो
देवणो = देना		दिर्रीजणो

नपुंसक क्रियाओ का भी यह कर्मणि रूप बन सकता है; ऐसे समय उनका रूप अपुरुषवाची (impersonal) हो जाता है। उदाहरण-आवणो = आना से—अवीजणो=आया जाना, म्हें-सूं अवीजें नहीं=by me it is not come=मुझ से आया नही जाता (तुल० लैटिन luditur a me). अन्य उदाहरण ये है—म्हूँ मरीज्यो=मै मारा गया। थें-सूं नही खवीजें ला=तुमसे नही खाया जायगा=तुम इसे खा नही सकोगे। यह बात द्रष्टव्य है कि इन कर्मणि रूपो से एक प्रकार की वैसी ही विध्यर्थ ध्वनि निकलती है जैसी–आ लगा कर बनाये गये हिन्दी समूह की भाषाओ के विध्यर्थ कर्मणि रूप मे पाई जाती है।

संयुक्त क्रियाएँ

ये साधारणतया हिन्दी के अनुरूप ही होती हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि मारवाडी मे इनका प्रयोग एक परिपुष्ट (intensive) रूप बनाने मे भी होता है; यह रूप रो, परो, वरो आदि को क्रिया के पहले लगाकर बनता है। रो, परो, वरो आदि विशेषण है। इनके लिग सकर्मक क्रियाओ से सम्बन्धित होने पर किसी भी काल मे उनके कर्म के अनुसार, एव क्रिया अकर्मक होने पर उनके कर्त्ता के अनुसार, बदलते रहते है। वरो का उपयोग निज-वाचक कार्य के साथ होता है; इससे एक प्रकार के भावे प्रयोग का निर्माण होता है। उदा० वरो लेवणो=अपने स्वय के लिए लेना।

अन्य उदाहरण—

वरो मारणो = मार डालना
वरो जावणो = चला जाना
परो उठणो = उठ जाना
थूं वरो जा = तू (पुं०) चला जाना
थूं वरी जा = तू (स्त्री०) चली जा
ऊ पोथी वरी लेवें = वह अपनी पुस्तक अपने आप ले ले
हूँ पोथी वरी लेउं हूँ = मै पुस्तक अपने आप ले लेता हूँ
ऊ पोथी परी देही = वह पुस्तक दे डालेगा
म्हें चाबकियाँ री दीवी है = मैने (अमुक को) चाबुको से मारा है।

आवृत्तिदर्शक क्रियाएँ (Frequentative Verbs)

ये क्रियार्थक संज्ञा (infinitive) में -वो लगा कर बनाई जाती हैं न कि नागरी हिन्दी की तरह। उदा० जावो करणो = जाते रहना

आरम्भदर्शक क्रियाएँ (Inceptive Verbs)

ये क्रियार्थक संज्ञा मे -ण लगा कर वनाई जाती है। उदा० उवो कसालो भुगतण लागो = वह कमी भुगतने लगा।

शब्दावली

मारवाड़ी शब्दावली हिन्दी की अपेक्षा गुजराती के बहुत अधिक निकट है। इसलिए मारवाड़ी का अभ्यास करने के लिए एक गुजराती शब्द-कोष बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। गुजराती का परसर्ग -ने या -नॅ तथा भारदर्शक प्रत्यय (Emphatic Particle) -ईज या -हीज उसके निज के है (जो राजस्थानी के अन्यत्र नही मिलते)। -ईज या -हीज शौरसेनी प्राकृत के -ज्जेव से व्युत्पन्न गिना जा सकता है। उदा० इण-सूँ-हीज = इन-से ही; मारवाड़ी भाखा-री उन्नति होवण-सूँ मारवाड़-रो तो फायदो हुवॅ-ईज = मारवाड़ी भाषा की उन्नति होने से मारवाड़ का तो लाभ होगा ही। कभी-कभी इसका द्वित्व हो कर -जेज रूप बन जाता है; उदा० करसी-जेज = (वह) करेगा-ही।

जैसा कि हम देख चुके है, -ड़ो प्रत्यय भूत-कृदन्तों के लगाया जाता है। यह किसी भी संज्ञा, विशेषण तथा सर्वनाम शब्द के भी स्वार्थ रूप मे या अग-विस्तारक रूप मे (Pleonastically) लगाया जा सकता है। उदा० वडो-ड़ो डावड़ो = वड़-का लड़का; जको-ड़ी गावड़ी कचेड़ी-माँ ऊबोड़ी हॅ = जो गाय कचहरी मे खड़ी हुई है। जको एवं ऊबो का -ओ ड़ो लगने पर स्त्रीलिंग के साथ अपना रूप नही वदलता, यह वात द्रष्टव्य है। •

मध्यपूर्वी राजस्थानी

उपभाषा का नाम

मध्य-पूर्वी राजस्थानी की चार बोलियाँ हैं। इन्हे मातृभाषा के रूप मे बोलने वाले बिल्कुल स्वतत्र अलग-अलग बोलियाँ मानते हैं। इनके नाम जयपुरी, अजमेरी, किशनगढ़ी एव हाड़ौती है। इनका आपस का भेद बहुत पुराने समय से सर्वमान्य गिना जाता रहा है, यहाँ तक कि १८ वी शती मे सिरामपुर के पादरियो ने भी इंजील के जयपुरी एव हाड़ौती मे दो अलग-अलग अनुवाद किये थे। फिर भी इन चारों बोलियो मे फर्क इतना कम है कि वास्तव मे इन्हे पूर्वी राजस्थानी के नाम से ही उपभाषा मानना ही ठीक जँचता है। अपने विस्तार के सारे प्रदेश मे (जो नक्शे मे स्पष्टतया दिखाया गया है) एक जगह से दूसरी जगह जाने मे बोली-भेद थोड़ा-बहुत नजर अवश्य आता है; यह भेद भारत के मैदानी प्रदेश मे सर्वत्र मिलता है, परन्तु ये स्थानीय भेद इतने महत्त्वपूर्ण नही है कि वर्गीकरण में इन्हें अलग बोली माना जा सके। उपर्युक्त चारो बोलियो में जयपुरी सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है और वह इन सबकी प्रतिनिधि स्वरूप मानी जा सकती है।

जहाँ बोली जाती है

पूर्वी राजस्थानी इन जगहो में बोली जाती है—जयपुर स्टेट के मध्य एवं दक्षिण मे, लावा ठकुरात मे, जयपुर से लगे हुए टोंक रियासत के अधिकाश भाग मे, किशनगढ़ रियासत के अधिकांश भाग मे, अजमेर जिले मे, बूंदी एवं कोटा की हाडा रियासतो मे (जिससे हाडौती नाम आया है) तथा उनसे लगे हुए ग्वालियर, टोंक (छाबडा परगना) एव झालावाड़ के प्रदेशो मे।

भाषा-सीमाएँ

पूर्वी राजस्थानी के उत्तर-पूर्व मे उसी की बोली मेवाती है। पूरब मे उत्तर से दक्षिण आते अनुक्रम से पहले पूर्वी जयपुर मे बोले जाते ब्रजभाषा के डाँग विभेद आते हैं; उनके बाद मध्य में बुन्देली एवं तत्पश्चात् दक्षिण मे ग्वालियर राज्य की मालवी एव मारवाड़ी का एक विभेद मेवाड़ी है। पश्चिम एवं पश्चिमोत्तर मे मारवाड़ी मिलती है। स्पष्ट है कि पूर्वी सीमा के थोड़े से भाग को छोड़कर, पूर्वी राजस्थानी चारो ओर से राजस्थानी की अन्य बोलियो से ही घिरी हुई है।

बोलियाँ

हमने जयपुरी को पूर्वी राजस्थानी की प्रतिनिधि बोली माना है। सन् १८९८ मे जयपुर महाराजा ने अपने राज्य का एक विशेष भाषा-सर्वेक्षण प्रकाशित करवाया था, जो रेव. जी मेकेलिस्टर एम. ए ने तैयार किया था। इससे मालूम पड़ता है कि जयपुर राज्य मे तेरह अलग-अलग बोलियाँ व्यवहार मे लाई जाती है। इनमे से छह जयपुरी के ही विभिन्न रूप है। वे ये है–रियासत के उत्तर स्थित तोमरो के प्रदेश की तोरावाटी; मध्य मे बोली जाती स्टैण्डर्ड जयपुरी, दक्षिण-पश्चिम की काठैडा एवं चौरासी तथा दक्षिण–पूर्व की नागरचाल व राजावाटी। किशनगढी लगभग सारी किशनगढ़ रियासत एव अजमेर के उत्तर थोडे से टुकडे मे बोली जाती है। अजमेरी अजमेर जिले के मध्य–पूर्व मे बोली जाती है। हाडौती बूंदी एव कोटा के साथ-साथ उनसे सटे हुए झालावाड, टोक एवं ग्वालियर रियासतो के प्रदेशो मे भी बोली जाती है। ग्वालियर राज्य मे सिपाडी या शिव-पुरी नाम की हाडौती की ही एक उपबोली के बोलने वालो की संख्या लगभग ४८,००० है।

बोलने वालों की संख्याएँ

पूर्वी राजस्थानी की बोलियो के बोलने वालो की सख्याएँ इस प्रकार है:—

जयपुरी—

स्टैण्डर्ड	....	....	७,९०,२३१	
तोरावाटी	....	...	३,४२,५५४	
काठैडा	....	....	१,२७,९५७	
चौरासी	....	....	१,८२,१३३	
नागरचाल	....	....	७१,५७५	
राजावाटी	....	....	१,७३,४४९	
				कुल:—१६,८७,८९९
किशनगढी	....	....	....	१,१६,७००
अजमेरी	....	....	....	१,११,५००
				१९,१६,०९९

हाड़ौती—

स्टैण्डर्ड	....	....	९,४३,१०१	
सिपाडी	.....	....	४८,०००	
				कुल———९,९१,१०१

पूर्वी राजस्थानी की कुल सख्या : २९,०७,२००

मातृभाषा के तौर पर जिस क्षेत्र मे बोली जाती है उसके बाहर के प्रदेश मे पूर्वी राजस्थानी-भाषियो की सख्या विश्वस्त रूप से नही मिलती। यह सख्या राजस्थानी की उपभाषाओ मे से केवल मारवाड़ी की ही मिलती है। बहुत सभव है कि मारवाडी की इस सख्या मे जयपुरी एव तत्संबधित बोलियो के बोलने वाले भी सम्मिलित हो।

जयपुरी साहित्य

जयपुरी साहित्य परिमाण मे विस्तृत है, पर वह लगभग सारा का सारा हस्तलिखित रूप में है, और उसके विषय मे जानकारी बहुत कम मिलती है। उसका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग प्रसिद्ध समाज-सुधारक सत दादूजी तथा उनके अनुयायियो की वाणियो के सग्रह है। उनके विषय मे सन् १८४४ मे लिखते हुए रेव. जॉन ट्रेल (Rev. John Traill) इस प्रकार उल्लेख करते है :—

"भाषा का मेरा सर्वप्रथम परिचय कोई बारह वर्ष हुए, दादू नाम के धार्मिक लेखक के अध्ययन से हुआ। दादू का जन्म सन् १५५४ ई मे अहमदाबाद मे हुआ था, परन्तु उनके जीवन का अधिकाश भाग जयपुर मे बीता। विशेपतया उन्होने जयपुर मे ही मत का प्रचार किया एवं अब भी वही उनके बहुत से अनुयायी पाये जाते है। जयपुर राज की नागा पलटन के सिपाही इन्ही मे से है।

मैने दादू की 'वाणी' का अगरेजी मे अनुवाद किया है। मेरे पास 'वाणी' की हस्तलिखित प्रति है जो २३४ वर्ष पहले लिखी गई थी। 'वाणी' मे २०,००० पंक्तियाँ है एव जनगोपाल-कृत दादू की जीवनी ३००० पक्तियो मे लिखी गई है। दादू के बावन शिष्य थे जो सारे देश मे उनके मत का प्रचार करते फिरते थे। इन सबने अपनी-अपनी 'वाणियो' की पुस्तके लिखी है, जो उनके स्थापित दादू-द्वारो मे सुरक्षित मानी जाती है। दादू के शिष्यो मे से कुछ के नाम उनकी प्रच-लित रचना-संख्या के साथ दिये जाते है:—

गरीबदास	३२,०००	पक्तियाँ
जैसा	१,२४,०००	,,
प्रयागदास	४८,०००	,,
रजबजी	७२ ०००	,,
बखनाजी	२०,०००	,,
शंकरदास	४,४००	,,
बाबा बनवारीदास	१२,०००	,,
सुन्दरदास	१,२०,०००	,,
माधोदास	६८,०००	,,

इसी प्रकार परम्परा ५२ शिष्यो तक चलती है। इनमे से प्रत्येक ने थोड़ा-बहुत लिखा बताते है। मैं 'बताते है'–इसलिए कहता हूँ, कारण अब तक किसी यूरोपीय व्यक्ति ने इन रचनाओ को सगृहीत नही किया, यद्यपि साधारण जनता मे ये खूब प्रचलित हैं। जनसाधारण मे ऐसा एकाध व्यक्ति भी शायद ही मिलेगा जिसे इनमें से कुछ पद या गीत कण्ठस्थ न हो। मेरा ख्याल है कि इनमे से अधिकांश पुस्तके अब भी खरीदने पर या नकल करने के लिए माँगने पर मिल सकती है। इन्हे खरीदने के लिए मेरे सदृश व्यक्ति के पास पर्याप्त धन होना सभव नहीं, अन्यथा ये सब मुझे मिल सकती थी। ऊपर दिए गए व्यक्ति दादूजी के अपने शिष्य थे। इन शिष्यो के शिष्यो ने भी लिखा है, और उनकी परम्परा मे आज तक ऐसे लेखक मौजूद है जो अब भी लिखते है। इससे पता चलता है कि इस पथ के ३४० वर्ष लम्बे इतिहास मे रचनाओ की परम्परा अबाध गति से जारी रही है।"

दादूपथी लोग वास्तव मे सत कबीर के चलाए मत की एक शाखा ही हैं। वे राम की उपासना करते है, पर मन्दिर व मूर्ति को नही मानते। दादू के अधिकाश शिष्यो ने अपनी मातृभाषा जयपुरी मे ही लिखा होगा, पर दादू के स्वय अपने जो भी ग्रन्थ मेरे देखने मे आये है, वे सब पश्चिमी हिन्दी के एक पुराने रूप में ग्रथित हैं।

जयपुरी के विभिन्न नाम

पूर्वी राजस्थानी की मुख्य प्रतिनिधि भाषा के लिए 'जयपुरी' नाम का प्रयोग यूरोपीयों ने आरम्भ किया। यह जयपुर रियासत की राजधानी जयपुर नगर पर से गढ लिया गया था। इसके बोलने वाले प्राय: ढूँढ़ाडी कहते है जिसका मतलब है ढूंढ़ाड़ देश की भाषा। यह प्रदेश शेखावाटी एव खास जयपुर के बीच स्थित पर्वतमाला के दक्षिण का प्रदेश है। इसका नाम प्रदेश की पश्चिमी सीमा पर स्थित, किसी जमाने मे पूजित, यज्ञ के टीले (ढूढ) पर से आया हुआ है। अन्य प्रचलित नाम झाड़शाही व कॉई-कूँई की बोली है। झाड़शाही का मतलब जगली प्रदेश की बोली होता है तथा कॉई-कूँई की बोली यह नाम घृणा दिखाते हुए उस भाषा के लिए प्रयुक्त है जिसमे 'कॉई' शब्द आता हो। जयपुरी मे कॉई का अर्थ 'क्या' होता है। शेखावाटी की भाषा मे माळै=(पर) शब्द नही मिलता। अतएव वहां के निवासी मजाक मे जयपुरी-भाषी को 'माळै-हाळो'=माळै वाला भी कहते हैं।

जयपुरी एव दादूपथियो से संबधित जितने साहित्य से लेखक परिचित है उसका विवरण नीचे दिया जाता है।

अधिकृत सूत्र —

Wilson, H. H.–A sketch of the Religious sects of the Hindus —Asiatick Researches. Vol. XVI (1828). A sketch of the Dadu-Panthis on PP. 79 and ff Reprinted on PP. 103 and ff. of Vol. 1 of Essays and Lectures on the Religion of the Hindus, London, 1861.

Siddons, Lieut. G. R.–(Text and) Translation of one of the Granthas or sacred books, of the Dadu–Panthi sect. Journal of the Asiatic society of Bengal, vi (1837) PP. 480 and ff, 750 and ff

Traill, Rev. John— Memo on Bhasha literature, Jaipur, 1884.

Adelung. johann christoph.— Mithridates oder allgemeine sprachenkunde, etc. Vol. iv. Berlin, 1817. Brief notices of Jaipuri on PP. 488 and 491.

Kellogg, Rev. S. H.—A grammar of Hindi Language in which are treated the high Hindi,··· ·· ·······also the colloquial Dialects of Rajputana ·· ···· · ····with copious philological notes. Second Edition, London, 1893

राजपूताना की चर्चित बोलियो मे जयपुरी भी है, जिसे कभी–कभी लेखक ने 'पूर्वी राजपूताना की एक एक बोली' एवं कभी–कभी (गलती से) मेवाड़ी कहा है ।

Macalister, Rev G.—Specimens of the Dialects spoken in the state of Jeypore. Allahabad, 1898.

(इसमे बोलियों के उदाहरण, शब्द–कोष तथा व्याकरण दिए हुए है ।)

उल्लिखित पुस्तको मे भी श्री मेकेलिस्टर की पुस्तक मे जयपुर राज्य में प्रचलित अनेक बोलियो का बडा मार्मिक विस्तृत एव महत्वपूर्ण विवरण मिलता है । वास्तव मे यह पुस्तक पूरे जयपुर स्टेट का भाषा–सर्वेक्षण है ।

लिपि

पुस्तको व अन्य छपी हुई वस्तुओ मे देवनागरी का ही व्यवहार होता है । हाथ से लिखने मे वही लिपि प्रचलित है जो मारवाड मे मिलती है । •

पूर्वी राजस्थानी

व्याकरण

जयपुरी को पूर्वी राजस्थान की स्टैण्डर्ड प्रतिनिधि मानना बिल्कुल उपयुक्त है। इसकी सामग्री व विवेचन भी प्रचुर व सुन्दर मिलते हैं, अतएव जयपुरी की विशिष्टताओ का लगभग सम्पूर्ण विवेचन दिया जा सका है। यह विवेचन मुख्यतया रेव० जी० मेकेलिस्टर की सुन्दर पुस्तक पर आधारित है। कही-कही ऐसी सामग्री जोड़ दी गई है जो लेखक ने स्वय पढकर एकत्रित की थी।

उच्चारण

उच्चार मे प्राय: अ का इ या इ का आ हो जाता है। उदाहरण—पडित=पिडत; हिन्दी=सड गया=सिड गयो, मानुख=मिनख, दिन=दन। ओ स्वर-कभी-कभी ऊ हो जाता है, उदाहरण—दीनो की जगह दीनू, क्यो की जगह क्यूं। ए की जगह संयुक्त स्वर ऐ प्राय. मिलता है, उदाहरण मैं—(=मे)। फारसी से आये हुए ऐसे शब्दो मे जिनके अन्त मे ह.+व्यञ्जन होता है, उनके बीच मे एक इकार डाला दिया जाता है, उदाहरण—झह्‌र=झैर, शह्‌र=सैर।

व्यञ्जनो का महाप्राणत्व प्राय: लुप्त हो जाता है। उदाहरण—बी व भी (=भी) दोनों मिलते हैं; उसी प्रकार—कुसी (=खुसी>फारसी खुशी); आदो (=आधा); सीकबो (=सीखना); काडबो= (काढ़ना); लादबो (लाधबो की जगह); दे (=देह) साय (=सहाय) फड़बो (=पढबो) तथा छड़बो (चढ़बो) मे महाप्राणत्व दूसरे वर्ण के बदले पहले मे आ गया है; वैसे ही झैर (=जहर) भगत, बखत (> वक़्त) मे भी।

सहाय का साय उच्चारण करते समय मध्यग हकार के लोप का उदाहरण हम देख चुके है। यही नियम रहबो=रहना; कहबो=कहना आदि क्रियाओं के भी लागू पड़ता है; इन्हे प्राय. रैबो, कैबो—इस प्रकार लिखा जाता है। परन्तु, अधिकतर कहबो की जगह खैबो लिखा जाता है, जिसमे महाप्राणत्व पहले व्यंजन मे आ जाता है। उदाहरण खूँ-छूँ=कहता हूँ, खै-छै=कहता है; खै=कहा जाता है; खाणी=कहानी; म्हाराज=महाराज, मैतो=वहतो, म्हारो=(महारो)=हमारा; थारो (तहारो)=तेरा।

न एवं ल के अनुक्रम से ण एव ल हो जाते हैं। यह एक बहुत प्राचीन प्रक्रिया का अवशेष है। (पजाबी, गुजराती एव मराठी की तरह) यह नियम है कि प्राकृत के न्न एव ल्ल का तद्भव शब्द मे दन्त्य न एव ल होता है तथा न एव ल का अनुक्रम से मूर्धन्य ण एव ल हो जाता है। कुछ उदाहरण ये है—

प्राकृत	राजस्थानी
दिन्नु=दिया	दीनू
घल्लइ=डालता है	घालइ
वोल्लिअउ=बोला	बोल्यो
चल्लिअउ=चला	चाल्यो
परन्तु, जणउ=जन	जणो
वालु=बच्चा	वाल
चलिअउ=गया	चल्यो
कालु=समय	तुल०-काल=दुर्भिक्ष

अवधारणवाचक निपात (enclitic) **एवं प्रत्यय**

कुछ एकाक्षरी शब्द अवधारणवाचक निपात हैं, और अपने पूर्वज शब्द के साथ मिलाकर लिखे जाते है। ऐसी स्थिति मे निपात 'अ' से शुरू होने पर एवं शब्द का अन्त किसी स्वर से होने पर, निपात वाले 'अ' का साधारणतया लोप हो जाता है। यह लोप अनिवार्य रूप से हमेशा नही होता। अवधारणवाचक निपातो के उदाहरण ये है :—

अर=और; अक=कि; क (कै की जगह) = या; अस=वह, उसके द्वारा (स्त्री० पु०)।

अक अधिकतर क में परिवर्तित हो जाने के कारण कभी-कभी गलती से क (=या) समझ लिया जाता है। अस (=वह) शब्द श्री मेकेलिस्टर की व्याकरण में नही मिलता; परन्तु उसके अस्तित्व के वारे मे शंका को स्थान नही हो सकता। यह एक तृतीय पुरुषवाची सर्वनाम है जो अवधारणवाचक निपात के रूप मे बहुत सी भारतीय भाषाओं मे देखने मे आता है। उदाहरणार्थ, बुन्देली एव पूर्वी हिन्दी मे भी इसका प्रयोग पाया जाता है।

अर (=और) एव सभावनार्थ कृदन्त विभक्ति र को एक की जगह दूसरी समझने की गलती हो सकती है। उदा० कर-र=करके; कर्यो-र=किया और।

अवधारणवाचक निपातो के उदाहरण:—अर=और :

छोटक्यो बेटो चल्यो गयो अर आपको धन उडा दीनू=छुटका बेटा चला गया और अपना धन उडा दिया।

ऊँ–नै दूर–सूँ आतो देख्यो–र वाप–नै दया आ गई=उसे दूर से आते देखा और वाप-को दया आगई । अक=कि .

जो थे पूछो-क 'म्हे कांई करां ?' तो मैं या खूँ-छूँ-क औरां की साय करवा-नै सदा त्यार रहो-क जीँ सूँ थे काम-का मिनख व्है-जावो । =अगर तुम पूछो कि 'हम क्या करे ?' तो मै यह कहता हूँ कि औरो की सहायता करने के लिए सदा तैयार रहो, ताकि तुम काम के आदमी वन जाओ ।

क=या :

कांई थे जास्योक कोनै=तुम जाओगे या नही ?

वो रोटी खाई छै-क दूध पियो है ? =उसने रोटी खाई है या दूध पिया है ?

अस, असी—तृतीय पुरुषवाची सर्वनाम विभक्ति .

आप विचारी—अस ऐँडे रैवा—को धरम कोनै=(उसने (स्त्री०) सोचा कि अब यहाँ रहना ठीक नही है । यहाँ आरम्भिक अ का लोप नही हुआ ।

राणी पूछी-स 'वा कांई वात छै' ?=रानी ने पूछा कि 'वह बात क्या है !'

मा-नै-स खै कोनै=मा को तो वह कहता नही ।

असी—

ई नदी-मै हीरा मोती है-सी=इस नदी मे हीरे मोती है । तुल० कनै-सी-क =(उसके) नजदीक ।

जिद ऊँडै सासरै-स गँवार-ई-गँवार छा-ई=तव (उसकी) ससुराल मे तो गँवार ही गँवार थे ही ।

खाँ गयो-स=(वह) कहाँ गया ?

वो क्यो आयो नै-स=(वह) क्यो नही आया ?

मै-स तो ऐँडे-ई छो=मै (खुद) तो यहीँ था । यहाँ अस केवल भारदर्शक अर्थ मे प्रयुक्त हुआ है ।

एक और निपात क है जो परिमाणवाचक एवम् गुणवाचक (of kind) विशेषणो के साथ प्रयुक्त होता है । इसके लगने से अर्थ मे कोई फेर नही पडता; परन्तु काश्मीरी, बिहारी आदि सगोत्र भाषाओ मे उपलब्ध उदाहरणो से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मूलतः इसका अर्थ 'उसका' 'उनका' आदि होता रहा होगा । उदा० कतरो या कतरो-क स्त्री० कतरी या कतरी-क=कितनी-क ?

कस्यो या कस्यो-क, स्त्री० कस्यी या कस्यी-क। कतरी क का शाब्दिक अर्थ सभवत: 'उसमे का कितना' होता है।

संज्ञा-रूप

साधारणतया दो लिंग मिलते हैं। पुलिंग एव स्त्रीलिंग। कभी-कभी नपुंसक लिंग के रूप भी मिल जाते है, उदा० सुण्यूँ=सुना गया। इसका पुं० सुण्यो व स्त्री० सुणी होगे।

नामरूपो के विषय मे हिन्दुस्तानी मे प्रचलित पद्धति एव जयपुरी के रूपों मे बडा अन्तर पाया जाता है।

हिन्दुस्तानी मे तद्भव शब्द—आकारान्त होते है, उदा० घोडा, किन्तु जयपुरी मे ये—ओकारान्त होते है, उदा० घोडो। तिर्यक् एकवचन तथा प्रथमा बहुवचन रूप क्रमश: घोडा-को एव घोडा होते है। तिर्यक् बहुवचन—आँकारान्त होता है, उदा० घोडाँ। इन सज्ञाओ का एक और तिर्यक् एक० रूप होता है जो—ऐकारान्त होता है, उदा० घोड़ै। इसका सप्तमी के रूप मे व्यवहार होता है एव तृतीया के रूप मे भी। अ० उदा० घोड़ै=(क्रमश:) घोडे में, घोडे के द्वारा। दूसरी ओर तृतीया रूप का उपयोग प्रथमा की जगह भी होता है। उदा० पोतो खई या पोतै खई=पोता बोला या पोते के द्वारा बोला गया। इस प्रकार के शब्दो की नामरूपावली नीचे दी गई है। पोता=पोता शब्द के रूप श्री मेकेलिस्टर के अनुसार ही दिये गये है।

	एक०	बहु०
प्र०	पोतो	पोता
तृ०	पोतो, पोतै	पोता, पोताँ
सप्त०	पोतै	पोताँ
तिर्यक्०	पोता	पोताँ
सम्बो०	पोता	पोतो, पोतावो

तृतीया के साथ हिन्दुस्तानी की तरह-ने या-नै परसर्ग नही लगता, यह बात विशेष द्रष्टव्य है।

कारको के परसर्ग इस प्रकार है:—

द्वि०	नै	कै
चतु०	नै	कनै
प०	सूँ	सै
ष०	को	
सप्त०	मैं (=में), ऊपर या मालै (=पर)	

एवं नै व्युत्पत्ति की दृष्टि से षष्ठी परसर्ग को एवं नो के सप्तमी (पोतै की भाँति) रूप है। को जयपुरी मे व्यवहृत है तथा नो नजदीक की सम्बन्धित गुजराती मे मिलता है। कनै कै नै का सक्षिप्त रूप है। साधारणतया इससे 'नजदीक, पास' का अर्थबोध होता है; अतएव गतिसूचक क्रियाओं के पश्चात् इससे 'की ओर, को' का अर्थ निकलता है।

ष० परसर्ग को का एक तिर्यक् रूप का (पु०) एव की (स्त्री०) होता है। उदा० पोता-को घोडो=पोते का घोडा; पोता का घोडा-मालै=पोते के घोड़े-पर; पोता की वात=पोते की वात। को का एक सप्त० रूप कै भी होता है जिसका व्यवहार हमेशा तो नही, पर कभी-कभी सप्तमी मे आने वाले नाम-रूप के साथ होता है। उदा० आप-कै सासरै लुगाई कनै गयो=वह अपने ससुराल मे अपनी पत्नी के पास गया। पहले कहा जा चुका है कि नै एव मालै दोनो परसर्ग सप्तमी रूप है; अतएव जब कोई सम्बन्धवाची शब्द इनमे युक्त सज्ञा के साथ आता है तब उसका भी सप्तमी रूप हो जाता है। उदा० क-नै=कै-नै (दे० ऊपर), आपको माँथो अर नाक पाँणी-कै बारॉ-नै राखै-छै=वह अपना सिर और नाक पानी के बाहर रखता है; सैत-कै मालै=शहद के ऊपर। इसी प्रकार आगै=आगे तथा पाछै=पीछे भी वास्तव मे सप्तमी रूप ही है जिनका अर्थ क्रमश: अगले भाग मे तथा पिछले भाग मे होता है। उदा० थॉकै पाछै=तुम्हारे पीछे की ओर। जब कभी षष्ठी का परसर्ग लुप्त रहता है तब तत्सम्बन्धित सज्ञा शब्द अपने साधारण तिर्यक् रूप मे ही रहता है, उदा० मूँडा-कै आगै=मुँह के सामने की जगह, मूँडा आगै।

सप्तमी परसर्ग माळै का प्रयोग कभी-कभी षष्ठी के सप्तमी रूप के साथ होता है, उदा० सैत-कै माळै। कभी-कभी माळै सीधा तिर्यक् रूप के लगा दिया जाता है, उदा० पोता–माळै=पोते के ऊपर।

—ऐ-अन्तिक सप्तमी के कुछ अन्य उदाहरण ये है.—

अक्कल ठिकाणै आई=अकल ठिकाने आई;

जो वाँटो म्हारै वाँटै आवै=जो भाग मेरे भाग मे आवे;

बहुवचन—कुगैला=बुरी लतो मे।

लेखक को केवल ओ-कारान्त तद्भव शब्दो के–ऐ-अन्तिक सप्तमी परसर्गो का प्रयोग विशेष द्रष्टव्य मालूम पड़ा। वैसे अन्य सज्ञा शब्दों के साथ भी आँ–अन्तिक सप्तमी एकवचन रूप कही–कही मिल जाते है। उदा० वागॉ चालॉ=बाग मे चले; बजारॉ चालाँ=बाजार मे चले; दुकानाँ-मै रह्यो=दूकान मे रहा, पाछाँ (पाछै भी) पीछे की ओर। इनमें पाछाँ के अतिरिक्त अन्य सब उदाहरण

व्यञ्जनांत पुलिग संज्ञाओ के प्रथमा रूप के हैं। ईकारान्त स्त्रीलिग सज्ञाओं के उदाहरण ये है:—गोद्याँ=गोद मे, गो-डाळ्याँ=घुटनो के बल; गोदपोठ्याँ=पीठ पर, धरत्याँ=धरती पर, बेळ्याँ=जल्दी (समय पर), मैयाँ=जमीन पर, हतेळ्याँ=हथेली पर, मर्याँ पाछै=मरने के बाद (मर्याँ एक अप्रचलित क्रियात्मक संज्ञा मरी का तिर्यक् रूप है।)

—आँ-अन्तिक सप्तमी रूप सभी सज्ञाओ का नही मिलता। इसे छोड कर ओकारान्त तद्भव सज्ञा शब्दो के विभिन्न कारक रूप इस प्रकार मिलते है—

	एक०	बहु०	एक०	बहु०
प्र०	राजा	राजा	बाप=पिता	बाप
तृ०	राजा	राजाँ, राजाँ	बाप	बाप,बापाँ
ति०	राजा	राजा	बाप	बापाँ
	(स्त्री०) छोरी=लडकी		(स्त्री०) बात	
प्र०	छोरी	छोर्याँ	बात	बाताँ
तृ०	छोरी	छोर्याँ	बात	बाताँ
ति०	छोरी	छोर्याँ	बाताँ	बाताँ

विशेषण

नीचे के उदाहरणो से विशेषणो का प्रयोग स्पष्ट होता है—

एक चोखो मिनख=एक अच्छा आदमी।

एक चोखा मिनख को=एक अच्छे आदमी का

चोखा मिनख=अच्छे आदमी।

चोखा मिनखाँ को=अच्छे आदमियो का।

हिन्दुस्तानी की तरह तुलना करते समय पचमी का व्यवहार होता है। उदा० ऊँ-को भाई ऊँ-की भैण-सूँ लम्बो छै=उसका भाई उसकी बहिन से लम्बा है। कभी-कभी बीच का व्यवहार किया जाता है, उदा० वो मर्यो कीड़ो ऊँ बीच बड़ो अर भार्यो छो=वह मरा हुआ कीड़ा उससे बडा और भारी था।

सर्वनाम

प्रथम पुरुष का एक वचन सर्वनाम 'मैं' है। इसके दो बहुवचन रूप होते है, आपाँ (सबोधित व्यक्ति शामिल) तथा म्हे (सबोधित व्यक्ति रहित)। उदा० आप रसोइये से कहे 'हम आज रात को आठ बजे भोजन करेगे।' यदि आप 'आपाँ' का व्यवहार करे तो भोजन मे वह भी शामिल होगा, यदि 'म्हे' का तो नही। मुख्य-मुख्य सर्वनाम रूप ये है—

	एक०	बहु० (सबोधित शामिल)	बहु० (संबो. रहित)
प्र०	मैं	म्हे	आपाँ
तृ०	मैं	म्हे	आपाँ
द्वि–च०	मूँ–नै, म–नै, म्हारै	म्हाँ–नै, म्हाँ–कै	आपाँ–नै, आपणैं
ष०	म्हारो (–रा,–री,–रै), म्हाँवलो	म्हाँ–को	आपणू
ति०	मूँ, म, मैं	म्हाँ	आपाँ

ऊपर रूपो मे म्हारो का व्यवहार को–साधित अन्य षष्ठी रूपो की तरह ही होता है। वैसे आप का भी—तिर्यक् पुं० रूप–आपणा, सप्त० आपणैं, स्त्री० आपणी : एक बात द्रष्टव्य है : आपणू का अर्थ होता है हमारा (our) (तुम्हारा और मेरा) न कि अपना (own) (मेरा निज का)। श्री मेक्रेन्सिटर ने इसके प्रयोग के निम्नलिखित उदाहरण दिये हैं—

आपणू घोडो गयो=हमारा (our) घोडा गया।

आपणा छोरा यो काम कर्‌यो छै=हमारे (our) लडको ने यह काम किया है।

वो आपणा घोडा–माळै वैठ्यो=वह हमारे (our) घोडे पर वैठा।

वो आपणा छोराँ–नै फडावै छै=वह हमारे (our) लड़कों को पढ़ाता है।

द्वितीय पुरुष के मुख्य–मुख्य रूप ये है—

	एक०	बहु०
प्र०	तू	थे
तृ०	तृ	थे
द्वि०–च०	तू–नै, त–नै, थारै	थाँ–नै, थाँ–कै
प०	थारो (–रा,–री,–रै)	थाँ–को
ति०	तू, त, तैं	थाँ

षष्ठी रूप थारो का व्यवहार ठीक एक को–साधित षष्ठी रूप की तरह ही होता है।

पहले कहा जा चुका है कि द्वि०–च० परसर्ग नै एव कै वास्तव मे षष्ठी परसर्गों के सप्तमी रूप है। यहाँ यह बात पुन: द्रष्टव्य है कि द्वि०–च० रूप म्हारै एव थारै भी क्रमश: षष्ठी रूप म्हारो एव थारो के सप्तमी रूप ही है।

निजवाचक सर्वनाम आप है। इसके वारवर रूप चलते है, उदा० षष्ठी–आपको। परन्तु जव आपको का प्रयोग वाक्य के कर्ता का निर्देश करने के लिए

है, तब जयपुरी मे उनका व्यवहार वैकल्पिक होता है। उदा० छोटक्यो आपका बाप-नै खई=छोटे ने अपने बाप से कहा। इसके साथ वैकल्पिक प्रयोग यह भी मलता है, यथा-मैं उठस्यूँ अर म्हारा (न कि आपका) बाप-कनै जास्यूँ=मैं उठ कर अपने बाप के पास जाऊँगा। गुजराती मे यह 'आपको' का प्रयोग सर्वथा लुप्त हो चुका है।

निर्देशक सर्वनाम

तृतीय पुरुष के सर्वनामो को गिनकर निर्देशक सर्वनाम कुल ये हैं: यो=यह; वो या जो=वह (He, it, that)। जो के रूप ठीक सम्बन्धवाची जो की भाँति ही चलते हैं, जिसका उल्लेख उपयुक्त स्थल पर किया गया है। निर्देशक सर्वनाम के रूप मे इसका उदाहरण: छोरा छोर्‌याँ अर बड़ा आदम्याँ-कै चीरो जीँसूँ लगावै छै=लडके-लडकियो और बड़े आदमियो के टीका जिससे (गाय से) लगाया जाता है। यह प्रयोग पश्चिमी हिन्दी मे भी सर्वसाधारण है। उसी तरह सार्वनामिक क्रियाविशेषण जिद का भी 'तब' और 'जब' दोनो अर्थो मे व्यवहार होता है: जिद नाई रोवा लागग्यो जिद राणी खई=जब नाई रोने लगा तब रानी ने कहा।

इन सब निर्देशको के अपने-अपने स्त्रीलिंग रूप होते हैं। उदा० क्रम से-या, वा एवं जा, केवल प्रथमा एकवचन मे। अन्य एकवचन रूप तथा सभी बहुवचन रूपो का पुंलिंग स्त्रीलिंग, दोनो के लिए प्रयोग होता है।

यो एवं वो के मुख्य रूप ये हैं—

	यो		वो	
	एक०	बहु०	एक०	बहु०
प्र०	यो, या (स्त्री)	ये	वो, वा (स्त्री.)	वै
तृ०	यो, या ,,	ये या याँ	वो, वा ,,	वै या वाँ
द्वि० चतु०	ईं-नै,-कै	याँ-नै,-कै	ऊँ-नै,-कै	वाँ-नै,-कै
ष०	ईं-को	याँ-को	ऊँ-को	वाँ-को
सि०	ईं	याँ	ऊँ	वाँ

सम्बन्धवाचक सर्वनाम

सं० सर्व० जो मिलता है। इस रूप मे उसका व्यवहार निर्देशक सर्व० के रूप मे भी होता है। जो के विभिन्न रूप ये है—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	जो या ज्यो, (स्त्री) जा	जो या ज्यो
तृ०	जो या ज्यो (,,) जा	जो, ज्यो, जाँ, ज्याँ

द्वि० च० जीं–नै,–कै	जाँ–नै,–कै, ज्याँ–नै,–कै
एक वचन	बहुवचन
ष० जीं–को	जाँ–को, ज्याँ–को
ति० जीं	जाँ, ज्याँ

प्रश्नार्थक सर्वनाम

प्र० सर्व० ये है—

कुण=कौन, काँईं=क्या। इन दोनों के रूप नही बदलते। उदा० कुण-को!=किसका, काँईं-को? = किस (वस्तु) का। काँईं जयपुरी का अपना विशिष्ट शब्द है, जिसके कारण जयपुरी को कभी-कभी काँईं-कुँईं की बोली भी कहा जाता है।

क्रियापद

(सहायक क्रियाएँ तथा मुख्य क्रियाएँ)–मुख्य क्रियाओ के रूप इस प्रकार है—

वर्तमान

मै हूँ, इत्यादि

	एक०	बहु०
प्र०	छूँ	छाँ
द्वि०	छै	छो
तृ०	छै	छै

भूतकाल

मै था, इत्यादि

एक वचन पुं० छो	बहु० पुं० छा
,, स्त्री० छी	,, स्त्री० छी

ये रूप पुरुष के अनुसार नही बदलते। ह्वैबो क्रिया अपवाद है। उसके मुख्य-मुख्य रूप ये है—

क्रियार्थक संज्ञा—ह्वैबो, होवो, ह्वैणू या होणू=होना।

वर्तमान कृदन्त—ह्वैतो, होतो=होता हुआ।

भूत कृदन्त—हुयो=हुआ।

सभावनार्थ कृदन्त—ह्वैर, होर=होकर

क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त—ह्वैताँईं, होताँईं=होते ही।

कर्तृवाचक नाम—ह्वैत, होत, होवाहाळो, होवाळो, होणहार, होवाको, होतिव, या होतव=होने वाला।

साधारण वर्तमान

मैं हूँ, मैं होऊँ, इत्यादि

	एक०	बहु०
प्र०	होऊँ या हूँ	ह्वाँ
द्वि०	होय, ह्वै	हो
तृ०	होय, ह्वै	ह्वै

भविष्यत्

इसके दो प्रकार होते है

(१)

	एक वचन	बहु०
प्र०	होऊँ–ला, होऊँ–लो, हूँ ला या हूँ–लो	ह्वाँ–ला
द्वि०	होय–लो, हो–लो, ह्वै–लो	हो–ला
तृ०	होय–लो, हो–लो, ह्वै–लो	ह्वै–ला, हो–ला

(२)

प्र०	होस्यूँ	होस्याँ
द्वि०	होसी	होस्यो
तृ०	होसी	होसी

आज्ञार्थ

द्वि० एक—ह्वै, बहु०—हो,
आदरार्थ—ह्वीजो, ह्वैजो, या होजो।
अन्य कालरूप इन उपादानो से बना लिए जाते हैं।

मुख्य क्रिया

मुख्य क्रिया के क्रियारूप हिन्दुस्तानी क्रियारूपो से बहुत भिन्न हैं। सहायक क्रियाएँ तो भिन्न हैं ही, मूलकाल (radical tenses) एवं कृदन्तीकाल भी बिल्कुल भिन्न हैं।

हिन्दुस्तानी मे पुराना साधारण वर्तमान अब अपने असली अर्थ मे प्रयुक्त न होकर वर्तमान सभावनार्थ का अर्थ व्यक्त करता है। जयपुरी मे वह वर्तमान सभावनार्थ के साथ-साथ साधारण सामान्यार्थ वर्तमान का अर्थ भी व्यक्त करता है।

वर्तमान निश्चयार्थ, वर्तमान कृदत की सहायता से बनाये जाने के बदले सामान्यार्थ वर्तमान के साथ सहायक क्रिया लगाकर बनाया जाता है। उदाहरण-मारूँ-हूँ, न कि मारतो-हूँ।

अपूर्णभूत क्रियात्मक सज्ञा के एक ऐ-अन्तिक तिर्यक् रूप के साथ सहायक क्रिया लगाकर बनाया जाता है। उदा० मैं मारै-छो, न कि मै मारतो-छो=मै मार रहा था। अँगरेजी मे शब्दश: I was on striking तुलनीय-अँगरेजी I was a-striking.

भविष्यत् के दो प्रकार होते है। एक रूप तो हिन्दुस्तानी के अनुरूप–गा की जगह –ला या लो लगाकर बनाया जाता है। उदा० मै मारूँ-ला या मारूँ-लो=मैं मारूँगा। बहुवचन मे केवल-ला का व्यवहार होता है।

भविष्यत् का दूसरा प्रकार स्य या सि प्रत्यय लगाकर बनाया जाता है। यह रूप पुराने शौरसेनी प्राकृत भविष्यत् रूप का सीधा वशज है।

क्रियार्थक सज्ञा के अन्त मे -बो या णू रहता है। उदा० मारबो या मारणू।

सभावनार्थ कृदन्त के अन्त मे साधारणतया -अर लगता है; स्वर के बाद केवल -र लगता है। उदा० मारर=मारकर, देर=देकर।

इस - अर विभक्ति एव अवधारण-वाचक निपात (enclitic particle) अर या 'र=और का भेद स्पष्टतया समझ लेना चाहिये। इन दोनो मे कोई सम्बन्ध नही है। यह विभक्ति कर से क का लोप होकर बनी है; बाकी का भाग धातु के साथ जुड एक शब्द बन जाता है। इस प्रकार यह एक वास्तविक विभक्ति है न कि प्रत्यय।

सकर्मक क्रियाओ का भूतकाल हिन्दुस्तानी की ही भाँति कर्मणि वाच्य मे होता है, पर जयपुरी मे एक अन्तर नजर आता है . जयपुरी मे तृतीया के बदले द्वितीया के साथ – नै विभक्ति लगाई जाती है। उदा० हिन्दुस्तानी– उस-ने घोडे-को मारा।

जयपुरी – वो घोडा-नै मार्यो
अँगरेजी – by-him to – the – horse it – was – struck.

ऊपर निर्दिष्ट विशिष्टताओ को ध्यान मे रखते हुए मारबो = मारना क्रिया के विभिन्न रूप नीचे दिए जाते है:—

क्रियार्थक सज्ञा – मारबो (तिर्यक् मारबा) या मारणू (तिर्यक्–मारण) =मारना

वर्तमान कृदन्त—मारतो=मारता हुआ
भूत कृदन्त—मार्यो (तिर्यक् एक एव प्रथ० बहु० पु० मार्या, स्त्री० मारी)=मारा
सभावनार्थ कृदन्त–मारर=मार कर
क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त–मारताँ–ईं=मारते ही

कर्त्ता—मारबाह्ाळो, मारबाळो, मारारो, या मारा को = मारने वाला

सामान्य वर्तमान या संभावित वर्तमान मैं मारूं

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	मारूं	मारां
द्वि०	मारै	मारो
तृ०	मारै	मारै[1]

(१ तृतीय पुरुष बहु० रूप का सानुस्वार न होना द्रष्टव्य है ।)

भविष्यत् – मारूंगा

(१)	प्र०	मारूं–ला या – लो	मारां – ला
	द्वि०	मारै – लो	मारो – ला
	तृ०	मारै – ला	मारै – ला

(स्त्री० मारूं–ली, बहु० मारां – ली इत्यादि)

(२)	प्र०	मारस्यूं	मारस्यां
	द्वि०	मारसी	मारस्यो
	तृ०	मारसी	मारसी

(इस प्रकार मे स्त्री – पु ० दोनो के रूप एक सदृश ही होते है ।)

निश्चयार्थ वर्तमान मारता हूं

	एक०	बहु०
प्र०	मारूं – छूं	मारां – छां
द्वि०	मारै – छै	मारो – छो
तृ०	मारै – छै	मारै – छै

अपूर्ण भूत – मार रहा था

प्र०	मै मारै – छो	म्हे मारै – छा
द्वि०	तू मारै – छो	थे मारै – छा
तृ०	वो मारै – छो	वै मारै – छा

(स्त्री० एक० एव बहु० मारै – छी)

भूत – मारा

प्र०	मै मार्यो	म्हे मार्यो
द्वि०	तू मार्यो	थे मार्यो
तृ०	वो मार्यो	वै मार्यो

अन्य रूप ये है :—

पूर्ण भूत – मैं मार्‌यो छै = मैने मारा है
परोक्ष भूत—मैं मार्‌यो छो = मैने मारा था
सदिग्ध भूत - जै मैं मारतो = यदि मै मारता
इनके अतिरिक्त हिन्दुस्तानी के अनुरूप ये रूप भी है—
मैं मारतो–हूँ = मैं मारता होऊँ
मैं मारतो-हूँ-लो = मैं मारता होऊँगा
जै मैं मारतो-ह्वैतो = यदि मै मारता - होता
मैं मार्‌यो ह्वै = मैंने मारा हो
मैं मार्‌यो ह्वै-लो = मै ने मारा होगा
जै मैं मार्‌यो – ह्वैतो – यदि मै ने मारा होता
कुछ अपवादरूप उदाहरण लेखक की नजर मे आये है :—

भूत-कृदन्त के अन्त मे यो रहता है। एक - दो उदाहरणो मे यह लुप्त देखा गया है। उदा० लाग्गो, साथ ही साथ लाग्यो=लग गया।

श्री मेकेलिस्टर द्वारा दिये गये उदाहरणो मे "खैछै" शब्द बार-बार आया है। इसका अर्थ 'उसने कहा' जान पडता है। यह "कहै छै" का विकृत रूप-सा मालूम पडता है जो ऐतिहासिक वर्तमान (historical present) का काम देता है। यह बात विशेष द्रष्टव्य है कि नीमाडी मे निरपवाद रूप से सहायक क्रिया का महाप्राणत्व लुप्त हो जाता है। (उदाहरणो के लिए आगे देखिये)।

देबो = देना से एक आज्ञार्थ रूप द्यो एवं भूत कृदन्त दीनू या दीयो मिलते हैं। उसी प्रकार लेबो = लेना से क्रमशः ल्यो, लीनू या लीयो उपलब्ध हैं। करबो से नियमानुसार भूतकृदन्त कर्‌यो मिलता है। पर जाबो=जाना से भूतकृदन्त गियो, ग्यो या गो मिलते है।

कहना व पूछना क्रियाओ मे सम्बोधित व्यक्ति पंचमी मे न रक्खे जाकर चतुर्थी मे रक्खे जाते है। उदा० बाप नै खई = बाप - से कहा : ऊँ-नै पूछी= उससे पूछा। भूतकृदन्त का स्त्री० रूप 'बात' (अव्यक्त) के अनुरूप होना द्रष्टव्य है।

सयुक्त क्रियाएँ लगभग हिन्दुस्तानी के सदृश ही है। नाँखबो का प्रयोग हिन्दी डालना की तरह ही किया जाता है। उदा० छोरॉं – नै मार-नाँख=बच्चो को मार-डाल।

आवृत्तिसूचक रूप क्रियार्थक सज्ञाओं के साथ बनते हैं। उदा० करबो करजे=हिन्दी किया कीजिए। आरम्भदर्शक रूप (Inceptive) क्रियार्थक सज्ञा के तिर्यक् रूप से बनाए जाते है, उदा० रैंवा लाग्यो=रहने लगा।

आबो=आना क्रिया से प्रायः अन्य क्रियाओं के साथ सयुक्त रूप बनाए जाते हैं। उनके बीच मे य जोड दिया जाता है। उदा० ल्यावो=ले आओ, जीयायो=जी आया, लाद्यायो=पाया गया।

प्रेरणार्थक रूप हिन्दुस्तानी की तरह बनते हैं। पिटवो का प्रेर० रूप पीटवो विशेष द्रष्टव्य है।

निषेधसूचक रूप साधारणतया कोनै है। उदा० कोनै=(मैं) नही हूँ। कोनै रोऊँ=मैं नही रोता। साधारणतया को क्रिया के पहले आता है एव नै पश्चात् उदा० कोई--आदमी को-देतो-नै=कोई भी आदमी नहीं देता था। अकेले 'को' का प्रयोग हकारात्मक वाक्यो मे स्वार्थे (pleonastically) भी होता है। उदा० श्री मेकेलिस्टर के उद्धरणो मे पृ० ४८-४९ पर नाई को बोल्यो=नाई-ने कहा, नाई-दुकान मैं उतरग्यो=नाई दूकान मे उतर गया। अन्य बोलियो से तुलना करने पर, को, कोई से सम्बन्धित नजर आता है, और अर्थसाम्य मे अँगरेजी (at all) से तुलनीय है।

उत्तर-पूर्वी राजस्थानी

उपभाषाएँ

जयपुरी धीरे-धीरे पश्चिमी हिन्दी मे अन्तर्हित होने के पहले उत्तर-पूर्वी राजस्थानी का स्वरूप लेती है। इसकी दो उपभाषाएँ है। एक तो मेवाती, जिसके मार्फत होती हुई जयपुरी, ब्रजभाषा मे अन्तर्हित हो जाती है, दूसरी अहीरवाटी जिससे मेवाती के मार्फत होकर जयपुरी बाँगरू मे अन्तर्हित हो जाती है।

इनके बोलने वालो की सख्याएँ इस प्रकार बताई जाती है:—

मेवाती	११, २१, १५४
अहीरवाटी	४, ४८, ९४५
कुल	१५, ७०, ०९९

मेवाती का मुख्य केन्द्र राजपूताना का अलवर स्टेट कहा जा सकता है और अहीरवाटी का पजाब मे गुडगाँव जिले मे स्थित रेवाडी। दोनो उपभाषाएँ मिश्रित से प्रकार की है। आगे उनका अलग-अलग विवरण दिया जाता है।

मेवाती-नामकरण

वास्तव मे मेवाती मेवो के प्रदेश मेवात की भाषा का नाम है, पर प्रसार में वह इस प्रदेश के बाहर तक फैली हुई है। मेवात अलवर स्टेट का केवल एक हिस्सा है, पर मेवाती सारे अलवर मे बोली जाती है। मेवाती भरतपुर स्टेट के उत्तर-पश्चिम तथा पजाबी के गुडगाँव जिले के दक्षिण-पूर्व मे भी बोली जाती है। ये दोनो क्षेत्र मेवात के अन्तर्गत ही है। अलवर रियासत के उत्तर-पश्चिम मे जयपुर स्टेट की निजामत कोटकासिम तथा नाभा स्टेट की निजामत बावल स्थित है। यहाँ भी मेवाती बोली जाती है। जयपुर एव नाभा रियासतो के निवासी अपनी मेवाती को 'बीघोता की बोली' कहते है, इसका ठीक-ठीक तात्पर्य मै पता नही लगा सका।

वास्तविक मेवात प्रदेश की परिभाषा 'अलवर गजेटियर' (पृ० १६७-८) मे इस प्रकार दी गई है:—

"प्राचीन मेवात देश मोटे तौर पर एक ऐसी रेखा के अन्तर्गत आ जाता है जो उत्तर मे कुछ टेडे-मेढ़े रास्ते से भरतपुर स्थित डीग से आरंभ होकर रेवाड़ी के अक्षांश के कुछ ऊपर तक जाती है। वहाँ से पश्चिम मे रेवाडी के नीचे की ओर मुडकर अलवर शहर से ६ मील पश्चिम की ओर के देशान्तर तक होती हुई अलवर राज्य-स्थित बाडा नदी के दक्षिण तक चली जाती है। फिर यह रेखा पूर्व की ओर घूम कर पुन. डीग से मिल जाती है, और मेवाती प्रदेश की दक्षिणी सीमा बन जाती है।"

भाषा-सीमाएँ

मेवाती के पूर्व मे भरतपुर एवं पूर्वी गुडगाँव की ब्रज, तथा दक्षिण मे जयपुर रियासत की डाँग बोलियाँ हैं। उत्तर मे पश्चिमी गुड़गाँव की अहीरवाटी है। दक्षिण-पश्चिम मे जयपुरी की तोरावाटी बोली तथा उत्तर-पश्चिम मे पटियाला की नारनौल निजामत की मिश्रित बोली मिलती है। इस मिश्रित बोली के आगे शेखावाटी बोली का क्षेत्र आ जाता है। नारनौल की बोली की चर्चा अहीरवाटी के अन्तर्गत की जाएगी।

बोलियाँ

मेवाती स्वय एक सीमास्थित उपभाषा है। वास्तव मे वह हिन्दी की उपभाषा ब्रज मे अन्तर्हित होती हुई राजस्थानी का एक रूप है। भिन्न-भिन्न अचलो मे इसके रूप मे थोड़ा-बहुत अन्तर पाया जाता है। अलवर मे इसके चार विभेद बतलाए जाते है, स्टैण्डर्ड (परिनिष्ठित) मेवाती, राठी मेवाती, नहेड़ा मेवाती तथा कठेर मेवाती। कठेर मेवाती ही भरतपुर की मेवाती भी है। कठेर प्रदेश के अन्तर्गत भरतपुर का पश्चिमोत्तर प्रदेश तथा उससे सटा अलवर के दक्षिण-पूर्व का कुछ हिस्सा आ जाता है। कठेर मेवाती मे ब्रजभाषा का मिश्रण है, यह अनुमान उसकी स्थिति से सहज ही लग सकता है। गुड़गाँव की मेवाती का भी वही स्वरूप है। नहेड़ा अलवर रियासत के दक्षिण-पश्चिमी भाग मे स्थित थानागाजी तहसील के पश्चिमी हिस्से का नाम है। राठ (वर्बर) प्रदेश चौहान राजपूतों का निवास-स्थान है और पश्चिमोत्तर सीमा पर स्थित है। राठी मेवाती, जयपुर के कोटकासिम की एवं नाभा के बावल की मेवाती मे अहीर-वाटी का मिश्रण पाया जाता है। अलवर रियासत के बाकी के हिस्से मे परिनिष्ठित (स्टैण्डर्ड) मेवाती बोली जाती है। अलवर रियासत के सरकारी सूत्रो से मेवाती की विभिन्न विभाषाओ के बोलने वालों के निम्नलिखित आँकड़े मिलते हैं:—

स्टैण्डर्ड मेवाती	२,५३,८००
राठी मेवाती	२,२२,२००

नहेड़ा मेवाती	१,६६,३००
कठेर मेवाती	१,१३,३००
कुल	७,५८,६००

भरतपुर मे कठेर मेवाती-भाषियों की संख्या ८०,००० है। ये नगर, गोपालगढ, पहाड़ी एव कामा हिस्सो मे वसे हुए हैं। इस प्रकार कठेर मेवाती की कुल सख्या १,९३,३०० मानी जा सकती है। आगे इन वोलियो का और कही उल्लेख नही होगा। ये सब मिश्रित वोलियाँ हैं जिनका कोई महत्त्व नही है।

वोलने वालों की संख्या

मेवाती वोलने वालो की प्रदेशवार संख्याएँ नीचे दी जाती हैं। नाभा रियासत वाले वावल की मेवाती के अलग आँकड़े नही दे सके, उन्होने उसे अहीरवाटी के आँकडों मे ही शामिल कर लिया है। लेखक के अनुसार इनकी संख्या अनुमानत. २०,००० के लगभग गिन ली गई है।

राजपूताना—		
अलवर	७,५८,६००	
भरतपुर	८०,०००	
जयपुर स्थित कोटकासिम	१७,०५४	८,५५,६५४
पंजाव—		
गुड़गाँव	२,४५,५००	
नाभा-स्थित वावल	२०,०००	२,६५,५००
	कुल :	११,२१,१५४

परदेश-स्थित मेवाती-भाषियो की संख्याएँ उपलब्ध नही हैं। कहा जाता है कि दिल्ली जिले में १८,६९४ मेवाती-भाषी हैं, जो संभवतः अहीरवाटी वोलने वाले हो सकते हैं, और युक्तप्रान्त स्थित जालौन मे उनकी संख्या लगभग ८०० है।

साहित्य

मेवाती मे रचित कोई साहित्य अव तक मेरी जानकारी में नही आया।

अधिकृत सूत्र

रेव० मेकेलिस्टर ने अपनी सुन्दर पुस्तक 'जयपुर रियासत की वोलियो के नमूने' में वीघोता की वोली, अर्थात् वावल एवं कोटकासिम की मेवाती के कई

नमूने तथा उनकी सक्षिप्त व्याकरण दी है। मध्य-पूर्वी राजस्थानी के विवेचन मे सर्वत्र इस पुस्तक से अनेक उद्धरण लिए गये है। केवल एक जगह और मेवाती का उल्लेख मिलता है। गुड़गाँव गजेटियर के भाषा-विभाग मे कुछ पक्तियाँ मेवाती पर भी देखने मे आई।

व्याकरण

मेवाती की व्याकरण का निम्नलिखित विवेचन कुछ तो श्री मेकेलिस्टर की दी हुई व्याकरण और कुछ नमूनो पर आधारित है। विवेचन बहुत ही सक्षेप मे है। मुख्यत: उनमे जयपुरी और मेवाती का अन्तर दिखाने वाले मुद्दो की ही चर्चा की गई है।

नामरूप

सज्ञा-नामरूप लगभग जयपुरी रूपो का ही अनुसरण करते है। अन्तर केवल इतना ही है. तृतीया मे लगाने के साथ-साथ नै परसर्ग द्वितीया-चतुर्थी मे भी लग सकता है, और पचमी परसर्ग सूँ के बदले प्राय· तैँ मिलता है।

उदाहरणस्वरूप 'घोडो' शब्द की नामरूपावली दी जाती है।

	एक वचन	बहुवचन
प्र०	घोडो	घोडा
तृ०	घोडो, घोडैं, घोडा-नै	घोड़ा, घोडाँ, घोडाँ-नै
द्वि०	घोडा-नै, -कै	घोडाँ-नै,-कै
च०	घोडा-नै	घोडाँ-नै
पं०	घोडा·तैँ	घोडाँ-तैँ
ष०	घोडा-को (का, कै, की)	घोडाँ-को, इत्यादि
स०	घोडैं, घोडा-मैँ	घोडा-मैँ
स०	घोडा	घोडो

अन्य उदाहरण देना अनावश्यक है। जयपुरी व्याकरण मे सभी आवश्यक बाते मिल जाती है।

षष्ठी के परसर्ग को, का, कै एव की बिलकुल जयपुरी के सदृश ही है।

विशेषण

हिन्दी मे विशेषण-आ-कारान्त होते है एव जयपुरी मे -ओकारान्त। मेवाती मे वे यो-कारान्त होते है। उदा० आछ्यो=अच्छा; भारयो=भारी। कही-कही नपुंसक लिंग के कुछ अवशेष भी मिल जाते है, उदा० सुण्यूँ=सुना गया।

सर्वनाम

प्रथम एव द्वितीय पुरुष के व्यक्तिवाचक सर्वनाम रूप इस प्रकार हैं.—

		मैं	तू
एक०	प्र०	मैं	तू
	तृ०	मैं	तै, तू
	ति०	मुज, मूं, मेरै	तुज, तूं, तेरै
	ष०	मेरी	तेरो
वहु०	प्र०	हम, हमा	तम, तुम, थम
	ति०	हम, म्हारै	तम, थारै
	प०	म्हारो	थारो

संबोधित व्यक्ति शामिल वाले 'हम' के अर्थ मे प्रयुक्त 'आप' का प्रयोग मेवाती मे दृष्टिगोचर नही हुआ ।

'अपना' के अर्थ मे आपणू एव तिर्यक् रूप आपणा मिलते है ।

निर्देशक सर्वनाम यो=यह एव वो=वह (He, it, that) है । जयपुरी की ही भाँति प्र० एक० का एक स्त्रीलिंगी रूप भी होता है; उदा० या अथवा आ=यह; वा=वह । रूपावली इस प्रकार है:—

एकवचन	यह	वह
प्र०	यो, (स्त्री० या, आ)	वो, बो, वोह, (स्त्री० वा)
तृ०	यो, (स्त्री० या, आ) ई, ऐं	वो, बो (स्त्री० वा) वीं, वैं
ति०	ऐं	वैं, वैंह
प०	ऐं -को	वैं -को, वैंह-को
वहुवचन		
प्र०	ये, यै	वे, वै, वैह
ति०	इन	उन
प०	इन-को	उन-को

सम्बन्धवाची एवं प्रश्नार्थक सर्वनामो की रूपावली यो है —

		जो	कौन
एक०	प्र०	जो, ज्यो	कौण
	ति०	झैं. जैह	कैंह (प० किन-तैं)
वहु०	प्र०	जो, ज्यो	कौण
	ति०	जिन	किन

राजस्थानी की अन्य वोलियो की तरह मेवाती मे भी सवघवाचक सर्वनामो से निर्देशक की सी ध्वनि निकलती है ।

नपुं० प्रश्नार्थक सर्वनाम–के=क्या है। इसका तिर्यक् एक० क्याँआँ है।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम कोई-कोई भी है। उसका तिर्यक् रूप कह या कहीं है। 'कुछ भी' का द्योतक 'किमइँ' है।

ऊपर के रूपों से स्पष्ट है कि मेवाती के सर्वनाम रूपों का पश्चिमी हिन्दी बहुत साम्य है।

क्रिया रूप

सहायक एवं मुख्य क्रियाएँ

वर्तमान—मैं हूँ, इत्यादि

	एक०	बहु०
प्र०	हूँ	हाँ
द्वि०	है, हा	हो
तृ०	है	है

भूतकाल–मैं था, इत्यादि

	एक०		बहु०	
	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
प्र०	हो	ही	हा	ही
द्वि०	या	या	या	या
	हो			
तृ०	या थो	थी	था	थी

'होना' क्रिया के मुख्य रूप ये है:—

क्रियार्थक संज्ञा—ह्वैबो, होबो, ह्वैणू=होना
वर्तमान कृदंत—होतो, ह्वैतो=होता
भूत कृदंत–हुयो=हुआ
पूर्वकालिक कृदंत—हो-कर, होर=होकर
कर्त्ता—ह्वैतू, ह्वैणहार

साधारण वर्तमान–मैं होऊँ, इत्यादि

	एक०	बहु०
प्र०	होऊँ, हूँ	ह्वाँ
द्वि०	ह्वै, ह्वा	हो
तृ०	ह्वै, ह्वा	

तृतीय पुरुष बहु० का सानुस्वार होना विशेष द्रष्टव्य है। यह जयपुरी से भिन्नता एवं पश्चिमी हिन्दी से साम्य दिखाता है।

निश्चयार्थक वर्तमान —हूँ-हूँ=होता हूँ
अपूर्णभूत— हुँ—हो=होता था
भविष्यत्— हूँ—गो=होऊँगा या हूँगा

मुख्य क्रिया

मुख्य-मुख्य रूप ये है —

क्रियार्थक सज्ञा—मारबो, मारणू=मारना

वर्तमान कृदत—मारतो=मारता

भूत कृदन्त—मारचो=मारा

पूर्वकालिक कृदन्त—मार-कर, मार'र, मार-करहाणी=मार कर

कर्त्ता— मारण—वाळो

साधारण वर्तमान—मै मारूँ, इत्यादि

	एक०	बहु०
प्र०	मारूँ	मारॉं
द्वि०	मारै, मारा	मारो
तृ०	मारै, मारा	मारै

निश्चयार्थक वर्तमान—मै मारता हूँ, इत्यादि

प्र०	मारूँ—हूँ	मारॉं—हॉं
द्वि०	मारा—है	मारो—हो
तृ०	मारै—है	मारैं—हैं

अपूर्व भूत—मै मारता था, इत्यादि

यह कालरूप, हमेशा की तरह, मुख्य क्रिया के भूत काल रूप के साथ क्रियार्थक सज्ञा का-ऐ-अन्तिक रूप लगाकर बनाया जाता है। यह रूप सभी पुरुषो मे लागू होता है।

	एक०		बहु०	
	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
१,२,३,	मारै-हो	मारै-ही	मारैं-हा	मारै ही

भविष्यत्

गो लगाकर वनाया जाता है जो उत्तरी जयपुरी के अनुरूप है। यह गो हिन्दी के गा से तुलनीय है।

	एक०		बहु०	
	पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
१	मारूँ-गो	मारूँ-गी	मारॉ-गा	मारॉ-गी
२	मारूँ-गो	मारॉ-गी	मारो-गा	मारो-गी
३	मार-गो	मारै-गी	मारैं-गा	मारैं-गी

भूतकाल

भूत०—मारचो, स्त्री० मारी, वहु० मारचा, स्त्री० मारी, साधारण नियमानुसार।

संदिग्ध भूतकाल

मारतो=(यदि मैं) मारता, इत्यादि

अन्य काल रूप ऊपर दिये गये उपादानों से जयपुरी के सदृश ही वनते हैं।

प्रायः अन्य सभी वातो मे मेवाती का जयपुरी से वहुत साम्य है।

अहीरवाटी : साधारण विवरण

अहीरवाटी, हीरवाटी तथा अहीरवाल (अहीर प्रदेश की भाषा) के नाम से भी प्रचलित है। यह गुडगाँव जिले के पश्चिम मे (मय पटौदी रियासत के), बोली जाती है। यह दिल्ली जिले मे नजफगढ के आसपास डाबर प्रदेश मे भी बोली जाती है जहाँ इसे (सही रूप से) मेवाती कहा जाता है। उसी दिशा मे यह रोहतक के दक्षिण स्थित झज्जर तहसील तक बोली जाती है। और आगे उत्तर मे पश्चिमी हिन्दी की बाँगरू बोली पाई जाती है। दिल्ली तथा रोहतक की अहीरवाटी मे बहुत अशो मे बाँगरू का मिश्रण है।

अहीरवाटी के पूर्व मे, गुडगाँव के मध्य भाग तथा गुडगाँव के दक्षिण-स्थित अलवर रियासत मे मेवाती बोली जाती है, जिसका अहीरवाटी एक प्रकार मात्र है। अहीरवाटी का केन्द्र पश्चिम गुडगाँव स्थित रेवाडी माना जा सकता है।

गुडगाँव जिले के पश्चिम मे नाभा रियासत का दक्षिणी भाग स्थित है। यहाँ भी अहीरवाटी बोली जाती है; केवल उसके उत्तर के प्रदेश मे बाँगरू मिलती है। दक्षिणी नाभा के पश्चिम तथा दक्षिण मे पश्चिमी अलवर से सटी हुई पटियाला की नारनौल निजामत है। नारनौल के उत्तर मे जिन्द की दादरी निजामत तथा पश्चिम मे जयपुर रियासत का शेखावाटी प्रदेश है। उसके दक्षिण मे जयपुर का तोरावाटी प्रदेश स्थित है। जिन्द-शासित दादरी मे मुख्यतया बागडी बोली जाती है। शेखावाटी मे मारवाडी का एक रूप बोला जाता है; तोरावाटी मे जयपुरी का एक रूप है, और अलवर मे मेवाती और दक्षिणी नाभा मे अहीर-वाटी। पटियाला-शासित नारनौल की भाषा भी अहीरवाटी है, स्वभावत: ही उसमे चारो ओर की बोलियो का काफी परिमाण मे मिश्रण है।

स्पष्ट है कि अहीरवाटी मेवाती एव तीन अन्य बोलियो—बाँगरू, बागडी व शेखावाटी के बीच की संयोजन–कडी है। फिर भी उसकी एक विशिष्टता खास द्रष्टव्य है, जो जहाँ भी वह बोली जाती है, बराबर पाई जाती है; यह है उसकी मुख्य क्रिया का रूप। अन्य बातो मे, प्रदेशानुसार, पडोस की बोलियो के प्रभाव से उसके कई भिन्न-भिन्न स्थानीय रूप हुए मिलते है। फिर भी उसका हार्द सर्वत्र मेवाती ही है और उसे राजस्थानी की उपभाषा मेवाती का एक प्रकार मानना ही ठीक होगा।

आधुनिक काल मे अहीर या हीर कही जाती आभीर जाति एक समय मे पश्चिमी भारत की एक बडी महत्त्वपूर्ण जाति थी। इलाहाबाद स्थित समुद्रगुप्त (४ थी शती ई०) के प्रसिद्ध प्रस्तर-स्तम्भ पर उत्कीर्ण विजित राष्ट्रो की नामावली मे इनका भी उल्लेख मिलता है। ८ वी शती मे जब काठी लोग गुजरात मे आये तब उन्होने वहाँ अहीरो का आधिपत्य पाया।

अहीर खानदेश और नीमाड के भी स्वामी थे और कहा जाता है कि आसा नाम के एक गडरिये मुखिया ने मुसलमानो के हमले के समय नीमाड मे आसीरगढ़ नाम का किला बनाया था। टोलेमी (Ptolamy) उनका ABıpca नाम से उल्लेख करता है और ईसा की प्रारम्भिक शताब्दी मे पूर्व की ओर नेपाल तक अहीर राजाओ का राज्य था। इस प्रकार की स्थिति मे पश्चिमी भारत के कई भागो मे आभीरो पर आश्रित नाम वाली बोलियो का पाया जाना कोई आश्चर्य की बात नही है। गुजरात के कई भागो मे आज भी एक अहीर बोली बोलने वाले जन बसे हुए है। मालवा मे बोली जाती राजस्थानी की उपभाषा (पजाबी की मालवाई बोली से भिन्न) मालवी कही जाती है, पर उसका दूसरा नाम अहीरी भी है। इसके अतिरिक्त साधारणतया खानदेशी के नाम से प्रचलित अर्द्ध-भीली-सा, गुजराती का एक विचित्र रूप भी अहीराणी कहा जाता है। यही नही, खानदेश एव गुडगाँव के अहीरवाटी प्रदेश के बीच जगली पर्वतीय प्रदेश मे रहने वाले भीलो की भाषा भी बहुत अ शो मे खानदेश की भाषा के कुल की ही जान पड़ती है। ध्वनिशास्त्र के ज्ञात नियमो के अनुसार भिल्ल या भील शब्द को प्राचीन आभीर शब्द से एक पुराना बिगडा हुआ रूप मानना भी नितान्त असभव प्रतीत नही होता। अपनी स्वतन्त्र भाषा रखने वाले अहीरो की पूर्वचर्चित सब बस्तिया अनेक शताब्दियो से एक दूसरे से इतनी दूर होती चली गई है कि आधुनिक काल मे उनका एक ही भाषा बोलते रहने की आशा रखना ठीक नही होगा। वास्तव मे ऐसा है भी नही। फिर भी अहीरवाटी एव खानदेशी मे कुछ ऐसी महत्वपूर्ण समस्याए दृष्टिगोचर होती है, जो बरबस हमारा ध्यान आकर्षित करती है। इनमे सबसे महत्वपूर्ण 'सू'=मै हू का प्रयोग है जो अहीर-वाटी एव तत्सबधित बोलियो की खास विशिष्टता होने के साथ-साथ खानदेशी मे भी पाया जाता है।

बोलने वालों की संख्या

अहीरवाटी बोलने वालो की सख्याए निम्नलिखित बतलाई जाती है:—

गुडगाँव	१,५६,६००
पाटौदी	१६,०००
दिल्ली (मेवाती नाम से दर्ज)	१८,६६४
रोहतक (झज्जर)	७१,४७०

दक्षिण नाभा	४३,८८१[1]
पटियाला शासित नारनौल	१,३६,०००
(बागडी मेवाती नाम से दर्ज)	
	कुल ४,४८,६४५

साहित्य अधिकृत सूत्र आदि

अहीरवाटी मे रचित कोई ग्रन्थ मेरी जानकारी मे नही है, और न अबसे पहले इस भाषा की चर्चा ही कही मिलती है।

लेखन का माध्यम

अहीरवाटी तीन लिपियो मे लिखी मिलती है· देवनागरी, गुरमुखी एव फारसी। लिपि लिखने वाले के अनुसार बदलती है, उदा० पंजाब की सिक्ख रियासत नाभा के नमूने गुरमुखी मे लिखे मिले है, व्रज–बहुल गुडगाँव के नमूने देवनागरी मे मिले है, और रोहतक के नमूने फारसी लिपि मे आबद्ध है। हमने अहीरवाटी के नमूने देवनागरी एव फारसी लिपि मे दिये है। गुरमुखी वाले नमूने छापने की आवश्यकता प्रतीत नही हुई।

व्याकरण

अहीरवाटी और मेवाती के व्याकरणो मे नही–सा अन्तर है। अहीरवाटी, मेवाती तथा दिल्ली, रोहतक, पूर्व हिसार करनाल में बोली जाती पश्चिमी हिन्दी की बोली बाँगरू के बीच की कडी है। जैसा कि कहा जा चुका है, दक्षिण रोहतक एव दिल्ली के डाबर प्रदेश की बोली वास्तविक अहीरवाटी है। अतएव कुछ अंशो मे उसका बाँगरू से साम्य होना स्वाभाविक है। उदा० खासकर मेवाती हूँ=मै हूँ की जगह सूँ का प्रयोग। हमने गुडगाँव की अहीरवाटी को परिनिष्ठित (स्टैण्डर्ड) माना है।

अकारान्त सबल (Strong) सज्ञाशब्दो के प्रथमा एकवचन रूप के अत मे –ओ आता है, तथा एक तिर्यक् एकवचन रूप के अन्त मे –आ। यह मेवाती के अनुरूप है, क्योकि बाँगरू मे ये रूप क्रमश –आ ए तथा –ए–अन्तिक पाए जाते है। यही नियम विशेषणो तथा षष्ठी–प्रत्ययो के विषय मे लागू पडता है। हाँ, यह मान लिया जाता है कि जब उनका व्यवहार सप्तमी रूप सज्ञाओ के साथ होता है, तब राजस्थानी के साधारण नियमानुसार वे -ए अन्तिक होते हैं, न कि -आ -अन्तिक; उदा० म्हारे घरी (न कि म्हारा) =हमारे घर मे। इस प्रकार के संज्ञाशब्दो का सप्तमी एकवचन–ए या ऐ-साधित होता है, उदा० घोडे या घोडै=घोडे मे। व्यञ्जनान्त पुलिंग सज्ञाओ का सप्तमी ई–साधित होता है,

[1]नाभा के आँकडे ६३,८८१ बताए गये थे, जिसमे से २०,००० मेवाती के अन्तर्गत गिने गये हैं।

उदा० घरी=घर मे। चतुर्थी का साधारण प्रत्यय नै या ने है। इसी का व्यवहार तृतीया व्यक्त करने के लिए भी होता है। षष्ठी का प्रत्यय मेवाती की ही तरह 'को' होता है। भविष्यत् कर्मणि कृदन्त के पहले तृतीया काम मे लाई जाती है। इस कृदन्त का रूप क्रियार्थक संज्ञा के सदृश होता है, उदा० तूँ -नैं करणो थो=तुझे करना था। षष्ठीरूप के सप्तमी का चतुर्थी के लिए व्यवहार विशेष रूप से द्रष्टव्य है, उदा० मेरै=मुझे।

कही कही एकाध नपुसक लिंग के उदाहरण भी मिलते है, उदा० दीणूँ= जो देना है।

पुरुषवाचक सर्वनाम मेवाती के सदृश ही है। म-नें तथा मूँ-नें=मुझमे दोनो का व्यवहार मिलता है। सर्वनामो की तृतीया बनाने के लिए नें का यह उपयोग द्रष्टव्य है। तुम्हारो का अर्थ तुम्हारा तथा अपणू या अपणो का अर्थ अपना होता है, जिनका पु० तिर्यक् रूप अपणा होता है।

निर्देशक सर्वनाम यो या योह (स्त्री० या)=यह होते है। इनके तिर्यक् एकवचन ऐंह या अँह तथा बहुवचन इन होते है। इन प्राय: एकवचन के अर्थ मे भी प्रयुक्त होता है। दूर निर्देशक वो या वोह (स्त्री० वा)=वह है। इनका तिर्यक् एकवचन वैह, वँह या ऊँ, तिर्यक् बहुवचन उन हैं। उन प्राय: एकवचन के अर्थ मे भी प्रयुक्त होता है। सम्बन्धवाची सर्वनाम का प्राय. निर्देशक के अर्थ मे व्यवहार यहाँ भी मिलता है। उदा० जब=तब और जबकि दोनो अर्थो मे प्रयुक्त होता है।

अन्य विषयो मे सर्वनाम मेवाती के ही अनुरूप मिलते है। जो एव कौण के तिर्यक् एकवचन सभवत क्रमश: जैह, या जँह तथा कैह या कँह होगे, पर इनके उदाहरण मुझे नही मिले।

क्रिया-प्रकरण मे केवल मुख्य क्रियारूप द्रष्टव्य हैं। वर्तमान रूप यो हैं:--

	एक०	बहु०
१	सूँ	साँ
२	सा, सै	सो या सैं
३	सै	सैं

भूतरूप थो=था, स्त्री० थी०, पुं० बहु० था होते है। नाभा स्थित बावल तथा जयपुर स्थित कोटकासम के आसपास के प्रदेश मे थो के साथ-साथ सो (सी, सा) का प्रयोग भी पाया जाता है।

द्वितीय पुरुष बहु० का सै बागड़ी से लिया हुआ है। गो प्रत्यय का पजाबी की तरह वर्तमान रूप के साथ प्रयोग भी कहीं-कही मिलता है। उदा० सै-गो= वह है=पजाबी-है-गा। अन्य विषयो में क्रियारूप मेवाती के से ही हैं।

मालवी

वास्तव मे मालवी का अर्थ है मालवा की भाषा। जिस प्रदेश मे यह घर की बोली है वह प्रदेश लगभग सारा मालवा प्रदेश के अन्तर्गत ही आ जाता है। इस प्रदेश के अन्तर्गत इन्दौर, भोपाल, भोपावाड तथा मध्यभारत की पश्चिम मालवा एजेन्सियो के मस्थान आ जाते है। अपने पूर्व मे मालवी ग्वालियर रियासत के दक्षिण-पश्चिम तथा पडोस-स्थित राजपूताना की कोटा रियासत (जिसकी मुख्य भाषा हाडौती है), तथा टोक के छाबडा परगना तक फैली हुई है। यह मेवाड की पूर्वी सीमा पर स्थित टोकशासित निम्बाहेडा परगना मे भी बोली जाती है। मेवाड की पूर्वी सीमा भौगोलिक दृष्टि मे पश्चिमी मालवा का ही भाग है। मालवी नर्बदा को पार करके आगे तक भी फैल गई है और अपने एक टूटे-फूटे रूप मे मध्यप्रदेश के होशगाबाद जिले के पश्चिमी भाग मे, बैतूल जिले के उत्तरी भाग मे तथा छिन्दवाड़ा एव चाँदा जिलो मे कुछ जातियो द्वारा बोली जाती है।

भाषा-सीमाएँ

मालवी के उत्तर मे राजस्थानी की मध्य-पूर्वी भाषा का क्षेत्र है, जिसका परिनिष्ठित अथवा मानक (स्टैण्डर्ड) रूप हमने जयपुरी को माना है। पूर्व मे पश्चिमी हिन्दी की उपभाषा बुन्देली का वह रूप है जो ग्वालियर एव सागर मे बोला जाता है। दक्षिण मे पूर्व से पश्चिम की ओर जाते हुए क्रमश: नरसिंह-पुर एव पूर्वी व मध्य होशगाबाद की बुन्देली, बरार की मराठी, तथा उत्तरी नीमाड़ व भोपावाड़ मे बोली जाती राजस्थानी की उपभाषा नीमाड़ी है। उत्तर-पश्चिम मे मारवाडी का मेवाड़ी रूप, तथा दक्षिण-पश्चिम मे गुजराती एव खानदेशी है। इस सीमाकन मे वे अनेक भील व गोड बोलियाँ नही ली गई है, जो मालवी के पर्वतीय क्षेत्र मे बोली जाती है। ये सब यथास्थान नक्शे मे दिखाई गई है।

मारवाड़ी व जयपुरी से सम्बन्ध

मालवी स्पष्ट रूप से राजस्थानी की ही उपभाषा है जिसका मारवाड़ी व जयपुरी दोनो से सम्बन्ध है। मालवी का षष्ठी रूप जयपुरी की तरह को लगा कर बनाया जाता है, पर उसकी मुख्य क्रिया का वर्तमान छूँ न लगाकर, मारवाड़ी की तरह हूँ लगाकर बनाया जाता है। मुख्य क्रिया का भूतकाल इन दोनो से

भिन्न वो लगाकर बनाया जाता है; इस विषय मे मालवी पश्चिमी हिन्दी का अनुसरण करती है। मुख्य क्रिया का भविष्यत् रूप सामान्य वर्तमान मे 'गा' लगाकर बनाया जाता है, इसका रूप (मारवाडी के ला की तरह) लिंग-वचन के साथ नही बदलता। राजस्थानी बोलियो मे अपूर्णभूत मुख्य क्रिया के भूतरूप को-ए या-ऐ-साधित क्रियार्थक सज्ञा के साथ जोड कर बनाया जाता है। मालवी मे ऐसा होकर, अपूर्णभूत, भूतरूप को (हिन्दोस्तानी की तरह) वर्तमान कृदन्त के साथ जोड कर बनाया जाता है।

बोलियाँ

मालवी-भाषी सारे प्रदेश मे उसके स्वरूप की एकसदृशता आश्चर्यजनक है। पूर्व मे पड़ोस की बुन्देली का कुछ-कुछ प्रभाव लक्षित होता है, और उसे पूर्वी मालवी कहा जा सकता है पर उसे अलग बोली मानने का कोई चिन्ह नही मिलता। सोडिया नाम की जगली जाति द्वारा बोली जाती सोडवाडी अवश्य मालवी की अलग उप-बोली मानी जाती है। सोडिया पश्चिमी मालवा एजेन्सी के उत्तर-पूर्वी भाग मे, उसके पड़ोस-स्थित झालावाड के चौमहला परगने मे तथा उससे सटे हुए भोपाल रियासत के थोडे से भाग मे बसे हुए है। मध्यप्रान्त की मालवी बिगड़ी हुई अवश्य है, पर उसे अलग उप-बोली मानना सही नही है। मालवा के राजपूत मालवी का एक और रूप बोलते है जिसे राँगडी कहा जाता है। मारवाडी रूपो की बहुलता इसकी विशिष्टता है।

बोलने वालो की संख्या

मालवी के क्षेत्र मे घर की बोली के रूप मे उसे बोलने वालो की सख्याएँ इस प्रकार है—

इन्दौर			१,८३,७५०
पूर्वी मालवी—			
कोटा	८०,६७८		
टोक (छाबड़ा)	२०,०००		
ग्वालियर	३, ५,०००		४,६५,६७८
भोपाल			१८,००,०००
भोपावाड़			१,४७,०००
पश्चिमी मालवा	१२,४१,५००		
टोक (निम्बाहेड़ा)	४,०००	१२,४५,५००	
सोडवाड़ी—			
पश्चिमी मालवा		१,१५,०००	
झालावाड (चौमहला)		८६,५५६	
भोपाल		२,०००	२,०३,५५६
			१४,४६,०५६

मध्य-प्रदेश की बिगड़ी मालवी—

होशंगाबाद	१,२६,५२३	
बैतूल	१,१६,०००	
छिन्दवाडा की भोयारी	११,०००	
,, ,, कटियाई	१८,०००	
चाँदा की पटवी	२००	
	———	२,७४,७२३
		———
		कुल=४३,५०,५०७
		———

भारत के अन्य भागो के मालवी-भाषी

भारत के अन्य भागो मे मालवी-भाषी कितने है, यह सख्या उपलब्ध नही है। कुछ जिलो मे लोगो ने अपनी भाषा राँगडी अवश्य बताई है, परन्तु इनकी सख्या देना भ्रमोत्पादक सिद्ध होगा। बहुत सम्भव है कि अनेक मालवी-भाषियो ने अपनी भाषा मारवाडी बतलाई हो। मध्य-भारत की मुख्य भाषा होने के कारण मालवी का हैदराबाद एव मद्रास की दकनी हिन्दोस्तानी पर काफी प्रभाव पडा है।

साहित्य एव अधिकृत सूत्र

लेखक ने मालवी का विवरण अन्यत्र कही नही देखा और न उसके किसी साहित्य ग्रन्थ का ही पता चला है।

लिपि

देवनागरी का एक बिगडा रूप जो मारवाडी लिपि के बहुत नजदीक है, मालवी के लिखने के काम मे आता है।

व्याकरण

जिस प्रकार मेवाती, राजस्थानी तथा ब्रज एव पजाबी के बीच की बोली है, उसी प्रकार मालवी राजस्थानी तथा बुन्देली एव गुजराती के बीच की बोली है। मध्य-भारत की इन्दौर एजेन्सी की भाषा को स्टैण्डर्ड (परिनिष्ठित) मालवी माना जा सकता है। आगे इस भाषा के जो नमूने व उन पर आधारित व्याकरण दिये गये है, वे इन्दौर-स्थित देवास रियासत (छोटी पाती) से लिये गये है।

जैसा कि हम कह चुके है, मालवी के मालवाप्रदेश मे दो रूप मिलते है। एक तो राँगडी या राजवाडी, जिसे राजपूत बोलते है, और दूसरी मालवी,

जिसे अन्य सब लोग बोलते है, और जिसे कभी-कभी अहीरी भी कहा जाता है। भाषा के इन दोनों प्रकारों में बहुत कम भेद है। जब कभी फर्क मिलता है तब राँगड़ी मे मध्य राजपूताना की बोलियो-मेवाड़ी तथा जयपुरी-से साम्य मिलता है।

यद्यपि मालवी कही कही बुन्देली या गुजराती का सा रूप लेती दृष्टिगोचर होती है, फिर भी यह निश्चित रूप से राजस्थानी की ही उपभाषा है। जहाँ तक अहीरी नामकरण का सम्बन्ध है, हम अहीरवाटी के विवेचन मे यह स्पष्ट कर चुके हैं कि अहीरो के नाम से भारत के कई प्रदेशो की बोलियो का नामकरण हुआ है, जहाँ-जहाँ वे बसे है।

नीचे दी हुई संक्षिप्त व्याकरण इन्दौर एजेन्सी से प्राप्त नमूनो पर आधारित है। इनकी भाषा जयपुरी एव मारवाडी के बहुत नजदीक है, जिनका विस्तृत विवेचन पहले किया जा चुका है। इसलिए प्रस्तुत विवरण मे केवल मुख्य-मुख्य बाते दी गई है। यह विवरण राँगडी तथा खास मालवी दोनो के लागू पडता है; कही भी अन्तर होने पर उल्लेख किया गया है।

उच्चारण-पद्धति

ऐ को ए तथा औ को ओ उच्चरित करने का साधारण राजस्थानी नियम मालवी मे भी मिलता है। उदा० है-हे=है, चैन-चेन=आनन्द, और-ओर। उसी तरह इ तथा उ का अ हो जाना भी मिलता है। उदा० दन-दिन, मट्टो-मिट्टो=चुंबन, ठाकर-ठाकुर। महाप्राणत्व के लोप के भी अनेक उदाहरण मिलते है। उदा० काडो-काढो=निकालो, बी-भी, अडाई-अढाई, दूद-दूध, लीदो-लीधो=लिया (गुजराती), कीदो-कीधो=किया (गुजराती से) मनक-मनुख=मनुष्य मट्टी-मिट्ठी=चुंबन। इसी समूह में हकारान्त धातुओ के सकोच की सर्वसाधारण राजस्थानी प्रक्रिया भी आ जाती है, उदा० रहे-है→रे-है=रहता है, कहणो→के-णो=कहना, रह्यो→रियो या रह्यो=रहा।

अन्यत्र व मे आरम्भ होने वाले शब्दो के व का मालवी मे ब हो जाता है, जो गुजराती के अनुरूप है। उदा० वात-बात।

नमूनो के अवलोकन से एक बात स्पष्ट हो जाती है, ड़ की जगह सर्वत्र ड मिलता है। वास्तविक उच्चारण कभी एक, कभी दूसरा पाया जाता है, अतएव ड को केवल लेखन का ही अन्तर मानना चाहिए।

राँगडी की तुलना मे मालवी मे तालव्य की जगह दन्त्य ध्वनियो का बाहुल्य होने की निश्चित प्रवृत्ति लक्षित होती है, पर वह निर्विवाद नही है। उदा० मालवी मे अपनो=अपना, मारनो=मारना, पर राँगड़ी मे अपणो तथा मारणो।

सज्ञा शब्दो के अन्त का स्वर दीर्घ होने पर स्वेच्छानुसार सानुस्वार कर दिया जाता है। उसी प्रकार किसी शब्द के अन्त मे अनुस्वार आने पर उसका स्वेच्छानुमार लोप हो जाता है। उदा० तिर्यक् वहुवचन के अन्त मे वहुत सी जगह–आ, और वहुत सी जगह-आँ मिलता है। उमी प्रकार सप्तमी परसर्ग के लिए मेँ व मे दोनो मिलते है।

नाम रूप–लिंग

नपुसक लिंग के उदाहरण नही मिले।

वचन एव कारक

वहुवचन एव तिर्यक् रूप वनाने के साधारण राजस्थानी नियमो का अनुसरण यहाँ भी होता है। उदाहरण—

	एकवचन	वहुवचन	
प्रथमा	तिर्यक्	प्रथमा	तिर्यक्
घोडो	घोडा	घोडो	घोडाँ
टेगडो=कुत्ता	टेगडा	टेगडा	टेगडाँ
वाप	वाप	वाप	वापाँ
लडकी	लडकी	लडक्याँ	लडक्याँ
वात	वात	वाताँ	वाताँ

वहुवचन मे प्राय: अनुस्वार का लोप भी मिलता है।

मालवी मे वहुवचन होर, होरो या होनो प्रत्यय लगाकर भी वनाया जाता है; यह राँगडी मे नही मिलता। विशेष रूप से हमारा ध्यान इस प्रत्यय की ओर इसलिए आकर्पित होता है कि नेपाल की खस भापा मे भी हरु या हेरु प्रत्यय मिलता है। इसके अलावा १६वी शती के आरभ मे प्रकाशित कैरी (Carey) कृत इंजील के पुरानी कन्नौजी अनुवाद मे भी एक वहुवचन प्रत्यय ह्वार मिलता है। (तुल० हम–ह्वार–लूका, (१५–२३)। मालवी मे इस रूप के कुछ उदाहरण ये है=वाप–होर, वेटी–होरो, आदमी–होन–से (न कि आदम्याँ–होन से)=आदमियो से, घोडा–होनो=घोडे। इन मे मे कोई सा भी प्रत्यय किसी भी कारक रूप का वहुवचन वनाने के लिए प्रयुक्त हो सकता है।

प्रचलित–ए–साधित सप्तमी रूप मालवी मे भी है, उदा० घरे=घर मे।

राँगडी मे तृतीया– ए या–एँ लग कर वनती है। उदा० वापे या वापेँ=वाप के द्वारा। यह कभी वापे और कभी वापए लिखा जाता है। एक और उदाहरण है—छोटा लडकाएँ चक्यो गयो=छोटे लड़के के द्वारा चला गया। इससे स्पप्ट है कि–एँ (गुजराती की तरह) तिर्यक् रूप मे भी लगाया जा सकता है। इसके

अलावा, जैसा कि हम कई वार राजस्थानी एव पश्चिमी हिन्दी बोलियों के विवरण मे देख चुके है, तृतीया का प्रयोग कभी-कभी नपुंसक क्रियाओं के भूत रूप के पहले भी होता है। पर-एक का व्यवहार हमेशा ही नही होता। उदा० वी० सरदार (न कि सरदारे) आरो करी=उस सरदार ने स्वीकार किया।

राजस्थानी उपभाषाओ मे केवल मालवी मे –ने का प्रयोग बिल्कुल पश्चिमी हिन्दी के अनुरूप मिलता है। उदाहरण छोटा छोरा-ने बाप-से कियो=छोटे लडके–ने बाप–से कहा।

प्रचलित परसर्ग (तृतीया छोडकर) ये है—

द्वि–च०	ने,	के
प–तृ०	सूँ	से, ऊँ
ष०	को,	रो
स०	में,	मे

इनमे से–ने का द्वि–च० के लिए व्यवहार मालवी मे शायद ही कही होता है। हम ऊपर देख चुके है कि मालवी मे–ने का प्रयोग तृतीया के लिए होता है। प० परसर्ग-रो वास्तव मे मेवाड़ी से लिया हुआ है। रॉगड़ी मे यह वहुतायत से मिलता है। पर मालवी मे –को ही प्रचलित है। इन दोनो के परसर्गो के रूप अन्य राजस्थानी वोलियो की तरह ही चलते है—स्त्री० की, री, तिर्यक् पुं० का, रा। तृतीया व सप्तमी रूप के साथ लगाये जाने पर मालवी मे साधारणतया एव रॉगड़ी मे केवल तृतीया के साथ इनका रूप अनुक्रम से के, रे हो जाता है। उदा० पिता–रे घरे=पिता के घर मे।

सर्वनाम

रॉगडी मे पुरुषवाची सर्वनाम ये है —

एक वचन	मै	तू
प्र०	हूँ	तूँ
तृ०	म्हैं	थैं
ति०	म्ह, म्हा, म	थ, था, त
प०	म्हारो, मारो	थारो
वहुवचन		
प्र०	म्हें, में	थैं, दैं
ति०	म्हाँ	थाँ
प०	म्हाँ–को, म्हा–णो	थाँ–को, था–णो

ऊपर दिये गये सभी रूपो मे अनुस्वार प्राय: वैकल्पिक रूप से लुप्त हो जाता है। मालवी के रूप थोड़े भिन्न है:—

मैं=हूँ या मूं
हमारा=हमारो (न कि म्हाँ को)
तुम्हारा=तमारो (न कि थाँ-को)
तुम=तम (न कि थें)

इन रूपो के अतिरिक्त राजस्थानी की अन्य उपभाषाओ की तरह प्रथम पुरुष बहुवचन का एक रूप और मिलता है जिसमे सबोधित व्यक्ति भी शामिल रहता है। उदा० ये रूप मिले है—(राँगडी) आपा ने—हम को, (मालवी—अपन=हम, अपन-ने=हम से (द्वारा) ।

आदरार्थ द्वितीय पुरुष सबोधन आप है, जिसके षष्ठी आप-को या आप-रो है। सा एव जी आदरार्थ प्रत्यय है, उदा० भाभा-सा=पिताजी। अँगरेजी Self के अर्थ मे आप का व्यवहार होता है, इसके षष्ठी रूप (राँगडी) अपणो, (मालवी अपनो है)। राजस्थानी का प्रचलित आपणो मालवी मे प्राय: व्यवहृत नही होता, उसकी जगह साधारण षष्ठी सर्वनाम रूपो का उपयोग होता है। उद० एक जगह यह वाक्य मिलता है—ओ-ने अपना माल-ताल-को बाँटो कर दियो=उसने अपनी सम्पत्ति का बँटवारा कर दिया। पर इस वाक्य के थोडा-सा पहले ही यह उदाहरण मिलता है—छोटा छोरा-ने ओ-का बाप-से कियो=छोटे लडके-ने उसके (अपने) बाप से कहा।

राँगडी के तृतीय पुरुष के सर्वनाम मालवी से भिन्न है। तुलनात्मक तालिका यो है—

	राँगड़ी	मालवी
एकवचन		
प्र०	वो (पु० न०) वा (स्त्री०), ऊ (पुं० स्त्री० न०)	ऊ
ति०	वणी, वणा, उणी, उणा, वी, ऊँ, वा	ओ, उना, उस
बहुवचन		
प्र०	वी	वी
ति०	वणाँ	उन

अन्य जगहो की तरह यहाँ भी अनुस्वारो का उपयोग वैकल्पिक मिलता है। राँगडी मे तृतीया ऊँ है, यथा—ऊँ राजपूत करी=उस राजपूत ने किया। भारदर्शक प्रत्यय के रूप मे प्राय:—ज का उपयोग किया जाता है।

उदा० ऊँ-ज वखत=उसी समय।

निर्देशक सर्वनाम यो है। उसकी रूपावली यो है:—

		रॉंगडी	मालवी
एक०	प्र०	यो, या, (स्त्री०)	यो, या (स्त्री०)
	ति०	अणी, इणी, ई, या	ए, अना, इना, इस
बहु०	प्र०	ये	ये
	ति०	अणाँ, इणाँ	इन

सम्बन्धवाची सर्वनाम

एक०	प्र०	जो	जो
	ति०	जणि जीं	जे, जिस
बहु०	प्र०	जे	जे
	ति०	जणाँ	जिस

प्रश्नार्थक सर्वनाम

कुण=कौन। ति० एक० - (रॉंगडी) कणी इत्यादि (मालवी) के इत्यादि। काईं, काइँ, काँई=क्या। कोई=कोई भी, विशेषण की तरह प्रयुक्त होने पर मालवी मे इसका रूप नही बदलता, उदा० कोई-ने। पर रॉंगडी मे यह उदाहरण मिलता है—कणी-एँ नहिँ दिया=किसी ने नही दिया।

विशेषणात्मक सर्वनामो के अन्त मे प्राय स्वार्थे प्रत्यय-क लगता है, जो जयपुरी मे बहुत प्रचलित है। उदा० कितरो-क=कितना ?, कितरा-क=कितने ?

राजस्थानी की अन्य उपभाषाओ की तरह मालवी मे भी सम्बन्धवाचक सर्वनाम बार-बार निर्देशक सर्वनामों का अर्थ व्यक्त करते मिलते है। उदा० जद=(जब then and when), जठे=जहाँ (there and where)।

बहुत से सार्वनामिक क्रियाविशेषण वास्तव मे केवल सप्तमी रूप मात्र है, जैसा कि इन उदाहरणो से स्पष्ट है—

अठो=यहां जगह, अठा-से=यह से, अठे=यहाँ।
वठो=वह जगह, वठा-से=वहाँ से, वठै=वहाँ।
उठो=वह जगह, उठा-से=वहाँ से, उठे=वहाँ।
जठो=जो जगह, जठा-से=जहाँ से, जठे=जहाँ।
कठो=कौन जगह, कठा-से=कहाँ से, कठे=कहाँ।

क्रिया-रूप—सहायक एवं मुख्य क्रियाएँ-वर्तमान—मैं हूँ

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	हूँ	हाँ
द्वि०	हे, है	हो
तृ०	हे, है	हे, है

राजस्थानी के साधारण नियमानुसार तृ० पुरुष बहुवचन रूपो मे अनुस्वार का न होना द्रष्टव्य है।

भूतकाल—मै था

पुं०	एक०	थो,	बहु०	था
स्त्री०	,,	थी,	,,	थी

अन्य कालो की तरह यहाँ रूप पुरुष के साथ नही बदलते। राँगड़ी मे एक रूप थको=था भी मिलता है।

	राँगडी	मालवी
क्रियार्थक सज्ञा	ह्वेणो, वेणो	होणो
वर्त० कृदन्त	ह्वेतो वेतो	होतो
भूत ,,	ह्वयो	हुओ
सम्भावनार्थ कृदन्त	ह्वे-ने, वई-वे	हुई-ने
आज्ञार्थ	ह्वो	हो
भविष्यत्	वऊँगा, वूँगा	होऊँगा

मुख्य क्रिया—खास-खास रूप

क्रियार्थक सज्ञा	मारणो, मारवो	मारनो
वर्त० कृदन्त	मारतो	मारतो
भूत ,,	मार्यो	मार्यो
सभाव० ,,	मारी-ने, मार-ने	मारी-ने, मार-ने
कर्त्ता	मारवा-वाळो	मारवा-वाळो

साधारण वर्तमान

इसके रूप राजस्थानी की अन्य उपभाषाओं की तरह ही मिलते है। साधारण वर्तमान का व्यवहार, साधारण वर्तमान, सभावनार्थ (मैं मार सकता हूँ) तथा एक-भविष्यत् (मै मारूँगा) की तरह होता है।

	एकवचन	बहुवचन
१	मारूँ	मारां
२	मारे	मारो
३	मारे	मारे

इसके रूप भी राजस्थानी की अन्य उपभाषाओ के अनुरूप ही है—

	एकवचन	बहुवचन
१	मारूँ—हूँ	मारां—हां
२	मारे—है	मारो—हो
३	मारे—है	मारे—है

अपूर्णभूत-मै मार रहा था

यह काल राजस्थानी की अन्य बोलियो की भाँति–एकारान्त क्रियार्थक सज्ञा के तिर्यक् रूप के सहारे नही बनाया जाता, बल्कि गुजराती एवं बुन्देली की तरह वर्तमान कृदन्त के सहारे बनाया जाता है। उदा० हूँ मारतो—थो।

भविष्यत्

यह कालरूप साधारण वर्तमान मे–गा लगा कर बनाया जाता है। इसका रूप लिंग–वचन के अनुसार नही बदलता, इस दृष्टि से यह मारवाडी—ला के सदृश है।

	१	२	३
एक वचन	मारूँगा	मारेगा	मारेगा
बहुवचन	माराँगा	मारौगा	मारेगा

मालवी मे कही-कही इस–गा की जगह बुन्देली–गो का प्रयोग भी होता है। इस–गो का रूप लिग–वचन के अनुमार बदलता है। उदा० हूँ मारूँगो=(पु०) मै मारूँगा, हूँ मारूँगी (स्त्री०), हम माराँगा (पु०), हम माराँगो (स्त्री०)। सकार या उसकी जगह हकार वाला भविष्यत् रूप यहाँ दृष्टिगोचर नही होता।

भूत–कृदन्त–साधित कालरूप राजस्थानी की अन्य बोलियो की तरह ही मिलते है। सकर्मक क्रियाओ वाले रूपो का गठन कर्मणि हो जाता है। उदा०

राँगडी	मालवी
मै मारचो	म्ह–ने मारचो=मैने मारा
हूँ चल्यो	हूँ चल्यो = मै चला
मै मारचो है	म्ह–ने मारचो है = मैंने मारा है
हूँ चलयो है	हूँ चलयो है = मैने चला है
मै मारचो–थो	म्ह–ने मारचो थो = मैने मारा था
हूँ चल्यो–थो	हू चलयो–थो = मै चला था

कभी–कभी तृतीया कर्त्ता के साथ की नपुसक क्रिया का गठन भावे वाच्य का सा हो जाता है। उदा० लडकाए गयो=लडका गया।

अन्य बोलियो वाले अपवाद रूप भूतकृदन्त यहाँ भी मिलते है। इनमे से तीन विशेष द्रष्टव्य है.—

करणो=करना भू० कृ०—कर्यो, कीधो, कीदो

लेणो=लेना ,, —लियो, लीधो, लीदो

देणो=देना ,, —दियो, दीधो, दीदो

कीधो, लीधो, दीधो गुजराती मे भी लिखते है। जाणो=जाना का भू० कृ० गयो, गियो है।

हम देख चुके है कि सभावनार्थ कृदन्त के अन्त मे ई–ने आता है। जब धातु–आकारान्त होती है तब यह रॉगड़ी मे आय–ने एव मालवी मे अइ–ने हो जाता है। उदा० पाय–ने=पाकर, जाय–ने=जाकर, बुलइ ने=बुलाकर, अइ–ने=आकर।

प्रेरणार्थक रूप कुछ-कुछ मारवाडी की तरह ही बनाए जाते हैं। प्रेरणार्थक प्रत्यय—आ के बाद यहाँ ड लगाया जाता है, उदा० जिमाडो= (तुम) भोजन कराओ। मारवाडी मे—र लगता है।

अन्य बोलियो की तरह यहाँ भी विध्यर्थ कर्मणि रूप आ लगा कर बनाया जाता है। उदा० (रॉगडी) सुणणो=सुनना, सुणाणो=सुना जाना। उत्तरी गुजराती की भाँति इन विध्यर्थ कर्मणि रूपो का भूतकाल धातु मे णो (मालवी मे नो) लगाकर बनाया जाता है, यह खास द्रष्टव्य है। उदा० (रॉगडी) सुणाणो=सुना गया, (मालवी) बतानो—बताया गया। अवधी मे आकारन्त सभी धातुओ का भूतकाल इसी तरह बनाया जाता है, यह बात भी द्रष्टव्य है।

सयुक्त क्रियाएँ भी अन्य बोलियो की तरह ही बनती है। तीव्रताबोधक (intensive) सयुक्त क्रिया रूप का एक असाधारण रूप मालवी का दइ–लाखनो =दे डालना है। अन्य सयुक्त क्रियाओ के उदाहरण ये है:—भेज्या करे√भेजा करता है, पडवा लागी=पडने लगी। एक जगह मालवी मे बुंदेली का केने— लग्यो=कहने लगा मिलता है।

प्रत्यय – ज (गुजराती मे भी) बहुत प्रचलित है। यह शब्द के अर्थ मे तीव्रता लाता है। उदा०—थोडा ज दनॉ—मे=थोडे ही दिनो मे, ऊपर–ज= ऊपर ही।

राजस्थानी का—डो बहुत प्रचलित है। यह ह्रस्वार्थक या घृणार्थक है। उदा०—बालु–डा=बच्चे, मिनक–डी=बिलैया, टेग–डो=कुत्ता। लो का भी इसी अर्थ मे प्रयोग होता है। उदा० कूकडला=मुर्गा रे।

०

नीमाड़ी

नीमावाड प्रदेश मे जो राजस्थानी की उपभाषा बोली जाती है, उसे नीमाडी कहते है। नोमावाड प्रदेश मे (बुरहानपुर तहसील जो कि नर्बदा की घाटी मे नही, ताप्ती की घाटी मे स्थित है एवं भौगोलिक दृष्टि से खानदेश के मैदान का भाग है) मध्य-प्रान्त का नीमाड जिला एव उसके पडोस की मध्य-भारत की भोपावाड रियासत का भाग शामिल है। नीमावाड मे केवल नीमाडी ही नही बोली जाती। बहुत-सी जनसख्या भीली बोलती है। भोपावाड के नीमाडी-भाषियो के चारो ओर भीली बोलने वाले इस प्रकार बसे हुए है कि वे नीमाड़ जिले के नीमाडी-भाषियो से बिल्कुल पृथक् हो गये है। इस प्रकार नीमाडी बोलने वाले दो बिल्कुल अलग-अलग हल्के बन गये है, पर दोनो जगह भापा लगभग एक ही सी है।

नीमाडी भापा का विवरण इत.पूर्व नही किया गया और न उसमे कोई साहित्य ही उपलब्ध है। उसके बोलने वालो की सख्या का अनुमान इस प्रकार है .—

नीमाड मे	१,८१,२७७
भोपावाड़ मे	२,९३,५००
	कुल—४,७४,७७७

नीमाडी वास्तव मे राजस्थानी की उपभाषा मालवी की एक बोली ही है; पर उसकी कुछ विशेषताएँ इतनी भिन्न है कि उसका अलग विवेचन करना ही युक्तिसगत जँचता है। नीमाडी पर पडोस की गुजराती व भीली वोलियो के साथ-साथ उसके दक्षिण-स्थित खानदेशी का भी प्रभाव पडा है। गुजरात के निकटतर होने से भोपावाड की बोली पर नीमाड की बोली की अपेक्षा गुजरात का प्रभाव अधिक लक्षित होता है।

उच्चारण की विशिष्टताओ मे नीमाडी मे राजस्थानी के अ का ए हो जाना सर्वप्रथम स्थान रखता है। यह प्रक्रिया लगभग सार्वजनीन है और नीमाड़ी की पूरी व्याकरण मे स्पष्टतया लक्षित होती है। उदा०

तृतीया की विभक्ति ने—न हो जाती है;
सप्तमी „ मे—म „

आगे का आग तथा रहेछ का रहछ हो जाता है (कभी-कभी रहेछ लिख कर भी उच्चारण रहछ ही किया जाता है)।

अनुस्वारो की ओर नीमाडी का झुकाव कम है, प्राय: इस ध्वनि का लोप पाया जाता है। उदा० दाँत→दात; मैं (में से)→म। मालवी एवं खानदेशी की तरह महाप्राणत्व का भी प्राय: लोप हो जाता है। उदा० हाथ→हात; भूखो →भूको।

न एवं ल ध्वनियो का परस्पर स्थानांतर हो सकता है। उदा० नीम—लीम।

पड़ोस की भील बोलियो में ज एवं च ध्वनियों का उच्चारण साधा-रणतया स होता है। नीमाड़ी में, जान पड़ता है, च ध्वनि तो ठीक से उच्चरित होती है, पर ज का च हो जाता है। उदा० नीमाड़ी मे जवच एवं जवज दोनो 'वह जाता है' के अर्थ मे व्यवहृत होते हैं। पर भोपावाड से आये हुए नमूनो मे सर्वत्र ज वाला रूप ही मिलता है। झ का उच्चारण बराड़ की मराठी तथा खान-देशी की कुछ बोलियो की तरह झ (z) होता है।

नामरूपो मे राजस्थानी का तृतीया एवं सप्तमी के लिए व्यवहृत-एकारान्त रूप—अकारान्त हो जाता है। उदाहरण घर=घर मे।

—ओकारान्त सबल तद्भवो का तिर्यक् रूप मालवी की तरह—आकारान्त होता है। उदा० घोडो→घोडा—को। बहुवचन बनाने के लिए तिर्यक् एकवचन रूप के-ना प्रत्यय लगा दिया जाता है। उदा० घोडाना—घोडे; घोडाना—को= घोडो का; बाप, बापना (बहु०); बेटी, बेटी ना (बहु०)। कही-कही गलत-फहमी की सभावना न रहने पर यह—ना नही भी लगाया जाता।

कारको के परसर्ग इस प्रकार हैं। यह द्रष्टव्य है कि अधिकाश रूप मालवी मे केवल एकार का अकार होने से ही भिन्न हैं।

तृतीया	—न
द्वि०—चतुर्थी	—क
तृ०—पंचमी	—सी, —सू
षष्ठी	—को (—का,—की)
सप्तमी	—म

कही-कही द्वि-च० का राजस्थानी परसर्ग —का तथा बुन्देली का —खे (—ख बनकर) भी दृष्टिगोचर होते हैं। बुन्देली नीमाड़ के पूर्व मे थोडी ही दूर पर बोली जाती है।

षष्ठी परसर्ग को का व्यवहार पुंलिंग एकवचन मूलरूप (Direct form) के साथ होता है, और का पुलिंग तिर्यक् रूप के साथ। की का उपयोग स्त्रीलिंग के साथ होता है। अपवादरूप का के स्त्रीलिंग के साथ प्रयोग के दो उदाहरण लेखक को मिले। वे ये है : म्हारा काका-का एक छोरा-की ओ-का बहेन सी सादी हुईच=

मेरे काका के एक लड़के की उसकी बहन से शादी हुई है; ओ-को भाई ओ-का बहेन-सी ऊचो छे=उसका भाई उसकी बहन से ऊँचा है।

मुख्य-मुख्य सर्वनामरूप ये है—

हउँ=मै। म-क=मैने। म्ह-क या म-क=मुझको। म्हारो=मेरा। हम=हम। हमारो=हमारा। अपण=हम (सम्बोधित व्यक्ति शामिल) अपणो=हमारा (सबोधित व्यक्ति शामिल) अपण-न=हमने।

तू=तू। तू-न=तू-ने। थारो=तेरा। तुम=तुम। तुम्हारो=तुम्हारा।

ये=यह। तिर्यक्-इन या ए।

वी=वह (पुं० न०) तिर्यक्-उन, वो, ओ, वा। बहु० वो। तिर्यक्-उन।

जो=जो (एक०, बहु०); जे-को=जिसका। तिर्यक् एक०-जे।

कुण या कुन=कौन। कुण-को=किसका।

कॉइ=क्या ? कोई=कोई। कँई=कुछ भी।

नीमाडी क्रियारूपो पर भील बोलियो एव खानदेशी का प्रभाव बहुत स्पष्ट लक्षित होता है। मुख्य क्रिया का वतमान रूप छे है, जो (खानदेशी से की तरह) वचन या पुरुष के साथ नही बदलता।

मुख्य क्रिया का भूत रूप मालवी के अनुरूप थो (था, थी) है। सहायक क्रिया के रूप मे प्रयुक्त होने पर छे का ए तथा महाप्राणत्व लुप्त हो जाते है और च रूप रह जाता है; इस च का भी (खास कर भोपावाड मे) ज हो जाता है। इस प्रकार मारणू-मारना क्रिया के नीचे लिखे रूप मिलते है—

वर्तमान—मै मारता हूँ

एक वचन	बहुवचन
१. मारुँच या मारुँज।	मारॉच, मारॉज
२. मारेच, मारच, मारेज, मारज।	मारोच, मारोज
३ मारेच, मारच, मारेज, मारज।	मारेच, मारच, मारेज, मारज

इसी प्रकार पूर्णभूत रूप मारचोच=(उसने) मारा है, होगा। एक नमूने मे कई जगह इस च की जगह खानदेशी रूप से मिलता है। स्वय खानदेशी मे वर्तमान रूप के लिए से का प्रयोग न होकर केवल स मिलता है। पारधी भील बोली मे नीमाडी की तरह च मिलता है।

भविष्यत् का विशिष्ट चिन्ह (गुजराती की तरह) स ही मिलता है। रूपावली इस प्रकार है—

एक वचन	वहुवचन
१—मारीस	मारसा
२—मारसे	मारसो
३—मारसे	मारसे

कहीं–कहीं मालवी का अपरिर्वति–गा वाला रूप भी देखने मे आता है ।

क्रियार्थक सज्ञा णू–अन्तिक होती है, उदाहरण–मारणू=मारना । भविष्यत् कृदन्त के रूप मे प्रयुक्त होने पर इसका कर्ता तृतीया रूप मे रक्खा जाता है, उदाहरण—अपण-न अनद मनावणू नी खुसी होणू=हम-को आनंद मनाना और खुशी होना (चाहिए) । यह द्रष्टव्य है कि कृदन्त के पुलिंग होने पर भी उसका विशेषण स्त्रीलिंग मे है । क्रियार्थक सज्ञा का तिर्यक् रूप-णा-अन्तिक होता है, उदाहरण—मारण–को=मारने का ।

मारवाड़ी

मारवाड़ी का निम्नलिखित नमूना मारवाड से ही लिया गया है। यह एक नीति-कथा का रूपांतर और मारवाडी का उत्कृष्ट उदाहरण है। मैं यह दरसाने के लिए कि देवनागरी लिपि पश्चिमी राजपूताना मे क्या रूप ग्रहण कर लेती है, उसकी अनुकृति[1] दे रहा हूँ। इसमे ड तथा ड़ के लिए भिन्न रूप द्रष्टव्य हैं। ल तथा ल़ अक्षरो का भेद लिपि मे नही किया गया है, किन्तु मैंने इसे अपने भाषांतर (रोमन) मे दरसाया है। भाषांतर तथा अनुवाद (अंग्रेजी) की सहायता से इसे पढने में कोई कठिनाई नही होनी चाहिए।

संख्या १

मारवाड़ी भारोपीय परिवार राजस्थानी

मारवाड़ राज्य **केन्द्रीय वर्ग**

एक जीरौ रै दोय डावड़ा हा। उवा मांयसूं नैनकियै आपरै बापनै कयो कै बावोसा म्हारी पाती रो माल आवै जीको मनै दिरावो। जरै उरा आपरी घर विकरी उराने बाट दिवी। थोड़ा दिहाड़ा पचै नैनकियै डावड़ै आपरी सारी पूंजी भेली कर परखडां गयौ नै उठै आपरी सारी मता कुफैड़ै मैं उडाय दिवी। सैंग खूटियाँ पचै उरा देस में जबरौ काल पडियो तो उवो कसालो भुगतरा लागो। नै पचै उरा देशरै एक रैवासी कनै रयो तो उरा आपरै खेतां मैं सूरांरी डार चरावरा ने भेलीयो तो उरा सूरारै चररा रौ खाखलौ हो जिरासूं आपरो पेट भररा रो मतो कियो परत खाखलो ही किरगी उरानै दीनो नहीं। सावचेत हुवो जरै विचारी कै मारै पिता कनै कितरा दैनगीया हा जीराने घपाऊ बाटी मिलती ही उरा उपरन्त की उगेलो भी उवारै रैतो हो। नै हूं भूकां मरूं हूं। सू हमैं हू पगांबाल होय म्हारै बाप कनै जाऊ ने उराने कैऊं कै बावोसा मं परमेसर सूं बेमुख हुवौ नै आपनू कुपातरपरगो कियो। सूं हमैं आपरो छोरू कवाऊं जैड़ो तो रयौ नही सू हमै आप मनै दैनगीया सरसतै राखौ। फेर उठनै

---

[1] उपर्युक्त गद्य भाग मूल हस्तलिपि का शुद्ध नागरी रूप है। हस्तलिपि के कुछ अश की हूबहू अनुकृति नमूने के रूप मे पृथक् पत्र पर दे दी गई है।

—सपादक

बाप कनै गयो। तो आगा सू आवता ने उणरै बाप उणनै दीठौ तो दया आई सू दौडने छाती लगाय वालो लीयो। तरै डावडै कई कै बाबोजी हूँ परमेसर रौ नै आपरो चोर हूँ नै आपरो पूत कवाऊ जैडो रयो नही। जरै बाप चाकरा ने कई कै अमामा गाबा लाओ वै इणनै पैराओ नै इणरे हात मै मूदडी पैराओ नै पगां मै पगरखीयां पैराओ नै आओ बटीया चीकदा नै ततकार लगावा कारण ओ डावडो मर नवो जमारो पायो हे गमीयोडो लावो है। तरै सारा ही राजी हुआ।

उण बिरिया उणरो बडोडो डावड़ो खेत मे हो नै आवता आवतां घर नैडो आयो जद उण हागडा थाट सुणिया। जरै एक चाकर नै तेड बूजीओ कै ओ डोल काईं है। जद उण कई के थारो भाई आय गयो है नै थारे बाबोसा उणरै ठोर ठोरां पाछो आवण री गोठ किवी है। जीण उपर उवो रीसा बलियो नै मांय गयो नही जरै उणरो बाप वारै आयो नै उण सू सिसटाचारी किवी। जद उण कई कै इतरा बरस हूँ आपरी चाकरी करी नै कदेई आपरै हुकम ने लोपियो नही तोई आप मने कदेई एक खाजरू मारै साथिया ने गोठ देवण सारू दिरायो नही। नै हमै ओ आपरो डावडो आयो जिण सैग घर बिकरी रुलियार राडा नै खवाय दिवी जीणरे सारूं आप इती खुसी किवी है। तो उण कैयो कै भाबा तूं नित मारै साथ रैवैनै मारै गोडै है जिको सैग थारो ईज है। आ खुसी करण जोग ही किउं कै थारो भाई मरनै दुजो जनम लियो है नै गमियोडो लावो है।

पूर्वी मारवाड़ी

मारवाड प्रदेश के पूर्वी हिस्से की भाषा स्टैण्डर्ड मारवाड़ी से थोड़ी भिन्न है।

मारवाड़ के पूर्व में अनुक्रम मे उत्तर से दक्षिण की ओर जयपुर, किशनगढ़, एवं अजमेर–मेरवाड़ा स्थित हैं। अजमेर-मेरवाड़ा के लगभग मध्य में उत्तर से दक्षिण की ओर फैली हुई अडावली पर्वतमाला को अजमेर में मारवाड़ी और जयपुरी, जिसमें अजमेरी भी शामिल है— की विभाजन-रेखा मान सकते हैं। मेरवाडा जिले का दक्षिणी भाग अधिकांशतः पर्वतीय प्रदेश है। इसमें रहने वाले बहुसंख्यक भीलों की भाषा को प्रादेशिक लोग 'मगरा की बोली' कहते हैं। भील भाषा मे मगरो पर्वत को कहते हैं। मेरवाडा के उत्तर में पर्वतमाला दो भागों में बंट जाती है और ब्यावर का परगना उनके बीच मे आ जाता है। मेरवाड़ा के इस उत्तरी हिस्से मे दो बोलियाँ प्रचलित हैं। पूर्व की ओर मेरवाडी जो निकटस्थ मेवाड की मेवाडी-सी ही है, और पश्चिम की ओर मारवाडी। इन दोनो मे नही का-सा अन्तर है। जैसा कि आगे के विवेचन से स्पष्टतर हो जायगा, मेवाडी—जिसमें मेरवाडी शामिल है—जयपुरी से किंचित् प्रभावित मारवाडी का ही एक पूर्वी रूप है। उसी प्रकार ब्यावर के पश्चिम की बोली पडोस की भील बोलियों की शब्दावली से कहीं-कहीं प्रभावित पूर्वी मारवाडी ही है। मारवाड एवं मेरवाडा के बीच की सीमा प्रदेश-स्थित पहाडियों में भील लोगो की आबादी है। इनकी बोली को मारवाड मे 'गिरासिया की बोली' या 'ग्यार की बोली' कहा जाता है। मेरवाडा मारवाड एव मेवाड के बीच का प्रदेश है। इसकी मुख्य मुख्य बोलियाँ व उनके बोलने वालो की संख्याएँ इस प्रकार हैं।

उत्तर-पश्चिमी मारवाडी	१७,०००
उत्तर-पूर्वी मेरवाडी अर्थात् मेवाड़ी	५४,५००
मगरा की बोली—भील भाषा	४४,५००
अन्य बोलियाँ	३,९९९
कुल	१,१९,९९९

मेरवाड़ा की पहाडियो की ऊँचाई ज्यों-ज्यों मारवाड़ की ओर जाते हैं, बढती जाती है, एव ज्यों-ज्यों दक्षिण की ओर जाते हैं, ढलती जाती है। ढलते-ढलते अन्त मे ये विंध्य पर्वतमाला से जाकर मिल जाती हैं। यह मिलन-

स्थान सिरोही स्थित आबू का शिखर है जिसके आस-पास कोई अन्य शिखर नही है।

अजमेर की विभिन्न बोलियो के क्षेत्रो की पारस्परिक स्थिति का विवेचन आगे किया जायेगा। मुख्य-मुख्य बोलियाँ इस प्रकार है—अजमेरी, जयपुरी का एक मिश्र रूप, पूर्व-मध्य एवं उत्तर-पूर्व मे मारवाडी—मारवाड की सीमा स्थित अड़ावली पर्वतमाला के पश्चिम की ओर, मेवाडी—दक्षिण मे मेवाड से सटे हुए प्रदेश में। उक्त मारवाड़ी पूर्वी मारवाड की मारवाडी के सदृश ही है।

जयपुर के उस हिस्से मे, जो सांभर झील के पास मारवाड़ से सटा हुआ है, सीमाप्रदेश तक जयपुरी ही बोली जाती है। पर उसी के दक्षिण मे किशनगढ़ में सीमाप्रदेश से थोड़ी ही दूर पर मारवाड़ी बोली जाती है।

स्वय मारवाड़ मे जैसा कि हम कह चुके हैं, पूर्वी भाग की भाषा स्टैन्डर्ड मारवाड़ी से थोडी भिन्न है। इससे हम यही निष्कर्ष निकालते है कि उत्तर-पूर्व से जैसे-जैसे हम पूर्व की ओर वढते चले जाते है, वैसे-वैसे बोली जयपुर के निकटतर होती जाती है। जहाँ-तहाँ मारवाडी सम्बन्ध परसर्ग-रो की जगह जयपुरी-को, मारवाडी मुख्य क्रिया हू की जगह जयपुरी छू तथा मारवाड़ी, लाअन्तिक-भविष्यत् की जगह जयपुरी का-स-साधित भविष्यत् रूप मिलते है। मारवाड़ी-जयपुरी के इन न्यूनाधिक मिश्रणो को विभिन्न अचलो मे अलग-अलग नाम दिये हुए है। उदाहरणार्थ मारवाड के जयपुर से सटे हुए प्रदेश मे बोली ढूढाडी-जयपुरी की एक बोली—कहलाती है, क्योकि इस पर जयपुरी का प्रभाव वहुत अधिक है। यह मिश्रित भाषा जयपुर की सीमा के पास संभवत· मारवाडी की अपेक्षा जयपुरी के ही ज्यादा नजदीक है। किशनगढ़ मे स्थानीय मारवाडी को गोडावाटी कहते है। वह नामकरण सभवत· मारवाड़ के दक्षिण-पूर्व की गोड़वाडी पर आश्रित है। और आगे दक्षिण में अजमेर की मारवाडी एव मेरवाड़ी की मारवाड़ी को ऐसे कोई विशिष्ट नाम दिये नही जान पडते।

मेरवाडा के पूर्व मे मेवाड़ का महत्वपूर्ण प्रदेश स्थित है। मेवाड़ एव निकटस्थ अचलो की भाषा को मेवाडी कहा जाता है। यह पूर्वी मारवाडी का ही एक रूप है। इसके ऐतिहासिक महत्व के कारण हम इसका विस्तृत विवेचन अलग से करेंगे। उसी के साथ सब संख्या-आंकड़े भी दिये जायेगे।

मारवाड़ी की विभिन्न बोलियो के आंकडे इस प्रकार है—

पूर्वी मारवाड़ी	–	ढूंढाडी–मारवाड़ मे	–	४६,३००
गोड़ावाटी	–	किशनगढ़ मे	–	१५,०००
मारवाड़ी	–	अजमेर की	–	२,०८,७००

नमूना संख्या १ मारवाड़ी

ऐक जणै रै दोय डावडा हा. उवां मांय सूं नैनै
कियै आपरै बापनै कयो कै बाबासा म्हारी पांती
रो माल आवै जीको म्हनै दिरावो. जरै उण आ
परी घर बिकरी उणांनै बांट दिवी. थोडा दिनां
पछै नैनकियै डावडै आपरी सारी पूंजी भेली क
र परदेसां गयो नै उठै आपरी सारी मता कुरै
कामां में उडाय दिवी. सैंग षूटियां पछै उण देसमें
जबरो काल पडियो तो उवो कसालो भुगतण
लागो. नै पछै उण देस रै ऐक रैवासी कनै रं
यो तो उण आपरै षेतां में सूरां री चार चरावण

मारवाड़ी	–	मेरवाड़ा की	– १७,०००
मेवाड़ी	–	मेरवाड़ी समेत	– १६,८४,८६४
		कुल—	१६, ७४, ८६४

विवेचन सबसे उत्तरी बोली मारवाडी-ढूंडाडी के विस्तृत विवरण से आरम्भ होता है। इसके बाद क्रमानुसार एक के बाद एक दक्षिण की ओर आती हुई बोली का विवरण दिया जायगा।

'मारवाड़ी-ढूंढाड़ी

जोधपुर राज्य के सुदूर उत्तर-पूर्व में जहाँ उसकी सीमा जयपुर राज्य से मिलती है, स्थानीय बोली मारवाडी एवं जयपुरी का एक भिन्न रूप है जिसे वहाँ के निवासी ढूंढाड़ी कहते हैं। यह मिश्रण स्थान की स्थिति के अनुसार बदलता है। जयपुर की सीमा पर यह लगभग शुद्ध जयपुरी है, परन्तु ज्यो-ज्यो मारवाड की सीमा के भीतर जाते है मारवाडी का अनुपात बढता चला जाता है। स्थानीय जन इन्हे अलग-अलग बोलियाँ गिनता है। उनसे एकत्रित किए हुए अलग-अलग आँकडे इस प्रकार है।

ढूंडाडी	....	....	२८,५००
मिश्रित बोली	...	....	२०,८००
		कुल—	४६,३००

इनके उपलब्ध नमूनो से स्पष्ट जाहिर होता है कि इनमे और स्टैन्डर्ड मारवाडी मे नाम-मात्र का ही अन्तर है। कुछ अशो मे अतर की वह कमी उन अचलो की विशिष्टता भी मानी जा सकती है, जहाँ से सयोगवश नमूने लिये गये हैं। मारवाडी से थोडा-थोडा परिवर्तन होते-होते जयपुरी बन जाना निश्चित रूप से लक्षित होता है। इस मिश्र बोली के उदाहरण के तौर पर दी गई कथा की कुछ पक्तियो से यह बात स्पष्ट हो जायगी।

—ऐ ध्वनि के ह्रस्व रूप की जगह यहाँ –ए मिलता है। कुछ जयपुरी रूप भी लक्षित होते है, यथा—बी–उसने, छो—था, —को—का। पर भाषा मुख्यतया मारवाड़ी ही है।

ंख्या २

मारवाड़ी–ढूंढाड़ी — जोधपुर राज्य

एक जणा कै दो टाबर हा। बाँ-मे-सूं छोटक्ये आप-का बाप-नें कयो कें बाबा-जी मारें पाँती में आवें जको माल म-नें द्यो। जद्याँ बीं आप-की घर-

विकरी वाँनै बाँट-दीनी । थोडा-सा दिनाँ पछै छोटक्यो डावडो आप-की सगळी पूँजी भेळी कर परदेस गयो । वठै आप-की सारी पूँजी कुफण्डा-में उडा-दी । सगळो निविडयाँ पछै वीं देस-मे जबरो काळ पडियो । तो वो कसालो भुगतवा लाग्यो । पछै वीं देस-का रैवा वाला कनै रयो । वीं आप-का खेताँ मे सूराँ की डार चरावा मेल्यो । तो वीं सूराँ-के चरावा को खाखलो छो जीं-सूं आप-को पेट भरवा-को मतो कर्यो । पण खाखलो-ही कोई इन्नै दियो कोनी ।

किशनगढ़ की मारवाड़ी–गोड़वाटी एवं अजमेर की मारवाड़ी

इन दोनो बोलियो का विवेचन साथ मे किया जा सकता है । पहले दिये हुए नमूने की अपेक्षा इनमे जयपुरी उपादान की मात्रा बहुत कम है । यहाँ दिया हुआ नमूना अजमेर का एक छोटा सा लोक-गीत है । मद्यनिषेध के सिद्धान्तो से तो यह कोसो दूर है, परन्तु भाषा की दृष्टि से पूर्वी मारवाडी का एक आदर्श नमूना है । –नी, –जी, –डो स्त्री० –डी आदि अंगविस्तारक प्रत्ययो का बहुत प्रयोग द्रष्टव्य है । –डो का विवेचन मारवाडी व्याकरण के साथ किया जा चुका है । जयपुरी मे भी इसका प्रयोग मिलता है, परन्तु हीनता-सूचक अर्थ मे । यहाँ का प्रयोग हीनता की जगह विशेषत. प्यार का द्योतक है । तदनुसार 'दारूडी' का अर्थ 'थोड़ीसी प्यारी शराब' होगा । प्रथम पुरुष एकवचन की जगह बहुवचन का प्रयोग भी विशेष द्रष्टव्य है ।

संख्या ३

मारवाड़ी (पूर्वी) जिला अजमेर

अमलाँ-मैं आछ्या लागो म्हाराज । पीवो-नी दारू-डी ।।
सूरज थानै पुजर्म्याँ जी भर मोत्याँ को थाल ।
घड़ेक मोडा उगजो जी पिया-जी म्हारे पास ।
पीवो-नी दारू-ड़ी । अमलाँ मैं आछ्या लागो म्हाराज । पीवो-नी दारू-ड़ी ।।
जा एँ दासी बाग-मैं ओर सुण राजन री बात ।
कदेक महल पधारसी तो मतवाळो वणराज ।

पीवो-नी-दारू-ड़ी । अमलाँ मैं आछ्या लागो म्हारा राज । पीवो-नी दारू-डी ।।
थारी ओळूं म्हे कराँ म्हारी करे न कोय । थारी ओळूं म्हे कराँ करता करै जो होय ।
पीवो-नी दारूड़ी । अमलाँ-मैं आछ्या लागो म्हाराज । पीवो नी दारू-ड़ी ।।

मेरवाड़ा की मारवाड़ी

मेरवाडा की पूर्वी मारवाड़ी मे और स्टैण्डर्ड पूर्वी मारवाडी मे भी नही सा फरक है । गीगो, (लड़का) आजूका (संस्कृत आजीविका) आदि कतिपय नये

शब्दों के अलावा और कोई अंतर देखने में नहीं आता। नमूने के तौर कथा का कुछ अंश आगे दिया गया है। मारवाड़ी का ह्रस्व-ऐ यहाँ अक्षर-ए लिखा है। उणाँ की जगह वुणाँ केवल लेखनभेद का द्योतक है। सूरड़ो में -ड़ो का हीनार्थक प्रयोग द्रष्टव्य है। बांठ में ट का ठ हो गया है।

संख्या ४

मारवाड़ी (पूर्वी) **जिला मेरवाड़ा**

किणी आदमी-रे दोय गीगा हा। वुणाँ-माँ-हूँ नानक्ये बा-हूँ कहियो कै ओ बा आजूका-माँ-हूँ जको म्हाँरो बाँटो होय ओ म्ह-ने द्यो। तरेँ वीँ वुँणाँ-नै आप री आजूका बाँठ-दीवी। घणाँ दिवस नीँ वीतिया-हा कै नानकियो गीगो साँग समेटर अलग देसाँ हाल्यो ग्यो अर वुठै खोटा चाळाँ-माँ बिताबतो-हुवो आप-री आजूका बिताय दीवी। जदाँ विण साँग बिताय दीवी तदाँ विण देस-माँ बडो काळान्तर पड़ियो अर वु नागो हो-ग्यो। अर हालर विण देस-रा रहवण-वाळाँ-माँ-हूँ येक-रै अठै रहवण लागियो। जिणी विण-नै आप-रा खावाँ माँ सूरड़ा चरावण खातर भेजियो। अर वु विणी छौंतराँ-माँ-हूँ जिण-नै सूरड़ा खावता-हा आप-रो पेट भरणा चावियो-हो। अर विणी-ने कुणी नीं देवा हा॥

मेवाड़ी

आगे पूर्व की ओर बढ़ने, मेवाड़ी का वास्तविक घर मेवाड़ आता है। केवल दक्षिण-पश्चिम एवं दक्षिण के पर्वतीय प्रदेश को छोड़कर, जहाँ के निवासी भीलों की अपनी अलग बोली है, सारे मेवाड़ राज्य में मेवाड़ी बोली जाती है। मेवाड़ी के उत्तर-पूर्व में बूंदी की हाड़ौती तथा दक्षिण-पूर्व में मध्य-भारत के मालवा प्रदेश की मालवी बोली जाती है।

सरकारी तौर पर मेवाड़ या उदयपुर राज्य के नाम से विख्यात प्रदेश के अतिरिक्त मेवाड़ी उसके बाहर भी दो अंचलों में बोली जाती है। ये हैं ग्वालियर के नीमच जिले का गंगापुर परगना एवं टोंक का निम्बाहेड़ा परगना। इनके अतिरिक्त मेवाड़ी मेवाड़ के कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में भी बोली जाती है जो इस प्रकार हैं—उत्तर मेरवाड़ा के उत्तर-पूर्व में परतापगढ़ राज्य, जहाँ यह मेरवाड़ी कहलाती है, अजमेर में किशनगढ़ के दक्षिण में, जहाँ इसे सरवाड़ी कहा जाता है, तथा खैराड़ के पर्वतीय प्रदेश में जहाँ इसे खैराड़ी कहते हैं। मेवाड़, जयपुर एवं बूंदी राज्यों की सीमाएँ जहाँ मिलती हैं उस क्षेत्र को खैराड़ नाम से पुकारते हैं। मेवाड़ी के इन विभिन्न प्रकारों का सविस्तार विवेचन आगे किया जायगा। इनके बोलने वालों की अनुमित संख्याएँ इस प्रकार हैं—

मेवाड, ग्वालियर के गगापुर परगना समेत		....	१३,००,०००
टोक (निम्बाहेडा)	....	....	५८,०००
परतावगढ़	....	....	५,०००
ग्रजमेर	....	....	२४,१००
मेरवाड़ा (मेरवाडी)	....	....	५४,५००
किशनगढ (सरवाडी)	....	....	१५,०००
खैराड़ी—मेवाड	....	१,४५,०००	
जयपुर	....	५६,२६४	
बूँदी	....	२४,०००	
			२,२८,२६४
			१६,८४,८६४

उदयपुर की मेवाड़ी में पूर्वी मारवाड़ी की सभी बोलियो के खास खास लक्षण विद्यमान है। वास्तव मे वह मारवाडी एवं जयपुरी का मिश्रण है। जयपुरी के विशिष्ट छूं–मैं हूँ, एवं छो–था, की जगह मारवाडी के हूँ तथा हो मिलते है। परन्तु मारवाडी के सम्बन्ध परसर्ग –रो की जगह जयपुरी का –को मिलता है। –रो केवल म्हारो के सदृश सार्वनामिक रूपो मे दिखलाई पडता है। अन्य परसर्गो मे द्वितीया-चतुर्थी के –ने या –कै, पचमी का –हूँ : मारवाडी –ऊँ तथा सप्तमी का –माँ आदि है। सर्वनामो के रूप साधारणतया मारवाडी के ही हैं, पर कही-कही –ऊँ : वह का तिर्यक् –वी के सदृश जयपुरी रूप भी मिलते हैं। क्रियापदो मे स्टैण्डर्ड मारवाड़ी से कही-कही थोडा फरक लक्षित होता है। यथा—सकर्मक क्रिया के भूत-रूप के पहले तृतीया की जगह प्रथमा का प्रयोग, उदा० ल्होड़क्यो कह्यो : छोटा बोला। एक जगह सबधक कृदत कर-ग्रर : करर की जगह कर-हर—करके मिलता है। करर एव करहर दोनो की व्युत्पत्ति वैसे करकर से है। दूसरे -कर का –क लुप्त हो जाने से कर ग्रर हुग्रा, जिससे करर एव करहर दोनो रूप विकसित हुए। करहर का ह् केवल ध्वनिपूरक के रूप मे डाल दिया गया है।

ग्रावृत्तिदर्शक भूत से ग्रसंपन्न भूत का सा ग्रर्थ साधा गया है, उदा० खावा-हा : वे खा रहे थे, चावो हो : वह चाहता था।

देणो क्रिया का भूत रूप दीदो : उसने दिया, होता है। वैसा ही रूप कीदो : किया है। ग्रौर के ग्रर्थ मे जयपुरी ग्रर या हर का ही प्रयोग मिलता है। भाषा के रूप का ग्रन्दाज देने के लिए ग्रागे दिया हुग्रा कथा के ग्रश का नमूना पर्याप्त होगा।

संख्या ५

मेवाड़ी उदयपुर राज्य

कुणी मनख-के दोय वेटा हा । वाँ-माँ हूँ ल्होड़क्यो आप–का बाप –ने कह्यो हे बाप पूँजी माँ –हूँ जो म्हारी पाँती होवै म्ह –ने द्यो। जद वाँ वाँ–ने आप –की पूँजी वाँट दीदी । थोड़ा दन नही हुया हा कै ल्होड़क्यो वेटो सगळो धन भेळो करहर परदेस परो –गयो अर उटै लुच्चापण –माँ दन गमावताँ हुवाँ आपको सगळो धन उडाय दीदो । जद ऊ सगळो धन उडा चुक्यो तद वी देस –माँ भारी काळ पड्यो हर ऊ टोटायलो हो –गयो । हर ऊ जाय नै वा देस –का रहवावाळाँ –माँ हूँ एक –कै नखै रहवा लाग्यो । वाँ वाँ –ने आप –का खेत –माँ सूर चरावा –ने मेल्यो । हर ऊ वाँ छूँतरा –हूँ ज्याँ –ने सूर खावा –हा आप –को पेट भरवो चावो –हो । हर वा –ने कोई भी काँई नही देतो –हो । जद वाँ –ने चेत हुयो हर वी कह्यो कै म्हारा वाप –के कतराही दानक्याँ –ने खावा –हूँ वदती रोटी मिळै –है हर हूँ भखाँ मरूँ । हूँ ऊठर वाप नखै जाऊँलो हर वा –ने कहूँलो कै है वाप बैकुंठ हूँ– उलटो हर आप –के देखताँ पाप कीदो –है । हूँ फेरूँ आप –को वेटो कुहावा जोगो नहीं हूँ । म्ह –ने आप –का दानक्याँ –माँ –हूँ एक के सरीखो कर-द्यो ।

अजमेर की मेवाड़ी

अजमेर के दक्षिण मे उदयपुर की सीमा से लगे हुए प्रदेश में अनुमान है, करीब २४,१०० की सख्या मेवाडी बोलती है । इसमे और साधारण मेवाड़ी मे कोई विशेष फरक नही है; प्रादेशिक विभिन्नताएँ यत्र-तत्र थोडी-बहुत दृष्टिगोचर होती हैं, पर वे उल्लेखनीय नही लगती । केवल एक चीज—सम्बन्ध-परसर्ग –को की जगह–रो का उपयोग द्रष्टव्य है । यह प्रयोग स्वाभाविक है, क्योकि अजमेर का यह भाग मारवाडी-भाषी प्रदेश से सटा हुआ है । नमूने के बतौर उदयपुर के राणाजी के सम्मान में गाया जाता एक छोटा-सा लोकगीत आगे दिया गया है ।

सख्या ६

मेवाड़ी जिला अजमेर

रस्यो राणे –राव हिंदुपत रस्यो राणे –राव ।
म्हारे वस्यो हिवडा माँय । विळालो रस्यो राणे-राव ।।
जोख करै जगमद्र पधारै । नोख विराजै भाव ।
सोळा उमरावाँ साथ हिंदुपत । रस्यो राणे –राव ।।
म्हारै वस्यो हिवड़ा माँय । विळालो रस्यो राणे –राव ।।

निछरावळ प्रथीनाथ –री । क्रोड मोहर कुरवान ।।
आया –रा करू ँ ओछावरा । पळ-पळ वारू ँ प्राण ।
बिळालो रस्यो राणे –राव हिंदुपत । रस्यो राणे –राव ।।
म्हारै बस्यो हिवड़ा मांय । बिळालो रस्यो राणे –राव ।

किशनगढ़ की मेवाड़ी

किशनगढ राज्य के मेवाड –सीमावर्ती प्रदेश मे सरवाड एव फतेहपुर परगनो के आधे भाग मे लगभग १५,००० मेवाडी-भाषी होने का अनुमान है । तन्निकटस्थ अजमेर के अचल की भाषा की तरह यह भी स्टैण्डर्ड मेवाडी से जरा भी भिन्न नही है; अतएव इसके नमूने देने की आवश्यकता प्रतीत नही हुई । सरवाड़ मे बोले जाने की वजह से स्थानीय जन इसे सरवाड़ी कहते है ।

मेरवाड़ी

मेवाड राज्य की उत्तर-पूर्वी सीमा से लग कर मेरवाडा का पहाडी जिला स्थित है । मेरवाडा के दक्षिणी भाग की भाषा मगरा की बोली कहलाती है, जिसे बहुसख्यक भील बोलियो मे गिना गया है ।

जिले के उत्तर-पश्चिमी भाग मे उत्तर की ओर ब्यावर तक मारवाडी का क्षेत्र गिना जाता है । बाकी के उत्तर-पूर्वी हिस्से मे लगभग ५४,५०० की जनसख्या मेवाडी-भाषी मानी जाती है, परन्तु स्थानीय जन इसे जिले के नाम पर मेरवाडी कहते है । नाम भिन्न होते हुए भी इसमे और साधारण मेवाडी मे कोई अ तर नही है, अतएव अलग नमूने उद्धृत करना अनावश्यक समझा गया ।

मेवाड़ी (खैराड़ी)

खैराड़ उस पर्वतीय प्रदेश का नाम है जहाँ जयपुर, बू ँदी एव मेवाड़ राज्यो की सीमाए ँ मिलती हैं । यहाँ मुख्यत: मीणा लोगो की बस्ती है, जिनकी बोली मेवाड़ी का ही एक विस्तृत रूप है । खैराड का विस्तार उक्त तीनो राज्यो मे है; अतएव खैराडी भाषियो के अनुमित आँकडे इस प्रकार दिए जा सकते है—

मेवाड मे	१,४५,०००
जयपुर मे	५६,२६४
बू ँदी मे	२४,०००
कुल	२,२५,२६४

जयपुर की मुख्य भाषा जयपुरी एवं बू ँदी की हाडौती है । ये दोनो राजस्थानी की पूर्वी शाखा की बोलियाँ हैं । मेवाड की मुख्य भाषा मेवाडी है जो राजस्थानी की पश्चिमी शाखा के अन्तर्गत आती है । फलत: खैराडी मे दोनो

शाखाओं का मिश्रण पाया जाता है। उदा० 'मैं हूँ' के अर्थ मे यहाँ पूर्वी का छूँ और पश्चिमी का हूँ दोनों मिलते है। वास्तव मे खैराडी एक मिश्र बोली है।

खैराडी का विस्तृत विवेचन श्री मेकेलिस्टर की जयपुर की बोलियों विषयक पुस्तक मे मिलेगा। उक्त पुस्तक के पृ० १२६ से खैराडी बोली के नमूनों के रूप मे उद्धृत की हुई अनेक लोक-कथाएँ मिलेगी, एव पृ० ५२ से तथा पुस्तक के दूसरे खण्ड मे उसकी व्याकरण का खाका देखा जा सकता है।

हम यहाँ मेकेलिस्टर महोदय द्वारा उद्धृत बाइबल की कथा का कुछ अश देना पर्याप्त समझते है। इस छोटे से उद्धरण मे भी मुख्य क्रिया के पूर्वी एवं पश्चिमी दोनो रूप मिलते है।

संख्या ७

मेवाड़ी (खैराड़ी) **जयपुर राज्य**

कोई आदमी-कै दो बेटा हा। वाँ–मै–सूँ छोटो ऊँ–का बाप–नै कीयो बाप धन–मैँ–सूँ जो म्हारी पाँती आवै जो म–नै दे। ऊ आप–को घन वाँ-नै बाँट–दीयो। थोडा दना पाछै छोटो बेटो सब धन लेर पर–देस–मैँ ऊठ–ग्यो अर उडै खोटै गेळै लागर आप–को सब धन उडा-दीयो। ऊ सब धन उडा–दीया जद्याँ ऊँ देस–मैँ वडो काळ पड्यो अर ऊ कँगाळ हो-ग्यो। ऊ गियो अर ऊँ देस-का रैबाहाळाँ-मैँ-सूँ एक-कै रै-ग्यो। अर ऊ ऊँ-नै आप-का खेताँ-मैं सूर चराबा खनायो। जो पातड़्याँ सूर खावै-छा जाँ-सूँ ऊ आप-को पेट भरवा-सूँ राजी छो।

दक्षिणी मारवाड़ी

मारवाड़ राज्य के दक्षिण-पूर्वी भाग मे एक और परिवर्तनकारी कारण मिलता है। यह है अडावली पर्वतमाला की भील बोलियाँ। इनमे और गुजराती मे बहुत नजदीक का सम्बन्ध है। यत्रतत्र मालवी का असर भी दृष्टिगोचर होता है। फलत. दक्षिण-पूर्व मारवाड की बोली एव सिरोही की बोली मे बहुत से रूप लगभग शुद्ध गुजराती के और कुछ मालवी के भी मिलते हैं। मारवाड की दक्षिणी सीमा के सहारे-सहारे जब हम पाल्हणपुर तक पहुचते है, तब गुजराती का असर और भी अधिक पाते है। यह असर भीली के मारफत न आकर गुजराती से सीधा आया हुआ है। इस भाग में भाषा का स्वरूप इतना मिश्रित है कि मारवाड के लोग इसे गुजराती कहते है और गुजराती मातृभाषा वाले पाल्हणपुर के निवासी इसे मारवाडी कहते हैं। उपयुक्त नाम के अभाव मे हमने इसे मारवाड़ी-गुजराती की सज्ञा दी है। यह पाल्हणपुर राज्य मे कुछ दूर तक फैली हुई है।

दक्षिणी मारवाडी मे चार बोलियो का समावेश हो सकता है। वे इस प्रकार हैं—

१—गोडवाड़ी, पहले उल्लिखित न्यार की बोली के पश्चिम मे।

२—सिरोही, सिरोही राज्य एवं तन्निकटस्थ मारवाड़ के हिस्से मे बोली जाती है।

३— देवड़ावाटी, सिरोही के पश्चिम के अचल मे बोली जाती है।

४—मारवाड़ी–गुजराती।

इनकी सख्याएँ इस प्रकार है—

गोडवाड़ी		१,४७,०००	मारवाडी–गुजराती—	
सिरोही–			मारवाड	३०,२७०
सिरोही	१,६ ,३००		पाल्हणपुर	३५,०००
मारवाड	१०,०००			———
	———	१,७६,३००		६५,२७०
देवडावाटी		८६,०००		———
			कुल—	४,७७,५७०

गोडवाड़ी

अड़ावली पर्वतमाला जहाँ मारवाड़-सिरोही को मेरवाडा-मेवाड से अलग करती है, वहाँ न्यार की बोली नामक एक भील बोली प्रचलित है। यह कुछ दूर तक सिरोही राज्य मे और कुछ दूर तक मेवाड राज्य मे भी बोली जाती है। सिरोही राज्य से सम्बन्धित विवेचन आगे किया जायगा। मारवाड राज्य मे न्यार की बोली के पश्चिम वाले प्रदेश मे सोजत, बाली एव देसूरी परगनो का पूर्वी हिस्सा आता है। इस अचल को गोडवाड कहते है, तदनुसार यहाँ की बोली गोडवाडी कहलाती है।

हम आगे कह चुके है कि यह एक ऐसी मिश्रित बोली है, जिसमे गुजराती –भीली– के बहुत से एव मालवी के कुछ रूप मिलते है।

इस बोली मे ए का उच्चारण लम्बा होता है। च ध्वनि बदल कर स हो जाती है, उदा० चरावो की जगह सरावो। स ध्वनि बदलकर ह हो जाती है। उदा० सुखदेव की जगह हुखदेव; सारो की जगह हारो।

इस बोली के उदाहरण-स्वरूप बाइबल के कथाश का कुछ भाग देना पर्याप्त समझा जाता है। गुजराती से ली हुई विशिष्टताओ मे ये द्रष्टव्य है– बे : दो; डीकरो : बेटा; ती –गुजराती थी : से; हतो : वह था; करे –ने गुजराती करी –ने : करके। था के अर्थ मे थो, स्त्री –थी, का प्रयोग मालवी से लिया गया है।

भविष्यत् का रूप स्टैण्डर्ड मारवाड़ी का ही है; उदा० जाऊँ : मै जाऊंगा; के आँ : मैं कहूँगा। सकर्मक क्रिया के भूतकालिक रूप के साथ कर्ता तृतीया

के बदले प्रथमा मे भी रह सकता है, उदा० लोरो डीकरो कियो : छोटे लड़के ने कहा । पूर्वी राजस्थानी मे करण प्रथमा के रूप मे भी रह सकता है ।

संख्या ८

मारवाड़ी (गोडवाड़ी) जोधपुर राज्य

एक जणा-रे बे डीकरा हता । वणाँ-में-ती लोरो डीकरो आप-रा बाप-ने कियो भावा-जी मारी पाँती-रो माल आवे जको मने वँटवार करेने द्यो । जरे वणे आप-री घर वकरी वणाँ-ने वाँटेने दे-दी । थोरा दारां केरे लोरकियो डीकरो वण-री पाँती आई जको भेळी करेने परदेस गो ने वठे वण-री पजी थी सो अफण्डा-में गमाय-दीदी । हारी खुटियाँ केरे वण देस-म मोटो काळ पड़ियो । तरे वो भूक-तिर भुगतवा लागो । अठा केरे वण देस-रा एक रेवासी पाये रियो । ने उण वण-ने भड़ूराँ-ने सरावा-ने खेत-में मेलियो । तो वण भड़ूराँ-रे सरवा-रो खाकळो हतो ताण-ती आप-रो पेट भरवा-रो मतो कीदो । पण वण-ने खाखो-ही कणेई दीदो नी ।

सिरोही

सिरोही बोली सिरोही राज्य मे एव उससे लगे हुए मारवाड़ के जालोर परगने के कुछ भाग मे बोली जाती है ।

आबू पर्वत सिरोही राज्य मे ही है । इस पर रहने वाले जन आबू लोक कहलाते है । ये सिरोही का ही एक रूप बोलते है जिसे मैदान के राजपूत राठी कहते है । यह साधारण सिरोही से बहुत भिन्न नही है । फिर भी सिरोही की उपबोलियो का विवरण समाप्त करने के बाद हम इसका भी अलग सक्षिप्त विवेचन करेगे । सिरोही राज्य के दक्षिण-पश्चिम मे सिरोही की एक और बोली मिलती है, जिसे साएठ की बोली कहते है । इसका भी विवेचन अलग से किया जायगा । राठी एवं साएठ की बोली समेत सिराही बोली के भाषियो की सख्या इस प्रकार है—

	सिरोही	राठी	साएठ की बोली	
सिरोही मे—	१,६१,३००	२,०००	६,०००	१,६६,३००
मारवाड़ मे—		१०,०००		
			कुल :	१ ७६ ३००

सिरोही बोली मे गुजराती का प्रभाव बहुत अधिक है । नामरूप साधारणतया मारवाड़ी के अनुसार चलते है एवं सहायक क्रिया भी अशत : मारवाडी की ही मिलती है । परन्तु मुख्य क्रिया के रूप विशुद्ध गुजराती के ही है । इसका

एकमात्र अपवाद भविष्यत्काल है, जिसके रूप मारवाड़ी के पाये जाते है। गुजराती का नपुंसक लिग निरपवाद रूप से पाया जाता है और गुजराती की ही भाति एकवचन मे -उँ अन्तिक तथा बहुवचन मे -आँ अन्तिक होता है। सिरोही बोली मे गुजराती प्रभाव का विस्तृत विवेचन हम नही करेंगे। आगे दिये हुए नमूनो मे वह इतना स्पष्ट झलकता है कि उसे दिखाने का प्रयत्न अनावश्यक होगा। परन्तु मारवाडी के दृष्टिकोण से सिरोही की निम्नांकित विशेषताएँ द्रष्टव्य हैं। अग्रस्थित व का प्राय: लोप हो जाता है, उदा० वरा या अरा: उसको मे; परन्तु उसका आगम भी उतनी ही बार पाया जाता है, यथा -हुओ: हुआ, की जगह वुओ।

च, छ, श, ष की जगह बराबर स उच्चारण किया जाता है एव लेखन मे भी स ही लिखा जाता है। उदा० चरावो : चरना की जगह सरावो; चन्दणपुर की जगह सन्दणपुर; शह्‌र की जगह सेर; दुष्ट की जगह दुसट। पर असमस्त ष का उच्चारण ख या क मिलता है, यथा -मनुश की जगह मिनक।

महाप्राणत्व का बराबर लोप पाया जाता है, यथा -देहरूं: मन्दिर--देरू; घर: गर, घणा · बहुत से ०गणाँ; झाड: वृक्ष -जाड।

मूर्द्धन्य ण का मारवाडी की भाति मूर्द्धन्य उच्चारण होने के बदले दन्त्य की तरह किया जाता है।

श और स दोनो का उच्चारण स ही किया जाता है, और अग्रस्थित स का उच्चारण व लेखन ह होता है। उदा० हारूँ: सारा; हूर: सुअर। अन्तिम होने पर इसका उच्चारण नही किया जाता, यथा— दस— द।

ऊपर कहे अनुसार नपुसक लिग बराबर पाया जाता है। नपुं० सम्बन्ध परसर्ग -रूँ बहु० -रा है, जिसके पु० -रो, बहु० -रा, स्त्री० री मिलते हैं। नपु० का एक अच्छा उदाहरण यह है: महादेव-रुँ देरूँ देखिउँ: महादेव का मदिर देखा। पचमी का परसर्ग-ती है। सर्वनामो मे गुजराती का पोतो: स्वय द्रष्टव्य है।

सहायक क्रिया तो के भूतकाल रूप इस प्रकार हैं—

	पु०	स्त्री०	नपु०
एकवचन	तो	ती	तुं
बहुवचन	ता	ती	तां

यह-तो सभवत: गुजराती हतो के सकुचित रूप अतो से आया है, या इसे थो का महाप्राणहीन रूप कहा जा सकता है। तो दूर पर बोली जाती पश्चिमी हिन्दी की उपभाषा बुदेली मे तथा उत्तरी गुजराती मे भी मिलता है।

संयुक्त क्रियारूप बनाते समय मारवाडी व्याकरण के अनुरूप परो और वरो–यहा लिखित रूप अरो—का प्रयोग भी द्रष्टव्य है ।

सिरोही बोली के उदाहरणस्वरूप बाइबल के कुछ कथांश का अनुवाद तथा एक लोक-कथा दिये गये हैं । सर्वेक्षण के लिए इन्हे सिरोही राज के महाराज के प्राइवेट सेक्रेटरी बाबू शरत्चन्द्र रायचौधरी ने तैयार करवाया है ।

संख्या ९ नमूना १

मारवाड़ी (सिरोही) सिरोही राज्य

कोई मिनक-रे बे दिकरा ता । वण-माय-ती नॉनके दिकरे भावा-ने कियुँ के ओ भावा-जी आँपणे अण धन-माय-ती जो मारे पाँती आवे जितरूँ म-ने दिओ । जरिँ वणे पोता-रो धन वाँटीने दे दीदी । गणा दाडा नीँ वुआ जरिँ नॉनको दिकरो हारूँई धन भेळो करीने अलगो देसावर गो । जरिँ वटे लुचाई-में दाडा गमायने पोता-रो धन गमाओ । तरिँ पसे वण देस-मे मोटो काळ पडिओ । जरिँ वो कगीर वुओ । जरिँ वो जायने वण देस-रा रेवासिआँ-माय-ती एक-रे पागती रेवा-लागो । जरिँ वणे वण आदमी-ने पोता-रा खेतर-म हूर सरावा हारू मेलिओ । जरिँ वो खाखलुँ हूर खाताँ-ताँ वण-माय-ती वण-री पेट भरवा-री मरजी वुई । पण कोई मिनक वण-ने काँइँ नीँ देता-ता ।।

संख्या १० नमूना २

मारवाड़ी (सिरोही) सिरोही राज्य

एक सन्दरणपूर नाँम सेर तुँ । वण मे एक धनवाळो हाउकार तो । वणे-री वु हाई ती । वण वु ने होनार केवा लागो के थे दुरमोती पेरिआँ नीँ जको दुरमोती मँगावेने पेर । होनार तो अतरूँ के-ने परो-गो । जरिँ पसे हाउकार गरे आयो । जरिँ हाउकार-रे वुए कीँउ के म-ने दुरमोती पेरावो । जरिँ वणे हाउकारे कीँउ के मुँ परदेस-मे लेवा जाउँ-हूँ ने लावेने पेरावूँ । तरिँ वो हाउकार अतरूँ के-ने देसावर गो । जाताँ जाताँ अलगो दरिआ कनारे गो । जायने वणे दरिआ ऊपर तीन धरणाँ कीदाँ । तरिँ वण-ने सोइणुँ आयुँ के अठे दुरमोती नीँ हे । जरिँ वो उटेने वीर-वुगो ने पासो आवतो तो । जतरे मारग-में एक महादेव-रूँ देरूँ देखिउँ । जरिँ वो हाउकार वण देरा-मेँ जायने वेटो । जतरा-मे महादेवजी-रो पूजारी एक वाँमण आयो ने वणे वाँमणे पूसियुँ के थुँ कुण है । जरिँ वो केवा लागो के मुँ हाउकार हूँ । तरिँ बामणे कीयुँ के थुँ क्युँ आयो । जरिँ वो हाउकार वोलियो के दुरमोती लेवा हारू आयो हूँ । तरिँ वाँमणे कीउँ के थुँ माहादेव-जी ऊपर धरणुँ दे । जको थ-ने माहादेव-जी दुरमोती देई । जरिँ वणे हाउकारे माहादेव-जी ऊपर धरणाँ दीदाँ । तरिँ माहादेव-जी रात-रा वाँमण-रे

सोइरो जायने कीउँ के ए वाँमरा थुँ अरा अँदारा वेरा-में उतरैने दुरमोती लावेनें अरा-ने दे। जरिँ वो वाँमरा अँदारा वेरा-में उत्तरेने दुरमोती लावेने हाउकार-ने दीदाँ। जरिँ वो हाउकार दुरमोती ले-ने गरे आवताँ तकाँ मारग-में एक ठग मिळिओ। जरिँ हाउकारे ठग-ने देखीने मन-में विचारियुँ के मोती ठग अराँ-लेई। जरिँ हाउकारे पोता-री हातळ फाडेने दुरमोती पराँ-गालिआँ। पसे वो हाउकार ठगा-रे गरे गो। जरिँ वाटी-वीजी खायने रात-रा हूतो। जतरे ठग-री बेटी आई। जरिँ हाउकारे पूसिउँ के थुँ कुरा हे। जरिँ वा ठग-री बेटी केवा लागी के मुँ थ-ने ठगवा आई हूँ। जरिँ हाउकारे कीउँ के भलाँई ठग। पण माऱुँ एक वेरा हाम्वळ। जरिँ कीउ के का के-हे। जरिँ वरो कीउँ के थुँ पाप करे जरा में पाप-रा भागीदार गर-राँ कोई वेहे के नीँ। जरिँ वा नीसे आवेने गरवाळाँ-ने पूसिउँ के मुँ पाप करूँ जरा-में थे पाप-रा भागीदार हो के नी। तरिँ गरवाळाँ वोलिआँ के मे था-रा पाप-रा भागीदार नीँ हाँ। जरिँ वा ठग-री बेटी पासी हाउकार पागती जायने वोली के हे हाउकार मुँ थ ने ठगुँ नीँ। ने थुँ म-ने था-रे साते ले-ने जा। तरिँ हाउकार ने ठग-री बेटी वेई जराँ रात-रा उँटे माते वे-ने हाउकार-रे गरे गिआँ ने-वे जो दुरमोती लाआँ-थाँ जको हाउकार-री वु ने पेराविया। ने पसे मजा करवा लागाँ।

आबू लोक-की बोली या राठी

आबू के शिखर पर वसे हुए गाँवो के जन एक मिश्र जाति के है, जो इसी अचल मे मिलते है। ये अपने को लोक यानी आवू के जन कहते है। इनके उद्गम के विषय मे निश्चित रूप से कुछ कहा नही जा सकता। ये अपने को राजपूत कहते हैं। स्थानीय परम्परा के अनुसार ये उन राजपूतों के वंशज माने जाते हैं, जो १३वी शती मे वृपभदेव के प्रसिद्ध मन्दिर का निर्माण होने के पश्चात् यहाँ बस गये थे। इन्होने स्थानीय आदिवासी स्त्रियो से विवाह-सम्वन्ध किए। मैदान के राजपूत इन्हे राठी अर्थात् मिश्र या सकर कहते हैं, जो इन्हे पसन्द नही है।

इनकी वोली लगभग सिरोही के सदृश ही है। उसके मिश्र स्वरूप का अदाज आगे दिए नमूने से मिल सकता है। उसमे-था के अर्थ मे मारवाडी का-हो तथा सिरोही गुजराती का-तो दोनो मिलेगे।

नमूने के रूप मे उनके रीति-रिवाजो के वर्णन का कुछ अश दिया गया है। इस प्रसंग मे यह वता देना ठीक होगा कि अभी हाल तक इस जाति के नवयुवक को दुलहन छल-कपट से ही लानी पडती थी। अपने पास एक साडी छिपा कर वह घर से निकल पड़ता और मौका पाकर अपनी पसन्द की किसी युवती पर साडी को डाल देता। बस फिर युवती की इच्छा उसे वरने की हो या न हो, वह

उसकी पत्नी बन जाती थी। इस पद्धति के फलस्वरूप कबीलों की दुश्मनी खड़ी हो जाती थी, जिसमे अक्सर लड़की के सम्बन्धी कपटी युवक के घर पर धावा मारकर उसके ढोर-पशु और सामान सब उठा ले जाते। बाद मे, अक्सर राज्य के अफसर बीचबचाव करके उनकी पंचायत के मारफत बिना किसी खूनखराबी के, झगडे का निपटारा करवा देते। अपराध के दण्डस्वरूप राज्य को कुछ अनाज और घी मिलता और बिरादरी को दावत के बाद 'अमलपानी' पिलाने पर पुनः राजी-रजामदी मान ली जाती।

उद्धृत नमूने मे स्वर के आगम-लोप के विषय की अस्थिरता स्पष्ट दिखाई पड़ती है। डण्ड की जगह डुण्ड, और गुनो की जगह गनो मिलता है। भाव-वाच्य में सयुक्त क्रियारूप बनाने के लिए प्रयुक्त बरो का ओरो हो जाता है। नपुं० सबध रूप ए-रूँ : इसका प्रयोग 'इस तरह का' के अर्थ मे होता है। गुजराती जोइये : चाहिए की जगह जोजे का प्रयोग द्रष्टव्य है। इस छोटे से नमूने मे भी कई भील शब्द मिलते हैं, यथा—खोलरू : झोपड़ी, डालूं : डाली या शाखा, पूठे : पीछे।

महाप्राणत्व के लोप के अनेक उदाहरण नमूने मे मिलते हैं, यथा छगरो : झगड़ा; गर : घर। चोरी की जगह सोरी, तथा सवासो की जगह हवाहो, एव सरीखो की जगह हरको द्रष्टव्य है।

संख्या ११

मारवाड़ी (सिरोही-राठी) सिरोही राज्य

एक भाई सोरी–पेटो गर–मे बीरोत गाली–ई। भावी गर–मे गाली–हे। जण–रे माते डुण्ड–मुण्ड राज–ती कीदो। तरे जगरो भागिओ हवाहो रुपिया दीदा। आगे ए–रुँ तुँ सात पासेरो अमोल डुण्डे–रे वास्ते तोलिओ। बीरोते–रे माते सात वराँ कजीओ कीदो। खोलराँ पाडिआँ। न्यात–मे ओ धणी जोजे नही। डाळुँ–कवाडुँ कजिआवारे लीदुँ–ओरुँ। तरी आँहो पीया हरको भाटो उणे–रे गर–मे राखिओ कोइनीँ। इए–रे गर–मे खोलराँ पाडेने उण–रो गनो थापिओ। जण–रे माते पुठेवारुँ खणावावारो मळिओ नीँ। ओठे आगे ए–रुँ तुँ के राजा–रुँ डुण्ड–मुण्ड नीँ तुँ। खून हाँभलिओ तो बे बारो डुण्ड पडे जगरो सोटवतो–तो के ओजमतो–तो॥

साएठ की बोली

सिरोही राज्य के सुदूर दक्षिण-पश्चिम छोर पर जहा पाल्हणपुर राज्य की सीमा आ जाती है, साएठ या साठ प्रदेश बसा हुआ है। यहां दक्षिणी मारवाडी का सिरोही रूप गुजराती से इतना मिश्रित हो गया है कि उसे मारवाड़ी या गुजराती किसी के भी अन्तर्गत माना जा सकता है। यह मिश्रण बिल्कुल

निर्जीव रूप से चलता है। एक भाषा के रूप दूसरी भाषा के साथ फेंके हुए से मिलते है। उत्तरी गुजराती की तरह च की जगह स उच्चारण मिलता है। उदा० चवरी : विवाह मंडप की जगह सवरी, एव पछे : पीछे की जगह पसे मिलते हैं। इस बोली की सख्या ६००० बताई जाती है। नमने के तौर पर सिरोही राज्य से उपलब्ध एक मनोरजक लोककथा दी गई है।

सख्या १२

मारवाड़ी (साएठ की बोली) सिरोही राज्य

एक राजा उजेणी नगरी-रो धणी थो। वो राजा रात-रा बजार-मे गीओ ने वदाएत आवती-थी। वणने राजाए पुचीयु के थु कुण हे। अवणारे कीयु के मु वदाएत हु। एक भरॉमण-रे ऑट लखवा-रे वास्ते जाउ चु। राजाए पुचीउ के सु ऑट लखीओ। ते वदाएत कीयु के जेवा ऑट लखीस तेवा वलताँ केही जाउ। वदाएताए वो ऑट लीखीओ के ए भरॉमण-रे नवमे मेहीने एक दीकरो आवे। दीकरो जनमतो शॉवरे तो बाप मर-जाए। वो दीकरो परणवा-रे वास्ते जाए तो चवरीऑ-मे वाग मारे। एवु केहीने वदाएत राजा पागती-थी गरे गई॥

पचे राजाए भरॉमणीने धरम-बेन कीधी। पचे दीकरो जनमताँ दीकरा-रो बाप परो-मुओ ने दीकरो मोटो हुओ। जरे राजाए दीकरा-रे शगाई कीधी। ने जॉन-री त्यारी कीधी ने परणवा शारू वुआ। पसे दीकरा-रे शाव-रे जाए ने नही मारवा-रो पको बदोबस्त कर दीकरा-ने सवरीऑ-मे बीआडीओ ने परणावीने सवरीऑ थी उतरीने बीद बीदरणीने एक लोडारी कोठी-मे गाली ने बन्द करीऑ के वाग दीकराने न मारे। पसे जॉन रवॉनी हुई। तरे दीकराने बोहु केवा लागी के ऑपाँ वेईऑने लोडारी कोठी-मे काण वास्ते गालीऑ। दीकरे कीयु के एवो वदाएताए-रो ऑट लखीओ के मने सवरीऑ-मे वाग मारवारो लखीओ। जण-थी मे राजाने धरम-भाई कीदो। जरे राजाए ऑपाँने लोडारी कोठी-मे गालीऑ। जरे दीकरीए कीउ के वाग केवो वे-हे। तरे वणे दीकरे लोडारी कोठी-मे वेटांतकाँ वाग-रो चेरो काडीओ। जरे उणे चेरा-रो वाग वणे-ने दीकराने परो-मारीओ। पसे जरे आवीने राजाए लोडारी कोठी उगाडी तो भरॉमण-रे दीकराने मुओ देखीओ ने वाग बारे नीकलीओ। तरे राजाए मने-मे जाँणीयु के वदाएता-रा ऑट लखीआ वे-हे सो खरा हे॥

देवड़ावाटी

सिरोही बोली की पूर्वी सीमा पर मारवाड राज्य मे देवडावाटी नामक बोली का क्षेत्र है। इसके बोलने वालो की सख्या ८६,००० के लगभग बताई जाती है।

इस बोली मे गुजराती का मिश्रण सिरोही से भी अधिक पाया जाता है। गुजराती प्रश्नार्थक शूं भी यहाँ मिलता है जिसका रूप हूँ हो जाता है। 'हूँ' के अर्थ मे गुजराती का छूं एवं मारवाड़ी का हूं दोनों लगभग बराबर परिमाण में पाये जाते है। यह सब होते हुए भी संबंध-परसर्ग सर्वत्र मार ाडी का रो ही मिलता है। गुजराती का नो कही भी नहीं पाया जाता।

इस मिश्रित बोली का नमूना देना बिल्कुल अनावश्यक है।

मारवाड़ी-गुजराती

मारवाड राज्य के दक्षिण मे पाल्हणपुर रियासत स्थित है, जिसे शासकीय दृष्टि से बम्बई प्रान्त मे गिना जाता है। यहाँ की मुख्य भाषा गुजराती है। मारवाड-पाल्हणपुर के सीमा-स्थित प्रदेश मे एक प्रकार की मिश्रित बोली बोली जाती है, जिसे मारवाड वाले गुजराती एव पाल्हणपुर वाले मारवाडी कहते हैं। इस द्विमुखी नाम से ही इसके मिश्रित रूप का आभास मिलता है। इसके स्वरूप मे विभिन्न अचलो तथा बोलने वालो की जातियो के अनुरूप कमोवेश फरक पाया जाता है।

पाल्हणपुर राज्य एव उसके आस-पास मे हिन्दोस्तानी मातृभाषा वाले मुसलमान काफी बडी सख्या मे बसे हुए हैं। अतएव इस सीमा प्रदेश की बोली मे हिन्दोस्तानी का मिश्रण भी काफी मात्रा मे पाया जाता है।

उद्धृत नमूना पाल्हणपुर राज्य मे प्राप्त हुआ है। विषय एक छोटी सी लोककथा है। नमूने मे मारवाडी एवं हिन्दोस्तानी की, और साथ ही साथ गुजराती की भी छूट से खिचडी बनाई हुई मिलेगी। इस बोली की अपनी विशिष्टता कुछ दीर्घ स्वर हैं, जो ईण, जीण आदि सार्वनामिक तिर्यक् रूपों में पाये जाते हैं। यह लेखनकार की गलती नही है, बल्कि किसी उच्चारण विशेष को लेखन मे ठीक-ठीक उतारने का प्रयत्न मालूम पडता है। मारवाडी-गुजराती के बोलने वालो के आंकडे इस प्रकार हैं—

मारवाड राज्य मे	३०,२७०
पाल्हणपुर रियासत मे	३५,०००
कुल	६५,२७०

संख्या १३

मारवाड़ी (गुजराती से मिश्रित) **पालनपुर राज्य**

एक सेठ-रा कने ईण-रा चार मुलाजिम दीवाळी-रा दाहाडे बक्षीस लेणे-कुं आये। सेठ-जी-ने ईण-रा आगे टेबल-पर एक गीता-जी धर-दीनी ओर

उणाँ–री बाजू–मे पाँच पाँच रुपियाँ–री चार ढगली–ओ कीनी। फेर सेठ–जी–ए एक नोकर–कुँ पुँसिया के थाँ–रे ओ गीता–जी चाहीजे–हे के पाँच रुपिया चाहीजे–हे। साहेब हूँ पढी सकूँ नही। जीण–सूँ मोरे–तो पाँच रुपिया लेणा हे। बाद सेठ–जी–ने दुसरे–कुँ पुँसिया के थाँ–रे काँई पसंद हे। ओ गीता–जी के पाँच रुपिया। साहेब मे पढिया–तो हूँ, मगर मोरे–तो रुपिया री गरज हे। जीण–सूँ रुपिया लेता–हूँ। तीसरे ने भी रुपिया लीना। चोथा सकस जो चवद बरस–री उमर–रो थो। जीण–सूँ सेठजी–ने पुँसिया के थाँ–रे भी रुपिया चाहीजे हे। लडके–ने जबाब दिया के साहेब मोरे–तो गीता–जी चाहीजे–हे। मे अपणी बूढी मा–के आगे पढूँगा। ये कहे–कर उस–ने गीता–जी उपाड लीनी। ईण–माँहे–सूँ एक सोना मोहर निकळ आई। वे देख–कर तीनूँ सकस सरम–सूँ नीचे भाळणे लगे॥

पश्चिमी मारवाड़ी

मारवाड़ राज्य में जो जोधपुर के उत्तर एवं पश्चिम की ओर एक बहुत बड़ा रेतीला मैदान है, इसे थल् कहते हैं: थळ का अर्थ होता है रेतीली मरुभूमि। इसका प्रसार उत्तर में बीकानेर, दक्षिण में मालाणी तथा पश्चिम में जैसलमेर एवं सिन्ध की सीमाओं के अन्दर तक चला गया है। बीकानेर के थळ की बोली का विवेचन आगे किया जायगा। उसे छोड़ बाकी के थळ की बोली को पश्चिमी मारवाड़ी का नाम दे सकते हैं। मारवाड़ी की पश्चिमी सीमा से ही सिन्धी का प्रवेश शुरु हो जाता है, अतएव पश्चिमी मारवाड़ी में जहाँ-तहाँ सिन्धी का न्यूनाधिक परिमाण में मिश्रण पाया जाता है। उपादानों की दृष्टि से सर्वत्र भाषा में मारवाड़ी की ही प्रधानता पाई जाती है। जहाँ सिन्धी उपादान अधिकतर परिमाण में मिलते हैं, वहाँ भी उनका स्थान प्रधान न होकर गौण ही बना रहता है। पश्चिमी मारवाड़ी के दो विभाग हो सकते हैं: खास थळी, एवं अन्य मिश्रित बोलियाँ।

खास थळी उत्तर-पश्चिमी मारवाड़ तथा पूर्वी जैसलमेर में बोली जाती है। पश्चिमी जैसलमेर में सिन्धी की एक बोली बोली जाती है, एवं उसके दक्षिणी हिस्से के मध्य भाग में एक मिश्रित बोली ढटकी के बोलने वाले कुछ लोग पाये जाते हैं। थरेली सिन्धी एवं थळी के बीच की विभाजन-रेखा जैसलमेर शहर से दस मील पश्चिम की ओर मानी जा सकती है।

जैसलमेर के उत्तर में बहावलपुर रियासत है जहाँ की मुख्य भाषा लहँदा मानी जाती है।

पश्चिमी मारवाड़ी बोलने वालो के आँकड़े इस प्रकार है—

खास थळी—

मारवाड़ में	....	....	३,८०,६००	
जैसलमेर में	....	....	१,००,०००	
				४,८०,६००
अन्य मिश्रित बोलियाँ	....	....	....	२,०४,३४६
			कुल	६,८५,३४६

मिश्रित बोलियो का विवेचन बाद मे किया जायगा। इनमे से मुख्य थर, पारकर एव जैसलमेर की ढटकी है। थळी अधिकांशत. स्टैन्डर्ड मारवाड़ी ही है, उसमे केवल थोड़ा-सा सिन्धी का और सुदूर दक्षिण की ओर गुजराती का मिश्रण है। आगे इस बोली के दो नमूने दिए गए है। दोनो जैसलमेर से मिले है। एक तो बाइबिल का कथाश है, और दूसरा एक प्रचलित जनगीत। मारवाड की थळी भी एतादृश ही है। नमूनो मे बोली की निम्नलिखित विशिष्टताएँ दृष्टिगोचर होती है—

सिन्धीप्रभाव के चिन्ह : छोटे शब्दो के अतिम भारी अ का दीर्घ स्वर की तरह बलपूर्ण उच्चारण; यथा तीन्–तीनअ, सत्त्–सत्तअ, अट्ठ–अट्ठअ, गाय्–गायअ; परन्तु कान् नाक् आदि के उच्चारण ज्यो के त्यो बने रहते है क्योकि इनके अन्तिम वर्ण भारी नही है। उसी प्रकार सिन्धी के अनुरूप कुछ शब्दो मे ऐसे ह्रस्व स्वर पाये जाते है, जो अन्य भारतीय भाषाओ मे दीर्घ होते है, जैसे नाक–नक, हाथ–हथ, आख–अख; स्वार्थ प्रत्यय-डो एव-डो वैसे तो पूर्वी-पश्चिमी राजस्थानी दोनो मे मिलते है, पर थळी एव सिन्धी मे वे और भी बहुतायत से पाये जाते है। उदा० छोटो-डो : छुटका। 'एक' के अर्थ मे हेके का प्रयोग मिलता है, जो सिन्धी हिकअ या हिकिडो से तुलनीय है। मा-जो एवं ता-जो मे सिन्धी का सम्बन्ध परसर्ग-जो द्रष्टव्य है।

दूसरी ओर गुजराती के असर के ये उदाहरण मिलते है : वे-दो, डीकरो-बेटा, सहित भविष्यत् रूप जैसे, जाईस-उच्चारण जाईश-मैं जाऊँगा।

नामरूप—घोडो आदि -ओकारान्त शब्दो का तिर्यक् एकवचन -आ अन्तिक न होकर -ए अन्तिक होता है। कर्ता बहु० स्टैण्डर्ड मारवाडी की तरह -आ अन्तिक एवं तिर्यक् बहु० -आं अन्तिक ही होता है। उदा० हुक्को : हुक्क, सबधरूप हुक्के-रो; भलो माणस : भला आदमी, सबधरूप भले माणस-रो, भला माणस : अच्छे आदमियो-का; था-रे बाप-रे घर-मे : तुम्हारे बापके घरमे; मां-जे काके-रे डिकरे-रो बिया : मेरे चाचा के बेटे का विवाह। द्वि०–च० का परसर्ग-ना है। अन्य बातो मे नामरूपावली स्टैण्डर्ड मारवाडी की ही पाई जाती है।

सर्वनाम—व्यक्तिवाचक सर्वनामो के रूप कुछ असाधारण मिलते है। 'मेरे' एव 'तेरे' के समानार्थी शब्दो के केवल एक० रूपो मे मारवाड़ी सम्बन्ध-परसर्ग-रो की जगह सिन्धी का-जो मिलता है। उदा० मा-जो : मेरा, ता-जो : तेरा, परन्तु म्हांरो : हमारा, थारो : आपका। एक और विशिष्ट षष्ठीरूप मिलता है : मयालो : मेरा, तयालो या तेआलो : तेरा प्र० पुरुष के रूप : हूँ : मै, तिर्यक् एक० मा, द्वि० एक० मे, प्र० बहु० म्हे, ति० एव द्वि० बहु० म्हा। द्वि० पुरुष : तू, तू, ति० ए० ता, द्वि० ए० तें, प्र० बहु० थे, ति० एव द्वि० बहु० था।

निर्देशक सर्वनाम : ए : यह; ओ : वह उनके रूप—

	एकवचन		बहुवचन	
	प्रथमा	द्वि०—तिर्यक्	प्रथमा	द्वि–ति०
ए : यह		इये	ए	इयां
ओ : वह		उवे	ओ	उवा

अन्य रूप—

जिको : जो कि, कुण : कौन, के-रो : किसका, की : क्या, की : कुछ, क्या : क्यो ।

क्रियारूप

सहायक क्रिया एव अस्तिसूचक क्रियाएँ—अस्ति-सूचक क्रिया का वर्तमान रूप आई है । यह वचन–पुरुष के साथ नही बदलता और हूँ, है, हैं सबके अर्थ में प्रयुक्त होता है । कहीं-कही इसका रूप ए या ई मिलता है, सहायक क्रिया के रूप मे ई का व्यवहार बराबर मिलता है । भूतकालिक रूप ये हैं :

	पुंलिग	स्त्रीलिग
एक०	हतो या तो	हंती
बहु०	हता	हंतो

मुख्य क्रिया

वर्तमान निश्चयार्थ साधारण वर्तमान रूप मे सहायक ई लगाकर बनाया जाता है । उदा०

	एकवचन	बहुवचन
१	मारा–इ	मारा–ई
२	मारे–ई	मारो–ई
३	मारे–ई	मारे–ई

अनद्यतन भूतकाल हतो या तो लगाकर बनाया जाता है । उदा० मारतो-हतो या मारतो तो ।

भविष्यत् के रूप गुजराती के अनुरूप ही चलते हैं । यथा—

१	मारीश	मारशा
२	मारीश	मारशो
३	मारशे	मारशे

इनमे प्र०एक० एवं द्वि० एक० के रूप एक ही हैं, उत्तर गुजरात की बोलियों मे भी यही समानता मिलती है । दक्षिण गुजरात की बोलियो मे तृ० एक० एव द्वि० एक० के रूप एक होते है ।

अन्य सभी वस्तुओं मे क्रिया रूप स्टैण्डर्ड मारवाड़ी से भिन्न नही मिलते।

मारवाडी की ही तरह कई सकुचित रूप भी मिलते है—क्यों : कहा, रयो : रहा, रे-ई : रहेगा, पयो : पड़ा, मो : मरा।

समुच्चयबोधक–अर प्राय: शब्द के साथ न लिखा जाकर अलग लिखा जाता है, उदा० उठर की जगह–उठ–अर : उठ कर।

निषेधार्थको में राजस्थानी का को-नी या कोय्-नी ही प्रचलित मिलता है। उदा० कोय् देवतो कोय्–नी : कोई भी दिया न करता; था को-दियो-नी : तूने नही दिया।

आगे थळी के दो नमूने दिए गए हैं। ये दोनो जैसलमेर से मिले है। एक तो बाइबल के कथांश का अनुवाद है, और दूसरा एक प्रचलित लोकगीत।

संख्या १४

मारवाड़ी (थळी) नमूना संख्या १ जैसलमेर राज्य

हेके मनख–रे बे दिकरा हुँता। उवाँ–मॉय–सूँ छोटोडे बाप–नाँ कयो अरे बाप माँ-जी पत्ती-रो धन होवे जिको म-नाँ दो। तारगो उवे आप-रो धन उवाॅ-नाॅ बेच दियो। जिके–सूँ पछे बेगो–ईज छोटोडो दिकरो आप–रो सोय धन भेळो ले परदेश उवो ग्यो। अर उथे लुचाई-मे ँ दिन कढते आप-रो धन खोय-दियो। जारगो ओ सारी ओथी-पोथी खोय-रयो तारगो उवे देश-मे भारी काळ पयो अर उवे-नाँ तग–चाई होवरग लगी। पछे उवे देस-रे हेके कने जाय रवरग लगो। जिके उवे-नाॅ सूअर चरावरग नाॅ आप-रे खेताॅ-मे मेलियो। अर ओ सूअराँ-रे खावरग-रे छीलुराँ-सूँ आप-रो पेट भरग़ो चावतो-तो। अर कोय उवे-नाॅ कीँ देवतो कोय-नी। तारगो उवे-री अकल ठा आई अर कवरग लगो के माॅजे बाप-रे किता-ई मजूरोँ-नाॅ पेट भररग-सूँ वत्ती रोटियाॅ मळे-ई अर हूँ भूख मराॅ-ई पयो। हूँ उठ-अर आप-रे बाप कने जाईश अर उवे-नाॅ कईश बापजी मेँ भगवान-रो अर थाॅ-रो पाप कियो-ई। हूँ वळे थाॅ-रो दिकरो कुवावरग-रे लायक कोय-नी। मन्नाॅ आप-रे मजूराॅ-मेँ घतो। पछे ओ उठ-अर आप-रे बाप कने गयो। परग ओ अघो-ईज हुँतो का इती-मेँ उव-रे बाप उवे-नाॅ देख-अर दया की अर दौड़-अर गळवाॅरगी घती। अर उवे-रो वको लियो। दिकरे उवे-नाॅ कयो बाप-जी मे ँ भगवान-रो अर थाॅ-रो पाप कियो-ई। हूँ वळे थाॅ-रो दिकरो कुवावरग-रे लायक कोय-नी। परग बाप आप-रे चाकराॅ-नाॅ कयो के असल कपडा कढ-अर इये-नाॅ पेरावो उवे-रे हथ-मे वीँटी अर पगाॅ-मे पगरखी पेरावो। अर आपाॅ हरख अर गोठ करजे। क्योँके ए माँजो दिकरो मो तो वळे जीवियो ई। गुँईजियो तो वळे लधोई। पछे ओ हरख करग लगा।

उवे बखत उवे-रो बडो दिकरो खेत-में हँतो। अर-जाणे ओ घर कने आवो ताणो उवे बाजे अर नाच-रो खडको सुणियो। अर उवे चाकरॉं-मॉंय सूँ हेके-नॉं आप-रे कने तेड-अर पुछियो के ए की ए। उवे उवे नॉं कयो के ता-जो भाई आयो-ई अर ता-जे बाप उवे-रे राजी खुशी आवण-री गोठ की-ए। पण उवे-नॉं रीस आई अर मॉंय नी जावण लगो। ताणो उवे रो बाप बार आय-अर उवे-नॉं मनावण लगो। उवे बाप-नॉं जवाब दीयो के देखो हूँ इतॉं बरसॉं-सूँ थॉं-री चाकरी पयो करॉं-ई। अर कदे थॉं-रे हुकम-नॉं आलेंघियो काय-नी। पण ए दिकरो जिको थॉं-रो धन पातरियॉं भेळो उडाय आयो-ई जिके-रे आवते-ई थॉं गोठ परी-की। बाप उवे-नॉं कयो बेटा तूँ सदा-ई मॉं-जे भेळो ई अर जिको मयाली आथी-पोथी आँई ओ सोय तेआली ए। पण खुशी अर हरख करणो चाईजतो-तो क्योंके ए ता-जो भाई मो तो वळे जीवियो ई। गुँईजियो तो वळे लधो-ई।।

सख्या १५

मारवाड़ी (थली) नमूना संख्या २ जैसलमेर राज्य

आई आई ढोला बणजारे-री पोठ।
तमाकू लायो रे मॉं-जा गाढा मारू सोरठी। रे म्हॉं-रा राज।

आण उतारी बडले-रे हेठ।
बडलो छायो रे मॉं-जा गाढा मारू जाभे मोतिये। रे म्हॉं-रा राज।

लेशे लेशे सिरदारॉं-रो साथ।
कायेक लेशे गाढे मारू रा बानण डाणियॉं। रे म्हॉं-रा राज।

कहे रे वाणीडा तमाकू-रो मोल।
कये-रे पारे मॉं-जा गाढा मारू तमाकू चोखी। रे म्हॉं-रा राज।

रुपये-री दीनी अध टॉंक रे।
म्होर-री दीनी म्हॉं-री साची सुन्दर वा-भरी। रे म्हॉं-रा राज।।

सोने रूपे-रा चेलड्या घडाय।
रूपे-री डॉंडी रे गाढा मारू भली तोले। रे म्हॉं-रा राज।।

रातडली रे भँवर गई अँध रात।
मोडा क्यॉं पधारिया रे मॉं-जा गाढा मारू भँवर जी। रे म्हॉं-रा राज।।

गया ता गया-ता गोरा दे सॉंईणॉं-रे साथ रे।
हुक्को हजारी छाकियो मॉं-जी साची सुन्दर छाकियो। रे म्हॉं-रा राज।।

हुक्के री आवे भुंडी बास उपरांटा पोढो रे ।
हुक्को थाँ-रो तालरिये पटकाय चिलम पटकावाँ रावळे चोवटे । रे म्हाँ-रा राज ।।
आवे रे आवे गोरा दे थाँ-ई-पर रीस ।
परणीजे ले आवाँ पुगळ-गढ-री पदमणी । रे म्हाँ-रा राज ।।
परणो भवर पाँच पचीस ।
मैं भाभे-जी-रे बेटी लाडकी रे माँ-जा गाढा मारू । रे म्हाँ-रा राज ।।
आगे रे आगे घोडाँ री घमसाँण ।
भाँसिया रे रथ माँ-जी सोकड वेरण-रो बाजणो । रे म्हाँ-रा राज ।।
झालाँ झालाँ घुडले-री लगाम ।
कडियाँ रो झालाँ रे गाढा मारू-रो कटारो । रे म्हाँ-रा राज ।।
आँगणिये रे मुंगडला रळकाय ।
पितलक भागे रे माँ-जी सोकड वेरण सावकी । रे म्हाँ-रा राज ।।
आगणिये घरट रोपाय रे ।
काँने न सुणाँ माँ-जी सोकड नाँ बोलती । रे म्हाँ-रा राज ।
आडी आडी भीतडली चुणाय रे ।
आँखिये न देखाँ माँ-जी सोकडली नाँ मालती । रे म्हाँ रा राज ।।
हाँथड-ले रे रमाया बासँग नाग ।
बिच्छू री खाधी माँ-जी गाढा मारू हूँ तो नही डराँ । रे म्हाँ-रा राज ।
जाजमडी रे थाँ-ई-री ढलाय ।
वेळीड़ा तडावाँ रे गाढे मारू-रा साँईणा । रे म्हाँ-रा राज ।।
लाँगाँ डोडाँ-री धँयडली रे दुखाय ।
हाथाँ-सूं चाडाँ रे भँवर-जी-रा चिलमिया । रे म्हाँ-रा राज ।।
सोने रुपे-रो हुकैयो कराय ।
मोतीडे जेडावाँ रे गाढे मारू री चिलमडी । रे म्हाँ-रा राज ।।

मिश्रित मारवाड़ी और सिन्धी

ढाट का शाब्दिक अर्थ रेगिस्तान होता है। विशेपकर नामकरण का प्रयोग सिन्ध के थर-पारकर जिलो तथा उनसे सटे हुए जैसलमेर के भाग मे फैले हुए रेगिस्तानी हिस्से के लिए होता है। स्थानीय अधिकृत सूत्रो के अनुसार इसमे नीचे लिखे शहर आ जाते है । थर-पारकर मे : उमरकोट, छोड, गढडा, मिट्टी, रगदार, चाचडा, जैसिहदार, चेलार, पारणो, नौरसर, गुदडा । जैसलमेर मे : मायाजलार, सखभा परगनास्थित खूडी ।

थर-पारकर जिला तीन हिस्सो मे विभाजित होता है : १—जिले के उत्तर पश्चिम एव मध्य-पश्चिम मे स्थित पूर्वी नारा का मैदान जिसे पाट कहते है, २—दक्षिण-पूर्व मे स्थित पारकर, ३—थार या रेगिस्तान जिसे ढाट भी कहते

है। पाट की भाषा सिन्धी है। पारकर प्रदेश की भाषा भी सिन्धी है; केवल उसके सुदूर दक्षिण मे गुजराती बोली जाती है।

थर-पारकर के पूर्व मे मारवाड़ राज्य का मल्लाणी प्रदेश स्थित है। यहाँ की मुख्य भाषा तो मारवाडी ही है, पर सिन्ध मे मिली हुई सीमा के थोडे से प्रदेश में बोली जाती भाषा को 'सिन्धी' बताया जाता है। इसके कोई नमूने नही मिले, परन्तु हम इसे मारवाडी-सिन्धी का एक ऐसा मिश्रण मान ले, जिसमे सिन्धी का परिमाण अधिक है, तो कोई आपत्ति न होगी। इस प्रदेश के उत्तर-पूर्व की बोली तो दोनो बोलियो का मिश्रण मानी ही गई है। मल्लाणी के उत्तर मे जैसलमेर की सीमा तक की बोली को मारवाड़ राज्य के अधिकारी थळी-सिन्धी का मिश्रण बताते है। वास्तव मे यह प्रदेश ढाट का ही थोड़ा आगे का प्रसार माना जा सकता है. और यहाँ की बोली और ढाटकी में कोई अन्तर दृष्टिगोचर नही होता।

ढाट की बोली ढाटकी-थळी का एक ऐसा प्रकार मात्र है जिसमें सिन्धी का मिश्रण अपेक्षाकृत कुछ अधिक है। मिश्रित बोली होने के कारण इसका स्वरूप विभिन्न अचलो मे थोडा-थोडा परिवर्तित मिलता है, जो स्वाभाविक है। उदा० थर-पारकर मे जैसलमेर की अपेक्षा सिन्धी का प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर होता है।

संक्षेप मे, दक्षिण-पश्चिमी मारवाड-मल्लाणी मे तथा जैसलमेर के ढाट क्षेत्र मे स्टैण्डर्ड मारवाडी एव थळी के साथ सिन्धी का न्यूनाधिक परिमाण मे मिश्रण होने से अनेक मिश्रित बोलियाँ पाई जाती है। इनका अलग-अलग विवेचन करना आवश्यक होगा। यहाँ उनके बोलने वालों की सख्या के आँकडे देना पर्याप्त होगा, जो ये है :

मारवाड-मल्लाणी की तथाकथित सिन्धी	४६,९६०
मारवाडी-सिन्धी मिश्रित	१५,०००
थळी-सिन्धी मिश्रित	७०,०००
	१,३१,९६०
जैसलमेर की ढाटकी	१५०
थर-पारकर की ढाटकी	७२,६३९
मारवाडी-सिन्धी मिश्रित बोलियो का योग	२,०४,७४९

उपरोक्त सब बोलियो के नमूने देना आवश्यक प्रतीत होता है। थर-पारकर और जैसलमेर की ढाटकी के दो प्रचलित लोकगीत नमूनो के रूप मे पर्याप्त होगे। ढाटकी को थरेजी या थरेली अर्थात् थर की बोली के नाम से पुकारा जाता है।

थरेली वास्तव मे सिन्धी की एक उपबोली का भी नाम है, अतएव गलतफहमी हो जाने के भय से हमने ढाटकी के अर्थ मे इस नाम का उपयोग करना ठीक नही समझा।

थर-पारकर वाला नमूना मुख्याशो मे मारवाडी या थळी होने पर भी उसमे सिन्धी की कई एक विशिष्टताएँ स्पष्ट दिखाई पडती है। यथा—

सिन्धी ध्वनियो ब, ग का व्यवहार, मारवाडी का ळ जो सिन्धी मे नही है, यहाँ नही मिलता। शरमु, विचारु इत्यादि के अन्त का उ भी विशेष द्रष्टव्य है। नाहर शब्द, छन्दानुसार नार का अर्थ राजस्थानी के अनुरूप सिंह न होकर, सिन्धी प्रयोगानुसार भेडिया होता है। भील बोलियो, पश्चिमोत्तर प्रदेश की पिशाच बोलियो एव सिन्धी समूह की बोलियो की तरह यहाँ भी दन्त्य ध्वनियो की जगह मूर्द्धन्यो का सा उच्चारण कई जगह पाया जाता है। यथा—दीजे की जगह डीजे, खेत की जगह खेट इत्यादि। मृदु व्यजनो को कई जगह कठोर बना दिया जाता है, यथा—गाव अर्थात् गाय की जगह कवली।

संख्या १६

मारवाड़ी (ढाटकी थली) जिला थर तथा पारकर

आज अवेला क्यूँ आविआ कहरो मुज-मेँ काम।
थाँ-रो मँहतो घर नहीँ इए सुगणी-रो शाम॥

शहर उजेणी हूँ फिरिओ महले आविओ आज।
तास अवेलो आविओ तुज वलावण काज॥

चंदर ग्यो घर आपने राजा तूँ भी घर जा।
मैं अबला-सी-से कैमी बलणी तूँ केहिर हूँ गा॥

केहिर कवली बखे छाली बखे नाहर।
जोखो लागे जिदु-नाँ लाखोँ करे विचारु॥

अईओ शीह पचाणां हेकल गिर अबह।
घर ऊँदराँ-रा ढुण्डि तो त-नाँ शरमु न आवे शीह॥

सज सहेवी सिंगार राजा करे पुकार।
जोखमु लागसी-जिअ-नाँ लाखो करे विचारु॥

वारि डीजे खेतर नाँ वारि खेट-नाँ खाइ।
राजा डण्डे रईअत-नाँ जिणे-रे कूक कणे लग जाइ॥

कूक मत कर रे सहेची कूक कैआँकि होइ।
केहर-के मुख बकरी छूटी सुणी न कोइ॥

आणि डिआँ आप-री आणि मत लोपो आप।
हूँ कवली तूँ ब्राह्मण, हूँ वटो तूँ वाप॥

नीचे दिया हुआ नमूना थाट प्रदेश मे विवाह के समय गाया जाता है। यह गीत खूडी के सोढा दौलतसिह के बेटे हाथीसिंह की प्रशस्ति है। गीत मे हाथीसिंह के सिंध-हैदराबाद जाने तथा वहाँ के मीरो द्वारा उनके स्वागत का उल्लेख है। खूडी लौटने पर थर-पारकर स्थित छोड के निवासी अण्डासिंह के बेटे भगवानसिंह से उन्हे पता चलता है कि जोधपुर-मारवाड का हाकिम-महाराजा जोधा भगवान के चाचा हेमराज को पकड ले गया है। हाथीसिंह ताकत मे जोधा से कम नही थे, और उन्होने बराबरी वाले की हैसियत से बिना झगडे के ही काम सलटा दिया। हाथीसिह जैसलमेर के अधिपति मूलराज के समय मे विद्यमान बताते है, मूलराज की मृत्यु सन् १८२० मे हुई है।

ढाटकी के इस नमूने पर सिन्धी का प्रभाव उतना अधिक नही मालूम पडता जितना थर-पारकर वाले नमूने मे दृष्टिगोचर होता है। सिन्धी ध्वनियाँ ब, ग यहाँ नही है, एक जगह मूर्धन्य ल भी मिलता है। देना क्रिया का शब्द किन्तु डिन्हो ही है जिसमे द का मूर्द्धन्यीकरण द्रष्टव्य है। क्रिया का वर्तमान रूप बीकानेरी का छे लगाकर बनाया जाना इस बोली के मिश्रित रूप का द्योतक है। सम्बन्ध तिर्यक् रूप रा का प्रयोग यहाँ द्वितीया रूप की तरह हुआ है, यथा— मोजा-रा पावे-आनन्द को प्राप्त हो।

संख्या १७

मारवाड़ी (ढाटकी थली) जैसलमेर राज्य

१. सरसती माता तुज पाए लागॉ। जाणा घणेरी साहे बध माँगाँ॥
२. बरिओ रे सोढो देसॉ-में बको। वेरी उवे-रा सूता उदरके॥
३. सिव हाथी-सिघ-रे सदाए सुखे। रिध-सिध-री कमी न काहे॥
४. राजा माने-छे मूल-राज राजा। जीते-रा बाजा खूरो-में बाजा॥
५. हाथी-सिंघ चढिया हैदराबाद जावे। जावे मीराँ-नाँ मालम किधे॥
६. मीर साहिब ट्ठो हुक्म डिन्हो। रूडी सिरपाव ने घोड़ो डिन्हो॥
७. सिरपाव पेहरे-ने डेरे पधार्या। डेरे-रा वेली दीसे सजोडा॥
८. हाथी-सिघ चढिया देस-नाँ आवे। सारी ढाट-में उचरंग पावे॥
९. भगवान अडे-रो छोड-सूँ आवे। काके हेमराज-रा कागद लावे॥
१०. कागद बचावे रीस चढावे। एडो नजर-माँ कोई न आवे॥
११. वळियो थो सोढो वेर घतावे। हाथी सिंघ-रा कागद जोधाँ-नाँ जावे॥
१२. हाथी-सिंघ हाकम हुवा-छे भेला। भेला हुए-ने वात बिचारी॥
१३. भलॉ दौलत-सिघ-रे सपूत जायो। थाल भरे-ने मोतिया वधायो॥
१४ चारन भाट गुण गीत गावे। ऊँट घोड़ा न मोजॉ-रा पावे॥

उत्तरी मारवाड़ी

वीकानेरी–शेखावाटी

मारवाड़ राज्य के उत्तर मे वीकानेर राज्य एव जयपुर राज्य का शेखावाटी प्रदेश स्थित है। वीकानेर के पश्चिम मे बहावलपुर रियासत है, जहाँ की मुख्य भाषा लहदा है। उत्तर मे पजाव के फीरोजपुर एव हिसार जिले है जहाँ भाषा मुख्यत: पंजावी है। परतु वीकानेर की उत्तर-पूर्वी सीमा से लगे हुए हिसार के भाग मे भाषा वागडी है।

वीकानेर के पश्चिमोत्तर मे वहावलपुर एव फीरोजपुर की सीमाओ के साथ वनते हुए त्रिकोणाकार प्रदेश मे एक मिश्रित वोली प्रचलित है जिसे भट्टियाणी कहते हैं। यह लहदा, पजावी एव वीकानेरी की खिचड़ी-सी है। इसका विवेचन पजावी के अन्तर्गत किया गया है। हिसार से लगे हुए वीकानेर के पूर्वोत्तरी प्रदेश मे वागड़ी वोली जाती है। वीकानेर राज्य के वाकी सारे प्रदेश मे वीकानेरी मुख्य भाषा है। वहावलपुर एव वीकानेर के सीमास्थित अ चल मे वहावलपुर मे भी वीकानेरी वोली जाती है।

वीकानेर राज्य की पूर्वी सीमा से लगकर जयपुर का शेखावटी क्षेत्र वसा हुआ है। इसके पास के जयपुर के प्रदेश मे जयपुरी ही वोली जाती है, जिसका विवेचन हम पहले कर चुके हैं। शेखावाटी वोली का नामाकरण उसके व्यवहार-क्षेत्र के नाम पर हुआ है। वीकानेरी की पश्चिमी एवं शेखावाटी की पूर्वी सीमा एक तो है ही, इनके प्रसार का अन्त भी एक ही जगह होता है।

वीकानेर के उत्तर-पूर्वी एवं तन्निकटस्थ भाग मे 'वागड़ी', वोली जाती है। यह वीकानेरी का पजावी तथा वागरू मे अन्तर्भुक्त होता हुआ मिश्र रूप है, परन्तु इसकी कुछ निजी विशेषताएँ भी होने के कारण हम इसका विवेचन अलग स करेगे।

वीकानेरी एवं शेखावाटी दोनो एक ही भाषा है। वास्तव मे वे मारवाड़ी का ही ऐसा रूप है, जिसमे ज्यो-ज्यो पूर्व की ओर वढते जाते हैं त्यो-त्यो जयपुरी का मिश्रण वढ़ता चला जाता है। वीकानेरी-शेखावटी समूह के साथ वागड़ी को

भी सम्मिलित कर लेने पर इस समूह को हम उत्तरी मारवाड़ी कह सकते हैं। इसके बोलने वालो के अनुमित आंकड़े लगभग ये हैं—

बीकानेरी—		
बीकानेर मे	.....	५,३३,०००
वहावलपुर मे	...	१०,७७०
		५,४३,७७०
शेखावाटी	.....	४,८८,०१७
वागड़ी	....	३,२७,३५६
	कुल	१३,५६,१४६

बीकानेरी मे वाइवल का एक सस्करण सिरामपुर के पादरियो ने १८२० ई० मे प्रकाशित किया था। उसमें भी भाषा का वही रूप मिलता है जो प्रस्तुत विवेचन के समय विद्यमान है।

बीकानेरी-शेखावाटी बोली के विषय में निम्नांकित विशेषताएँ खास द्रष्टव्य है—

नामरूप : ओ-कारान्त सबल तद्‌भव संज्ञा-शब्दों का तिर्यक् रूप प्राय: विशेषकर पंचमी में 'एेकारान्त' हो जाता है, यथा, 'वीकै-सूँ' : वीके से, प्र० वीको, नाम विशेष 'पोते-हूँ' : पोते से। पष्ठी परसर्ग बीकानेरी में मारवाड़ी का - 'रो' है परन्तु शेखावाटी में जयपुरी का - को है। इन दोनों बोलियों के नाममात्र के भेद का यह विशिष्ट उदाहरण है। स्मरण रहे कि - को पूर्वी मारवाड़ी में भी मिलता है।

सर्वनाम प्रथम पुरुप में पष्ठी के विभिन्न रूप मिलते हैं। यथा मेरा के अर्थ में म्हारो, म्हारलो, मेरो, मेरलो। तेरा के अर्थ मे थारो, थारलो, तेरो, तेरलो। इन म्हारलो, थारलो आदि से पश्चिमी मारवाड़ी के मयालो, तयालो तुलनीय हैं। शेखावाटी मे तृतीय पुरुप के रूप प्राय: जयपुरी के मिलते हैं, यथा-वो · वह, वाँ : उसने। बीकानेरी मे ये रूप मारवाड़ी के हैं। के का 'क्या' के अर्थ मे व्यवहार होता है।

क्रियापद : उत्तरी मारवाडी के सारे प्रदेश मे अस्तिवाचक क्रिया के रूप मारवाड़ी व जयपुरी दोनो से लिये हुए मिलते हैं। यथा—हूँ और छूँ : मैं हूँ, हो और छो : था। मुख्य क्रिया का भविष्यत् रूप प्राय स-सावित होता है, यथा-

मारस्यूं : मैं मारूंगा। शेखावाटी मे यदाकदा जयपुरी - तोरावाटी - का -गो अन्तिक रूप भी मिलता है, यथा-मारूंगो। जयपुरी की तोरावाटी बोली शेखावाटी के विल्कुल पूरब मे ही वोली जाती है। अन्य और बातो मे क्रिया-रूप मारवाडी की तरह ही चलते हैं।

आगे उत्तरी मारवाड़ी के बीकानेर एव शेखावाटी दोनो अंचलो से प्राप्त नमूने दिये गये हैं।

बीकानेर से प्राप्त नमूना राव बीका के जीवन वृत्तात एव बीकानेर के शिलान्यास से सम्बन्धित है। भाषा वही है जिसका विवेचन ऊपर किया जा चुका है। अस्तिवाचक क्रियाएँ छै एव है, ओकारान्त सवल पुंलिंग नामो के ऐ-अन्तिक तिर्यक् रूप आदि विशेषताएं यहा मिलती है। केवल एक खास भिन्नता दृष्टिगोचर होती है : भावे प्रयोग मे भी सकर्मक क्रिया के भूत कृदन्त का लिंग गुजराती प्रयोग की तरह कर्म के अनुरूप चलता है, यथा- **जाटां-री जातां नै जीती,** न कि जीतो' जाटो की जातो को जीता।

चूंकि मूल हस्तलिपि भारत के इस भाग की लिखावट का अच्छा उदाहरण है इसलिए मैं इसकी अनुकृति दे रहा हूँ।[1]

सख्या १८
बीकानेरी — **बीकानेर राज्य**

राव वीकोजी स० १५२२ मीती आसोज सुदी १० जोधपुर सुं वहीर हुआ अर मडोर मै आयर मुकाम कीयो ओर फेर देसणोक श्रीमाताजी करणीजी-री हाजरी-मै हाजर हुवा ओर वठै-सु गाँव चाडासर-मै आयर ठेहरा और वठै-सु कोडमदेसर आयर तीन वरस-ताई कोडमदेसर-मै रेवा ओर कोडमदैसर-मै एक छोटो-सो कोट करवायो ओर कोडमदैसर-सु ऊठर गाँव जागलु-मै वरस १० ताही रहा, वै वखत भाटीया-रो राज अठै छो जीका-रा मालक सेखोजी भाटी पुगल-रा राव हा राव सेखेजी-री बेटी रग-कवरजी-सु वीकैजी-रो वीहा कीयो। कोडमदैसर मै जद राव वीकैजी कीलो करावण-री मन-मै करी-छी तो भाटीयो वणा-वण नही दीयो ओर वीकैजी ओर भाटीया-रै आपस-मे लडाई हुई ईयै लडाई मै भाटी हारा ओर राव वीकोजी जीता पण भाटी फेर-ही जणै मणै मोको पायर राव वीकेजी-सु लडता रहा ओर पछै उठै-सुं राती घाटी-मै जठै अवार वीकानेर-रो

---

१ उपर्युक्त गद्य भाग मूल हस्तलिपि का विशुद्ध नागरी रूप है। हस्तलिपि के कुछ अश की हूबहू अनुकृति नमूने के रूप मे पृथक् पत्र पर दे दी गई है—

—संपादक

नमूना संख्या १८ बीकानेरी

सेहर वसोडो छै कीलो करावण री मन-मैं करी ओर सं० १५४५ मीती वेसाख वदै ३ नै कोले री नीवी घाती ओर ईयै दीन-सु राव वीकै-जी आप-री राजधांनी वीकानैर कर लीवी ऐ पछै मोको देखर सैखसर रोणीयै-रै गोदारां जाटां-नै जीत लीया ओर फैर दूसरी जाटा-री जाता-नै भी जीती ओर उवा-रै गावां-नैं खोसर आप-री राजधानी वीकानैर लारै लाया ओर जाटां हार परा वीकैजी-नै आप-रा धणी कर लीया ईयै पछै राव वीकैजी कै-ई गाँव खीची राजपुता-रा जीतर आप-रै राज-मैं मेल लीया ईयै-सु पचै राव वीकैजी रै छोटै भाई वीदैजी मोहलै राजपुता रो राज गाँव छापर द्रोणपुर मैं छो राव वीदैजी जीतर खोसलीयो मोहलां-रो मालक अजीतमलजी मोहल छा ईयै अजीतमलजी-नै राव जोवेजी मार परो ईया मोहला-रो राज आप-रै वेटै वीदैजी-नै देय दीयो कंई दीना पछै राव वीदेजी-ने मोहलो फैर दबाया ईये-रो कारण ओ हो कै मोहलां-नै दीली-रै बादसाहा की हीमत वधाई सार खा जीको दीली रै बादसाहा-री कानी-सु हीसार रो सुवैदार छो मोहला-नै मदत ईये सारग खा दी ।

मारवाड़ी-शेखावाटी

शेखावाटी बोली के विषय मे अधिक जिज्ञासु पाठक उपरोक्त सज्जन (श्री मेकेलिस्टर) की जयपुर राज्य की बोलियों के नमूने शीर्षक पुस्तक से लाभ उठा सकते है। पुस्तक में बोलियो के नमूने खड १ मे पृ० १ से लगाकर एव उनकी व्याकरण खड २ मे पृ० १ से आगे मिलेगी ।

संख्या १६

शेखावाटी | पहला नमूना | जयपुर राज्य

एक जणा-कै दोय बेटा हा । वाँ-मैं-सूँ छोटक्यो आप-का बाप-नै कैयो बाबा धन-मैं-सूँ मेरा बन्ट-को आवै जको मन्नै दे-दे । वीँ आप-को धन वाँ-नै बाँट-दीयो । थोड़ा दिन पछै छोटक्यो बेटो सो सोर-समेटर परदेस-मैं घणी दूर ऊठ-ग्यो अर वठे खोटा गैलाँ चालर आप-को सो धन गमा-दीयो । ओर वीँ सोक्यूँ बिगाड़-दीयो जणाँ वीँ देस-मै जबरो काळ पड्यो अर बो कगाल हूय-ग्यो । वो जार वीँ देस का एक रैबाळा-कै रह्यो अर वो वीँ-नै आप-का खेताँ- मैं सूर चरावण-ने खिनातो । जका पातडा सूर खाय-छा वाँ-नै खार आप-को पेट भरण-नै राजी छो अर कोई आदमी बैँ-ने कोनी दे-छो । अर वीँ नै ग्यान आयो जणाँ बैँ कही मेरा बाप-का नोकर चाकराँ-नै रोटी घणी अर मैँ भूकाँ मरूँ । मैं उठस्यूँ अर मेरै बाप-कै कनै जास्यूँ अर वैँ-नै कैस्यूँ बाप मैँ रामजी को पाप कर्यो अर तेरो पाप कर्यो अर अब मैँ तेरो बेटो कुहवावण जोगो कोनी । तेरै नोकराँ मैँ एक मन्नै वी राख-लै ।।

शेखावाटी — दूसरा नमूना — जयपुर राज्य

एक तो चिडी ही ओर एक कागलो हो । दोन्यूँ धरम भाई हा । चिड़ी-नै तो लाद्यो मोती अर कागलै नैं पाई लाल । कागलै कही कै देखाँ चिडी तेरो मोती । मोती लेर नीमडी पर जा बैठ्यो । चिडी कही कै नीमडी २ काग उड़ा-दे । मैं क्यूँ उडाऊँ भाई । मेरो के लीयो । जणाँ खाती कनै गई कै खाती २ तूँ नीमडी काट । कै मैं क्यूँ काटूँ भाई । मेरो के लीयो । जणाँ पछै राजा कनै गई कै राजा २ तूँ खाती डड । मैं क्यूँ डडूं भाई । मेरो के लीयो । जणाॅ पछै राणियाॅ कनै गई कै राणियाॅ २ थे राजा सूँ रूसो । म्हे क्यूँ रूसाँ भाई । म्हारो के लीयो । जणाँ पछै चूसाँ कनै गई कै चूसो २ थे राणियाॅ का कपडा काटो । म्हे क्यूँ काटाॅ भाई । म्हारो के लीयो । जणाँ पछै बिल्ली कनै गई कै बिल्ली २ थे चूमा मारो । म्हे क्यूँ माराँ भाई । म्हारो के लीयो । जणाँ पछै कुत्ती कनै गई कै कुत्तो २ थे बिल्ली मारो । कुत्ता बोल्या भाई म्हे क्यूँ माराॅ । म्हारो के लीयो । जणाँ पछै डाॅगाॅ कनै गई कै डाॅग २ थे कुत्ता मारो । म्हे क्यूँ माराॅ भाई । म्हारो के लीयो । जणाॅ पछै बास्ते कनै गई कै बास्ते २ थे डाॅग बाळो । म्हे क्यूँ बाळाॅ भाई । म्हारो के लियो । जणाॅ पछै जोडै कनै गई कै जोडा २ तूँ बास्ते भुजाय । मैं क्यूँ भुजाऊँ भाई । मेरो के लीयो । जणाॅ पछै हात्याँ कनै गई कै हाथी २ थे जोड़ो सोसो । म्हे क्यूँ सोसाॅ भाई । म्हारो के लीयो । जणाँ पछै कीडीयाॅ कनै गई के कीडीयो २ थे हाथी की सूँड- मैं बडो । म्हे क्यूँ बडाॅ भाई । म्हारो के लीयो । थे हाती-की सूँड- मैं नै बडोगी तो मैं थाॅ-नै मारस्यूँ ॥

जणाॅ कीडी बोली म्हाॅ-नै क्यूँ मारै भाई । म्हे हाथी की सूँड़- मैं वड़स्याॅ । जणाॅ पछै हाती बोल्यो भाई मेरी सूँड-मैं क्यूँ वडो । मैं जोडो सोसस्यूँ । जोड़ै कही भाई म-नै क्यूँ सोसो । मैं बास्ते भुजास्यूँ । बास्ते कही म-नै क्यूँ भुजावो भाई । मैं डाॅग बाळस्यूँ । डाॅग कही म्हाॅ नै क्यूँ बाळो भाई । म्हे कुत्ता मारस्याॅ । कुत्ता कही म्हाॅ-नै क्यूँ मारो भाई । म्हे बिल्ली मारस्याॅ । बिल्लीयाँ कही म्हाॅ-नै क्यूँ मारो भाई । म्हे चूसा मारस्याॅ । चूसा कही म्हाँ-नै क्यूँ मारो भाई । म्हे राणियाँ का कपडा काटस्याँ । राणीयाँ कही म्हारा कपडा क्यूँ काटो भाई । म्हे राजा-सूँ रूसस्याॅ । राजा कही मेरै-सूँ क्यूँ रूसो भाई । मैं खाती डडस्यूँ । खाती बोल्यो म नै क्यूँ डडो भाई । मैं नीमडी काट गेरस्यूँ । नीमडी कही म-नै क्यूँ काटो भाई । मैं काग उडास्यूँ, काग कही म-नै क्यूँ उडावो भाई । मैं चिड़ी-को मोती देस्यूँ ॥

बागड़ी

बागडी का शाब्दिक अर्थ है बागड़ प्रदेश की भाषा । जयपुर राज्य के शेखावाटी प्रदेश के क्षेत्र से होकर एक पहाड़ी शृंखला पूर्वी सीमा पर पूर्वोत्तर की

ओर चली गई है। इस शृंखला के पूर्व का प्रदेश ढूढाड एव पश्चिम की ओर का प्रदेश बागड़ कहलाता है। वैसे तो किसी समय मे ढूढाड़ नाम राजस्थान के एक बहुत बड़े प्रदेश का द्योतक था। बागड़ साधारणतया उस रेतीले क्षेत्र को कहा जाता है, जहाँ पानी बहुत गहराई के नीचे मिलता हो। इस बागड़ मे शेखावाटी का तो पूरा प्रदेश आ ही जाता है, उसके अतिरिक्त पश्चिमोत्तर की ओर बहुत दूर तक बागड़ का फैलाव है। शेखावाटी के बाहरवाला यह बागड़ का हिस्सा ही बागड़ी बोली का वास्तविक घर है। शेखावाटी व निकटस्थ अन्य भाग की भाषा बागड़ी की बहुत नजदीक की सम्बन्धिनी होने पर भी बागडी के अन्तर्गत नही आ सकती। अतएव शेखावाटी का विवेचन पृथक् से हम कर ही चुके है।

बागड नाम किंचित् परिवर्तित रूप में बांगर भी मिलता है। पश्चिमी हिन्दी की बोली बागरू का नामकरण इसी पर आश्रित है। बागरू मुख्यतया पूर्वी हिसार, दिल्ली एव करनाल जिलों मे बोली जाती है। इस बोली का स्वरूप बागडी से बिल्कुल भिन्न है। बागड़ी राजस्थानी बोली है।

अन्य बोलियों के साथ सीमा-स्थित बागड़ी के उत्तर मे पजाबी, पूर्व मे बांगरू, दक्षिण-पूर्व मे अहीरवाटी तथा दक्षिण और पश्चिम मे मारवाडी के बीकानेरी-शेखावाटी उपसमूह का क्षेत्र है। यह मारवाडी का पंजाबी मे अन्तर्भुक्त होता हुआ रूप है। अतएव इसमे इन दोनो भाषाओ का प्रभाव दृष्टिगोचर होना स्वाभाविक है, पर इसकी रीढ़ और ढाँचा मारवाडी का ही है।

व्यवहार-क्षेत्र—स्टैण्डर्ड बागड़ी का घर बीकानेर राज्य का उत्तर-पूर्वी कोना है। उसके ठीक पूर्व एव उत्तर में पजाब का हिसार जिला है। उत्तरी भाग मे हिसार की सिरसा तहसील है, जिसके दक्षिण मे बागड़ी बोली जाती है। सिरसा के उत्तर मे पजाबी बोली जाती है। हिसार जिले के उस भाग मे भी, जो बीकानेर के पूर्व की ओर पड़ता है, उत्तर की ओर इसका प्रसार पटियाला राज्य के थोड़े से टुकडे मे भी मिलता है। यहाँ बागड़ी की उत्तरी सीमा पर पजाबी एव पूर्वी सीमा पर बागरू का क्षेत्र है। बांगरू की पश्चिमी सीमा एक ऐसी कल्पित रेखा को मान सकते है, जो फतेहाबाद, हिसार, एव कैरू से होकर गुजरती हो। परन्तु इन दोनो बोलियो की विभाजन-रेखा स्थिर रूप से तय करना सभव नही है। उक्त कल्पित रेखा के पश्चिम मे भी काफी सारा क्षेत्र अनिश्चित है। इस क्षेत्र मे अधिकाशत: निवासी बागडी-भाषी आगन्तुक है, पर इनकी भाषा पर बागरू का प्रभाव ही अधिक दिखाई देता है, न कि यहाँ की बागरू पर उनकी बागड़ी का। बागरू से अमिश्रित शुद्ध बागड़ी बीकानेर राज्य की सीमा के आस-पास ही बोली जाती है।

हिसार जिले के दक्षिण मे लुहारू राज्य एवं जीद राज्य की निजामत दादरी स्थित हैं। लुहारू की भाषा वागडी है, और दादरी की पूर्वी छोर को छोड़कर, वागड़ी ही है। दादरी के पूर्वी छोर पर वांगरू बोली जाती है।

लुहारू एव दादरी के भी दक्षिण मे पटियाला की नारनौल निजामत है। यहाँ एक मिश्र भाषा बोली जाती है, जिसे हमने अहीरवाटी का एक रूप माना है।

वागडी फीरोजपुर जिले की फाजिलका तहसील के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से मे भी बोली जाती है, ऐसा सुना गया है। इसके नमूनो का परीक्षण करने पर यह वास्तविक वागडी नही मालूम पडी, इसे बीकानेरी और पजाबी का मिश्र रूप कहना अधिक उपयुक्त होगा। अतएव इसके नमूने पजाबी वाले खण्ड–जिल्द ६, भाग १ मे दिये गये हैं।

बागड़ी और शेखावाटी

अक्सर माना जाता है कि वागडी के दक्षिण मे व्यवहृत शेखावाटी बोली और वागडी एक ही है। परन्तु यह ठीक नही है। शेखावाटी क्षेत्र का बहुत बडा हिस्सा "वागड" अर्थात् रेगिस्तान है। उस दृष्टि से वहाँ की बोली को बागडी भले ही कहा जा सके, परन्तु वास्तव मे वागडी बोली शेखावाटी से भिन्न है। शेखावाटी से उसका बहुत नजदीक का सबध अवश्य है। शेखावाटी-बीकानेरी मारवाडी का जयपुरी मे विलुप्त होता रूप है, जब कि वागडी पजाबी और बाँगरू मे जाकर मिलता हुआ।

वागडी के बोलने वालो की सँख्या का अनुमान इस प्रकार है :—

राजपूताना		
बीकानेर		३,०००
पंजाब		
हिसार	२,७१,८२०	
अनहदगढ (पटियाला)	१३,०००	
लुहारू	२०,१३९	
दादरी (जीद)	१९,४००	३,२४,८५९
	कुल	३,२७,३५९

वागड़ी का कोई लिखित साहित्य लेखक की नज़र मे नही आया। इस बोली का एक मात्र विवरण, जहाँ तक लेखक जानता है, श्री जे. विल्सन

(Mr. J. Wilson) लिखित सिरसा जिले के पंजाब में लय होने विषयक पुनर्विचार की अन्तिम रिपोर्ट १८७९-८३ (Final Report on the revision of Settlement of the Sirsa district in the Punjab 1879-83, in section 100 (PP. 120 and ff) १०० वें परिच्छेद (पृ. १०० से आगे) मे वागड़ी बोली का साधारण विवेचन किया गया है। परिशिष्ट II में संक्षिप्त व्याकरण दी गई है और इस बोली में कुछ छोटे पद्य भी दिये गये हैं।

लेखक को वागड़ी के जो नमूने मिले उनमें कुछ तो फ़ारसी अक्षरों में लिखे हुए हैं, कुछ देव नागरी में एवं कुछ मारवाड़ मे प्रचलित नागरी के उस रूप में जिसमें 'ड' और 'ड़' के लिये अलग-अलग अक्षर हैं।

व्याकरण

वागड़ी का व्याकरण पार्श्व की पंजाबी एवं बाँगरू से एक खास भिन्नता रखता है। वह है उसकी स्वर-ध्वनियो का खुलेपन की ओर झुकाव। 'आ' स्वर का उच्चारण अंगरेजी 'all' मे ऑ की तरह होता है। उदा० काका=चाचा का उच्चारण लोग कॉकॉ (Cawcaw) की तरह करते हैं और लिखते वक्त भी इस ध्वनि को 'आ' न लिख कर 'ऑ' लिखते हैं। इसी प्रकार अन्य स्वरों का उच्चारण करते समय भी वागडी-भाषी उन्हें अधिकाधिक विवृत (broad) कर देता है जब कि पंजाबी-भाषी उन्हें संकोच दे देता है और साथ ही पूर्वगामी व्यंजन का द्वित्व कर देता है। उदा० वागड़ी- टाबर=बच्चा; पंजाबी-टब्बर=कुटुम्ब। वा० टीवा, प० टिब्बा = रेती का टीला। वा० कुट, प० कुट्ट=छोटा घाव। मारवाडी 'ए' या 'ऐ' ध्वनि का उच्चारण अंगरेजी Hat (हैट) के एँ की तरह पाया जाता है, वह भी इस हद तक कि 'ए' की जगह अक्सर 'अ' ही लिखा जाता है। उदा० संश्लेषात्मक कृदन्त 'गे' बहुत बार 'ग' लिखा जाता है।

व्यंजन ध्वनियो मे 'क' का उच्चारण बहुधा 'ग' की तरह होता है। संबंधवाची प्रत्यय 'को' के विषय मे यह बात बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ती है। 'को' या 'का' लिखा जाकर भी उसका उच्चारण 'गो' ही किया जाता है जिसका झुकाव aw उच्चारण की ओर ही विशेष रहता है।

स्टैन्डर्ड मारवाड़ी की तरह वागड मे भी मध्यस्थित हकार ध्वनि साधारणतया लुप्त हो जाती है। उदा० कहसूँ Kahasu की जगह क'सूँ Ka' su = मैं कहूँगा; कह्यो की जगह क'यो=कहा; चाह्यो की जगह चा'यो=चाहा।

बीकानेर की वागड़ी मे आद्य व (w,v) की जगह ब' अधिक मिलता है। उदा० वो की जगह बों= वह। श्री विलसन को भी सिरसा की बोली मे यह

विशेषता मिली थी, परन्तु बागड़ी के उस क्षेत्र, जहाँ पजाबी, बाँगरू या अहीरवाटी का प्रभाव अधिक है, 'व' (w,v) ध्वनि ज्यो की त्यो पाई जाती है। हिसार से मिले नमूने मे यह विशेषता द्रष्टव्य है। बागडी के उत्तर मे पजाबी तथा पूर्व मे बाँगरू एव अहीरवाटी होने के कारण इन बोलियो के कम-अधिक प्रभाव के फलस्वरूप जगह-जगह पर उसके भिन्न-भिन्न रूप मिलते हैं। हमने दो नमूने दिये हैं। उनमे से एक तो बीकानेर का है जिसे हमने स्टैण्डर्ड बागडी माना है और दूसरा पंजाब के हिसार जिले से लिया हुआ है जो कि इस बोली के बाँगरू से प्रभावित रूप का प्रतिनिधि है। सम्पूर्ण व्याकरण देना अनावश्यक होगा, कारण बागडी मारवाड़ी से बहुत मिलती-जुलती बोली है। अतएव विस्तृत वर्णन के लिये मारवाडी की व्याकरण (अन्यत्र दी हुई) देखी जा सकती है। परन्तु, जैसा कहा जा चुका है, स्टैण्डर्ड बागडी हमने बीकानेर की बागड़ी को ही माना है।

नाम रूप

नामरूप बहुत कुछ मारवाड़ी की तरह ही है। सबल (Strong) अ-कारान्त संज्ञा शब्दो का कर्त्ता एकवचन रूप मारवाड़ी की भाति 'ओ'-कारान्त होता है। रूपावली इस प्रकार होगी:—

	एकवचन	बहुवचन
प्र०	घोडो	घोड़ा
प०	घोडा	घोड़ाँ
सम्बो०	घोड़ा	घोडो

प्र० एक० का 'ओ' पजाबी या बाँगरू के असर के कारण कभी-कभी 'आ' भी लिखा जाता है। परन्तु उसका उच्चारण 'ओ' ही रहता है या 'ऑ' caw के aw जैसा।

तृतीया एक० रूप-ए-कारान्त एवं बहु० आँ-कारान्त होता है। उदा० घोडे, घोड़ाँ। इस रूप के साथ 'नै' या 'ने' परसर्ग का प्रयोग नही किया जाता। जहाँ कही यह मिलता है वह पडोस की बोलियो के असर के फलस्वरूप। अन्य सज्ञा शब्दो के तृतीया एक० रूप प्रथमा के जैसे ही होते हैं और बहुवचन रूप आँ-कारात्मक होते हैं। उदा० 'बाप मार्यो'=बाप ने मारा; बापाँ मार्यो= बापो ने मारा। सभी सज्ञा शब्दो का तिर्यक् बहु० रूप 'आँ'-अन्तिक होता है।

राजस्थानी का ए या आँ-साधित सप्तमी रूप यहाँ भी साधारणतया प्रचलित है। उदा० 'घरे', 'घराँ'=घर-मे।

कारक परसर्गो मे द्वि० चतुर्थी–गे, –ने और (हिसार में) –नै,–नूँ पाये जाते है। –नूँ पंजाबी से लिया हुआ है।–गे प्रायः '–ग' लिखा जाता है। परन्तु इससे उच्चारण में कोई फर्क नही पडता। (ऊपर मिलाइये) वास्तव में यह हमेशा की तरह षष्ठी परसर्ग–गो का सप्तमी रूप ही होता है।

तृ०-पं० के परसर्ग–सूँ एव–ता हैं।

सप्त० के कई परसर्ग मिलते है जिनमे प्रायः व्यवहार मे लाये गये -याँ और –यें है।

षष्ठी का परसर्ग–गो बागड़ी का अपना एक विशिष्ट रूप है। इसके रूप ये है।

तिर्यक्—गा। सप्त–तृ० पुं–गे, स्त्री०–गी। –गे का प्रयोग तृ० या सप्त० एक० के साथ होता है और अन्य तिर्यक् रूपो के साथ–गा व्यवहृत होता है। उदा० राजा–गे मन मे =राजा–के मन मे; राजा–गे आगे =राजा–के सामने; राजा–गे बाप देख्यो=राजा–के बाप–ने देखा; राजा–गा हात–सूँ = राजा के हाथ–से; राजा–गा रुपैया=राजा–के रुपये। जैसे-जैसे पजाबी और बाँगरू का असर अधिकतर होता जाता है –गे का व्यवहार भी बढ़ता जाता है। अधिकतर –गा की जगह इसका प्रयोग मिलता है और बढ़ते-बढ़ते यह पजाबी या हिन्दोस्तानी की तरह तिर्यक् ष० पु० का साधारण प्रचलित रूप बन जाता है।

लिखते समय –गो कभी-कभी '–गा' और '–गे' कभी कभी '–ग' हो जाता है, पर इससे उच्चारण मे कोई फेर नही पड़ता। वैसे ही–ग की जगह कभी-कभी क भी लिखा जाता है, उदा०–को, –का, –के, –की; परन्तु उच्चारण मे फेर नही पडता; उच्चारण '–ग' ही रहता है। यदि कही पर –क ध्वनि सुनने मे आई तो उसे बाँगरू से आई हुई मानना होगा।

कही-कही –गो, –गा, –गे. –गी की जगह शुद्ध मारवाड़ी के –रो, –रा, –रे, –री भी मिलते है पर वे भी उपरिकथित नियम के अनुसार मारवाडी से उधार लिये हुए माने जाने चाहिये। –रो कभी-कभी –रा की तरह और रे–र की तरह लिखा मिलता है।

विशेषण

विशेषणो के बारे मे अधिक कहने की जरूरत नही है। –अ कारान्त सबल (Strong) तद्‌भव विशेषण शब्द –ओ का न्त बन जाते है, और पष्ठी के प्रत्ययो की तरह व्यवहृत होते है।

सर्वनाम

प्र० एवं द्वि० पुरुष के सर्वनाम ये हैं:—

एकवचन	प्र०	मैं	तुम
		हूँ	तूँ
	तृ०	मैं	तैं
	ष०	मेरो	तेरो
	तिर्यक्	म	त
वहुवचन	प्र०–तृ०	म्हे	थे
	ष०	म्हारो, म्हाँ–गो	थारो, थाँ–गो
	तिर्यक्	म्हा, म्हाँ, म्हे	था, थाँ, थे

मैं और तैं का प्रयोग केवल तृतीया मे होता है, प्र० मे नही। उदा० हूँ करूँ=मैं करता हूँ; मैं कर्‌यो=मैंने किया। इन दोनो सर्वनामों के वहुवचन का प्राय: एकवचन के अर्थ में प्रयोग होता है।

निर्देशक (demonstrative) सर्वनाम 'यो' या 'ओ' = यह एव 'वो'= वह है। इनके स्त्री० रूप केवल प्रथमा एक० मे ही है, उदा० 'या' अथवा 'आ'=यह; 'वा'=वह। हिसार वाले रूप स्टैण्डर्ड वागड़ी से कुछ भिन्न मिलते हैं।

स्टैंडर्ड वागड़ी

		यह	वह
एक०	प्र०	यो, ओ; स्त्री० या, आ,	वो; स्त्री० वा
	तृ०	ई, अ, इया	वी, व, उवा
	ति०	ई, इया	वीँ, उवा
वहु०	प्र०	ऐ	वै
	ति०	आँ, इन	वाँ, विन, उन

हिसार वाली वागड़ी

एक०	प्र०	येह; स्त्री० या, आ	वोह; स्त्री० वा
	तृ०	ई	वी; स्त्री० वाँ
	ति०	ईं	वीँ
वहु	प्र०	ऐ	वै
	तृ०	आँ, इन	वाँ, विन, उन

संबंधवाचक सर्वनाम जको (प० जि-गो), स्त्री० जकी है। सारे राजस्थान मे इसका व्यवहार निर्देशक सर्वनाम के अर्थ मे होता है; यहाँ भी वही प्रयोग मिलता है।

प्रश्नवाचक सर्वनाम : कुण (ष० कि-गो) = कौन; के = क्या। हिसार में किह्याँ और काँई = क्या मिलते है। कूँ ही का कुछ भी, तथा कोई (यही तिर्यक् रूप भी है) = कोई भी के अर्थ मे व्यवहृत मिलते है।

क्रिया

सहायक एवं मुख्य क्रियाएँ

वर्तमान– मैं हूँ

	एक०	बहु०
प्र०	हूँ	हाँ
द्वि०	है	हो
तृ०	है	है

मारवाडी रूपो का अनुसरण द्रष्टव्य है। तृतीय बहु० का अनुस्वाररहित होना भी विशेष ध्यान आकर्षित करता है।

सिरसा या अन्य ऐसे क्षेत्रो मे जहाँ बाँगरू या अहीरवाटी का प्रभाव स्पष्ट है, नीचे लिखे रूप मिलते है :—

	एक०	बहु०
प्र०	सूँ	साँ
द्वि०	सैं, से	सो
तृ०	सै, से	सन

भूतकाल

	एक०	बहु०
पुं०	हो	हा
स्त्री०	ही	ही

हिसार तथा अन्य बाँगरू-अहीरवाटी प्रभावित्त क्षेत्रों में ये रूप थो, था, थी मिलते हैं।

मुख्य क्रिया

राजस्थानी के साधारण नियमानुसार यहाँ भी हिन्दुस्तानी का वर्तमान संभावनार्थ (subjective) रूप, वर्त० सामान्य (indicative) की तरह प्रयुक्त होता है। उदा० वर्तमान– मैं मारता हूँ इत्यादि

	एक०	बहु०
प्र०	मारूँ	माराँ
द्वि०	मारे	मारो
तृ०	मारे	मारे

हिसार तृ० बहु० 'मारै' मिलता है।

निश्चयार्थं वर्तमान (Definitive Present) साधारण नियमानुसार वर्तमान कृदन्त के साथ मुख्य क्रिया के रूप चला कर बनाया जाने के बदले ऊपर दिये गए रूपो के साथ मुख्य क्रिया रूपो को चलाकर बनाया जाता है। उदा०

निश्चयार्थ वर्तमान

	एक०	बहु०
प्र०	मारूँ-हूँ	माराँ–हाँ
द्वि०	मारे–है	मारो–हो
तृ०	मारे–है	मारे–है

अनद्यतन भूतकाल के रूप एक–एकारान्त क्रियार्थक सज्ञा के साथ सहायक क्रिया के भूत रूपो को मिला कर बनाये जाते हैं। ये रूप पुरुष के साथ नही बदलते। उदा० अनद्यतन भूत, मै मार रहा था, आदि

	एक०	बहु०
पुं०	मारे-हो	मारे-हा
स्त्री०	मारे-ही	मारे-ही

हिसार एव पडोस के क्षेत्र मे हिन्दुस्तानी का अनुसरण करते हुए वर्तमान कृदन्त का प्रयोग किया मिलता है। उदा० हूँ मारतो–थो।

भविष्यत्–के रूप बीकानेर या राजस्थान के अन्य भागो की तरह स-साधित ही मिलते है। उदा० मै मारूगा, आदि

	एक०	बहु०
प्र०	मार्स्यूँ	मार-साँ
द्वि०	मार-सी	मार-सो
तृ०	मार-सी	मार-सी

हिसार मे यह 'स' ध्वनि 'श' बन जाती है। रूपावली इस प्रकार मिलती है:—

	एक०	बहु०
प्र०	मार-शूँ	मार-शाँ

द्वि०	मार-शी	मार-शो
तृ०	मार-शी	मार-शन

क्रियार्थक सज्ञाएँ एव कृदन्त

तुमन्त (infinitive)—मार-बो, मार-णो, मारण=मारना

वर्त० कृदन्त (Present participle)—मारतो =मारता हुआ ।

भूत० कृदन्त (Past participle) मार्‍यो (लिखित रूप अक्सर–'मारियो')=मारा ।

योगात्मक कृदन्त (Conjunctive Participle)—मार-गे, मार-र, मार-कर=मारकर ।

करण रूप (Noun of Agency)—मारण-आळो, मारणे-आळो = मारने वाला ।

इन उपादानो से हिन्दुस्तानी की तरह बाकी के अन्य कालरूप भी बनाये जा सकते है । सकर्मक क्रिया के भूत कृदन्त द्वारा साधित कालरूप बनाते समय, साधारण नियमानुसार कर्त्ता शब्द तृतीया रूप मे ही चलता है ।

योगान्तक कृदन्त (Conjunctive Participle) के तीन रूपो मे से मार-गे वास्तविक बागडी रूप है । मार'र मारवाड़ी है और मार-कर बाँगरू । दूसरे नमूने में आया हुआ रूप बुला-अर=बुलाकर भी द्रष्टव्य है ।

अनियमित क्रियाएँ (Irregular Verbs) जो साधारणतया पाई जाती है वे ही है, केवल करण=करना का भूत कृदन्त कर्‍यो मिलता है ।

'परो' तथा वरो' से युक्त मारवाडी की संयुक्त क्रियाएँ (Compound Verbs) भी बागड़ी मे मिलती है । उदा० परो-गयो=चला गया (मिला० मारवाडी की व्याकरण) ५०३० ।

मारवाड़ी के प्रत्यय–ड़ो का प्रयोग विशेषणों एव कृदन्तों के साथ प्राय: मिलता है । उदा० मोटो–डो = बड़ा लडका; बॉधो-ड़ो, स्त्री० बॉधो-डी= बाँधा हुआ या बॉधी हुई ।

नकारार्थक (Negative) को–नीँ जो राजस्थान मे प्राय: सर्वत्र मिलता है, यहॉ भी प्राप्त होता है । उदा० को गयो नी=वह गया ही नही ।

शब्दावली

नीचे लिखे शब्द विशेप रूप से घ्यान आकर्षित करते है, सो या सो–कुंई= सव कोई या सब कुछ ।

कने=पास, पास–से, से । घोरो=से । गैल=साथ । अठे, इठे=यहाँ । वठे=वहाँ । कठे=कहाँ । एसो=ऐसा । हम्वे=हॉ ।

नमूना सं० २ में 'घटे ना बधे' यह वाक्य-खण्ड विशेष द्रष्टव्य है। इसमे 'न' का उपयोग 'घटे' एवं 'वधे' दोनो क्रियाश्रो के साथ हुआ है। इसे 'देहली-दीपक'= देहली पर रखा हुआ दीपक कहते है। क्योकि जिस प्रकार देहली पर रखा हुआ दीपक कमरे मे पीछे को ओर और आँगन मे बाहर की ओर, दोनो ओर प्रकाश फेंकता है, वैसे ही यह प्रयोग आगे-पीछे आई हुई दोनो क्रियाश्रो से संबंधित रहता है।

संख्या २१

बागड़ी | पहला नमूना | बीकानेर राज्य

कोई माँणस-गा दोय बेटा हा। बाँ-मॉय-सूँ ल्होड़किये बाप-नें कयो क ओ बाबा घर-गे धन-माल-मेँ-ता जतो म्हारे बँट आवे जको म-नें दे-दो। जकता बाप घर-गा धन-माल-गा बाँटा कर-गे बाँ-नें बाँट-दियो। थोड़ा-सा दिन पछे ल्होडकियो बेटो आप-गो सो धन भेळो कर-गे अलग मुलक-में परो-गयो ओर बठे कुमारग-में सो कँई खोय-दियो। सगळो बिगाड़ाँ पछे बीं मुलक-में जबरो भारी कूसमो हुवो ओर बो कगाळ हुय-गयो। ओर बो बीं मुलक-रे रहणे-आळे एक माँणस कने जाय-गे बीं-गे भेळे रहण लागो। ओर बीं उव-नें आप-गा खेताँ-में सूर चरावण-वेई हेड्यो। ओर बो सूराँ-गा खावण-गा छोडाँ-सूँ घणी दोरी पेट भराई करतो-हो। ओर बीं-नें कोई कूँहीं नहीं देतो। जणाँ बीं-नें चेतो हुयो ओर आप-गे मन-में कयो क म्हारे बाप-गे तो घणाई माँणस है ओर बाँ माँणसाँ-गे रोटी अगाँण-पगाँण पडी रहै-है ओर हूँ मरतो मरूँ हूँ। सूँ अठियाँ चाल-गे म्हारे बाप कने जासूँ ओर बीं नें कसूँ क ओ बाबा मैं भगवान-गे आगे ओर थारे मूँढा-गे पाप कर्या-है। जकता अब थारो बेटो कवावण जोगो नहीं रह्यो। पण म-नें थारे माँणसाँ में एक माँणस बणाय-ले। ओर बो उठ-गे आप-गे बाप कने आयो। बीं-नें घणी-सारी दूर-सूँ बीं-रे बाप देख्यो। जराँ दया कर-गे भाग कर साँमें जायर बीं-नें गळा गे लगायो ओर बाळा लिया। ओर बेटे कयो क ओ बाबा भगवान-गे साँमने ओर थारी आँख्याँ आगे मैं पाप कर्या-है ओर थारो बेटो वजण जोगो नहीं हूँ। पण बावे आप-गे माँणसाँ-नें कयो सगळाँ-सूँ चोखा गाभा ल्याय-गे ईं-नें पैरावो। ओर ईं-गे हात-में मूँदडी पैरावो। ओर पगाँ-में पगरखी पैरावो। ओर आपाँ जीमण जीमाँ ओर मजा कराँ ईं-वेई क म्हारे ओ बेटो मर-गयो फेरूँ जीयो-है। गूँम-गयो-हो फेरूँ लाधो है। ओर वै कोड करण लागा।

अवार-ताँई उव-रो मोटोडो वेटो खेत-में हो। जराँ बो घर-नें आयो ओर घर-गे नेडो पूगो तो बीं गीत गाँवणो ओर नाचणो सुणो। जराँ वी आप-गे माँणसाँ-मइयाँ एक जणे-नें बुलाय-गे बूझो क ओ के है।। जराँ व वीं-नें कयो

क तेरो भाई आयो-है अर तेरे बाप जीमरण कर्यो है ईं-बेई बीं-नें वो राजी-खूसी मिळयो-है । जरॉं वो घरणो रीसाँरणो हुयो ओर घर-में वडरणो नहीं चायो । जकता ईं-गो बाप मनावरण-नें बार आयो ओर मँनायो । जरॉं इय बाप-नें कयो क देखो अता बरस-ताँई मं तेरो हीडो कर्यो है । ओर कदेई थारो अरण-कयो नही कर्यो । परण तोही थे म-नें कदे-ही बकरियो-ही नहीं दियो क हूँ म्हारे मीतरॉं-गे सॉंगे खूसी करतो । परण थारो ओ बेटो जके थारो धन-माल रॉंडॉं-गे सॉंगे कुमारग-में खोय-दियो जक-रे आवतॉं पारण-बीं-गे बेई जीमरण कर्यो । जरॉं बी बीं-ने कयो क अरे बेटा तूं तो सदाई म्हारे भेळो है । ओर सो कुंई म्हारे कने है जको तेरो-ई है । ओ तेरो भाई मर-गयो-हो जको फेरूं जीयो-है । ओर गूंम-भयो-हो जको फेरूं लाभो है । जकता राजी हूरणो ओर कोड करण चाहीजे-हो ।।

संख्या २२

बागड़ी — दूसरा नमूना — बीकानेर राज्य

एक राजा थो । वीं एक साहुकार कने दस पाँच क्रोड रुपैयो देखियो और सुण्यो । वीं राजा-गे मन-में एसी-क आई कि ईं-रा रुपैया खोसरण चाहीजे । एसी तजवीज सूं लेरणा चाहीजे कि ईं-हूँ बुरो बी मालूम न देवे । वीं राजा वीं साहुकार-नै बुलायो । बुलाअर साहुकार-नै एसी फरमाई कि चार चीज म्हे-नूं पैदा कर-दे । एक तो घटे-ही घटे । एक वधे-ही वधे । एक घटे न वधे । एक घटे और बधे । साहुकार इकरार कर्यो कि छे महीने-में चारॉं चीज हाजिर करशूं । वीं-सूं राजा इकरार-नामा लिखवा-लीयो कि छे महीने-में हाजिर न करूं तो मेरे घर मॉंही जो धन है सो राज-रो होयो । इकरार लिख साहूकार घर-में गयो । घरॉं जा गुमास्तॉं-ने कानी–कानी कागज दीया कि किह्यॉं भाउ मिळै ऐ चारॉं चीज खरीद-कर भेज देओ । गुमाश्तॉं वुतेरी ढूंड करी लाधी नहीं । गुमाश्तॉं उलटो जवाब सेठ-नै लिख दीयो कि इठे किह्यॉं भाउ ऐ चीजॉं लाधी नही और न कोई इठे इन्हॉं चीजॉं-नूं जानै-है । साहुकार-नै वडो भारी फिकर होयो अब कॉंईं जावता करीजे । धन तो राजा ले-लेशी । भँडो ढाळो होशी ।।

तो साहुकार-गो लुगाई बोली था-नूं कॉंई एसो फिकर है सेठ-जी सो म्हॉं-नै तो बताओ । सेठ कहरण लाग्यो । लुगाई-गे किह्यॉं बताऊं । लुगाई हठ पकड़ लीयो । हूँ तो पूछ्यॉं-ही रहशूं । सेठ-जी हार-कर बतावरण लाग्यो । चार चीज बादशाह मॉंगी-है । सो गुमाश्तॉं कने लिखा था । सो गुमाश्तॉं जवाब दे भेज्यो-है । चारॉं चीज न द्यॉंगा तो माल-धन सब राज ले-लेशी । साहुकाररणी बोली कि अॉं चीजॉं खातर राज कॉंई म्हारो धन ले लेशी । ऐ चारॉं चीजॉं म्हे म्हारे बाप

कने ल्याई थी। म्हारा बुगचा- में बांधोडी पडी है। राज मांगशी दे-दे-शां। साहुकार एसी कही म्हा-नें आंख्यां दिखाओ। साहुकारणी एसी कही कि जाओ थे राज मे अरजी कर-देओ कि आप म्हारा-सूं कांईं चीजां मांगी। एसी एसी चीज तो लुगायां-रे कने लाध-जावें॥

राज आप-रे मन-में एमी विचारी कि थे तो मोच-समभ बात कही थी। पण एसी चीज लुगायां कने लाध-जावें तो लुगाई बुलाओ। राजा साहुकार-गी लुगाई-नें हरकारो बुलावण भेज्यो। साहुकारणी कह्यो कि राजा-जी आप-री कोई मुतबर बांदी भेज-देवे तो हूँ बांदी नूं दे-देशूं। बांदी रानी-नें दे-देशी। रानी राजा नें दे-देशी। राजा न मानी। ईं ढाले चार बेर हरकारो गयो अर चार हेळां आयो। पछे साहुकार-बच्ची आई। हात-में एक थाळ ल्याई। एक दूध-गो कटोरो थाळ-मांही राख्यो अार एक दाना चना-गो एक दाना मोठ गो एक दूब घास गी। एक एक दाना अहल-कारां गे आगे और घास बी अहलकारां गे आगे। दूध-गो बाटको राजा-जी-गे आगे धर-दीयो। राजा एमी फरमाई कि साहूकार बच्ची तूं म्हारी धरम-की पुत्री है। वोह चीज पछे देओ। येह कांईं कियो येह बता म्हा-नें। बां कह्यो अन्न-दाता पहलां आप-गी चीज ले-लेओ। पछे बताऊंगी। आप पूछ्यो-थो कि एक घटे-ही घटे। वोह तो उमर है। और आप कह्यो बधे-ही बधे सो वोह तृष्णा है। बधी-ही चळी-जाए। और एक घटे न बधे सो कर्म-गी रेखा है। और घटे और बधे सो वोह सृष्टि है। राजा पूछी येह तें कांईं कर्यो। बोली आप-री कचहरी-में बैठ्यो कोई गधो है कोई घोडो है कोई डांगर है कि कोई ओ न कह्यो कि क्रोड़-पती-गे घर-सूं नीरवानी कचहरी में किह्यां आ सके। और आप बच्चो हो सो दूध पीओ। दूसरां मालिक हो। हूँ आप ने कह नहीं सकती। म्हारे पीहर-गे राजवाड- में पधारो। तो आप-नें बी डांगर बतावे॥

•

मध्य-पूर्वी राजस्थानी

जयपुरी

आगे दिये हुए दोनो नमूने जयपुर शहर से लिए हुए है। (इनमे से एक तो बाइबल की Prodigal Son की कथा का रूपातर है और दूसरा एक प्रचलित लोककथा का अश) इस सर्वेक्षण के लिये ये नमूने रेव जी मैकेलिस्टर ने उपलब्ध कराये है। मैकेलिस्टर महोदय की "Specimens ...." नामक पुस्तक मे पृ० ३४ से ७४ तक पाठक को इस भाषा के और भी अनेक उत्कृष्ट नमूने मिलेगे।

संख्या २३]

जयपुरी (परिनिष्ठित) पहला नमूना जयपुर राज्य

एक जरणा-कै दो बेटा छा। वाँ-मैं-सूँ छोटक्यो आप-का बाप-नै खई दादाजी घन मैं-सूँ जो बाँटो म्हारै बाँटै आवै सो मूँ-नै द्यो। वो आप-को घन वाँ-नै बाँट दीनू। थोडा-ई दिना पाछै छोटक्यो बेटो सब मोर-समेटर दूर परदेस-मै चळ यो-गयो अर ऊँडै कुग्गैलाँ चालर आप-को घन उडा दीनू। ऊँ-नै सब-क्यूँ उडा-दीयाँ पाछै ऊँ देस मै एक वडो काळ पड्यो अर वो व्है-गो कँगाळ। वो गयो अर ऊँ देस का रैबाहाळा-मैं सूँ एक जरणा-कै रैवा लग्गो। वो ऊँ-नै सूर चराबा-नै आप-का खेताँ-मैं खिनातो। सूर जो पानडा खाय-छा वाँ सूँ वो आप-को पेट भरबा-नै राजी छो। ऊँ नै कोई-ई आदमी को-देतो-नै। अब ऊँ की अक्कल ठिकाँणै आई। जिद वो बोल्यो अक म्हारा बाप-का नरा मँजूराँ कनै अतरो छै क वै आप खा-ले अर और पाछो पटक-दे अर मैं भूकाँ मरूँ। मैं ऊठस्यूँ अर म्हारा बाप कनै जास्यूँ अर ऊँ-नै खैस्यूँ अक दादा जी मैं परमेसर-को पाप कर्यो-छै अर थाँकै आगै पाप कर्यो-छै अब ई लायक कोनै अक थाँ-को बेटो बाजूँ। मूँ-नै भी थाँ-का मँजूराँ-मैं एक मँजूर राख-ल्यो। वो ऊठ्यो अर आप-का बाप कनै आयो। ऊँ-नै दूर-सूँ आतो देख्यो-र बाप-नै दया आ-गई। वो भागर ऊँ-नै गळै लगायो अर अँ-सूँ हेत कर्यो। बेटो बाप-नै खई दादा-जी मैं परमेसर-को पाप कर्यो-छै अर थाँकै आगे पाप कर्यो छै अर अब ई लायक कोनै अक थाँ-को बेटो बाजूँ। परण बाप आप-का आदम्याँ-नै खई-क चोखा-सुँ-चोखा लत्ता ल्यावो अर ऊँ नै पैरावो। ऊँ-का हाताँ-मैं वींटी पैरावो अर पगाँ-मैं जूत्याँ पैरावो। अर आपाँ खाँवाँ पीवाँ अर कुसी कराँ।

क्योंक यो म्हारो वेटो मर गयो-छो जो फेर जीयायो अर गुम-गयो-छो जो लाद्यायो। अर वै कुसी करवा लागग्या।

ऊँ-को वडो वेटो खेत-मैं छो। वो आयो अर घर-कै कनैसीक पौंछ्यो जिद नाचवो गावो अर वजावो सुण्यूँ। वो आदम्याँ-मैं-सूँ एक-नै वुलायो अर ऊँ-नै पूछी अक ये काँई वाताँ व्है-छै। वो ऊँ-नै खई-क थारो भाई आयो छै। जी-सूँ थारो वाप जीमण कर्यो छै क्योंक ऊँ-कनै वो नीकाँ भळाँ आ-गयो। वो रोस व्है-गयो अर माँई-नै को-गयो-नै। ई-सूँ-ऊँ-को वाप वाराँ-नै आयो अर ऊँ-नै मनायो। वो जुवाब देर आप-का वाप-नै खई-क देख याँ अतरा वरसाँ-सूँ मैं थारी ठैळ करूँ-छूँ अर थारो खैवो कदेई को नाख्यो-नै। तौ-वी तू मूँ-नै तो एक वकरा-को वच्चो भी कदे को-दीनू-नं-क मैं म्हारा साती भायळाँ-नै लेर कुसी करतो। पण थारा ईं वेटा-नै आताँ-ईं जो थारो धन राँडाँ मैं उड़ा-दीनू तू ऊँ-कै ताँई जीमण कर्यो। वो ऊँ-नै खई वेटा तू सदा म्हारी साथ छै। ज्यो-क्यूँ म्हारै कनै छै सो थारो-ई छै। कुसी करवो अर राजी व्हैवो व्हैती वात-ई छी क्योंक यो थारो भाई मर-गयो छो सो फेर जीयायो अर गुम गयो छो सो लाद्यायो-छै॥

संख्या २४]

जयपुरी (परिनिष्ठित) दूसरा नमूना जयपुर राज्य

एक राजा छो। अर ऊँ-कै दो वेटा छा। भगवान-की असी मरजी हुईस वो राजा वेटा वाळक छा जिदी मर-गयो। मरती भगत आप-का छोटा भाई-नै वुलार आप-का दोन्यूँ वाळकाँ-की अर आप-की राँणी-की सरम ऊँ-नै घाल गयो अर या खै-गयो अक ये दोन्यूँ काम-काज-मैं नै समजै जित्तै काम-काज राज-को तू करवो करजे। अर ये स्याँणा समँजणा व्है-जाय जिद याँ को राज-पाट याँ नै समळा-दीजे। सो राजा-नै मर्याँ पाछै यो-ई काम-काज करै अर सारा राजपाट-को कुलाँकुल यो-ई मालिक व्है-गो। थोड़ा-सा दिनाँ पाछै यो आप-का मन-मैं विचारी-अस ये दोन्यूँ भतीजा वडा व्है-जायला तो राज-पाट आपणा हात-सूँ खुस-जायलो। जै व्है तो याँ-नै पैली-ई मरा-नँखावा-को उपाय कराँ। सो वो या वात विचारर घर-का नाई-नै वुलायो अर ऊँ-नै लालच देर या खई-अस, तू याँ दोन्यूँ छोराँ-नै मार-नाँख। नाई हाँमळ तो भर-लीनी पण मन-मैं घणू-ईं पिस्तावै। अर अ्ूँ काका-का कैवा-सूँ छैर-का राछ करार वाँ दोन्याँ-की सँवार करवा-नै रणवास-मैं गयो। वै दोन्यूँ भाई सँवार करावा-नै आया। जिद नाई राछ पेटी-मैं-सूँ काडर मेळ्या अर रोवा लाग गयो जिद राणी खई

अरे भाई खवास तू क्यों रोवै-छै। राजा-जी मर गया तो पड्या मर-जावो। नारॉंण करी तो थोडा-सा दिनॉं मैं ये वी राजा व्है-जायला। नेवगी बोल्यो म्हाराज मैं ई बात सूं कोनै रोऊँ। मैं औरी बात-सूं रोऊँ-छूं। राणी पूछी-स वा कॉंई बात छै जीं-सूं तू रोवै-छै। नेवगी खई अक म्हाराज यॉं कँवरॉं-का काकाजी मूं-नै यॉं दोन्यॉं-नैं मारवा-कै-तॉंई भैर-का राछ दीना-छै। अर या खई छै-क तू यॉं दोन्यॉं-नै मार-नॉंख। सो म्हाराज मूं-मूं तो मार्या को-जाय-नै। म्हारै तो ये-ई राजा छै। सो मैं ई बात-सूं रोऊं-छूं। रॉंणी खवास-नै तो पाँच म्होर देर विदा-कर-दीयो अर आप विचारी-अस अब ऐंडै रैवा-को धरम कोनै। जै व्है तो यॉं दोन्यॉं-नै लेर कौड़ी-नै चळी चालूं॥

जयपुरी (तोरावाटी)

जयपुर राज्य के उत्तर का पर्वतीय प्रदेश दिल्ली के तोमर या तुअर राजपूतो का प्राचीन निवासस्थान होने के कारण तोरावाटी कहलाता है। इसके पूर्व मे अलवर है जहाँ की मुख्य भाषा मेवाती है। उत्तर में पटियाला स्टेट का एक भाग है जहाँ की भाषा भी मेवाती है। पश्चिम एव उत्तर-पश्चिम मे जयपूर का शेखावाटी जिला है जहाँ की भाषा शेखावाटी है। तोरावाटी के भाषियो की सख्या ३,४२,५५४ के लगभग अनुमान की जाती है।

स्वभावत: तोरावाटी का स्टैण्डर्ड जयपुरी से भिन्न होना उसके शेखावाटी एवं मेवाती के साथ मिश्रण पर निर्भर है। वास्तव मे यह जयपुरी का वह रूप है जो धीरे-धीरे शेखावाटी और मेवाती मे अन्तर्भुक्त हो जाता है। जयपुरी की एक विशिष्टता महाप्राण ध्वनि का लोप, उदा० मेह की जगह में, मे' यहाँ भी मिलता है। क, ग ध्वनियो का एक दूसरी की जगह प्रयोग भी यहाँ साधारणतया प्रचलित है, उदा० थाक या थाग=थकावट। यह विशिष्टता बहुत पुराने काल से कम से कम १२वी शती लगभग से, भाषा मे चली आती है।

प्र० एव द्वि० पुरुषवाची सर्वनाम शब्दो के ष० एक० अनुक्रम मे 'मेरो' तथा 'तेरो' मिलते है। बहु० मारो=हमारा एव थारो=तुम्हारा हैं। प्र० पुरुष सर्वनाम का तिर्यक् बहु० रूप 'मा' मिलता है।

समीप के निर्देशक सर्वनाम (Proximate-Demonstrative) ओ, औ या यो=यह हैं। जिनका बहु० ऐ=ये है। इसका तिर्यक् एक० मूल रूप ऐं या औं है। तिर्यक् बहु० मूलरूप आं मिलता है।

सुदूर का निर्देशक सर्वनाम (Remote Demonstrative) 'वो'=वह है जिसके बहु० रूप वैं, वां या वै हैं। तिर्यक् एकवचन वैं, वै या वीं तथा बहु० वाँ है।

सवधवाचक (Relative) सर्वनाम जको=जो है। इसके ति० एक० जका, जैं, जीं तथा प्रथ० बहु० एव ति० बहु० जकां है।

प्रश्नार्थक (Interrogative) सर्वनाम 'कुण'=कौन का एक ति० एक० रूप कै मिलता है। के, तथा ति० एक० क्यां=क्या भी द्रष्टव्य है। कोई या कयो=कोई भी के अर्थ मे मिलते है जिनका ति० एक० कैं मिलता है।

जणां=तब के अर्थ मे मिलता है।

क्रियारूप—करने वाले के अर्थ मे (noun of agency) वाले रूप तू-आन्तिक मिलते हैं, यथा—मारतू=मारने वाला। भविष्यत् रूप-गो लगाकर बनते है, उदा० मारूँ-गो=मैं मारूंगा। एक अनियमित प्रेरणार्थक क्रिया० (irregular casual) रूप पायबो=पिलाना ध्यान आकर्षित करती है।

निषेधार्थक (Negative) प्रयोग कोन्यैं' मिलता है। अन्य विषयो मे तोरावाटी की व्याकरण स्टैण्डर्ड जयपुरी का ही अनुसरण करती है। कही-कही ऊपर दिये हुए रूपो की जगह भी स्टैण्डर्ड जयपुरी रूपो का ही प्रयोग मिलता है। और विस्तृत विवेचन के लिये श्री मैकेलिस्टर की पुस्तक मे दी हुई व्याकरण देखी जा सकती है।

आगे दिया हुआ नमूना एक प्रचलित लोक कथा का कुछ भाग है। लेखक को यह श्री मैकेलिस्टर से प्राप्त हुआ है।

सख्या २५]

जयपुरी (तोरावाटी) जयपुर राज्य

फूलजी भाटी छो सिंदी-को राजा। सो सिंदी-का राज मैं मेडता-का पिंडतां मे बांदियो। जद सात बरस तांणी मे कोन्यैं बरस्यो जको देस हुतळ फुतळ व्है-गयो। काळ पड़-गयो। जद कैंबाळा कह्-अस थां-कै तो सिंदी-का राज-मैं मेड़ता-का पिंडतां मे वांदियो-अस। हिरणां-की डार छै जी-मैं किसतूर्यो हिरण छै। वीं-कै सीगडी-कै मे वांदियो। जको बी हिरण-नैं मारो जद थारा राज-मैं मे वरसै। सो राजा हज्जारूँ घोडा लेर हिरणां की गैल दिया छै। सो घोडा थागता-गया। जे घोडा रैता-गया अर हिरण वी रैता-गया। सो ओर तो रै-गया अर वो किसतूर्यो हिरण अर राजा कोई सैंकडी कोस चळ्या-गया। सो हिरण थाकर ऊभो रै-गयो। जणां राजा हिरण नैं मार-गेर्यो। सो सात वरस-को आसूदो छो सो मूसळधार मे आर पड्यो। मो राजा मे को मार्यो घोडा का हांना-के चिप गयो। थाकगेडो तो छो ई राजा। सो राजा नैं सुरत नईं अर घोडा नैं सुरत। जो कोई उजाड बगान-कै मांईं

एक हीर की ढाँणी छी। सो मिनखाँ-की बोली सुणर घोडो बीं हीर-की ढाँणी कनै आर खड़ो रह्यो अर हीं स्यो। जणाँ हीर कही रै घोडो सो काँई हीं स्यो। बाराँ-नै देखाँ। कँवाड खोळर देखो। सो दो च्यार जणाँ आर देखै तो घोडा-का हाँना कँ एक मानवी चिप-रह्यो-छै। सो बीं-नै उतार माँईं-नै ले-गया। घोड़ा-नै घास दाणू दे-दियो। बीं-नै सुवाण दियो। रूई मैं इपटर सुवाण दियो। सो आदेक रात-को बीं-कै निवाँच वापर्यो। सो बीं खावा-नै माँग्यो। सो जाट-की वेटी आप-की मा-कनै-सूँ दूद ल्यार पायो अर पार सुवाण दियो। फेर सुँवार हुयोर बो ऊट्यो-ई। जणाँ तम्मा हम्मा सबी पूछयो। तू कुण छै। खटे आयो छै। जणाँ बीं खयो सिंदी-को तो मैं राजा छूँ। फूलजी भाटी मेरो नाँव छै।।

जयपुरी (काठैड़ा)

साभर झील के दक्षिण किशनगढ रियासत के उत्तर-पूर्व मे स्थित जयपुर के प्रदेश की बोली काठैडा कहलाती है। इसके भाषियों की सख्या अन्दाजन १,२७,६५७ गिनी जाती है। इस नामकरण की उत्पत्ति के विपय मे लेखक को कोई जानकारी मिल नही सकी।

काठैडा दरअसल मे स्टैण्डर्ड जयपुरी का ही बहुत थोड़े हेर-फेर वाला एक रूप है। नमूनो मे श्री मैकेलिस्टर द्वारा दिए गए लोक कथा के अश को उद्धृत किया गया है। काठैडा मे कूँ परसर्ग का द्वि०-च० के लिए और स्यूँ का प० के लिए प्रयोग मिलता है। द्वि० पुरुषवाची सर्वनाम का तृ० रूप तैं एव प्र० तूँ है। तिर्यक् रूप भी तैं है। समीप निर्देशक सर्वनाम ऐं या ओ (स्त्री० आ)=यह मिलते है; इनके ति० एक० ईं, प्र० बहु० ऐ तथा ति० बहु याँ है। सुदूर निर्देशक सर्वनाम वैं या बो है; इनके ति० ए० बै या बी; प्र० व० बै या वै तथा ति० व० वाँ हैं।

प्र० एव द्वि० पुरुषवाची को छोडकर अन्य सब सर्वनामो का तृ० रूप-नै परसर्ग लगाकर बनाया जाता है। नै का प्रयोग सज्ञाओं के साथ नही होता। उदा० बाण्यूँ (न कि बाण्याँ-नै)=बनिये के द्वारा, बाण्याँ-नै का अर्थ होगा 'बनिये को'। मैं=मेरे द्वारा; तैं=तेरे द्वारा; ईं-नै=इसके द्वारा; वँ ने= उसके द्वारा।

क्रिया-होना क्रिया के निम्नलिखित अनियमित (irregular) रूप पाये जाते हैं। हैर=होकर; हैताँ-ई=होते ही; हैबाळो=होने वाला; कई (न कि खई)=कही; कियो=कहा हुआ, जाज्यो या जाजे=जाइयेगा। जाणूँ=जानते ही हो। गियो, गयो, ग्यो=गया।

अन्य बातो मे काठैड़ा स्टैण्डर्ड जयपुरी ही है। द्रष्टव्य बातो मे इ का अ हो जाना। उदा० वकै-ली (विकैली)=बिकेगी। वचारी (विचारी) विचारा। पण्ड (पिण्ड) छूटवो=पिण्ड छूटना। जद (जिद)=जब। नियमानुसार प्राप्त महाप्राण लोप भी यहाँ मिलता है; उदा० आदी (आधी)=आधी; बड़ (वढ़)=घुस। बगत (भगत)=वक्त।

प० के सप्तमी रूप का एक सुन्दर उदाहरण आप-कै घर-कै बारै=अपने घर के बाहर है।

आगे दिये हुए नमूने मे एक ऐसा प्रयोग भी मिला जो स्टैण्डर्ड जयपुरी मे नही है। वह है गुजराती के एक प्रयोग की तरह सकर्मक क्रिया के भूतकाल के भावे प्रयोग को इस प्रकार उलट दिया जाना कि क्रिया और कर्म का लिंग एक हो जाय। (I allude to the Gujarati way in which the impersonal construction of the past tense of a transitive verb is perverted by making the verb agree in GENDER with the object.) उदा० वाण्यूँ आप-की लुगाई-नै जगाई (न कि जगायो)=बनिये ने अपनी स्त्री को "जगाई"। ठीक नियम के अनुसार तो भावे प्रयोग होने के कारण क्रिया का लिंग नपुंसक या (नपुंसक प्रयोग न आया हो तो) पुंलिङ्ग होना चाहिये। परन्तु यहाँ जगाई स्त्रीलिंगी लुगाई के अनुसार चला है। यह गुजराती का नियमित रूप है।

संख्या २६]

जयपुरी (काठैड़ा) जयपुर राज्य

एक वाँण्यूँ छो। रात-की भगत दोन्यूँ लोग लुगाई घर-मैं सूता छा। आदी रात गियाँ एक चोर आर घर-मैं बड़-गयो। ऊँ भगत-मैं वाँण्याँ-नै नींद-सूँ चेत हो-ग्यो। वाँण्याँ-नै चोर-को ठीक पड़-ग्यो। जद वाँण्यूँ आप-की लुगाई-नै जगाई। जद लुगाई-नै कई आज सेठाँ-कै दसावराँ-सूँ चीठ्याँ लागी छै। सो राई भोत मैंगी हो-ली। तड़कै रिप्याँ बराबर वकै-ली। राई का पाताँ-नै नींकाँ जावता-सूँ मेळ-दे। जद लुगाई कई राई-का पाता बारळी तवारी-का खूँणाँ-मैं पड्या-छै। तडकै-ई नींकाँ मेळ-देस्यूँ। चोर आ बात सुणर मन-मैं वचारी राई पाताँ-मैं-सूँ बाँदर ले-चालो। ओर चीज-सूँ काँई काम छै। जद वो चोर राई-का पाताँ-की पोट बाँदर ले-गियो। वाँण्यूँ देखी ओर माल-सूँ बच्यो। राई ले ग्यो। माल-सूँ पंड छूट्यो। जद दन ऊगाँ-ईं वो चोर राई-की भोळी भरर वेचवा-नै बजार-मैं ल्यायो। तो बजार-का पीसा-की ढाई सेर-का भाव-सूँ माँगी। जद चोर मन-मैं समभी वाँण्यूँ चालाकी करर आप-का घर को धन बचा-लियो। पण वीं

बाँण्यॉ-कै तो फेर बी चालर चोरी करणी। मीँतूँ बीस दन बीच-मँ देर फेरूँ बीँ-ईँ बाँण्यॉ-कै चोरी करबा चळ्यो-गियो। रात-की बगत फेर बॉण्यूँ जाग्यो। चोर बॉण्यॉ-को धन माल सारो एक गाँठडी मैँ बॉंदर हॉ-नै कर लियो। जद बॉण्यूँ देखी अक हेळो करस्यूँ तो न जाणॉ चोर म-नै मार नाखसी। अर हेळो नै कर्यो तो धन ले-जासी। जद बॉण्यूँ आप-की लुगाई-नै जगाई। चोर एक बखारी-पर जार चड-ग्यो। बखारी-मँ जा-बैठ्यो। जद बॉण्यूँ दीवो जोयो अर लुगाई-नै कई मैँ तो गगा-जी जास्यूँ। एक छोटी-सी गॉठ-मँ कपडा लत्ता बाँदर त्यार हुयो। जद लुगाई बोली ओ बगत गगा-जी जाबा-को कॉईँ। दन्नूग्याँईँ चळ्या-जाज्यो। ऐ समॉचार चोर बैठ्यो २ सुणै। जद बा लुगाई आप-कै घर-कै बारै आर आडोसी पाडोस्यॉ-नै जगाया म्हारो घर-को धणी गगा जी जाय-छै बार ईं भगत सो थे चालर समझा-द्यो कै दन्नूग्याईँ चळयो-जाजे। जद दस बीस आदमी बॉण्यॉ-का घर-मँ भेळा हो-ग्या अर सारा जणाँ बीँ बॉण्याँ नै समझायो बार तो रात छै। दन्नूग्यॉ ईँ थारी खुसी छै तो चळ्यो--जाजे। जद बो बॉण्यूँ कई थे जाणू मैँ तो थॉ-को कियो मान जास्यूँ। पण ओ चोर गाँठ बाँद्याँ बैठ्यो। म्हारा सगळा घर-की ओ कियॉ रै--लो। असी चालाकी बॉण्यूँ करर चोर-नै पकड़ा-दियो ॥

काठैड़ा के और नमूने श्री मैकेलिस्टर की पुस्तक मे उपलब्ध हैं।

जयपुरी (चौरासी)

जयपुरी की चौरासी बोली काठैडा के ठीक दक्षिण में किशनगढ की सीमा पर, लावा की ठकुरात मे तथा टोंक के उस भाग मे जो जयपुर सीमा के भीतर है, बोली जाती है। इसके भाषियों की अनुमित सख्या इस प्रकार है :—

जयपुर मे	९८,७७३
लावा मे	३,३६०
टोक मे	८०,०००
कुल	१,८२,१३३

चौरासी और स्टैण्डर्ड जयपुरी मे नही के बराबर भेद है। केवल ये विशिष्टताएँ देखने मे आईं : द्वि०पु० सर्व० तू कीजगह तूँ; प्रश्नार्थक सर्व०कुण= कौन का एक तिर्यक् रूप कुणी। विस्तृत चर्चा श्री मैकेलिस्टर की पुस्तक में व्याकरण वाले खड में पृ० ५४–५५ पर मिलेगी।

नीचे का नमूना एक प्रचलित लोककथा का अश है जो श्री मैकेलिस्टर से मिला है।

दल्ली देखवा गियो जाट घोडी पर चडर। कोई दनां-मैं कोस तीनेक उडै पूंछ्यो। रात पड-गी। उडै-ई-रै-ग्यो। भाग-फाटीर ऊठ्यो दल्ली-कै गैलै लाग-ग्यो। कोसेक री दल्ली अर उडी-सूं दल्ली केनी-सूं वांण्यूं मळ-ग्यो। सो वांण्यां-कै या पगावरत सो कोई बोल-ले दन्नूग्यां पैली तो उं-कै वैम पड-जाय। सो कोई-सूं वोलै कोनै। ऊं वगत-का सो यो जाट चालतो-ई साजन-नैं कियो कै राम राम। जद ईं गाळ काडी। जद जाट जूता-की दीनी। जद कोस तांईं जाट तो घोडी-सूं उतरर जूतां-सूं कूटतो गियो अर यो गाळ काड्यां गियो। जद दल्ली-कै दरूजै जातां जातां दन ऑथ ग्यो। उडै सपाई बोल्या क्यो लडो-छो रै। जद वांण्यूं वोल्यो मा-लै जूत्यां-की पडी। जत्ती खां-जी थां कै पडै तो का जाणां कांईं व्है। जद मीयां वोल्यो म्हारै क्यों पडै। थारै-ई पडै। जद मीयां बोल्यो थे लडता लडता अब कडै जास्यो। जद वांण्यूं वोल्यो मारा कोटवाळी-मैं ले-जास्यूं। जद मीयां वोल्यो कोटवाळी-में तो मत जावो। अर वा भट्यारी छै जीं कै तो जाट-नै कै-दे तूं जा अर तूं थारै घरां चळ्यो जा अर दन्नूग्यांईं भट्यारी-का-सूं जाट-नै पकड् ल्याजे। अर ऊं वगत-का-ई कोटवळी-में ले-जाजे सो न्याव हो-जासी। अर अबार थे कोटवाळी-में जास्यो तो दोन्यां-नै-ईं वैठा देसी अर न्याव दन्नूग्यां होसी। जद जाट तो भट्यारी-कै चळ्यो गियो अर वांण्यूं वांण्यां-कै घरां चळ्यो-गियो। भट्यारी रात-की वगत जाट नै रोट्यां चोखी खुवाई। रात-की रात तो रोट्यां खार सो-गियो। दन ऊग्यो अर वांण्यूं आयो घरां-सूं। चाल ऊठ कोटवाळी मैं चालां जद की रोटी खार चालस्यां। वैठ-ग्यो वांण्यूं। ईं रोटी खा-ली दारू पी-लियो। नसो घणूं हो गियो। भटयारी-नै वुलाई। थारा दो वगत रोटी-का कांईं दाम हुया। भट्यारी वोली कै असी चीज दरावो ऊंमर तांईं याद राखूं जद जाट देखी ऊंमर याद रैवा जसी कांईं द्यां। झट जाट पचास रप्या काडर दीना। पछा पटक-दिया भट्यारी। सूं-नैं तो असी चीज द्यो ऊंमर-ई याद राखूं। जद रीस आई जाट-नै पकड़ा ई-नै भट्यारी-नै नाक काट लियो ॥

जयपुरी (किशनगढ़ी)

किशनगढ राज्य जयपुर रियासत एवं अजमेर जिले के बीच मे स्थित है। इसके ठीक पूर्व मे जयपुरी की काठैडा और चौरासी बोलियो वाला प्रदेश है। किशनगढ मे तथा अजमेर के उत्तर-पूर्वी उस भाग मे जो किशनगढ के भीतर तक चला गया है, उनसे बहुत कुछ मिलता-जुलता जयपुरी का एक रूप बोला जाता

है। किशनगढ़ मे इसे किशनगढ़ी कहते है। अजमेर वाली जयपुरी को भी हम यही नाम दे सकते हैं।

बोलने वालो की अनुमित सख्याये इस प्रकार हैं।

किशनगढ़ मे	९३,०००
अजमेर मे	२३,७००
कुल	१,१६,७००

पूरे किशनगढ मे किशनगढी नही बोली जाती। उत्तर मे जहाँ किशनगढ की सीमा मारवाड से मिलती है वहाँ मारवाडी, और दक्षिण मे जहाँ सीमा मेवाड़ से मिलती है वहाँ मेवाडी के रूप बोले जाते है।

किशनगढ़ी मे लेखक को केवल ये विशिष्टताएँ दिखलाई पड़ी। प्र० पु० सर्वनाम का प्रथ० एक० रूप हूँ=मै तथा उसका ष० मारो=मेरा मिलता है। तू के अर्थ में तूँ का व्यवहार मिलता है। ये के अर्थ मे 'अ' का प्रयोग प्राप्त हुआ। निर्देशक सर्वनाम 'वो'=वह का तिर्यक् रूप ऊँ या उण=उसने; तथा जो=जो का रूप जिण=जिसने मिलता है। ये दोनो रूप एकवचनी है।

संख्या २८]

जयपुरी (किशनगढ़ी) जिला अजमेर

एक राजा की बेटी-मैं भूत आतो-छो। और एक आदमी रोज खातो-छो। राजा वारी बाँध-दी-छी। वारी-सूँ लोग जाता-छा। एक दिन एक कुमार-का बेटा-की वारी छी। अर ऊँ-का घर-मैं ऊँ दिन एक पावणो आयो। अ सारा रोवा लाग्या। जद ओ पूछी थे क्यूँ रोवो-छो। कुमारी बोली मारै एक-ही बेटो छै। और ईं राजा-की बाई-मैं भूत आवै-छै। सो रोजीना एक आदमी खावै-छै। सो आज मारा बेटा-की वारी छै। सो ओ ऊठै जासी। जद ओ खई तूँ रोवे मत। थारा बेटा-की बदली हूँ जाऊँ-लो। रात होताँ-ईं वो गयो। और आग-पर एक दवाई रखता-ईं भूत भागो। तडकै-ई जद भगण भुआरवा-नै गई तो बाई-नै चोखी तरह-सूँ देखी। भगण जार राजा-नै खई। राजा हरकारो भेज कुमार-नै पकडा बुलायो। राजा खई रात-नै थारा बेटा-की वारी छी। सो काँईं करो। कुमार खई माराज मारै एक पावणो आयो-छै। जीण-नै खनायो छो। राजा ऊण-नै बुलायो और सारी हगीगत पूछी। और बाई-नै ऊँ-नै परणा-दी और आधो राज-दे-दियो॥

जयपुरी (नागरचाल)

जयपुरी की नागरचाल बोली रियासत के दक्षिणी भाग के मध्य मे तथा उसके पूर्व मे लगे हुए टोक-अधिकृत प्रदेश मे बोली जाती है। इसके बोलने वालो की अनुमित सख्या इस प्रकार है .—

जयपुर मे	५३,५७५
टोक मे	१८,०००
कुल	७१,५७५

स्टैन्डर्ड जयपुरी मे और नागरचाल मे बहुत थोडा अन्तर है। प्र० पुरुष का सर्वनाम म्हूँ या मै तथा द्वि पु० का तै या तू ँ है। इसके तिर्यक् रूप 'थ' या 'त' है। सबधवाचक सर्वनाम जो की जगह 'जे' मिलता है। नमूना एक प्रचलित लोककथा का अश है जो हमे श्री मैकेलिस्टर से प्राप्त हुआ है। शब्दावली एव व्याकरण के और अधिक विवेचन के लिए उन महोदय की पुस्तक देखी जा सकती है।

सख्या २६]

जयपुरी (नागरचाल) जयपुर राज्य

एक कागळो छो अर एक हरण छो। याँ दोन्याँ-के भायैळाचारो छो। दन-मैं तो आप-कै चावै जठै चेजो कर्याबो करै अर रात-नै दोन्यूँ साँमल हो जावै। कागळो तो ऊपर रोँखडा पर बैठ जावै अर हरण रोँखडा-कै नीचै बैठ जावै। याँ दोन्याँ-कै ज्यास अस्यो घणू जो केई दन बदीत हो-गीया। एक दन स्याळ-के अर हरण-कै मळाप कठै-ई हुयो। जद स्याळ या वच्यारर बोल्यो अस यो हरण मोटो छै। ईं-सूँ भायैळाचारो करर कठै-न-कठै ईं-नै फँद-मैं फसार मरा-नखाँवाँ। जद ईं-नै बोल्यो-अम आ-रै हरण आपाँ भी भायैळा मँड-जावाँ। जद हरण बोल्यो कै कागळो अर मैं भायैळो मँड-रयो-छूँ। अर तू कैऐ-छै आपाँ मँड-जावाँ। तो म्हूँ तो म्हारा भायैळा कागळा-नै पूछ्याँ बना तैं-सूँ भायैळो नै मँडूँ। जद स्याळ बोल्यो अस तू थारा भायैळा-नै काल बूजजे। मैं थारै गोडै आऊँ-छूँ। आपाँ भायैळा मँडाँ-ला। जद हरण आँथण-का ऊ-ई रोँखडा नीचै कागळा-नै बूजी की रै भायैला म्हाँ-नै आज स्याळ मळ्यो छो। जो ऊँ या की-स आपाँ भायैळा मँड जावाँ। जो तू कै तो मँडाँ अर तू कै तो नै मँडाँ। जद कागळो बोल्यो-अस म्हारो कैबो माँनै-छै तो तू स्याळ-सूँ भायैळो मत मँडै। कोई दन स्याळ त-नै कठै-न-कठै दगो करर फँद-मैं फस्या दे-गो। जद फेर दूसरै दन ऊ स्याळर हरण मळ्यो। तो कै आज तो तू थारा भायैळा-नै बूज्यायो। अब आपाँ दोन्यूँ भायैळा मँडाँ। जद हरण बोल्यो अरै भाई स्याळ

म्हारो भायँळो तो नट-ग्यो-अस तू भायँळो मत मँडै। जद स्याळ बोल्यो-अस आपाँ तो मँडस्याँ। जद स्याळ बी आँथरण-का ऊँ की लार-लार ऊँ-ईं रोँखड़ा नीचै गीयो जठै कागळो-र हरण बैठै-छा। जद हरण कागळा-नै फेर बूजी-कै यो तो माँने कोनै भायँळो मँडबा बै-ई आग्यो। जद कागळो बोल्यो तू म्हारी मानै-छै तो ईं-सू भायँळो मत मँडै। स्याळ-की जात दगाबाज-छै। दगो करर त-नै कोई दन मरा घलासी ॥

जयपुरी (राजावाटी)

नागरचाल वाले प्रदेश के उत्तर-पूर्व एवं चौरासी के प्रदेश के पूर्व में स्थित टोंक के भाग के पूर्व मे राजावाटी बोली जाती है। उत्तर की ओर इसमे स्टैण्डर्ड जयपुरी का मिश्रण अधिक मिलता है। बोलने वालो के अनुमित आँकड़े इस प्रकार हैं :—

विशुद्ध राजावाटी	१,३३,९३९
मिश्र बोली	३९,५१०
कुल	१,७३,४४९

राजावाटी के ठीक पूर्व मे डॉग बोलियाँ बोली जाती है जिन्हे हमने ब्रज-भाषा के अन्तर्गत रखा है। उनके कारण कई अनियमित प्रयोग मिलते है। विशेषकर हैबो (जयपुरी व्हैबो)=होना क्रिया की रूपावली मे ये सब अनियमित-ताएँ लक्षित होती है। मुख्य-मुख्य रूप ये है :—

तुमन्त-हैबो या हैणू=होना

वर्तमान कृदन्त-हेतो=होता

भूत कृदन्त-होयो=हुआ। ति० पु० हीया, स्त्री० ही।

योगात्मक कृदन्त-(Conjunctive participle) हैर=होकर।

क्रियाविशेषणात्मक कृदन्त- (Adverbial participle) हैताँई=होते ही।

करणवाची सञ्ज्ञा शब्द-(Noun of Ageney) हैबाळो=होने वाला।

वर्तमान काल

	एक०	बहु०
प्र०	हूँ	हाँ
द्वि०	है	हो
तृ०	है	है

भविष्यत रूप हूँ-लो या है-स्यूँ आदि=होऊ गा हैं।

यहाँ भी गुजराती वाला भावे का वह प्रयोग मिलता है जिसमे क्रिया का रूप–नै वाले कर्म के अनुसार बदल जाता है। उदा० चडी बच्चाँ नैँ देख्या (न कि देख्यो)=चिडिया ने बच्चो को देखा। परन्तु दूसरी जगह राजा की=राजा ने कही मे की का स्त्रीलिंग 'बात के' अनुसार है।

आगे दिया हुआ नमूना श्री मैकेलिस्टर से मिला है। इस बोली के विषय मे और अधिक जानकारी उनकी पुस्तक के व्याकरण वाले खन्ड मे पृ० ४५ से आगे मिल सकती है।

सख्या ३०]

जयपुरी (राजावाटी) जयपुर राज्य

एक तो चडो छो अर एक चडी छी। वाँ दोन्याँ को घुसाळो राजा-का मैल-कै मैँ-ने छो। तो चडी कै तरळोकी-नाथ-का परताब-सूँ बच्चा हीया। तो वाँ बच्चाँ-की वाँ चडा-की अर चडी-की परीत देखर राणी भोत खुसी ही। वा राँणी चडा-चडी-की बोली समजे-छी। चडी चडा-नै कीयो अक मैँ मर-जाऊँ तो म्हारा बच्चा दुख नै पावै। चड़ो बोल्यो काँईँ वास्तै तो तू मरै-छे। अर काँईँ वास्तै थारा बच्चा दुख पावै। तैँ जसी चडी फेर मनै मळै बी तो कौनै अर जो कदात तू मर-जावै तो यो-ई म्हारो धरम छै अक मैँ नै परणू अर बच्चाँ-नै परवसता कर लेस्यूँ। ये बाताँ वाँ दोन्याँ-कै करार हीया जो राणी सुण-री। दस पाँच दन तो नकळ्या अर चडी मर गई। अब चडो खुराव अर अब राँणी छै सो देख-री चडा नै अर बच्चाँ-नै। च्यार दन-कै पाछै-ई चडो छै सो दूसरी चडी लीयायो। वा चडी ऊँ चडा-का बच्चाँ नै देख्या। देखताँ-ईँ चडी-कै तो तन वदन-मैँ आग लाग-गी अक ये तो सौक-का छोरा छै। सो चडो तो वाँ-कै वासतै चुगो ल्यावै सो अछ्यो ल्यावै। अर वा चडी छै सो वाड-कै मैँ-नै-सूँ गल्या काँटा चूँच-मैँ ल्यावै। सो वाँ-नै वै काँटा ल्यार दे वाँ बच्चाँ नै। दन दो एक-कै मैँ-नै वै बच्चा मर-गीया। अब ऊँ राँणी-कै ख्याल आयो अक अस्याँ ज्यो तू मर-जावै तो राजा बी दूसरो वीयाव कर-ले अर थारा बच्चाँ नै वा अस्याँ-ईँ मार-नाखै। जनावराँ-ईँ-कै मैँ-नै यो ईरखो छै तो राँण्याँ-मैँ तो पूरो ईरखो हैतो-ई आयो-छै। वाँ चडी–का बच्चाँ-को अर चड़ी-को राँणी-कै वडो एक सोच छा-रयो। जद एक दन राजा पूछी राँणी-नै अक राँणी थारै अत्तो सोच काँई-को छै। नै न्हावो नै वैठवो नै डीळ-कै उपराँ-नै खुसी। अस्यो काँईँ सोच छै थारै। राँणी कीयो-क म्हाराज म-नै तो काँईँ-ईँ वात-को सोच कोनै। राजा की तो अत्ती उदासी काँईँ-की छै थारै। जद राँणी की म्हाराज म्हारै एक कँवर छै। वरस पाँचेक-की ऊमर छै। ऊँ-को म्हारै पूरो सोच छै॥

अजमेरी

अजमेर जिले की पूर्वी एव उत्तरी सीमाग्रों पर किशनगढ़ रियासत है। यहाँ की भाषा किशनगढी है जो जयपुरी का एक प्रकार है। इसका विवेचन किया जा चुका है। पश्चिमी सीमा पर मारवाड है जहां की भाषा मारवाडी है; दक्षिण मे मेवाड है जहाँ मेवाडी प्रचलित है। अजमेर में यह तीनों बोलियाँ मिलती है। सुदूर उत्तर-पूर्व मे जहाँ अजमेर का इलाका किशनगढ के भीतर तक चला जाता है, किशनगढी बोली जाती है जिसे स्थानीय लोग ढूँढाड़ी कहते है। यह जयपुरी का एक नाम है। जिले के पश्चिमी हिस्से की भाषा मारवाडी का एक रूप है और दक्षिण मे मेवाड़ी का एक प्रकार। पूर्वी भाग के मध्य मे एक मिश्रित बोली मिलती है जो साधारण जयपुरी से बहुत थोडी सी भिन्न है। इसे अजमेरी कहते है। अजमेर शहर मे मुसलमान साधारण हिन्दुस्तानी बोलते है। अजमेर की बोलियो के भाषियो की अनुमित सख्याये इस प्रकार हैं :—

अजमेरी	१,११,५००
जयपुरी (किशनगढी)	२३,७००
मारवाडी	२,०८,७००
मेवाडी	२४,१००
हिन्दुस्तानी	४१,०००
अन्य बोलियाँ	१३,३५६
	कुल—४,२२,३५६

अजमेरी के नमूने के रूप मे बाइबल की उडाऊ बेटे (Prodigal Son) की कथा का अश देना पर्याप्त समझा गया। अजमेरी और स्टैण्डर्ड जयपुरी मे भिन्नता के कुछ विशेष उदाहरण केवल ये है म्ह-नै=मुझको। अन्य स्टैण्डर्ड रूपो के अतिरिक्त तृतीय पुरुषवाची सर्वनाम के प्रथमा एव तिर्यक् रूप वै एव० वा=वे भी मिलते है। निषेधार्थक रूप कोनै की जगह 'कोन' मिलता है।

सख्या ३१]

अजमेरी

जिला अजमेर

कस्या आदमी-कै दो बेटा छा। वाँ दोयाँ-माँ छोटो छो वो बाप-नै कियो बाप म्हारैं पाँती आवै जो धन म्ह-नै दे दे। ओर आप-को धन वाँ-नै वाँट-दियो। अर घणा दन कोन हुया कै छोटो बेटो सब धन भेळो कर दूर देस चळ्यो-गयो। ओर उँडै दाम-दाम लुच्चापणा-मैं खो-दियो। अर जद वै सगळो खरच कर-चुक्यो व मुळक-मैं जगी काळ पड़्यो अर वै मुँगतो होवा लाग्यो। पर वठै-का

रहबाळा-सूँ मळ्यो अर ऊँ ऊँ-को खेत-मैं शूर चराबा भेज्यो। अर ऊँ शूर खाता-छा जीँ छोडा-सूँ पेट भरबा-को त्यार छो। पण कोई ऊँ-नै दीना नहीँ। अर जद ऊँ-नै चेत हुयो व कह्यो म्हारा बाप-कै कत्ताक चाकराँ-कै रोटी घणी छ अर मैं तो भूकाँ मरूँ-छूँ। मैं ऊठर म्हारा बाप कने जाऊँ-लो अर ऊँ-नै कहस्यूँ बाप मैं राम-जी-को अर थारो दोन्या-कै आगै पाप कर्यो छै। अर थारो वेटो कहबा जिस्यो नही रह्यो। म्ह-नै थारा नोकरा ज्यान एक नोकर राख-लै। अर वैं ऊठ्यो आर बाप कोडे आयो। वो दूर-ही छो कै ऊँ-को बाप ऊँ-नै देख-लियो अर ऊँ-पर दिया आ-गई। अर दौडर ऊँ-की गळा-सूँ मळ्यो अर वाच्यो लियो। अर वेटो बाप-नै कह्यो मैं परमेसर आरी थारी आँख्याँ-मैं गुनो कर्यो-छै। अर थारो वेटो कहबा जिस्यो नही रह्यो। पण बाप आप-का नोकराँ-नै हुकम कियो कै आछा हूँ आछा कपडा ल्याओ आर ईँ-नै पैरा-द्यो अर हाथ मैं छलो पैरा-द्यो अर ईँ-का पग-मैं पगरखी। आपणो खाओ अर मजा करो। क्योंकै म्हारो वेटो मर-ग्यो छो अर पाछो जी-गयो छै। ऊँ गम-गयो-छो अर पाछो लाद्यायो। अर वैं खुशी करबा लाग्यो॥

हाड़ौती

हाडौती बूँदी एवं कोटा राज्यो मे बोली जाती है जो मुख्यत: हाड़ा राजपूतो के निवास स्थान हैं। पडोस के ग्वालियर, टोंक (छावडा) तथा झालावाड राज्यो मे भी हाडौती बोलने वाले हैं।

हम इन राज्यो को एक-एक करके लेते हैं। बूँदी की आबादी १८९१ ई० मे ३ ५९,३२१ थी। इसमे से ३,३०,००० हाडौती भाषी होने का अनुमान है। बाकी बचे हुओ में से २४००० खैराड़ी बोलते है जो खैराड या पहाडी प्रदेश मे मीणा लोगो द्वारा व्यवहृत मेवाडी का एक रूप है। बाकी के लोग भारत की अन्य भाषाएँ बोलने वाले हैं।

कोटा के भाषा-भाषियो के अनुमित आँकड़े ये हैं :—

हाड़ौती	५,५३,३९५
मालवी	८०,९७८
अन्य	८४,६८८

मालवी शाहाबाद परगने मे एव रियासत के दक्षिण-पूर्व एव दक्षिण-पश्चिम के उन भागो मे बोली जाती है जो मालवा की सीमा से सटे हुए हैं। कुछ वर्षो पहले झालावाड राज्य के कुछ हिस्से भी कोटा में मिला दिये गए थे; इसलिये ऊपर दिये गए आँकडो मे तदनुरूप परिवर्तन करना आवश्यक होगा।

ग्वालियर राज्य में हाडौती कोटा राज्य की सीमा पर एव शाहाबाद परगने व टोंक अधिकृत छावडा के बीच मे बोली जाती है। (शिवपुरी या सिपाड़ी के नाम से कुछ कम शुद्ध रूप मे) हाडौती शाहाबाद के उत्तर स्थित शिवपुर परगने मे भी बोली जाती है। टोक के छावडा परगने मे जो कि कोटा के दक्षिण-पूर्व मे स्थित है मुख्य बोली मालवी ही है; परन्तु कोटा की सीमा के आस-पास हाड़ौती मिलती है।

मौजूदा झालावाड मे हाडौती रियासत के उत्तरी भाग मे स्थित पाटन परगने मे बोली जाती है जो पूर्व, पश्चिम एव उत्तर तीनो ओर हाडौती क्षेत्र से घिरा हुआ है।

हाड़ौती भाषियों की कुल संख्याओं का अनुमान इस प्रकार माना जा सकता है :—

बूँदी (शाहपुरा की ठकुरात समेत)	२,३०,०००
कोटा	५,५३,३६५
ग्वालियर	१७,०००
,, (शिवपुर)	४८,०००
टोंक (छाबड़ा)	१७,०००
झालावाड़	२५,७०६
कुल	८,९१,१०१

हाडौती पूर्वी राजस्थानी समूह की एक उपभाषा है जिसका स्टैण्डर्ड रूप जयपुरी माना गया है। इसके पूर्व मे पश्चिमी हिन्दी समूह की बुन्देली उपभाषा तथा दक्षिण मे राजस्थानी की उपभाषा मालवी का क्षेत्र है। अतएव हाडौती मे जो भी विशिष्टताएँ दृष्टिगोचर होती है वे इन दोनो के प्रभाव के कारण आई हुई है।

बून्दी, कोटा रियासतो तथा उत्तरी झालावाड की भाषा को हम स्टैण्डर्ड हाडौती मान सकते है। इस सारे प्रदेश मे भाषा के स्वरूप मे विभिन्नता लगभग नही के बराबर मिलती है। हाडौती की विशिष्टताएँ इस प्रकार हैं :—

ऐ ध्वनि की जगह प्राय: ए का प्रयोग—उदा० जयपुरी कै हाडौती मे के हो जाता है।

व की जगह ब ध्वनि का मिलना—उदा० तुमन्त होबो=होना; असबाब= असबाब इत्यादि।

तृतीया रूप मे बुन्देली का प्रभाव बहुत स्पष्ट है। इस रूप के साथ यहाँ नियमत:—ने परसर्ग मिलता है जब कि जयपुरी मे यह कभी नही मिलता। उदा० छोटक्या-ने कही=छोटे ने कहा। साथ ही—ने का प्रयोग जयपुरी के—नै की तरह चतुर्थी-द्वितीया के परसर्ग के रूप मे भी मिलता है; उदा० कोई ऊँने कांई न्हइ दैंतो=कोई भी उसे कुछ भी नही देता था। एक जगह चतुर्थी के रूप मे—हे परसर्ग का व्यवहार मिलता है। उदा० केता-'क म्हन त्यां हे रोटी मिळे छे=कितने ही मजदूरो को रोटी मिलती है। लगभग ऐसा ही परसर्ग भोपाल की मालवी वाले नमूने मे मिलता है (पृ० २५८ नमूना न० ४४)। कही-कही—कू का प्रयोग चतु० द्वि० के लिये भी मिलता है; उदा० एक—कू गोडे बुलार=एक (नौकर) को पास बुला कर।

'कहना' क्रिया शब्द के साथ सम्बोधित व्यक्तिवाचक शब्द नै-युक्त चतुर्थ मे नही रखा जाता, जैसा कि जयपुरी मे मिलता है; इसकी जगह पश्चिमी हिन्दी के अनुसार-सूँ युक्त पंचमी रूप मिलता है। उदा० बाप-सूँ कही=बाप-से कहा।

सर्वनामो में जयपुरी से भिन्नता अधिक दिखलाई पडती है। जयपुरी के सब रूपो के साथ-साथ अन्य रूप भी मिलते है जो ये हैं: म्हूँ या मूँ=मैं; म्हॉ=हम; मूईं, म्हाईं या मेईं=मुझको; वाई या ऊँईं=उसको; वॉईं= या ऊँईं उनको। 'इम'-के अर्थ मे 'यो' (स्त्री-'या') का प्रयोग तो है ही; साथ मे 'ईं' का प्रयोग प्रथमा एव तिर्यक् दोनो के अर्थ मे मिलता है। उसी तरह ऊँ= वह दोनो, प्र० एवं ति० रूप मे व्यवहृत होता है।

आत्मवाची सर्वनाम (Refictive Pronoun) के षष्ठी रूप 'आपरणो' एव 'आपको' दोनो मिलते है पर 'आपरणो' का अर्थ 'हमारा' भी होता है जिसमे सम्बोधित व्यक्ति शामिल होता है।

शब्दावली मे कुछ अपने विशिष्ट शब्दो को छोडकर हाडौती और स्टैण्डर्ड जयपुरी मे कोई खास अन्तर नही मिलता; केवल ऐ ध्वनि की जगह प्राय: ए का पाया जाना साधारण मान लिया जाना चाहिये।

नमूनो मे एक तो 'उडाऊ बेटे की कथा' का अनुवाद एवं एक कोटा मे प्रचलित लोक कथा दी गई है। 'कथा' की हस्तलिखित लिपि का प्रतिरूप छाप दिया गया है।[1] यह पूर्वी राजपूताना मे प्रचलित मारवाडी लिपि का एक उत्कृष्ट नमूना है। अक्षर बहुत तोडे-मरोडे नजर आते है। जोडनी (spelling) जगह जगह पर भिन्न भिन्न है और स्वरो की मात्राएँ अनेक जगह प्राय: छोड दी गई है। राजपूताना की इस 'महाजनी' लिपि की यह खासियत है। यह सारे भारत मे फैल गई है। दरअसल यह मारवाडी व्यापारियो द्वारा व्यवहृत उनकी देशी लिपि है। छापने के पहले हमने कही-कही जोडनी (Spelling) की वे गलतियॉ सुधार दी है जो लिखने वाले की लापरवाही के कारण आ गई थी (उदा० 'गोडे' की जगह 'गोढे') एव कुछ जगह छूटी हुई मात्राएँ लगा दी है।

संख्या ३२

हाड़ौती | पहला नमूना | कोटा राज्य

एक आसामी-के दो बेटा छा। वाँ-मे-सूँ छोट्क्या-ने बाप-सूँ कही दाजी म्हारी पॉती-को धन जो मूईं पुगे-छै म-नै दे-रवाडो। सो ऊँ-नै आप-नों धँन वैं

---

१. गद्य भाग मूल हस्तलिपि का विशुद्ध नागरी रूप है। हस्तलिपि के कुछ अश की हूबहू अनुकृति नमूने के रूप मे पृथक् पत्र पर दे दी गई है।

—सपादक

बांट-दियो। घणा दिन नै होवा पाया-छा कै छोट्क्यो बेटो सारो माल-असबाव सहोरर दूर देसां चालो-गियो। अर उठै कुचलण रहर आप-को सारो धँन विगाड नांल्यो। जब गोडे कांईं बी न र्‌हियो अर उठै काळ बी पड्यो। तो घणो नादार हो-गियो। फेर वाहाँ—ऊँ देस-का एक आसामी गोडे र्‌हैवा लाग्यो। ऊं-नै ऊं-ही आपणा खेतां-में सूर चरावा-वेई मेळ्यो। अर ऊं नै वाहां नालें-सूं पेट भरवो वचार्यो कै जें सूर खावा-करै-छा। अर कोई ऊं-नैं कांईं न्हैं देनो। जद ऊं-नै याद पड़ी तो वचारी कै म्हारा बाप-का केता-क म्हानत्यां है। इतरी रोटी मिलै छैकै वां-कू खावा पछै भी वच रहै-छै। अर मूं भूकां मरूं-छूं। अब म्हारा बाप गोडे-ही जाऊंगो। अर ऊं-सूं कहूंगो कै हे दाजी म-नै परमेसुर-के सनमुख अर आप-कै मूंडा आगे पाप कर्यो-छै। ईं कारण आपको बेटो वागवा जोग न्हैं छूं। परन्तु अब मैं आप-को एक म्हानत्या जूं राख लो। जब ऊं ऊठर आप-का बाप गोडै गियो। अर दूर-ही छो के ऊं-का पिता-नै ऊं-ईं देखर दिया करी अर भागर ऊं-का गळै जा-लाग्यो अर चूमो। लडका-नै ऊं-से कहो कै हे दाजी परमेसुर-के सनमुख अर आप-के मूंडा आगे म-नै घणो पाप कर्यो अर मूं आप-को बेटो वागवा जोग न्हैं छूं। तो फेर पिता-ने आपणा चाकरां-सूं कही कै घणा भारी वडकी पोसाख काडर ऊं-ईं फैरावो अर ऊं का हात-मैं मुंदडी अर पगां-मैं जूत्यां फैरावो। म्हां जीमांगा अर आणंद करांगा। क्यूं-कै यो म्हारो वेटो मर-गियो-छो फेरूं जियो छै। अर गम-गियो छो फेरूं पायो छै। जद वे खुसी करवा लाग्या।

ऊं-को वडो वेटो माल-मैं छो। अर जद ऊं आती वगत जाग गोडे पौच्यो तो वाजो अर नाच सुण्यो। अर ऊं-नै आप-का चाकरां-मैं सूं एक-कू गोडे वुलार पूछ्‌यो कै यो कांईं हो-र्‌ह्यो-छै। ऊं-नै ऊं-सूं कियो कै था-कों भाई आयो-छै जीं-की था-का वाप-नै गोठ करी-छै। क्यूं-कै वा-नै आप-को वेटो जीवतो-जागतो पायो-छे। परन्तु ऊं-नै रोस कर्यो अर मेहलादी नै जावो चायो। जद ऊं-को वाप ऊं-ईं अर मनावा लाग्यो। तो ऊं-नै वाप-सूं कही-कै देखो मूं अतरा वरसां-सूं था-की सेवा कर-र्‌हियो छूं अर था-को क्यियो म-नै कदी नै टाल्यो। फेर भी था-नै म्है ईं एक उरणो भी न्ही दियो कै म्हूं म्हारा भाइलूं-नै गोठ तो देतो। परन्तु यो था-को वेटो जो भगतणां गोडे रहर आप-को सारो धन वगाड-नांल्यो। ऊं-का आता-ही था-नैं रसोई करी। जिन-पे वाप वोल्यो कै अरे वेटा तू-तो म्हारे गोडे सदीव र्‌हियो-छै, अर जो-कुछ म्हारै गोडे छै सो थारो-ई जाण। परन्तु कुसी करवो अर राजी होवो जोग छै कारण यो थारो भाई मर-गियो-छो सो फेरूं जियो-छै अर गम-गियो-छो सो फेरूं पायो-छै ॥

नमूना संख्या ३२ हाड़ौती

एक सहर-में दुरबळ बरामण छो। वो रोजीना कण भिगश्या कर-के आप-का उदर-पुरणा करे-छो। एक गॉंव-मे जावे तो-भी तीन सेर बेकरडी आवे। दो गॉंव जावे जब-भी वो-ही आवे। और ऊँ बरामण-के एक लडकी कुँवारी-छी। जब बरामण-की अस्त्री-ने कही के म्हाराज आपणो भाग-तो ईं मुजब-छै और ईं कन्या-का पेळा हात कॉंई-सूँ करॉंगा। जब बरामण बोल्यो अब मू कॉंईं करूँ। एक गॉंव जाऊँ तो-भी तीन सेर बेकरडी मिळे और दो गॉंव जाऊ तो-भी वो-ही मिळे। म्हारा सारा-की कॉंईं बात छै। बरामण-की अस्त्री बोली म्हाराज यॉं-सूँ कॉंईं भी उद्दम न होवे। और उपाइ करणो चाहिये। म्हनत करो जब सब कुछ हो। रगर म्हनत कुछ न्ही हो। भोत झगड़ो मचो। भोत दगो कर्यो। जब बरामण-के-ताँईं गुस्सो आयो। बरामण घर-सूँ नीकळ-कर परदेस-मे चाल्यो। बीस कोस-पर जार बचारी के कठी चालाँ। पाछे गेळा-मे बग्ड आई। वाहाँ एक सुन्दर बगीचो और बावरी देखी। वाहाँ एक जोगी-राज तपस्या कर रिह्या छा। अर वा-ने समाद चडा-रखी-छी। बरामण-ने बचारी के अब कठी चालाँ। अब तो सत-जन मिळ-गिया। यॉं-की सेवा करॉंगा। भगवान खाबाई भी देगो। जब या बचारी बरामण असतान ब्रुहार-कर सादू-की सेवा-में बेठ-गियो। जब सेवा करता भोत रोज हो-गिया जब सादु-जी-की पळक ऊगड़ी। जब बरामण-सूँ कही के बरामण तू मॉंग। म्हा-की सेवा करता तेइँ घणा दन हो-गिया। जब बरामण-ने कही म्हाराज कॉंइँ मॉंगूँ। म्हारे एक कुँवारी लडकी छै अठारा बीस बरस-की जी-का पेळा हाथ न्ही हुवा। सो म्हारा घरवाळी-के और म्हारे लडाई हो-गई। जब म्हूँ चळ्यो आयो। कूँकी म्हारे पास कॉंईं भी सरतन ने छो। जब संत-जन-ने फरमाई के ये चुंथी कागद-की तू ले-जा और सहर-मे जार बेच-दीजे। जादा लोभ तो कज्जे मती। अर कन्या-का पेळा हो-जा वे उतना-सा रूप्या ले-काडजे। अर ऊँ चुँथी-मे या बात लिखी छी के

होत-की बेण कु होत-को भाई।
पीर बेटी नार पराई॥
जागे सो नर जीवे।
सोवे सो नर मरे।
राम राखे सो आनद करे॥

जब यो चुंथी लेर बरामण सहर में गियो। एक साहुकार-का लड़का-सूँ जार कही के ये चुंथी आप ले-खाड़ो और मेइँ दो सो रूप्या दे-खाडो। सो

साहुकार-का कुँवर-ने ऊँ चुँथी-मे सीख-की बातॉ मँडी देखर दो सो रूप्या तुरत दे-खाड्या । श्रोर चुँथी ले-खाड़ी । श्रोर बरामण रूप्या लेर कन्या-को व्याव वॉ रूप्या-से कर-दीनो ।।

हाड़ौती (सिपाड़ी)

कोटा के पश्चिम भाग मे शाहाबाद का परगना स्थित है जो हाल ही मे झालावाड से कोटा मे मिला दिया गया है। शाहाबाद एव उसके पूर्व स्थित दक्षिण स्थित ग्वालियर के प्रदेश मे भाषा ऐसी मालवी है, जिसमे पडोस की हाड़ौती एव बुन्देली का मिश्रण होया हुश्रा है । शाहाबाद के दक्षिण मे थोडी सी दूर टोक अधिकृत छावडा परगना है जहाँ की भाषा भी उसके पश्चिम मे स्थित कोटा की हाडौती से मिश्रित मालवी ही है । दरअसल ग्वालियर के उपरोक्त भाग श्रौर छावडा के २४००० लोक की भाषा हाडौती ही मानी जानी चाहिये ।

शाहाबाद अधिकाशत: पहाडी प्रदेश है इसलिये वहाँ की मिश्रित मालवी-हाडौती स्थानीय अचलो मे डगियाई या ढडेरी कही जाती है ।

शाहाबाद के उत्तर मे ग्वालियर राज्य का शिवपुरी परगना है । यहाँ की भाषा भी सन्निकटस्थ कोटा की तरह हाडौती ही है परन्तु उसमे पडौस की बुन्देली श्रौर डाँगी का मिश्रण है। ग्वागियर के लोग इस प्रकार की हाडौती को 'श्योपुरी' कहते है; कौर कोटा वाले इसे 'सिपाडी' नाम से पुकारते है । सभवत: यह नामकरण पास के प्रदेश मे बहती चबल की एक शाखा सिप' नदी के कारण हो सकता हे ।

'सिपाडी' या 'श्योपुरी' के नमूने मे ग्वालियर राज्य से प्राप्त एक छोटी सी लोककथा दी गई है । नमूने को दखने से पता चलेगा कि भाषा का कलेवर मुख्यत: हाडौती का है । बुन्देली से लिये हुए रूप भी मिलते है, यथा, हो या छो=था; हूँ या छूँ=मैं हूँ । बच्चन-कूँ'=बच्चो को । का तिर्यक् बहुवचन रूप श्रौर परसर्ग-कूँ दोनो डॉगी से लिये हुए है ।

संख्या ३४

हाड़ौती (सिपाड़ी) ग्वालियर राज्य

एक सुश्राड्यो श्रौर एक सुश्राडी एक ठोर रहबो करै-हा । एक दिन वॉ-कूँ प्यास लागी । जद सुश्राडी-ने सुश्राड्या-सूँ कही पाणी पीबा चालाँ । तू कहाण्याँ भी जाणै-हे । वहाँ एक नाहर-की श्राँदर है। तू कोई कहाणी जाणतो-होवे तो श्रापण पाणी पियाँ । हूँ प्यासी मरूँ-छूँ । या कहर वे पाणी-की ठोर पै गया । वहाँ-जार सुश्राड़ी-ने पूछो तू कोई कहाणी जाणै-है । ज्यूँ-ही वे पास श्राया

नाहर-ने वाँ-कूँ देखि-लिया। जद सुग्राड्या-ने कह्यो हूँ तो सारी वाताँ भूल-गयो। सुग्राड़ी-ने कह्यो ऐ सुग्राळ्या यहाँ ऊभो क्यूँ रह-गियो। पाणी पीर लायक काका कूँ सलाम कर। सुग्राड़्यो झट पाणी पीवा-लाग्यो अर जद पाणी पीर वाय-गियो ऊँ-ने नाहर-कूँ सलाम करी। फेर सुग्राडी-की ग्राड़ी देखर ऊँ-ने ऊँ-सूँ कही कि तूँ कई झाँकै है। तू-भी पाणी पीर आपणा काका-कूँ सलाम कर। जद सुग्राडी पाणी पी-चुकी ऊँ-ने नाहर-सूँ कही के म्हाँ-की जाग-ने चालो। वहाँ म्हारे दो वच्चाँ है। यो सुग्राड़्यो तो कहै-है ये म्हारा-है। अर मै कहूँ-हूँ ये म्हारा है। जी-सूँ थे चाल-कर वाँ-की दो पाँती पाड़-दो। जद नाहर-ने आप-का मन-में वचारी कै हूँ याँ चाराँ-ने खा-जाऊँगो। अव वे वहाँ-सूँ उलटा वावड्या अर घर-ने आया। तो सुग्राडी-ने आप-का सुग्राड़्या सूँ कही कि तू भीतर जार दोतूँ बच्चान-कूँ वारे ले-आ। नाहर पाँती पाड़-देगो। सुग्राड्यो डर-की मारी वारे नही कड्यो। मैं ने-ही रियो। जद सुग्राड़ी वोली मैं वच्चान-कूँ लाऊँ-हूँ। या कहर वा-भी जा-घुसी। वारे अकेलो नाहर ही ऊभो रहवो कर्यो। पाछै सुग्राडी-ने आप-की नाड आँदर-मे सूँ वारे काडर नाहर-सूँ वोली वावा म्हाँ-को राजी-नामो हो-गियो। एक वच्चो तो सुग्राड्या-ने ले-लीनो और एक म-ने। नाहर उलटो डाँग-मैं चळो-गयो। ईं तरह वे वच-गिया। और नाहर-कूँ वाताँ-मे लगार वाँ-ने पाणी पी-लियो॥

मेवाती

मेवाती के दो नमूने काफी हैं। एक तो 'उडाऊ बेटे की कथा' का अनुवाद और दूसरा एक लोककथा का अश। दोनो जयपुर राज्य के कोटकासिम स्थान से लिये हुए हैं और लेखक को श्री० जी० मैकेलिस्टर के सौजन्य से प्राप्त हुए है।

संख्या ३५

मेवाती | पहला नमूना | जयपुर राज्य

कही आदमी-कै दो वेटा हा। उन-मैं-नैं छोटा-नै अपणा वाप-तैं कही वावा धन-मैं-तैं मेरा वट-को आवै सो मूँ-नै वाँट-दे। वैंह-नै अपणा धन उन-नै वाँट-दीयो। घणा दिन जाँह हुया जब छोटो वेटो सव धन ले-कर पर-देस-मैं चळ्यो-गयो। अर उत जा-कर सव धन कुगैलै चळ-कर विगाड-दीयो। जव वैंह-नै सारो धन विगाड-दीयो जव वैंह देस-मैं भौत भार्यो काळ पड्यो अर वो कंगाळ हो-गयो। वो गयो अर वैंह देस-का रहण-वाळा था उन-मैं-तैं एक-कै रह्यो। वो वैंह-नै अपणा खेताँ- मैं सूर चरावण-नै खँदायो। जो वरछा सूर खाय-हा उन-तैं वो अपणँ पेट भरण-नै राजो थो। कोई आदमी वैंह-मैंनै कि वी नाँयँ

देतो। जब वैंह-नै सुरत आई उन कही मेरा बाप-का नौकरां-ने रोटी घणी अर मैं भूको मरूं हूं। मैं उठूंगो अपणा बाप-कै कनै जाऊंगो अर वैंह-नै कहूंगो बाबा मैं ईसुर-को पाप कर्यो अर तेरो पाप कर्यो अर तेरो बेटो कहण लायक नांयँ। तेरा नौकरां-में मूं-नै बी राख-ले। वो उठ्यो अर अपणा बाप कनै आयो। वैंह को बाप वैंह-नै दूर-ही तैं आवतो देख्यो। जब वैंह-नै दया आई। जब दौड़-कर गळै लगायो अर वैंह-नै चूमण चाटण लागयो। बेटै वैंह-नै कही बाबा मैं ईसुर-को पाप कर्यो अर तेरो पाप कर्यो अर तेरो बेटो कहण लायक नांयँ। पर बाप नौकरां-तैं कही आछ्या-तैं आछ्या कपड़ा ल्यावो अर वैंह-नै पहरावो। वैंह-का हातां-मैं गूंठी पहरावो अर पागां-मैं जोड़ो पहरावो। हम खां पीवां अर खुसी करां। क्यूं यो मेरो बेटो मर-गयो थो जो फिर कै जीयायो है। जातो-रह्यो थो सो पा-गयो। अर वै खुसी करण लागया।

वैंह-को बडो बेटो खेत-में हो। वो आयो अर घर-कै नीड़ै आयो जब वो गावणू, बजावणू और नाचणू सुण्यूं। वैंह नौकरां-मैं-तैं एक बुलायो अर वैंह-नै पूछो यो के बात हो-रही है। उन वैंह-तैं कह्यो तेरो भाई आयो है अर तेरै बाप-नै जाफत दई-है क्यूं वो वह-नै राजी खुसी आण मिळ्यो। वोह छोय हो गयो। अर भीतर नांह गयो। जब वैंह को बाप बाहर आयो अर वोह मनायो। उन जुवाब कह-कर अपणा बाप-नै कह्यो देख इतना बरसां-तैं मैं तेरी सेवा करूं-हूं कवै मैं तेरो कहणू नांह मेर्यो। तौ-बी तैं मूं-नै कवै एक बकरी-को बच्चो बी ना दियो अक मैं अपणा सायळां-की साथ खुसी करतो। पर तैं तेरो यो बेटो आवतैं-हीं ज्हैं तेरो धन रंडां-में उडा-दियो वैंह-नै जाफत दई। वोह वैंह-नै कही बेटा तू सदा मेरे साम्है-है। जो किमैं मेरे कनै है सो तेरो-ही है। राजी होणू अर खुसी करणू आछो बात है। क्यूं यो तेरो भाई मर-गयो थो सो फिर-कै जीयायो है। जातो रह्यो थो सो पा-गयो है॥

संख्या ३६

मेवाती | दूसरा नमूना | जयपुर राज्य

एक हीर हो अर एक कागळो अर एक नाहर अर एक चौपो ये च्यारूं अब कूवा-में पड्या था। एक राजा सिकार खेलतो डोलै-थो। वैंह-नै लागयाई पिस। वैंही कूवा-पर आयो। कूवा-में देख्यो तो च्यार जानवर पड्या-हैं। फेर कागळो बोल्यो कै तू मूं-नै काढ-ले तो तेरे मांय भीड पडैगी जब मैं तेरै काम आऊंगो। जब राजा-नै वो काढ-लीयो। जब कागळो बोल्यो अक सब नै काढीयो। हीर-नै मत काढीयो। कागळा-नै काढ-लीयो जब-चौपो बोल्यो कै मूं-नै बी काढ-ले। मैं तेरै भीड पड्यां-मैं काम आऊंगो। वैंह नै बी काढ-लीयो। वो बोल्यो हीर-नै

मत काढीयो । नाहार-नै काढ-ले । जब वो बी काढ-लीयो । चौपो वी काढ-लीयो । फेर नाहार बोल्यो मैं-नै बी काढ-ले । कै मैं तो तू-नै ना काढूं । तू तो मूं-नै खा-जा । फेर बोल्यो नाहार अक मैं तू-नै ना खाऊँ । तू मूं-नै काढ-ले । तू-मैं भीड़ पड़ैगी जब मैं तेरै काम आऊँगो । जब तेरै मांयँ भीड पड़ै जब तू मेरै कनै आ जैयो । जब राजा-नै वो काढ-लीयो । जब नाहार बोल्यो अक हीर-नै मत काढीयो । जब हीर बी बोल्यो कै मूं-नै बी काढ-ले । जब राजा-नै दया आ-गई । वो बी काढ-लीयो । हीर बोल्यो अक भीड पड़ै जब मेरै कनै आ-जैयो तू । च्यारूं अपरणा अपरणा घर-नै चळ्या-गया । राजा सिकार खेलर अपरणै घर आयो ।

कोईक दिन राजा-नै हो-गया । जब राजा-मैं भीड़ पड़ी । तो राजा नाहार कनै गयो । नाहार पा-गयो वैंह-नै । जब वैंह-नै कडूला तागडी चाँदी का डोरा सोना-का मुरकी सोना-की दई । माल भौत-सो दियो । जब वैंह-नै पोट बाँध दई नाहार-नै । फेर राजा बोल्यो मुज-सैं तो यो बोझ नाँह चळै । नाहार बोल्यो मेरै ऊपर पोट धर-ले । तू बी चढ-ले । थारै गाँव पौंहचा-द्यूंगो । फेर पोट बी धर-लई नाहार ऊपर । अर राजा बी चढ-लीयो । फेर उन-का गाँव-मैं ल्या उतार्यो । जब राजा पोट अपरणा घर-नै लीयायो अर नाहार जगळ-मैं गयो ।

फेर दूसरै दिन राजा कागळा कनै गयो । जब कागळो बोल्यो बैठ-जा । मैं तेरै आटै किमैं ल्याऊँ-हूँ । राजा बैठ-गयो । कागळो गाँव-मैं उड-गयो । एक बैरबानी-नै नथ काढ-कर अर बोरळो सोना-को धर राख्या-था । वो उन-नै ले-कर उडियायो । फेर राजा-नै दे-दई । राजा घर लीयायो ।

दूसरै दिन राजा हीर-कै गयो । हीर-नै बैठा-लीयो । वैंह गाँव मैं रोजीना आदमी-की बळ लीयो-करतो भैयों घर गैल । जैंह दिन वैंह-हीं-को ओसरो थो हीर-को बळ-को । राजा-नैं रसोई जिमाई अर किंवाडाँ भीतर कोठा-मैं मूंद-दीयो अर साँकळ लगा-दई । फेर हीर गाँव-मैं गयो कै जलदी चालो म्हारै एक आदमी आ-गयो है बळ मैं द्यांगा । जब सब आ-गया । भैयाँ-पर जोत कर दई । कळाँयँ लीयाया अर वैंह राजा-नैं वी पकड ल्याया । हात-पाँव बाँध-कर पटक-दीयो अर भाटा-कै छुरी पैनाँवरण लाग-गया ।

जो वो कागळो वैंह-को भायळो थो वो उड-रह्यो थो । वैंह-नै देख्यो तो उड-कर नाहार कनै गयो । नाहार-नै बोल्यो कै राजा तो हीर कनै चळ्यो-गयो । वैंह-नै तो भैंया-की बळ-मैं देंगा । त्यारी हो-रई है । जलदी चाल अर चौपा-नै बी ले-चाल । फेर चळ-दीया अर चौपा-नै साथ ले-लीयो । तो तीनूं मनसूबो करण लाग्या कै कागळा तू के करागो । कै मैं भैयाँ-की जोत-का-माँयँ-तैं वाती ले-कर गाँव-मे पूर द्यूंगो । सगळा आदमी गाँव-में भाग-जाँयँगा । कोई पान च्यार

डटैंगा। कागळो नाहार-नै बोल्यो तू के करागो। कै पान च्यार रहैंगा उन-नै मैं खा-ल्यूंगो। मैं बी भूको मरूं हूं। फेर नाहार-चौपा-नै बोल्यो तू के करागो। कै मेरे ऊपर तम चढा-दीयो। मैं ले-कर भाग-जाऊंगो। कनै-ही जा पौंहच्या। जब राजा-की नाड-पर छुरी धरी अर कागळो बाती ले-कर गाँव-मैं पूर दई। जब गाँव-मैं आदमी भाज-गा आग-नै देख-कर। तीन आदमी रह्या। जिन-नै नाहार खा-गयो। चौपा-पर चढा-दीयो। चौपो ले-कर भाग्यायो। फेर नाहार अर कागळो बी भाग्याया। राजा-नै राजा-कै घर घाल्यो। वै अपणे घर गया।

अहीरवाटी

अहीरवाटी के दो नमूने दिये गये है। एक देवनागरी लिपि मे है जो उडाऊ बेटे की कथा का अनुवाद है और गुडगाँव से मिला है। दूसरा फारसी अक्षरो मे लिखा है (फारसी का हिन्दी रूपातर ही दिया है); वह रोहतक की भज्जर तहसील की मिश्रित बोली का उदाहरण है।

संख्या ३७

अहीरवाटी — पहला नमूना — जिला गुड़गांव

एक सकस-के दो बेटा था। उन-माँह तै छोटनो बाप-तैं बोल्यो अक बाबा-जी माल-को बट जो मूं-नैं दीणू होय सो दे-दो। जब ऊ-नें वो माल-को बट जिस तरह कह्यो थो उसी तरह बाँट-दियो। थोडा दिन पीछे छोटो बेटो मगळो माल जमा कर-के पर-देसाँ-नें चळो-गयो अर उठै अपणू धन बद-चळनी-में खो-दियो। जब सब खरच कर-चुक्यो और वँह देस-में बडो काळ पड-गयो अर वोह कगाल हो-गयो तो वठै-ही वँहीं देस-का भागवान जिमीदार-के जा लग्यो। उन वोह अपणा खेत-में सूर चरावण-नें भेजो। अर उन चाही के उन छोळकाँ-तैं जो सूर खाय-था उन-तैं अपणो पेट भरै। क्यूंके वँह-नें कोई किमैं नाह दे-थो। जब सुरत सभार-के कही अक म्हारे घरी कितनाँ-ही मिहिनतियाँ-नें रोटी सै अर मैं भूखो मरता डोळूं सूं। मैं उठ-के अपणा बाबा-जी कनै जाऊंगो अर उन-तैं कहूंगो कि म-नें धणी-को और तुम्हारो अलबत खोट कर्यो सै अर इब मैं इसो ना रह्यो कि फिर तेरो बेटो कहाऊं। अर इब तू मूं-नें अपणा मिहिनतियाँ-की तरह-ही राख-ले। जब उठ्या-तैं अपणा बाप पाहने चळ दियो। और वो अभी दूर थो अक देखताँ-ही वँह-का बाप-नें महर आ-गई। और भाज-के अपणे गले लगा-लियो और बोहत प्यार कियो। बेटा-नें कही अक बाबा-जी हमीं धणी-को और तेरो अलबत खोट कर्यो-सै। इब मैं तेरो बेटो कहावण लायक ना रह्यो। वँह-को बाप अपणा मिहिनतियाँ नें बोल्यो अक अच्छा-तैं अच्छा कपडा अँह-नें पहराय-दो। अर अँह-का हाथ-में गूंठी और पावाँ-में जोडी

पहराय-दो। अर हम खाँह अर खुमी करांगा। क्यूँके मेरे लेखे मेरे बेटा-नें फिर-के जन्म लियो-सैं। खूयो पायो-सैं। जब वो चाव-चोचळा करण लग्यो।

वँह को वडो बेटो खेत-में थो। जब घर-के बीडे आयो गाजा वाजा नें सुण-के अपणा एक मिहिनती-नें बोल्यो कि, यो के सैं। उन कही के तेरो भाई आयो-सैं और तेरा बाबाजी-नें बडी खातर-दारी करी-सैं क्यूँ-अक वँह-तैं राजी-खुसी आ मिळ्यो। वोह छोह हो-कर भीतर नाह गयो। वँह-का बाप-नें वां बाहर आ-कर-के मनायो। उन अपणा बाप-तैं कही अक देख मैं इतना बरस-तैं तेरी टहल करूँ-सूँ अर कदी तेरो कह्यो ना गेर्यो-सैं मल तैं कदी मूँ नें एक बकरी को बच्चो ना दियो जँह तैं मैं भी अपणा पिआरा ढब्बियाँ की खातर करतो। इब जब-तैं तेरो यो बेटो आयो अर इन तेरो सगळो धन किसबणाँ ने खुवा-लुटा दियो तम्हीं-नें वँह-की बोहत खातर करी। उन वँह-नें कही बेटा तू सदा-तैं मेरे धोरे सा। किमैं मेरो तेरो दो नाही सैं। तू-नें बी चाव करणो थो अक तेरा इन भाई-नें फिर-के जन्म लियो-सैं। अक खूयो और फिर मिळ्यो सै-गो।

आगे दिया हुआ नमूना रोहतक के दक्षिण स्थित झज्जर तहसील से लिया हुआ है। यह एक लोककथा है जिसमे अहीर (प्राय: 'हीर' कहे जाते) लोगो के प्रसिद्ध लालची एव स्वार्थी स्वभाव का दिग्दर्शन कराया गया है। एक अहीर अपने दामाद को मुँहमाँगी वस्तु देने का वचन देता है पर जब दामाद एक बहुत क्षुद्र सी वस्तु माँगता है तब अहीर दुनिया भर के मिस निकाल कर टालमटोल कर जाता है।

रोहतक वाला नमूना फारसी लिपि मे लिखा हुआ है।[1] नमूने से रोहतक जिले मे प्रचलित अहीरवाटी बोली के मिश्रित रूप का आभास मिलता है। पहला वाक्य 'एक अहीर दूरवाळो पडो थो', शुद्ध अहीरवाटी मे है परन्तु दूसरा ही वाक्य 'उस-का जमाई वेरे-नै आया' उतनो ही शुद्ध बाँगरू मे है। इसी प्रकार सारे नमूने मे बाँगरू और अहीरवाटी के रूप अगल-बगल मे, प्राय: एक ही वाक्य मे मिलते हैं। कही-कही अहीरवाटी रूप 'बोल्यो' की जगह 'बोलो' मिलता है तो कभी-कभी 'बोला' की तरह के बाँगरू रूप मिल जाते हैं। स्थानीय विशिष्टताओ मे केवल भूत-कृदन्त रूप मे से य-कार का लोप (उदा० 'बोल्यो' के बदले 'बोलो') देखने मे आता है। यह विशिष्टता पूरे रोहतक जिले मे मिलती है। एक जगह प्रथमारूप 'यो'=यह की जगह तिर्यक् 'ऐह' का प्रयोग मिलता है।

---

१. मूल फारसी मे लिखे हुए नमूने का देवनागरी रूप यहाँ दिया गया है।

—सपादक

एक अहीर दुरवाळो पड़ो थो। उस-का जमाई बेरे-नै आया। जिस दिन वोह आया अहीर-कै माडी-माडी ओत हो-रही-थी। हीर अपने भाई-से बोलो कि ऐँह लाल-पगडी वाळो कौसा बैठो सै। वोह बोलो तेरो मेहमान सै। कि कौण-सो सै। यो सै जे-काळी-कै घर-वाळो। वोह हीर बोला कि तू जे-काळी-कै घर-वाळो सै। कि हाँजी। तो बीरा मेरै आज ओत हुई-मै। त कुछ माँग। हीर-का जमाई बोलो कि बीरा तू जी-को कड्डो सै। मैँ माँगूँगा सो ना देगो। वोह बोला कि नाह कै-तराह दूँगो। मेरे मरते-के मुँह-तई निकळ-गई। हीर-के जमाई-नै कहा कि जी तम दो तो मैँ-ने वोह चौसँग जेळी लटक-रही वोह दे-दो। हीर बोला कि तू बडो सोहन्नो कि या जेळी तीन तीन चन्द-कै पोरी गैल जैँह-ने इकीस बरस घरे-घरे हो-गयो मेरे काका हुकमला-के हाथ-की मेरे कालजे-की कोर जैँह-पर तीन तीन बियाँह बिगडाँ-सै। तैँ-नै कै-तरह दे-दूँ।

मालवी

हमने दो नमूने स्टैण्डर्ड मालवी के और दो रॉंगडी के उद्धृत किये है। ये मध्यभारत के इन्दौर राज्यान्तर्गत देवास रियासत मे मिले हुए है। इनमे से दो 'उडाऊ बेटे की कथा' के अनुवाद है। रॉंगडी का दूसरा नमूना राजपूत वीरता की परिचायक एक वार्त्ता है और मालवी वाला दूसरा नमूना विवाह के अवसर पर गाया जाता लोकगीत है।

संख्या ३६

मालवी | पहला नमूना | देवास राज्य छोटी पांती

कोई आदमी-के दो छोरा था। उन-मे-से छोटा छोरा-ने ओ-का बाप-से कियो के दाय जी म्ह-के म्हारो धन-को हिस्सो दे-लाख। और ओ-ने उन-मे अपना माल-ताल को बॉंटो कर-दियो। फिर थोडा-ई दिन में ऊ छोटो छोरो सब अपनी माल-मत्ता एकट्ठी करी-ने कोई एक दूर देस-में चळ्यो-गयो। और वॉं चेन-में रै-ने ओ-ने सब अपनो धन उडै-दियो। सब खरच हुआ-पर उना देस-में भोत बडो काळ पड्यो। और ओ-के खावा पीवा-की भोत अडचन पडवा लागी। जदे उना देस-में कोई-एक आदमी-के पास जै-ने रियो। ऊ आदमी ओ-के सूडला चरावा-के अपना खेत-में भेज्या करे। और सूडला जो काई फोतरा खाता-था ओ-के उपर-ज ऊ खूसी-से रेतो। पन ऊ-बी ओ-के कोई-ने दियो-नी। जदे ऊ सूद-में आयो तो केन लग्यो म्हारा बाप-के घरे तो मुकता-ज मेनत मजूरी करवा-वाळा-के बी पेट भरी-ने बचे इतरो खावा-के मिळे। और हूँ यॉं भूक-से मरूँ। अब यॉं-से हु उठी-ने बाप-के वॉं जै-ने कूँगा के दाय-जी हूँ तमारो और भगवान-को गुनागार हूँ और ए-के उपरॉंत हूँ थारो छोरो केवावा-के लायक नी रियो। म्हारी गिनती तू अपनो नोकर-में कर। फिर ऊ वॉं-से उठी-ने अपना बाप-के पास आयो। ओ-का बाप-ने ऊ दूर छेटीये होते-ज ओ-के देख्यो और ओ-के दया आई और भाग्यो और ओ-के गळा-से चोटाई-लियो और ओ-के मट्टी दी। फिर उवा छोरा-ने ओ-का बाप-से कियो के दाय-जी हूँ भगवान-को और तमारो गुनागार हूँ और हूँ तमारो छोरो केवावा-के लायक नी हूँ। पन बाप-ने ओ-का नोकर-होन-मे कियो के एक भोत अच्छो अगो लाव और ए-के पेराव और ए-का हाथ-में अँगूठी पेराव और पग-में जूतो पेराव। और आज जीमी-चूठी-ने बडो हरक अपन मनावागा।

वोयके म्हारो यो मर्यो हुग्रो छोरो ग्राज जीवतो हुग्रो। यो खोवई गयो-थो पन फिर मिळ्यो। जदे वी वडो हरक मनावा लाग्या।

ग्रब ग्रो-को वडो छोरो खेत-में थो। ग्रोर जदे ऊ चळयो ग्रोर घर के पास ग्रायो ग्रो-के नाचवा-को ग्रोर गावा-को ग्रावाज सुनानो। फिर ग्रो-ने नोकर-होन-मे-से एक-के बुलै-ने पूछ्यो इन बात-को ग्ररथ कैं है। फिर ग्रो-ने कियो-के थारो भाई ग्रायो-हे ग्रोर थारा बाप-से ऊ खुसी-मजा-में मिळ्यो जे-से ग्रो-ने मेल दीवी-है। फिर ग्रो-के घुस्सो ग्रायो। ग्रोर घर-में जावे-नी। जे-ते ग्रो-को बाप बाहेर ऐ-ने ग्रो-के समजावा लाग्यो। पन ग्रो-ने ग्रौ-का बाप-से कियो के देख हूँ थारी इतरा वरस-से सेवा करूँ हूँ ग्रोर थारो म-ने कोनो कदी बी उलॉग्यो-नी। ऐसो होते बी थ-ने म्ह-के म्हारा मितर बरावेर चेन करवा-के वास्ते कदी बी बकरी-को बच्चो दियो नी। ग्रोर जे-ने थारो माल रामजनी-के साथ उडा-दियो उवा छोरा-के वास्ते सेल दीवी। फिर ग्रो-ने ग्रो-से कियो के बेटा तू हमेशा म्हारे-ज पासे रे-हे। ग्रोर जो कई म्हारे पास हे ऊ सव थारो-ज है। यो थारो भाई मर्यो थो ग्रोर पाछो जीवतो हुग्रो। खोवाई-गयो-थो ग्रोर पीछो पायो। ए-के वास्ते ग्रपन-ने हरक वतानो यो जोग है।

संख्या ४०

मालवी दूसरा नमूना देवास राज्य, छोटीपाती

पेलो पेर मन्ने न्हावत धोवत लाग्यो वो मारू-जी।
कैं दुसरो कैं दुसरो सीस गुथॉवतॉ मारू-जी।
कैं तीसरो कैं तीसरो वालू-डा समजावतॉ मारू-जी।
चोथो पेर रसोइ निपातॉ लाग्यो वो मारू-जी।
पॉंचमो पेर नाय जिमावतॉ लाग्यो वो मारू-जी।
छट्टो पेर मन्ने सेज विछातॉ लाग्यो वो मारू-जी।
सातमो पेर मन्ने सार खेलतॉ लाग्यो वो मारू-जी।
कैं ग्राठमे के ग्राठमे बोल्यो वेरी कूँकडो मारू-जी।
कैं तो-ने सोक सताप्यो रे कूँकड-ला।
कैं म्हारी कैं म्हारी रत मे बोल्यो रे कूँकड-ला।
डाल डाल मिनकी फिरे मारू-जी
कैं पत्ते कैं पत्ते वेरी कूकडो मारू-जी
कच्चो दूद पिलाऊँ वो मिनक-डो
कैं कूँकड कैं कूँकड मार भगाव वो मिनक-डी।
ग्रॉंगन ढोल वजाव वो मारू-जी
ग्रॉंगन गोद गवाव वो मारूजी
कैं कूँकड कैं कूँकड मार हुवा वदावना मारू-जी।

मालवी (राँगड़ी) पहला नमूना देवास राज्य, छोटी पाँती

कोई एक आदमी-के दो कवर था। वरणा-मे-सूँ छोटा लडकाए वरणी-का पिता-ने कयो के भाभा-जी म्ह-ने म्हारा धन-को बाँटो दे-काडो। फेर वरणीएँ वरणाँ-का धन-को बाँटो वरणाँ-मे कर दियो। फेर थोडा-ज दना-मे वरणी छोटा लडकाएँ सब आपरणो धन एकट्ठो कर-ने कठेक दूर देस-मे चळ्यो गयो और वठे चेन-सेँ रे-ने वरणीएँ सब आपरणो धन उडाय दियो। फेर जो ई-के पास थो ऊ सब खरच कर-दियो फेर वरणी देस-मे एक बडो भारी काळ पड्यो और वरणी-के खावा-पीवा की बडी अडचन पडवा लागी। जद ऊ वरणी देस-मेँ कोई एक आदमी के पास जाय-ने रह्यो। वरणी आदमीएँ वी-ने सूर चरावा-के वास्ते आपरणा खेत पर भेज्यो। और सूर जो कोई छोतरा खाता-था वरणी-रे ऊपर-ज ऊ खुसी-सूँ रेतो। परण वी-भी वी-ने करणीएँ नही दिया। जद वी-ने सुद्ध आवी वरणीएँ कयो के म्हारा पिता-रे घरे तो म्हेनत मजूरी करवा-वाला-के-ई पेट भरी-ने बचे इतरो खावा-ने मिळे-है। और हूँ भूखा मरूँ हूँ। अबे अठा-सूँ उठी-ने हूँ पिता-के वठे जाऊँ ने कहूँगा के भाभा-सा हूँ आप-को ने भगवान-को अपराधी हूँ और आप को लडको बाजवा-के लायक नी रह्यो। म्हारी गिरणती आप आप-रा नोकराँ-मे करो। और ऊ वठा-से उठी-ने आपरणे पिता-के पास आयो। परण वी-का बापेँ वी-न दूर-से आवतो दीख-ने वी-ने वरणी-की दया आयी और दोडतो हुओ जाय-ने ऊ वरणी-क गळा लाग्यो। और वरणी रो मूँह चूम्यो। और वरणी लडकाएँ आपरणा पिता-ने कही के भाभा-सा हूँ भगवान-को ने आप-को अपराधी हूँ और हूँ आप-को लडको केवावा-के लायक नी हूँ। तो-भी वरण-का पिताएँ आपरणा नोकराँ-ने कह्यो के आछी अ गरखी लाव और ई-ने पहेराव। ई-का हात-मेँ बींठी पहेराव और ई-का पग-मेँ पगरखी पहेराव। आज जीमी चुठी-ने आछो हरख खुसी कराँगा। कारण के म्हारो यो मर्यो-थको लडको जीवतो व्हयो। खोवाई-गयो थो परण पाछो मळ्यो। जदी वी बडो हरख मनावा लागा।

अब वरणी-को बडो लडको खेत-पर थो। चळता-चळता ऊ घर-के नजीक आयो तो बीने वठे नाचवा गावा-को अवाज सुरणारणो। और वरणीएँ एक नोकर ने बुलाय-ने पूछ्यो के आज यो काँईँ है। जद वरणीएँ वरण-के कयो के थारो भाई आयो-है। और थारा बाप-ने ऊ खुसी-मजा सूँ मळ्यो अरणी-के वास्ते या मिजमानी दिवी-है। जद वी-ने रीस आवी और घर-मेँ जावे नही। ऊ-सूँ वरणी-को बाप बाहर आवी-ने वी ने समजावा लाग्यो। परण वरणीएँ वी-का बाप-ने कियो के देखो हूँ थाँ-की इतरा बरस-सूँ सेवा करूँ-हूँ। और थाँ-को केरणो म्हेँ कदी भी लोप्यो नहीँ। असी व्हेता भी थाँएँ म्ह-ने म्हारा हेतू-सोवत्या-के बरोबर

आराम-चेन करवा-के वास्ते कदी बकरी-को बच्चो भी दीधो नहीं। पण जणीए थाँ-को वन रामजण्याँ-की गेल-मे रै-ने उडाय दिया वणी लडका-के वास्ते लोकाँ-ने जीमाडो-हो। जद वणीए वणी-ने कयो के बेटा तूँ सदा म्हारे पास रेवे-है। ओर जो काँई म्हारे पास हे ऊ सब थारो हे। यो थारो मर्यो-थको भाई आज तने जीवतो मळ्यो। ओर गम गयो-थो ऊ पीछो पायो। अणी-के वास्ते आपा-ने हरख खुसी करणो जोग्य है।

सख्या ४२

मालती (राँगडी) दूसरा नमूना देवास राज्य, छोटी पाँती

आडावल-का पहाड-में श्री दरबार-के इलाके जूडामेरपुर नामक-ने हजार २०/२५-की पेदाम-को ठकाणो है। जठे एक चारण आय-ने हजार दो अडाई-की दातारी पाय-ने पाछो जावा लागो। जद गेला-मे गिरासियाँ मेर मीणा ओर भीलाँ-का डर-सूँ ठाकर-ने अरज करवा-सूँ एक पडियार सरदार-ने ठाकर ई-की लार दीनो। आगे गिरासाये या-ने लूटवा-के वास्ते घेर्या।

चारण राव साधू आम्हण लुगाई ओर एकला दोकला दिवाली-बन्द-ने राजपूत गिरासियो लूटे नहीं। परत गिरासिया भील मीणा था। ये-भी चारण राव-ने लूटवा-को विचार राखे-हे। परत आप खास राजपूत व्हे-ने दुसमना-के आगे डर-ने आपणी जात चारण बताय-ने लडाई-सूँ बच-ने जीवा-को लोभ करणो या बात निंदित समज-ने जो जाप्ता-के वास्ते आयो-थो वो सरदार भी या बात आरी करी नही। आखर झगडो हुओ। पडियार सरदार-का हात-सूँ बारा आदमी खेत पड्या। एक-रा हात-री तरवार-वार लागवा-सूँ पडियार-रो माथो भी घड-सूँ अलग हुओ। पर कवच रण-में रूप-रयो। ओर सत्रू पर प्रहार करवा-सूँ अबकी वार तरवार भी टूट पडी। तो कटार खेच-ने कवधए दोड-ने कुछ दूर जाय आपणा दुसमना-ने मार नाख्यो। ओर फेर उठा-सूँ पलट-ने जठे आप-को माथो कट पड्यो थो वटे आय-ने गोडी गाल-ने बेठ गयो। कटारी-ने अ गरखी-की चालके पल्ले बाहरी बगले पूँछ-ने म्यान-मे कीवी। ओर फेर आप-रा तुरत-रा निकल्या हुआ रक्त प्रवाह-सूँ मृत्तिका-रा पिंड कर-ने आप भी माथा रे पास सरीर छोड्यो। या सब बात ऊ चारण अलग ऊभो ऊभो देख-रह्यो-यो। राजपूत मार्यो गयो परत चारण-रो माल बच-गयो।

यो अठा-सूँ चाल-ने आगे सिरोही इलाके खीँवज नामक देवडा चाहुवाण सरदार-के ठकाणे जाय-ने जो हुई थी सो सारी वात कही। तो ठाकर हर-बम-जीए या बात सुण-ने उण सरदार-का घणा वाखाण कीधा।

या वात कवर नरपाल-देव-जी सुण-ने आप ऊँ-ज वखत पिना-की कचेरी-में आया ओर पूछी। तो चारण फेर सब वात कही। सो सुण-ने कवर-जीए

कही के माथो कट्या केडे कवंध सत्रू-ने मार-ने पाछे माथा नखे आय-ने अजाबी-की चाल-सूँ कटारी मॉज-ने म्यान-मे कीधी सो तो ठीक । परतु कटार अंगरखी की चाल-के भीतर-के पल्ले माँजी के बाहर-के पल्ले । जो बाहर-के पल्ले पूँछी तो फेर ऊँ-मे कॉई है । या बात कवर-जी-की सुण-ने नादानी जाण-ने सब हसवा लाग्या । एक सूर बीर सरदार-की बहादुरी-में कोई तरे-सूँ आप पंडे बीरताई-को घमंड राख-ने कुटिलता-सूँ न्यूनता बतावणी या वात ठाकर-साब-ने भी आछी नी लागी । आप कह्यो की सुणो-जी कवर-जी बाहर भीतर-को पल्लो कॉई करे । ऊँ राजपूत तो जो करी सो घणी-ज आछी करी । ओर मायले पल्ले कटारी माँजवा-की या बताई तो अब थाँ कोई रजपूती करो । जद करजो जद जाणाँगा की ठीक है । ऊँ-सूँ तो जो वणी सो कर दिखाई । कवरजीए पिता-का मूँडा-सूँ असा करडा वचन सुण-ने बणी-ज वखत पिता-के रूबरू इसो पण कर्यो की तीस बरस-की उमर हुआ केडे एक महीनो भी आगे नही जीवणो । ओर उण पडियार सरदार-की तरह-सूँ झगडो कर-ने माथो कट्या पाछे तरवार चलाय-ने माथा-रे पास आय-कर मायेला पल्ला-सूँ कटार म्यान-में कर-ने पाछे खेत पडणो ।

कोटा एवं ग्वालियर की मालवी

मालवी इन स्थानो मे बोली जाती है : कोटा राज्य के दक्षिण-पूर्व एवं पूर्व मे (शाहाबाद परगना मे); टोंक अधिकृत कोटा के पड़ौस के छाबडा परगना में, कोटा की पूर्वी सीमा पर भोपाल राज्य के उत्तरस्थित ग्वालियर के प्रदेश में ।

झालावाड के उस हिस्से को छोडकर जो हाल ही मे कोटा में मिला दिया गया है, मालवी बोलने वालों के अनुमित आँकडे इस प्रकार हैं—

कोटा—	८०,९७८
टोक (छाबडा)	२०,०००

(यह एक बहुत ही धुंधला सा अन्दाज है । छाबड़ा से मालवी के बोलने वालो की सख्या अलग से प्राप्त नही हुई ।)

ग्वालियर—	३,९५,०००
कुल	४,९५,९७८

विभिन्न प्रदेशो मे इसके अलग-अलग नाम मिलते है । ग्वालियर के दक्षिण-पश्चिमी वन प्रदेश मे तथा उसके पडौस के कोटा अधिकृत शाहाबाद परगने के अचल मे जिसे डाँग कहते है, भाषा डगिहाई, डगेसरा या ढंडेरी के नाम से पुकारी जाती है । इसके बोलने वालो का अनुमान इस प्रकार है:—

ग्वालियर में	९५,०००
कोटा (शाहाबाद) मे	६,०००
कुल	१,०१,००००

अधिक छानबीन करने पर पता चलता है कि यह बोली पडौस के प्रदेश मे बोली जाती साधारण मालवी से भिन्न नही है, इसलिये हमने ऊपर के आँकड़ो मे कोटा एवं ग्वालियर की मालवी की सख्याओ को भी शामिल कर लिया है। कोटा के स्थानीय अचल मे मालवी कुंडली के नाम से प्रचलित है।

इस प्रदेश की मालवी के ठीक उत्तर-पूर्व एवं पूर्व मे बुन्देली का क्षेत्र, तथा उत्तर-पश्चिम व पश्चिम मे जयपुरी की उपभाषा हाडौती का क्षेत्र स्थित है। अतएव यहाँ की मालवी पर इन दोनो उपभाषाओ का प्रभाव पाया जाना स्वाभाविक है। इस भाषा के नमूने के रूप में कोटा राज्य से मिली हुई एक लोक-कथा दी गई है (आलिफ-लैला हजार दास्तान के पाठक इससे सुपरिचित होगे)। ग्वालियर राज्य मे भी बोली एतादृश ही मिलती है, केवल बुन्देली का प्रभाव अधिक दीखता है। इसका नमूना देना अनावश्यक है।

नमूने मे उपलब्ध स्टैण्डर्ड मालवी से पाई जाती विभिन्नताएँ ये है: इनमे विवेचित बोली की कुछ खास विशिष्टताएँ भी दी गई है।

हकार या महाप्राणत्व के लोप की ओर साधारणतया झुकाव परिलक्षित होता है। स्वर के व्यवहार (Vowel scale) के विषय मे भी ढिलाई या अनियमितता मिलती है। उदा० बूझी=पूछा की जगह 'बूजो'; साथी के अर्थ मे 'साथ' की जगह 'सात'; रियो=रहा। 'कहकर' के अर्थ मे 'कह'र' की जगह 'खेर' द्रष्टव्य है। स्वरो के उदाहरण· 'गिरना' के अर्थ मे 'गिरणो' की जगह 'गरणो'; 'दिन'=दिन की जगह 'दन'; 'गयो'=गया की जगह 'गियो'; 'रहो-हो'=तुम रहो की जनह 'रोहो-हो'।

स्टैण्डर्ड मालवी की अपेक्षा यहाँ 'ण' ध्वनि विशेष प्रचलित है। उदा० 'मारनो'=मारना की जगह 'मारणो' मिलता है।

नामरूप—हैं लगा कर बनाया हुआ एक सप्त० रूप मिलता है; उदा० छोरी-हैं=लड़की मे। यह रूप पडोस की हाडौती एव भोपाल की मालवी मे भी मिलता है। (दे० "हाडौती" एव "भोपाल की मालवी" शीर्षक विवेचन।)

सर्वनाम-म्हैं=मुझको, म्हाँ=हम-यह बहुवचन रूप नियमित रूप से एक वचन की जगह ('मैं' के अर्थ मे) व्यवहृत पाया जाता है।

क्रियारूप—सहायक क्रिया का भूतरूप हो (हा, ही) है न कि 'थो'। यह बुन्देली का असर है। मुख्य क्रिया (Finite Verb) की अनद्यतन भूत (Imperfect) रूपावली मध्य राजस्थानी (Central Rajasthani) के ढाँचे पर मिलती है। यह-एकारान्त क्रियासाधित सज्ञा शब्द (Vrebal noun in–e) के सहारे चलती है न कि स्टैण्डर्ड मालवी की तरह वर्तमान कृदन्त के सहारे। उदा० 'रहे हो' न कि

रहतो-हो=रहता था। 'आवणो'=आना जोड़ कर बनी हुई जयपुरी की संयोजित क्रिया, जिसको संयुक्त करने के पहले 'य' लगाया जाता है, यहाँ बराबर व्यवहृत देखी जाती है। उदा० लग+य+आई=लाग्याई=लग आई।

संख्या ४३

मालवा

कोटा राज्य

एक भळो मानस गाँव-नें जावे-हो। मारग-में ऊ-के-ताँई एक दुसरो आदमी मिळ्यो। ऊँ-ने ऊँ-से की के थारो काँई नाँव है। तो ऊँ-ने नेक नाँव बतायो। अर ऊँ-ने दूजी-कै थारो काँई नाँव हे। ऊँ-ने ऊँ-को बद नाँव बतायो। अर की कै चाल म्हारे सात-ही होयो। थोड़ा साक गिया अर ऊँ बद-ने की कै मैं तस लाग्याई। कूडा-पर पानी पीवा चालाँ। तो कूड़ा पर जार ऊँ नैक-ने लोटो कूड़ा-मे पानी भरवा-सारु पटक्यो। पछाड़ी-सूँ ऊँ बद-ने ऊँ-के धक्को दे-खाड्यो। ऊ कूडा-मे गर पड़्यो।

कूडा-के बीचे एक रूँख पीपली-को हो। सो ऊँ पीपली-मे उलज-गियो। ओर रात-भर ऊ कूडा-मे रियो। ऊ कूडा-मे दो जंद रहे-हा। रात-मे वे दोनू बतलाया। एक-ने की कै को भाई-साब थाँ आज-कल काहा रोहो-हो। तो ऊँ-ने की कै मूँ बादस्या-की छोरी-का डील-में हूँ। दूसरा-ने की कै मूँ ईं कूडा का डाग्णा-के नीचे घन भेत-सोक है। ईं-की रुखाळी करूँ-हूँ। या खेर पहला-से पूछी कै थाँ-ने कोई ऊँ छोरी-का डील-में-सूँ छुडावे तो छूटो कै न्हीं। जबाब दियो-कै यूँ-तो कदी-बी न छूटाँ परंत कोई ईं कूडा को जल ले-जार ऊँ-के छाँटा दे-खाड तो छूट-जावाँ। दुसरा-ने की कै म्हाँ-को घन बी म्हाँ कोई-ने ने ले-जावा दाँ। परंत कोई ईं कूडा-को जल लाड़र ऊँ ठाम-पर छड़के तो म्हाँ ऊँ-सूँ काँई-बी खेँचल न्हे कराँ। धन ऊ-ई ले-जावे। या बात ऊँ नेक-ने सुण-लीनो।

दूजे दन बणजारा कूड़ा-पर पाणी भरवा आया। ओर ऊँ नेक-ने कूडा-में-सूँ बारे खाड्यो। दो च्यार घड़ी-मे साँस लेर ऊँ-ने पहली एक लोटो जल-को भरर बाईं गियो कै जाहाँ ऊ जंद बादस्या-के छोरी-हैं लाग-रिया-हो। बादस्या-के यो नीम हो कै ऊँ-का डील-मे बड़ो जंद है। जो ईं-ने छुड़ा-देगो ऊँ-ईं-ने परणा-दूँगो। तो ईं-ने जार ऊँ-को उपाइ यो-ही कर्यो कै ऊँ-की आँख-पर ऊ कूडा-का जल-का छाँटा दिया। जद जद छूट-गियो। ऊँ-के नीरोंत हो-गयी। बादस्या-ने वा छोरी ऊँ-के ताँईं परणा-दी। अस्याँ-ई वो डाग्णा-के नीचे-सूँ ऊ धन-पर जल छड़कर वो धन बी खाड़-लियो। ओर लुगाई अर धन लेर आनंद करवा लाग-गियो।

भोपाल राज्य की मालवी

भोपाल राज्य की मालवी के बोलने वालों की संख्या करीब १८ लाख है। इस प्रदेश की यही मुख्य भाषा है। इसमे और इन्दौर राज्य की स्टैण्डर्ड मालवी मे नाम मात्र की सी भिन्नता है। नमूने के रूप मे नरसिहगढ़ रियासत से प्राप्त एक लोक-कथा दी गई है। नीचे लिखी विशेषताएं द्रष्टव्य है:—

महाप्राणत्व का लोप साधारणतया मिलता है, उदा० 'ऊभो'=खड़ा की जगह 'ऊबो'। दूसरी ओर 'पे'=पर की जगह 'फे' मिलता है। स्वरो की अदल-बदल साधारणतया मिलती है, उदा० नजर (नज़र)=भेट, सौगात की जगह 'निजर'; कुँवर=शाहजादा की जगह कँवर'। नमूनो मे स्वर अनेक जगह दीर्घ लिखे गए है, पर उनका उच्चारण ह्रस्व है, अनुस्वार प्राय. छोड दिये मिलते है। बहुधा यह लिखने वाले की लापरवाही के फलस्वरूप हो हुआ है, इसलिये हमने उन्हे सुधार लिया है।

क्रिया के तुमन्त रूपो मे व की जगह ब मिलता है, उदा० पूजबो=पूजा करना, कूदबो=कूदना, छोडबो=छोडना।

नामरूपो मे हे विभक्ति मिलती है जिसका व्यवहार द्वितीया-चतुर्थी एव सप्तमी के लिये भी हुआ है। यह विभक्ति कोटा वाले नमूने मे एव हाडौती मे भी मिलती है। यहाँ के उदाहरण है. भैसाहे=भैस को, खाल्हे=नदी मे, घोडाहे=घोडे को।

उपलब्ध नमूने की लिखावट मालवा मे प्रचलित हस्तलिपि का एक सुन्दर उदाहरण होने के कारण हमने उसे हूबहू छाप दिया है। लेखन मे कई जगह शिथिलता पाई जाती है। कभी-कभी–ओ विभक्ति-आ की जगह ग़लती से लिखी मिलती है, उदा० खुसी-का (को) अमल-पाणी होया (होयो)=खुशी का अमल-पानी हुआ=खुशी के उपलक्ष्य मे अफीम घोल कर पिया गया।

संख्या ४४

मालवी — नरसिहगढ राज्य

तीस चालीस वरस होया जद कँवर भवानी सिह-जी राजगढ पदार्या। जद रावत-जी-साब-के पास-का आदमिन-ने विचारी के कँवर भवानी सिँह-जी-की चडेती पाटी-फे देखांगा। ओर या विचार-के भैँसो चरायो। जद पडवा पाटी आई ओर सवारी खेर वोर पूजवा पदारी। जद भैँसो आयो। जे-की गोडी बन्दी थी। जो गोड्याँ काटी जद रावत-जी-साब-ने वरछा-की दी। अब भैँसो चाल्यो सो अतरो भाग्यो के जलपाजी-की डूँगरी-के नीचे गयो। जद रावत-जी-साब ने कँवर भवानी-सिह-जी-से कई के हूँ जाने-थो के तम दीठ-फे-ई गया-हो। जद कँवर-जी-ने घोडा-की लगाम खेँच-के दो तीन कोड्डा-की दई। जद घोडो भाग्यो

नमूना संख्या ४४ मालवी

तो भैंसाहें जा-लियो। जद भैंसा-को तो खालहें कूदबो होयो ओर कँवर भवानी सिंह-जी-को तरवार-को हात छोडबो होयो। भैंसा-का ढोल सरीका पुड़ा अलग अलग हो-गया। आदो अनॉग ओर आदो उनॉग हो-गयो। ओर आप लगाम पकड़-के ऊबा हो-गया। हम खेर-बोर में ढूडता-होया ऊनॉग गया ओर हेला पाड्या। जद कँवर-साब-ने जुवाप दियो के हूँ यो ऊबो हूँ। जद हम सब कँवर-जी-साब-के पास गया। जद बकरा मँगा-के उन-का माथ काट्या ओर लोई हेड़-के कूडान-में भेल्यो ओर घोडा-के लगायो चार चरवादार ओर दो मसाल-ची ओर दो सिपाही घोडा-के साते कर दिया के घोडाहें धीरॉ धीरॉ ठान-में लेग्रा-जो। आप ओर रावत-जी-साब दोई सरदार डेरा-फे पदार्या। ओर रावत जी-साब-ने ओर कँवर भवानी-सिंह-जी-ने कॉसो आरोग्यो। कॉसो आरोग-के रावत-जी-साब मेल-में पदार्या ओर कँवर-जी साव डेरा-में पोड-गया। दूसरा दिन खुसी-का अमल पानी होया निजर निछरावल होई। इनाम बाँटी कँवर-जी-साब-की भैसा सारबा-की बड़ाई होई।[1]

भोपावाड़ की मालवी

मध्यभारत की भोपावाड रियासत के उत्तर-पूर्वी भाग मे लगभग १,४७,००० लोग मालवी बोलते है। रियासत के बाकी हिस्से की भाषा या तो भीली मिलती है या नीमाडी।

भोपावाड की मालवी और इन्दौर की मालवी लगभग एक ही सी है। नमूने के रूप मे रॉगडी मे भगवान् रामचन्द्र के पिता दशरथ एव श्रवण की प्रसिद्ध कथा दी गई है। दशरथजी ने श्रवण को भूल से मार दिया था। लडके के माँ-बाप ने उन्हें शाप दिया कि वे पुत्र वियोग मे मरेगे। इस शाप के फल को चरितार्थ करना ही रामायण की कथा की आधारशिला है।

नमूना झाबुआ रियासत से मिला है। भाषा की नीचे लिखी विशिष्टताएँ द्रष्टव्य है:—

महाप्राणत्व का नियमित लोप : उदा० आँधो=अन्धा की जगह 'आँदो'। स्वरों की आपस मे फेरबदल : उदा० फिरतो=फिरता की जगह 'फरतो', लिखणो=लिखना की जगह 'लखणो'। कुछ अन्य राजस्थानी बोलियों की तरह आद्य स का ह हो जाना : उदा० सराप=शाप की जगह 'हराप'; सुणणो=सुनना की जगह 'हुणणो' आदि।

नामरूप—राजस्थानी मे अन्यत्र उपलब्ध चतुर्थी रूप के लिये षष्ठी की सप्तमी का प्रयोग : उदा० सरवण-रे=सरवण को; थाणे=तुमको।

---

[1] उपर्युक्त गद्यभाग मूल हस्तलिपि का विशुद्ध नागरी रूप है। हस्तलिपि के कुछ अंश की हूबहू अनुकृति नमूने के रूप मे पृथक् पृष्ठ पर दी गई है।

क्रिया–जी या जे–साधित आज्ञार्थ रूप : यह आदरार्थ नही भी हो सकता है। उदा० पावजो=पिलाओ; मरजे=तू मरना; कहणो या कैणो=करना का भूत कृदन्त 'कीदो' मिलता है। पीणो=पीना का प्रेरणार्थक (Casual) रूप पावणो=पिलाना मिलता है।

संख्या ४५

मालवी (रॉगड़ी) — झाबुआ राज्य

एक सरवण नाम करी-ने आदमी-थो। वणी-रा मा-बाप आँखा-ऊँ आँदा था। सरवण वणाँ-ने तोक्याँ फरतो-थो। चालताँ चालताँ आदा-आँदी-ने रस्ता-मे तरस लागी। जदी सरवण-ने कीदो के बेटा पाणी पाव। म्हाँ-ने तरस लागी। जदी ऊ वणा-ने वठे बेठाइ-ने पाणी भरवा-ने तळाव उपर गियो। वणी तळाव उपर राजा दशरथ-की चोकी थी। जणी वखत सरवण पाणी भरवा लागो। जदी राजा दशरथे दूरा-ऊँ देख्यो। तो जाण्यो के कोई हरण्यो पाणी पीवे-हे। एसो जाणी-ने राजा-ए बाण मार्यो। जो सरवण-रे छाती-मे लागो। जो सरवण वणी वखत राम राम करवा लागो। जदी राजा-ए जाण्यो के यो तो कोई मनख हे। एसो जाणी-ने राजा दशरथ सरवण कने गियो। तो देखे तो आपणो भाणेज। राजा सोच करवा मड्यो। जद सरवण बोल्यो के खेर मारी मोत थाणा हात-से-ज लखी-थी। अवे मारा मा-बाप-ने पाणी पावजो। अतरो केइ-ने सरवण तो मरि-गियो। ने राजा दशरथ पाणी भरी-ने वेन वेनोइ ने पावा-ने आयो। जद आँदा आँदी बोल्या के तूँ कूँण हे। दशरथ बोल्यो के थाँणे काँई काम हे। थेँ पाणी पीयो। जदी वेन बोली मेँ तो सरवण सिवाय दूसरा-का-हात-को पाणी नी पीयाँ। दशरथ बोल्यो के हूँ दशरथ हूँ। ने मारा हातेँ अजाण-मे सरवण मरि-गियो। आँदा-आँदी सरवण-को मरण हुणी-ने हा! हा! करी-ने राजा दशरथ-ने हराप दीदो के जणी बाणूँ मारो बेटो मार्यो वणा-ज बाणू तूँ मरजे। एसो हराप देइ-ने आँदा आँदी बी मरि-गिया॥

पश्चिमी मालवा एजेन्सी की मालवी

१८९१ ई० पश्चिमी मालवा एजेन्सी की आबादी १९,१९,३९८ गिनी गई थी। यहाँ के मुसलमान हिन्दुस्तानी बोलते है। भील भीली बोलते है। बाकी सारा जन-समुदाय मालवी बोलता है। पड़ौस मे ही राजपूताना की टोक [1] और झालावाड रियासते है। इन दोनों के मालवा सीमा पर के भागो मे मालवी बोली जाती है। राजपूताना की टोक रियासत-अधिकृत निम्बाहेडा मे जो कि मेवाड की दक्षिण-पूर्वी सीमा पर स्थित है, मालवी बोली जाती है। झालावाड़ मे

१ टोक अधिकृत कुछ टुकड़े राजपूताना मे हैं, जहां मालवी बोली जाती है। पर उनके आँकडे मध्यभारत के आँकडो मे ही सम्मिलित कर लिये गये है।

(हाल मे कोटा मे मिलाये हुए प्रदेश को ध्यान में रखते हुए) मालवी चौमहला अचल मे बोली जाती है जो रियासत के दक्षिण-पश्चिम मे स्थित है।

चौमहला सोडवाड प्रदेश का भाग है। सोडवाड प्रदेश पश्चिमी मालवा एजेन्सी के भीतर से लेकर पडौस के भोपाल के कुछ भाग तक फैला हुआ है। पश्चिमी मालवा एजेन्सी मे हम इसका क्षेत्र टोक-अधिकृत पिडावा परगना एवं इन्दौर के सातखेडा व गरोट परगनो को मान सकते है। सोडवाड में मालवी का एक विशेष रूप प्रचलित है जिसे सोडवाडी कहते है। इसका स्वतत्र विवेचन आगे किया जायगा। पश्चिमी मालवा एजेन्सी के बाकी सारे भाग मे साधारण मालवी ही बोली जाती है।

पश्चिमी मालवा एजेन्सी एव पडौस की राजपूताना रियासतो मे मालवी बोलने वालो के अनुमित आँकडे इस प्रकार हैं:—

मालवी— पश्चिम मालवा	१२,४१,५००	
टोक अधिकृत निम्बाहेडा	४,०००	कुल १२,४५,५००
मालवी (सोडवाडी)—		
पश्चिम मालवा	१,१५,०००	
झालावाड अधिकृत चौमहला	८६,५५६	
भोपाल	२,०००	कुल २,०३,५५६
भीली (पश्चिमी मालवा)		५६,०००
हिन्दुस्तानी ,,		१,९०,०००
पश्चिमी मालवा मे बोली जाती अन्य बोलियाँ		१६,८६८
		कुल १७,११,९२४

अब हम पश्चिमी मालवा (टोक-अधिकृत निम्बाहेड़ा समेत) की स्टैण्डर्ड मालवी का विवेचन करते है, जिसके भाषियो की संख्या १२,४५,५०० है। नमूनो मे रतलाम से प्राप्त हुई एक रांगडी लोक-कथा दी गई है। प० मालवा की भौगोलिक स्थिति के कारण मध्यवर्त्ती राजस्थानी का प्रभाव होना स्वाभाविक एव अपेक्षित ही है।

भाषा की विशिष्टताएं : महाप्राणत्व का लोप, उदा० ह्वयो-हुआ की जगह 'वयो'। पूर्वी मारवाड़ी मे आद्य स का ह करने की ओर झुकाव मिलता है। यह सोडवाडी की भी एक विशिष्टता है, जैसा कि हम आगे देखेगे। यही बात पश्चिमी मालवा की मालवी मे भी मिलती है उदा० साँझे-शाम को की जगह 'हांजे'; सुणणो=हुणणो=सुनना; समझाडीने=हमजाड़ीने=समझाकर। मध्यवर्ती राजस्थानी की तरह मूर्धन्य 'ण' ध्वनि की ओर भी विशेष झुकाव

दिखलाई पडता है, उदा० सुणणो। स्टैण्डर्ड मालवी की तरह व की जगह 'व' की ओर झुकाव मिलता है; उदा० वात=बात की जगह 'वात'।

सर्वनाम—मध्य राजस्थानी का 'आपाँ'=हम (सबोधित व्यक्ति शामिल) यहाँ मिलता है।

क्रिया—भोपावाड की मालवी के विवेचन मे चर्चित-जे साधित आज्ञार्थ रूप यहाँ भी मिलता है। उदा० कहीजे→कीजे=कहिये। एक जगह मेवाडी का ह-साधित भविष्यत् भी देखने को मिला, यथा वताइहूँ=वतलाऊँगा। मारवाड़ी का-ड युक्त प्रेरणार्थक रूप भी यहाँ मिलता है; उदा० हमजाडी ने=समझाकर; रोवाडीजे = (तुम) रुलवाना (आज्ञार्थ प्रेरणार्थक)।

भावे गठन (Impersonal Construction) मे सकर्मक क्रिया भूतरूप के लिंग एव वचन को कर्म के अनुरूप बनाने की गुजराती की प्रवृत्ति का एक उदाहरण यहाँ भी मिला। उदा० छोरा-ने रोवाड्या (न कि रोवाड्यो)=उसने बच्चो को रुलवाया।

संख्या ४६

मालवी (रांगड़ी) रतलाम राज्य

एक ग्यावरा स्याळणीए आपणा धणी स्याळ्या-ने कह्यो के अवर-के म्हारी हुवावड कठे करोगा। तो वणीए कह्यो के नाहार-की गुफा-माँय। जदी नाहार आवेगा तो आपाँ-ने खाइ जायगा। तो स्याळ्याए कह्यो के जदी मूँ खूँखारूँ तो तूँ टावर्या-टूवरी-ने चूँटवया भरी-ने रोवाडजे ने हूँ पूछूँ के ई क्यूँ रोवे-हे। तो तूँ कीजे के ई नाहार-रो कालजो माँगे-हे॥

थोडा दन पछे ये दोई जणा जाई-ने नाहार-री गुफा-माँही हुवावड कीदी। वणी दन जद हाँजे नाहार आयो ने सनेर-लेवा लाग्यो के म्हारा घर-में कोई न कोई हे। तो जदी स्याळ्या-ने हूँ कीदी। या वात हुणता-ज स्याळणीए छोरा-छोरियाँ ने चूँटवया भरी-ने रोवाड्या। तो स्याळ्यो वोल्यो के अय कनक-सुन्दरी टावर्या-टूवरी क्यूँ रोवे-हे। तो स्याळणी वोली के ओ डर-भजन-राजा छोरा-छोरी नाहार-रो कालजो माँगे-हे। या वात हुणता-ज नाहर-रो जी उड-गयो ने पीछे पाँव भाग्यो ने विचार करवा लाग्यो के म्हारा घर-में म्हा-ने खावावारो कोई-न-कोई म्हारा-ऊँ मोटो जानवर हे। असा विचार-माँही वा रात काटि-दीदी ने दुसरे दन आव्यो तो वी या-की या-ज वात हुणी-ने पाछो भाग्यो। अतरा-क-में एक वाँदरो अणी-ने मिळ्यो ओर वाँदराए पूछ्यो के क्यूँ नाहार राजा आज क्यूँ भाग्या-भाग्या फिरो हो। जदी नाहार वोल्यो के म्हारा घर-माँही म्हारो खावावारो कोई न कोई हे। या वात हुणी-ने वाँदरो अणी वात-री चोकसी करवा नाहार-री गुफा कने गयो ने पाछो आव्यो ने केवा लाग्यो के ए म्हारा शाह

एक स्याळ्यो बठै हे ने वणी-ऊँ डूँ डूँ कांई करे-है। या बात हुणी-ने नाहार-ने भरोसो नी वयो। तो बाँदराए कह्यो के आनां-री पूँछड़ी बोई मेरी बाँदि ने-ने नालां ने हूँ थाने स्याळ्यो बठै बताऊ हूँ। या बात हुणी-ने वोई पूँछड़ियां मेरी बाँद-ने अबे ये नाहार री गुफा आडी चाल्या। स्याळ्यां-ने अणा-ने देख हूँकारो कीदो। ने स्याळणीए छोरा-ने रोवाड्या तो स्याळ्याए पूछ्यो के टाबर्या-टुबरो क्यूँ रोवे-हे तो स्याळणीए कह्यो के छोरा-छोरी नाहार-रो कालजो मांगे-हे। स्याळ्यो बोल्यो कै अणा-ने रोवा मत दो। लानां राखो। अबार धीरे-धीरे बाँदरो मामो नाहार-ने हुमजाडी ने लावे हे। या बात हुणता-ही-ज नाहर-ए जाण्यो के बाँदरा-रे मन-मे कपट हे ने गबा फलांग मारतो-मारतो भाग-ग्यो ने बाँदरो पूँछड़ी-सूँ बंधो-थो सो गडिकाड-गडिकाड-ने मरि गयो। ने स्याळ्यो बठै मजा-ने रेवा लाग्यो॥

सौंडवाड़ी

सौंडवाड़ी सौंडवाड़ के नाम से प्रसिद्ध प्रदेश में रहने वाले जंगली फिरकों की बोली है। यह प्रदेश पश्चिमी मालवा एजेन्सी के उत्तर-पूर्वी भाग में चौमहला में तथा झालावाड़ राज्य के दक्षिणी भाग में फैला हुआ है। पश्चिमी मालवा एजेन्सी वाले भाग में इसमें टोंक-अधिकृत पिड़ावा परगना एवं इन्दौर के मानपुरा व गरोट परगने भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त निकटस्थ भोपाल के भाग में भी करीब दो हजार सौंडवाड़ी भाषी होने का अनुमान है। ये सौंडवाड़ से ही वहाँ गए हुए हैं। इस प्रकार सौंडवाड़ी के भाषियों की संख्या के अनुमित आँकड़े यों हो जाते हैं—

पश्चिमी मालवा एजेन्सी—

टोंक व इन्दौर में	१,१५,०००
चौमहला (झालावाड़) में	८६,५५६
भोपाल में	२,०००
कुल	२,०३,५५६

सौंडिया लोगों का नीचे दिया गया वृत्तान्त राजपूताना गैजेटियर से उद्धृत किया हुआ है (जिल्द II पृष्ठ २०० से——) ।

इनके मुख्य गोत्र राठोर, तवर, जादों, सिसोदिया, गहलोत, चौहान और सोलंकी हैं। चौहान ग्वालियर या अजमेर से, राठोर मारवाड़ स्थित नागोर से तथा सिसोदिया एवं अन्य मेवाड़ से करीब ७ से ६ सदी पहले आए हुए माने जाते हैं। चौमहला के सौंडिया अपने को विभिन्न राजपूत कुलों के वंशज बतलाते हैं और उनका कथन है कि उनके पूर्वजों के वंशज अब भी उनके आने के स्थानों में बड़े-बड़े प्रभावशाली जागीरदार हैं। एक किंवदन्ती के अनुसार सौंडिया नाम की

उत्पत्ति सिंदवाडा नाम के प्रदेश से है जो सिंद नाम की दो नदियो के बीच मे है। यह सिंदवाडा बिगडते-बिगड़ते सोडवाड़ा हो गया जिससे सोडिया शब्द निकला, ऐसा कहा जाता है। दूसरा सुझाव यह है : सोडिया शब्द हिन्दी 'सन्धिया' से निकला है, जिसका अर्थ 'मिश्रित' (न इधर न उधर) होता है; और सोडवाडा प्रदेश का नाम जाति के नाम पर पडा है। औरो की तुलना में साधारणतया गौरवर्ण, गोल मुखाकृति, साफ घुटी हुई ठुड्डी एव एक विचित्र तरह की बड़ी सफेद पगडी वाला सोडिया तुरन्त अन्य लोगो मे बिल्कुल पृथक दिखाई पड जाता है। साधारणतया जमीन के मामलों पर ये आपस मे बराबर झगडते हुए पाये जाते हैं, पर कभी-कभी जाति के मानापमान के प्रश्न पर बडी जल्दी एक हो जाते है। जैसा कि अभी हाल मे हुआ था। किसी सिपाही ने एक सोडिया की पगडी उतार कर फैंक दी। इससे क्रुद्ध होकर कई सौ लोग एकत्रित होकर परगने मे फरियाद करने आए क्योकि यह सारी जाति का अपमान समझा गया। वैसे ये सीधे-सादे और बडे अज्ञान होते है, पर अन्य किसी का माल-मत्ता, ढोर आदि उठा ले जाना इनका सहज स्वभाव है। अब ये खेती करने लगे हैं। चौमहला मे कुछ पटेल समृद्ध भी हो गए हैं, परन्तु इनकी जाति मितव्ययी नही है। गाँव मे इनका खर्च बहुत भारी पाया जाता है। इनके कुछ गाँव जागीर मे मिले बताते है और बाकी की बहुत सी भूमि सुना जाता है, मुसलमान बादशाहो द्वारा इन्हे दी हुई है ताकि वे बसी हुई जाति बन जायँ। मालकम (Malcom) ने अपनी 'मध्य-भारत' (Central India) शीर्षक पुस्तक मे सोडियो का निम्नलिखित वर्णन दिया है:—

"प्राय: ये राजपूत कहे जाते हैं, पर वास्तव मे ये अनेक जातियो से उत्पन्न या एक मिश्रित जाति मालूम पडते है। आरम्भ मे शायद ये बहिष्कृत रहे होगे। ये अपने को अलग ऊँची जाति के समझते हैं। इस विषय मे एक किंवदन्ती प्रचलित है : 'एक राजकुमार सिंह के मुँह वाला पैदा हुआ; उसे जगल मे छोड दिया गया। वहाँ उसने अनेक जातियो की स्त्रियो को पकड-पकड कर उनसे अपना सबध स्थापित किया जिससे अनेक सन्तानो की उत्पत्ति हुई। यह राजकुमार सोडिया जाति का आदि पुरुष था।'

इस कहानी से इनकी मिश्रित उत्पत्ति की ओर इशारा मिलता है। कालान्तर मे इनमे से कुछ मालवा मे बस गए बताते हैं। तब से ये अपने आप को छोटे-मोटे जमीदार, भूमिदार या लुटेरे मानते आ रहे हैं।

"सोडियो का इतिहास प्राचीन है, इसमे कोई शक नही। पर इसका कोई ऐतिहासिक उल्लेख कही नही मिलता। प्राय: वे छुट-पुट लुटेरो के रूप मे ही मिलते रहे। कभी-कभी सयोग मे उनकी भूमि के टुकड़ो पर तीन चार आपस मे झगडते हुए रजवाडो ने अधिकार कर लिया तो ये उनकी आपसी लडाइयो में

शामिल होकर बराबर एक दूसरे से लड़ते रहे। पिछले तीस वर्षो मे मध्यभारत मे फैली हुई घोर अराजकता के कारण ये सफल लूटमार करने वाले या भाड़े के सैनिको के रूप में कुख्यात हो गए। साधारणतया इसी प्रदेश मे बसे हुए गरासियों से उनकी नही बनती, पर यशवन्तराव होल्कर के पागल होने के फलस्वरूप फैली हुई धाँधली मे दोनो हमपेशेवर होकर मिल भी गए है। तब से सारे सोडवाड़ा प्रदेश मे जान-माल कही भी सुरक्षित नही रहे। इन लुटेरो के अधिकांश गिरोह अपने घोड़े खुद पालते है और इसी से अच्छे घुडसवार भी है। मुंडेसर की सधि के समय सोडियों की सख्या १२४६ अश्वारोही एव ६२५० पैदल आंकी गई थी। ये सब लूटमार करके ही निर्वाह करते थे, क्योकि जिस प्रदेश को ये अपना बताते थे वह पूर्णतया क्षत-विक्षत या ध्वस्त हालत मे था।" (जिल्द–१)।

शासन की कमजोरी या सख्ती के अनुसार सोडियो के पेशे बदल जाते हैं। नियन्त्रण कम रहने पर वे लुटेरे हो जाते हैं और पूरा रहने पर किसान बन जाते हैं। परन्तु इनका झुकाव लूट-खसोट पर आश्रित लड़ाई-झगडो को ओर ही अधिक है, भले ही वे कृषि की ओर जबर्दस्ती से मुड गए हो। उनकी वेश-भूषा प्रदेश के अन्य निवासियो की सी ही है, केवल पगड़ी के बडेपन मे और बघेज मे वे कुछ हद तक राजपूतो की नकल करने की कोशिश करते हैं। साधारणतया वे सशक्त और फुर्तीले होते हैं; साथ ही हद से ज्यादा अज्ञान और अशिष्ट भी। सोडिया लोगो को प्रदेश के लोग जितनी घृणा और भय की दृष्टि से देखते हैं; उतना शायद ही किसी अन्य जाति को। तेज शराब और अफीम का अत्यधिक मात्रा में सेवन करना इनमें प्रचलित है। नीची उत्पत्ति एवं समाज से बहिष्कृत होने के कारण हिन्दू समाज के सभी आवश्यक पालनीय नियमों का उल्लघन करने की जैसे इन्हें छूट सी मिली हुई है। फलतः हर प्रकार के शारीरिक भोग-विलास मे स्वच्छन्दता के साथ अतिरेक करना इनमे पाया जाता है। इसके कारण इस जाति मे दुर्गुण एवं बदमाशियाँ इस हद तक स्वाभाविक हो गई हैं कि अन्य लोग उन्हे बर्दाश्त नही कर सकते और घृणा एव भय के मारे इनसे मुँह फेर लेते हैं। सोडियो मे आपसी मेल बहुत कम है। साधारण शान्ति के जमाने मे भी आपसी मारामारी और खून-खराबी बहुत सादी सी बात मानी जाती है। अक्सर इनके झगडे भूमि को लेकर होते है और झगडे का निश्चय करने के लिये तुरन्त तलवार चल जाती है। इस जाति मे आज की सी शान्ति कम से कम एक शताब्दि से नही थी। पिण्डारी युद्ध की समाप्ति के बाद ब्रिटिश सरकार का ध्यान इनकी ओर गया। इनके जुल्मो के अतिरेक के कारण सरकार को इनके मुख्य-मुख्य स्थानो पर धावा करके उन पर कब्जा करना पड़ा। इनके घोड़ो को बिकवा दिया गया जिससे लूटमार करने की इनकी शक्ति बहुत कुछ मात्रा मे कम हो गई। पर इतना होकर भी इन्हे दबाए रखने के लिये सेना को रखना अत्यन्त आवश्यक

प्रतीत हुआ। इतनी अशांत और पतित जाति को सुधारने के लिये शान्ति के पूरे युग की आवश्यकता है, फिर भी केवल उम्मीद ही रख सकते है। जाति की स्त्रियों मे भी उनके पुरुषो के गुण उतर आए हैं। वे निडर होने के साथ-साथ चरित्रहीन भी है। नीची श्रेणी की स्त्रियो के पर्दा नही है और वे उत्सवो, महफिलो मे शामिल होती है। अधिकाश घुडसवारी मे भी प्रवीण हैं। कुछ ने तलवार-भाले के दम पर गाँव की रक्षा करने मे अच्छी खासी प्रख्याति भी पाई है।

"विवाह उत्सवो आदि के समय विधि ब्राह्मण करवाते है, पर धार्मिक क्रियाएँ करवाने के अतिरिक्त ब्राह्मणो का उनसे कोई भी सम्पर्क-ससर्ग नही है। चारणो का इनमे अच्छा सम्मान है, और इनकी वशावली या किवदन्ती-आश्रित विरुदावली के गायक भाट व ऐसी पेशेवर जातियो को ये लोग खुल कर दान-पारितोषिक दे देते है।"

हमने सोडवाड़ी के दो नमूने दिये है। दोनो झालावाड़ रियासत से मिले हुए है। एक तो 'उडाऊ बेटे की कथा' का संस्करण है। दूसरे मे स्त्रियो द्वारा गाए जाते दो लोकगीत है। इनके अतिरिक्त भाषा साधारण मालवी सी ही है।

सोडवाडी की सब से बडी विशिष्टता आद्य 'स' ध्वनि का 'ह' मे परिवर्तित हो जाना है। लोग अपने को 'सोडिया' की जगह 'होडिया' कहते हैं। इस प्रवृत्ति के अनेक उदाहरणो मे से कुछ ये है:—

सगळो=सब→ हगळो या हगरो; साँतरो (एक गुजराती शब्द)=दैनिक भोजन का भाग→ हाँतरो; साधू=अच्छा व्यक्ति→ हाऊ; साभळणो=सुनना= हाँभळणो; समझाणो=समझाना→ हमजाडणो।

'छ' का उच्चारण 'स' किया जाता है : उदा० छोकळो=भूसी→ सूकळो।

मालवी का महाप्राण का लोप साधारणतया यहाँ भी दृष्टिगोचर होता है। उदा० न्होडो=छोटा→ लोड़ो; थी=से→ ती; दीधो=दिया→ दीदो; व्ह्यो=हुआ→ वयो, हाँभळणो (यह भी गुजराती का शब्द है); समझाणो= समझाना→ हमजाडणो।

नामरूप—पंचमी की विभक्ति-ती या –थी है। मालवी के अन्य क्षेत्रो की तरह यहाँ भी द्वि० च० के –के, –ने या कही कही –हे मिलते है। करण के अर्थ मे भी –ने लगता है, उदा० बेटा-ने कही=बेटे-ने कहा। नीचे दिये वाक्य मे –ने का प्रयोग एक बार तृतीया के लिए और दूसरी बार द्वितीया के लिए हुआ है; उदा० म-ने ....पाप कीधो ... . म-ने थें हाळी-बान्दियां भेळो राखो=मैंने पाप किया ....मुझे तुम (अपने) नौकरों के साथ रखो।

–हे परसर्ग का प्रयोग सप्त० के लिये भी मिलता है। चतु० के लिये प्रयोग का उदा० वणा-हे बांट-दी=उसने उनको बांट-दी। सप्त० के लिये प्रयोग का उदा० थांकी रूकम-पात बाछड्याँ-हूमर्यां-हे उड़ाई-दीदी=आपकी सम्पत्ति को नाचने गाने वालियो (वेश्याओं) पर उड़ा दी।

सर्वनाम–आपी या आपणे का प्रयोग=हम (संबोधित व्यक्ति शामिल) के अर्थ मे मिलता है।

क्रियारूप–मुख्य क्रिया का भूतरूप–थो है; पर कही–कही बुंदेली का 'हो' भी मिलता है। 'वह है' के अर्थ मे 'हे' के अलावा 'है' भी मिलता है। मुख्य क्रिया का अनद्यतन भूत (Imperfect Tense मालवी की तरह वर्तमान कृदन्त–साधित नही है; उसकी जगह मध्यवर्ती राजस्थानी का तिर्यक् क्रियात्मक संज्ञा (Oblique Verbal Noun) साधित रूप मिलता है। उदा० भरे-थो=भर रहा थो; शाब्दिक अर्थ 'भरता-हुआ था'।

प्रेरणार्थक रूप (Casual) मारवाडी की तरह 'ड' या 'ड़' लगाकर बनते है। उदा० हमजाड्यो=समझाया-शाब्दिक अर्थ–समझाया।

सोडवाडी की शब्दावली मे कई शब्द ऐसे मिलते है जो राजस्थानी बोलियों मे नही हैं। उदा० जी=पिता; मॉडी=माता; वाळदी=नौकर; वर=वर्ष; रोठो=रोटी, बहु० रोठा का अर्थ 'भोज' होता है। बनो=दूल्हा; वीरो=भाई।

ऊपर की सब विशिष्टताओं का विचार करते हुए सोडवाडी स्पष्टतया एक भील रूप वाली बोली मालूम पडती है। ऊपर की लगभग सभी विशिष्टताएँ भील बोलियो मे मिलती हैं।

संख्या ४७

मालवी (सोडवाड़ी) पहला नमूना झालावाड़ राज्य

एक आदमी-के दो बेटा था। लोड़का बेटा-ने वणी का जी-हे कही के म-ने मारा वॉटा की रूकम-पात दई दो। जँदी वणी-का जी-ने अपणी रूकम-पात वणा-हे बाँट-दी। थोडा दिनाँ पाछे लोडो वेटो वणी-का बाँटा-की रूकम-पात लई वेगळो वळ्यो-गयो। वाहाँ वणी-ने वणी-का वाँटा-की हगळी रूकम-पात वीगाड- दीदी। अर वणी-के पाँ काईं नहीं रयो। ओर वणी मूलक-में काळ पड़यो। जँदी भूकाँ मरवा लाग्यो। जँदी वणी मूलक-का एक हाऊ आदमी पाँ गयो। अर वणी हाऊ आदमी-ने भड़ूरा चरावा माळ-में मोकल्यो। ऊ लाचार वई-ने वणी सूकला-थी पेट भरे थो जो सूकळो भँडूरा-के खावा-को थो। वणी-ने खावा कोई नहीं देवे-थो। जँदी वणी-ने गम पडी जँदी केवा

लाग्यो के मारा जी-के घणा हाळी वाळदी है। वणा-हे पेट भरी-ने रोठा मिळे-हे घणा हाँतरा हे। हूँ भूकाँ मरूँ हूँ। अबे हूँ मारा जी-के पाँ-हे जातो रहूँ। वणा-ती कहूँगा जी म-ने राम-जी-का घर-को पाप कीघो थाँ-को वी हराम-खोर वयो। थाँ-को वेटो बाजवा असो नहीं रयो। अबे म-ने थें हाळो वाळदिआँ भेळो राखो। ऊ उठी-ने वणी-का जी-पाँ आयो। पण ऊ वेगळो थो वणी-का जी-ने देख्यो अवाल करी-ने दोड़्यो अर छाती-ने लगायो अर मूँडे बोको दीघो। जँदी वेटो जी-थी बोळ्यो जी म-ने राम-जी-को पाप कीघो अर थाँ-के-थी वेमूख वयो। थाँ-को वेटो बाजवा जसो नहीं रयो। जँदी वणी-का जी-ने हाळ्याँ वाळदियाँ-थी कही। अणी-ने हाऊ चीतरा लावी-ने परावी-दो अर आँगळिआँ-में वींट्याँ अर पगाँ-में खाड़्या परावी दो। आपी घापी-ने खावाँ पीवाँ। मारो वेटो मरी गयो-थो अबे पाछो जीवतो वयो। यो खोवाई गयो-थो अबे पाछो लाघो। जँदी हगरा मिळी-ने राजी खुसी वया।

अतरा-में वणी-को मोटो वेटो माळ-में थो। ऊ माळ-में-थी अपणा घर के पाँ-हे आयो अर गीत गाल हामळो। जँदी हाळी-ने तेडी-ने पूछ्याँ के अणी हगळी वात-को काईं मतलब है। हाळी-ने कही के थाँ-को लोडो भाई आयो हाग्रि अर थाँ-का जी-ने रोठा कराया-हे कियूँ-के वो घणा हाऊ नरा पाछा आई-गयो। जँदी वडा वेटा-ने री लागी अर घरे नी गयो। जँदी वणी-का जी-ने आवी-ने वणी-ने हमजाड़्यो। जँदी वणी-ने जी-थी कयो म-ने अतरा वर-थी थाँ-की चाकरी कीघी। थाँ-का कीया वारे चाल्या नही। थाँ-ने एक वकरी-को वच्चो वी नही दीयो जो हूँ भाई-हेतू-में गोठ-गूगरी करतो। थाँ-ने अणी वेटा-के आवताँ -ही जणी-ने थाँ-की हगरी रूकम-पात वोछड्याँ-डूमड्याँ-हे उडाई दीदी जणी-के थाँ-ने रोठा दीया। जँदी वणी-का जी-ने कही के वेटा तू मारे पाँ रयो। घर-टापरो खेत-माळ थारो हे। आपणे राजी खूसी-थी रहाँ। थारो भाई आयो जो राजी वयो चाईजे। थारो भाई मरी गयो-थो अबे पाछो जीवतो वयो। खोवाई गयो-थो फेर लादो हे॥

संख्या ४८

मालवी (सोंडवाड़ी) दूसरा नमूना झालावाड़ राज्य

वना-जी थाँ-के घोडी-के गळे घुंगर-माळ।
पावाँ-का नेवर वाजणा रे वन-डा।
वना-जी थाँ-का हाथ में हर्यो रूमाल
पावाँ-की मेंदो राचणी-रे वनडा।
वना-जी थें तो चढ चाल्या मज अवरात।
मारी सूनी नगरी ओजकी रे वनड़ा॥१॥

ऊँनड़ माथे पीपळी रे बीरा ।
जणी-पर चढ़ जोऊँ थारी वाट ।
माँडी-जायो चूनर लावीयो ।
कामी-को मनवर घणे-मेलबे रे बीरा ।
पंचाँ-में राखो बाई-री होड ।
माँडी-जायो चूनर लावीयो ।
लावो तो हसरा हाल लावजे रे बीरा ।
नहीं तर रीजे थारे देस ।
माँडी-जायो चूनर लावीयो ।
मेलूँ तो ढाल भराई बीरा ।
ओढूँ तो हीरा झर पड़े ।
माँडी जायो चूनर लावीयो ।
नापूँ तो हाथ पचास ।
तोलूँ तो तोला तीह ।
माँडी-जायो चूनर लावीयो ॥२॥

मध्यप्रान्त की टूटीफूटी मालवी

अपने ऐसे टूटेफूटे बिगड़े रूप में जिसमें बुन्देली और नीमाड़ी का काफी मात्रा में मिश्रण है, मालवी होशंगाबाद एवं बैतूल जिलों के कुछ हिस्सों में भी बोली जाती है। इसी समूह में हम छिंदवाड़ा के भोयार और कटिया लोगों की व चाँदा के रेशम-बुनकर पटवा लोगों की टूटीफूटी मालवी को भी रख सकते हैं। बोलने वालों की संख्याएँ अन्दाजन इस प्रकार हैं:—

होशंगाबाद की मालवी —	१, २६, ५२३
(ढोलेवाड़ी कहलाती) बैतूल की मालवी—	१, १६, ०००
छिन्दवाड़ा की भोयारी	११, ०००
छिन्दवाड़ा की कटियाई	१८, ०००
चाँदा की पटवी	२००
	कुल २, ७४, ७२३

होशंगाबाद की मालवी

मध्यप्रान्त के होशंगाबाद जिले की भाषा मुख्यतः बुन्देली है, जिसका वर्णन जिल्द ९ भाग १ में दिया गया है। परन्तु जिले के पश्चिमी हिस्से में स्थित हरदा तहसील एवं मकराई रियासत में बुन्देली की जगह एक प्रकार की बिगड़ी हुई सी मालवी बोली जाती है। इसके भाषियों की संख्या अंदाजन १,२६,५२३ है।

इस अचल के पूर्व मे होशगाबाद का बुन्देली-भाषी क्षेत्र, उत्तर मे मध्यभारत का मालवी भाषी क्षेत्र, पश्चिम मे नीमाड का नीमाडी भाषी क्षेत्र एवं दक्षिण मे मराठी भाषी इलिचपुर जिला स्थित है। पास की अन्य सीमावर्ती बोलियो की भाँति यहाँ भी मराठी का मिश्रण नही मिलता।

इस बोली का विस्तृत विवेचन अनावश्यक है। नमूने के रूप मे एक छोटी सी कहानी देना पर्याप्त समझा गया। बुन्देली प्रयोगो के उदा० स्वरूप द्वि०-च का 'खे' एवं 'गया' के अर्थ मे 'गो' मिलता है। नीमाडी प्रयोग अधिक मिलते है, उदा० आगे=सामने के लिए 'आग', छे=है; जाच=जाता है। एक विचित्र प्रयोग लीस-के=लेकर मिलता है। यह स्पष्टतया भीली प्रयोग है। खानदेश की भीली मे ली-स=लेकर मिलता है।

संख्या ४६

मालवी जिला होशगाबाद

कई-का दिन आदमी अपना छोरा खे लीस्के जगल-में जाई-रह्यो-थो। छोरो जो आग आग दोडतो-जातो-थो हाँक मारी-के कहनो लग्यो कि दादा-जी देखो सही यो कितरो बडो पेड हवा-में उखाडि-के जाड पड्यो। भला देखो तो यो कसो पड्यो होय-गो। तब ओ-का बाप-ने कही कि बेटा या ऊँधावल-में गिरि पड्यो तब ओ-का छोरा-ने कही कि भला देखो तो यो बेत-को झाड कसो पतलो ओर कितरो ऊँच्चो छे। अरु ये-खे ऊँधावल-ने क्यों नहीं उखाड्यो। ओ-का बाप-ने जवाब दियो कि बेटा सागोन-को जाडोपन ओ-का गिरना-को कारण छे। ओ-खे अपनी डालना-को अरु बडापन-को गर्भ थो। वो जब हवे चले तब हलतो चलतो नहीं। विचारो बेत-को झाड जरा-सी हवा-में लट्ट पट्ट हुई जाच। एमो वो बचि-गयो।

बैतून को ढोलेवाड़ी

होशगाबाद के जिले के बुन्देलीभाषी मध्यवर्ती भाग के दक्षिण मे बैतूल जिला स्थित है। इसके पश्चिम मे नीमाड, पूर्व मे बुन्देलीभाषी छिन्दवाडा, दक्षिण मे मराठीभाषी इलिचपुर एव अमरावती जिले स्थित हैं। बैतून के उत्तरी भाग मे हरदा की बोली से बहुत कुछ मिलती-जुलती मिश्रित मालवी बोली जाती है जिसे स्थानीय अचल मे ढोलेवाडी नाम से पुकारते है। इसके भाषियो की सख्या अन्दाजन १,१६,००० है। जिले के दक्षिण मे मराठी का क्षेत्र है। दोनो भाषाओ की विभाजन-सीमा का आधार जातिवंशाश्रित (Ethnologic Frontier) है। मराठी भाषी लोग मुख्यतया कुणबी जाति के हैं जो दक्षिण प्रदेश (Deccan) से आए हुए है। ढोलेवाडी के भाषी मुख्यत: भोयार या ढोलेवाड कुर्मी है। भोयार अपने को मध्य भारत स्थित धारा नगरी से आए हुए बताते हैं, जब कि ढालेवाड कुर्मियो मे कुछ

मालवा से और कुछ उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले से आए बतलाते है। मराठी और ढोलेवाड़ी बोलने वालो के अतिरिक्त बैतूल जिले मे कुर्कू बोलने वाले करीब ३१,००० और गोडी बोलने वाले करीब ७५,००० है।

हरदा की बोली की भाँति ढोलेवाडी भी एक ऐसी टूटी-फूटी मालवी है जिसमे बुन्देली और नीमाडी का मिश्रण है; पर यहाँ बुन्देली का परिमाण हरदा से अधिक दिखलाई पडता है। मुख्य क्रिया के भूत रूप थो एव हत्यो दोनो मिलते है। हत्यो बुन्देली का हतो है पर उसकी विभक्ति मालवी की है। मराठी का साठी = के लिये भी द्रष्टव्य है।

उद्धृत नमूना न्यायालय के कागज-पत्रो से लिया हुआ एक छोटा सा बयान है।

संख्या ५०

मालवी (ढोलेवाड़ी) जिला बैतूल

सवाल–तुमारो टाँडा कहाँ पकड्यो गयो।

जवाब–हमारो टाँडा जैतापुर-पर हत्यो। हम सात आदमी हता। हम पखवाड़ा-से महू बेँच-कर आवत था और हम सात-म-से पीरू बैतूल हाट-का साठी ऊ रोज गयो थो। ढोर-गीर कहीँ साथ-मेँ नीँ ले-गयो। सब ढोर जैतापुर-पर हता। हमारा सब टाँडा-मेँ ८७ ढोर हता। हमारा-म-से कोई-की चोरी-मेँ चालान नीँ भयो। जैतापुर-पर कोई टाँडा नीँ हतो। जब हम फिर-कर आवत-था तब उना गाँव-के एना बाजू जब दो सिपाही-ने हम-खेँ लाये मिला।

छिन्दवाड़ा की भोयारी

हम कह चुके है कि बैतूल के भोयार अपने को धारा नगरी से आए बतलाते हैं और एक प्रकार की टूटी-फूटी मालवी बोलते है। पडौस के छिन्दवाडा जिले की बुन्देली मे चाहे जहाँ मराठी का मिश्रण मिलता है (Mechanical Mixture)। इसके उदाहरण जिल्द ६ भाग १ मे दिये गए है। छिन्दवाडा के भोयारो ने अपनी मालवी कायम रखी है, पर उसमे मराठी का इस प्रकार का मिश्रण हो गया है कि वह एक टूटी-फूटी गाँव की बोली (Patois) रह गई है। 'उड़ाऊ बेटे की कथा' की कुछ पक्तियाँ ही इसका उदाहरण देने के लिये पर्याप्त होगी। बोलने वालो की सख्या लगभग ११,००० होगी।

अन्त्य 'ए' का 'अ' का सा उच्चारण हो जाना द्रष्टव्य है। यह नीमाडी का प्रभाव है और बरार की मराठी मे भी मिलता है।

संख्या ५१

मालवी (भोयारी-टूटीफूटी) जिला छिंदवाड़ा

कोनी एक मानुस-ला दुई बेटा होता । ते-म-को नान्हो बाप-ला कहन लाग्यो बाबा म-ला म्हारा हिस्सा को धन आय-हे त्यू दे । तब आ-ने धन ओ-ला बाट दियो । तब थोडा दिन-भ नान्हो बेटा समघो जमा-कर-कन दूर मुलुक-म गयो आउर वहाँ वाहियात-पना कर-कन आपलो पैसो उडायो । तब ओ-न अवघो खर्चा ऊपर बना मुलुक-म मोटो दुष्काल पड्यो । ओ-ना बिपत पडन लागी । तब वो वोन मुलुक-मा एक भला मानुस-के जवर रह्यो ।

चाँदा की पटवी

मध्य प्रान्त के चाँदा जिले के रेशम-बुनकर पटवा लोग भी एक टूटी-फूटी मिश्रित बोली बोलते है । जान पडता है कि इनकी असली भाषा मराठी थी जिसे छोड कर इन्होने राजस्थानी को अपना लिया । नमूने के रूप मे 'उडाऊ बेटे की कथा' की कुछ पक्तियाँ दी गई है । शब्दावली मराठी शब्दो से भरी हुई है । मराठी के रूप भी यत्र-तत्र मिलते है, पर व्याकरण मुख्यत राजस्थानी की ही दीखती है । कही-कही बुन्देली का प्रभाव भी आ जाता है । वर्गीकरण की सहूलियत के लिए हम इसे मालवी का एक प्रकार मान सकते है । दक्षिण मे पटवो की भाषा पटलूणी या पटवेगारी कहलाती है, जो एक प्रकार की गुजराती है । उसका विवरण हमने गुजराती के अन्तर्गत दिया है । (पृ० ४४७–४४८) ।

सख्या ५२

मालवी (पटवी-टूटीफूटी) जिला चाँदा

कोनी एक मनुष्य-क दोन पोर्या हुये । ति-काम-ती लहानो बाप-क मने बाबा जे माल-मत्तो-को वाटनी म-क आवं-को ते दे । मग ति-न तेऊ-क जमा वाट-दिये । मग थोडा दिवस-मे लहान पोरे समदो जमा करी-कुन्या दूर देस-क गये । आनिक ताहा वारवड-पना-ती आपलो जमा उडाई दिये । मग ति-न अवघो खरच्या-वर ते देस-मे मोठो महाग्रो पडे । मग ति-क अडचन पडं-क लागे । तवा ति-न ते देस-मे एक भला मनुष्य जवर रहे । ति-न मग ति-क जो`कर चरा-व-क आपलो वावर-मे धाडे । तवा डुकर जे को`डा खातो-होतो ते को`डा-ती आपलो पोट भरनु असो ति-का दिल-मे वासना हुई । आनि ति-क कोनी दिया नही ।"

नीमाड़ी

नीमाडी के नमूनो मे एक तो 'उडाऊ बेटे की कथा का अश है ही; दूसरा भोयावाड की एक लोककथा का टुकडा है ।

संख्या ५३

नीमाड़ी पहला नमूना जिला नीमाड़

कोई एक आदमी-का दुइ लडका था। उन-म-सू छोटा न अपणा बाप-सू कह्यो अरे दादा अपणी धन-दौलत-म जो म्हारो हिस्सो होय सो म्ह-क दइ न्हाक। तँब बाप-न अपणी धन-दौलत अपणा बेटाना-क बाट दी। बहुत दिन बित्या नही हू-से कि छोटो बेटो अपणी सब धन-दौलत लिइ-न कही दूर देस-क चळ्यो-गयो अरु वहाँ दगा-बखेडा-म तिन तेर करि-न अपणी धन-दौलत उडाइ-दी। अरू जब सब धन-दौलत बरबाद हुई-गई तँव उना मुलक-म बडो अकाळ पड्यो। अक वो कँगाल हुइ गयो। तँव वो जाइ-न उना देस-का रहेणावाळा-म सी एक-का घर जाइ-न रह्यो। अरु उना आदमी-न व-ख अपणा खेतना-म सुवर चराण-क भेज्यो। तँव जिना छिलका-क सुवर खाइ-रह्या-था वो छिलका खाइ-न अपणो पेट भरणू असी नौबत गुजरी थी। अरु कोई आदमी वो-ख कई ँन दे। असी वक्त-म जब वो-की धु दी जाइ-न आख्याँ खुली। तँव वो कहे म्हारा दादा-का, केतरा राख्या-हुवा नौकर छे की जो पेट भरि-न रोटा खावच अरु रह्यो-सह्यो बाँधि-न घर लइ-जाच अरु हुँउ ह्याँ भूको-मरी-रह्योच। हुइँ अँव उठि-न अपणा दादा-का पास जाइस अरु व-क कहिस दादा-दादा म-न भगवान-का अगेडी नी थारा अगेडी बडो पाप कियो जे-का-सी थारो लडको कहेलाण-की म्हारी अवकात नही रही। थारा राख्या हुवा नौकर-ना-म-सी हुउँ भी एक नौकर छे असो समझ। असो कहि-न वो उठ्यो नी अपणा बाप-का पास आयो। वो दूर-सी आइ-रह्यो-थो एतरा-म ओ-का बाप-न ओ-क देख्यो व ओ-क दया आई। तँव वो दौड्यो नी बेटा-का गळा-म लिपट्यो नी ओ-का चुम्मा लिया। बेटा-न बाप-सी कह्यो दादा म-न भगवान-का अगेडी नी थारा अगेडी बडो पाप कियो जे-का-सी थारो लडको कहेलाण-की म्हारी अवकात नही रही। एतरा-पर भी बाप-न अपणा नौकरना-सी कह्यो की सब सी आछा कपडा लाइ न लडका-क पहेनाव अरु ओ-का उँगली-म अँगठी डालो अरु ओ का पाव-म डालण-कू पन्हैना देव। अपणा मजा-म खासाँ पीसाँ नी चैन करसाँ। क्योंकी हुउँ समझो-थो की ये म्हारो छोरो मरि-गयो-हु-से पण नही फिरि भी ये जिन्दो छे। वो कथइँ चळ्यो-गयो-थो पर फिरि आइ गयो। असो कहि-न वो चैन करण लाग्या॥

अँव ओ-को बडो बेटो खेत-म थो। वो अवण लाग्यो नी घर-का पास पहुँच्यो तँव उन-न सुण्यो की बाज्यो अरु नाच चली-रह्याच। ओ-का-पर-सी उन-न अपणा नौकर-ना म-सी एक-क पुकार्‌यो नी ओ-क पूछ्‌यो की ये काँइ हुइ-रह्योच। नौकर-न ओ-क कह्यो की थारो भाइ आयोच नी थारा बाप-न जाफत दिविच क्योकी थारो भाइ आछो भळो घर आइ-गयोच। ए-का पर-सी

वडा भाई-क घुस्सो आयो नी घर-म नही जाव । तँव बाप बाहर आयो नी वडा बेटा-क मनायो । ते-का-पर-सी वडा बेटा-न बाप-सी कह्यो देखजो एतरा वरस-सी थारी सेवा चाकरी करूँच कभी थारा हुकम-क नही तोड्यो । एतरा-पर भी तू-न म-क एक-बार-भी बकरी-को बच्चो तक नहि दियो की हउँ अपणा दोस्तना-साथ चैन करतो । इन थारा छोटा छोरा न राँडना-का साथ रहि-न अपणी धन-दौलत उडाइ दीवी वो छोरो घर-आत-का साथ तू-न व-का साठ जाफत दीवीच । तँव बाप अपणा वडा बेटा-सी बोल्यो बेटा तू तो सदा म्हारा पासच छें नी जो म्हारी धन-दौलत छे सब थारिच छे । पण समझा था की थारो भाइ मरि-गयो-हु-से पण नहि फिरि भी जिंदो छे । वो कथडें चळ्यो-गगो-थो पर फिर आइ गयोच ए-का साठ आपण-क चायजे की अपण-न अनँद मनावणू नी खूसी होणू ।।

सख्या ५४

नीमाड़ी दूसरा नमूना (भोपावाड़ एजेंसी का बरवानी राज्य)

एक राजा थो । वो सिकार-ख जाय । वडी फजर-सी तो सिकार खेलत खेलत वो-ख पाणी-की तीस लागी । ऊ-न अपणा मन-म कयो की पाणी कँई जगा मिळ तो पीणूँ । इतरा-म वो-ख एक लीम-को झाड गहरो नजर आयो । वहाँ पाणी होयगा असो जाणी-न घोड दवडाई-न लीम पास गयो । व्हाँ जाई-न देखज तो एक सूखी तळाई पडीज न एक जोगी पलक लगाई-न बठ्यो-थो न वो-को चेलो वसती-म आटो माँगण गयो-थो । राज-न मन-म कयो की यहाँ पाणी मिळन कँई मिल । कसी जगा-म जोगी बठ्योज । वो-ती वखत राजा सोना-को मुगट पहेर्यो-थो । वो-म कली-को वासो होज । ते-का-सू राजा-ख कँई समज नहीं पडी न मरेलो साँप जोगी-का गळा-म वळवी आयो । इतरा-म आटो माँगी-न चेलो आयो । चेला-न अपणा गुरू-का गळा-म साँप वळवेलो देखी-न साँप-ख कयो की जिन-न म्हारा गुरु-का गळा-म साँप वळव्यो-होय वो-ख तू जाई-न रात-म डस । अल्यांग राजा अपणा महल-म आई-न मुगुट उतारी-न वठ्या । तँव राजा-ख चेत आई की आपण जोगी-का गळा-म मरेलो साँप वळवी-आया । ये बुरो काम कर्‌यो । पण जाई-न साँप निकाळी-आऊँ । असो विचार करी-न राजा विदा हुयो । •

राजस्थानी में बहुप्रचलित शब्दों और वाक्यों की सूची

अनुक्रम	हिन्दी	मारवाड़ी	मारवाड़ी (जैसलमेर की थळी)	जयपुरी
१	एक	एक	हेक	एक, येक
२	दो	दोय	वे	दो
३	तीन	तीन्	तीन'	तीन्
४	चार	चियार, च्यार	चार'	च्यार
५	पाँच	पाँच	पाँच'	पाँच
६	छ	छव	छव, छ	छै
७	सात	सात	सत्त'	सात
८	आठ	आठ	अट्ठ'	आठ
९	नौ	नव	नव	नौ
१०	दस	दस	दस	दस
११	बीस	बीस	बीस'	बीस
१२	पचास	पचास	पचास	पचास
१३	सौ	सो, सैकडो	सो	सौ
१४	मैं	हूँ, म्हूँ	हूँ	मैं
१५	मुझ-का	म्हारो, मारो	माँ-जो	म्हारो
१६	मेरा	म्हारो, मारो	मयालो	म्हाँरो
१७	हम	म्हे, मे	म्हें	म्हे
१८	हम-का	म्हाँरो, माँरो	म्हाँ-रो	म्हाँ-को
१९	हमारा	म्हाँरो, माँरो	म्हाँ-रो	म्हाँ-को
२०	तू	तूँ, थूँ	तूँ, तू	तू
२१	तेरा (of thee)	थारो	ता-जो	थारो
२२	तेरा (thine)	थारो	तयालो	थारो
२३	तुम	थे, तमे	थे	थे
२४	तुम्हारा (of you)	थाँरो, तमाँ-रो	थाँ-रो	थाँ-को
२५	तुम्हारा (your)	थाँ-रो, तमाँ-रो	थाँ-रो	थाँ-को
२६	वह	वो, ऊ, उवो	ओ	वो

मेवाती	मालवी (राँगड़ी)	मालवी (राँगडी से भिन्न)	नीमाडी (नीमाड)	अनुक्रम
एक	एक	—	एक	१
दो	दो	—	दुई	२
तीन्	तीन्	—	तीन्	३
च्यार	चार	—	चार	४
पाँच	पाँच	—	पाँच	५
छै	छे	—	छव	६
सात	सात	—	सात	७
आठ	आठ	—	आठ	८
नौ	नव	—	नव	९
दस	दस	—	दस	१०
वीस	वीस	—	वीस	११
पँचास	पचास	—	पचास	१२
सौ	सो	—	सौ	१३
मैं		—	हउँ	१४
मेरो	म्हारो, मारो	—	म्हारो	१५
मेरो	म्हारो, मारो	—	म्हारो	१६
हम, हमा	म्हें	हमारो	हम	१७
म्हारो	म्हाँ-को, म्हा-णो	हमारो	हमारो	१८
म्हा-रो	म्हाँ-को, म्हाँ-णो	हमारो	हमारो	१९
तू	तूँ	—	तू	२०
तेरो	थारो	—	थारो	२१
तेरो	थारो	—	थारो	२२
तम, तुम, थम	थे, थैं	तम	तुम	२३
थारो	थाँ-को, थाँ-णो	तमारो	तुम्हारो	२४
थारो	थाँ-को, थाँ-णो	तमारो	तुम्हारो	२५
वो, वोह	ऊ	ऊ	वो	२६

अनुक्रम	हिन्दी	मारवाड़ी	मारवाडी (जैसलमेर की थळी)	जयपुरी
२७	उस-का (of him)	उण-रो	उवे-रो	उ-को
२८	उसका (his)	उण-रो	उवे-रो	उ-को
२९	वे	वे, वैं, उवे	ओ	वै
३०	उन-का (of them)	उणाँ-रो	उवाँ-रो	वाँ-को
३१	उनका (their)	उणाँ-रो	उवाँ-रो	वाँ-को
३२	हाथ	हात	हथ	हात
३३	पाँव	पग	पग	पग
३४	नाक	नाक	नक	नाक
३५	मुँह	मूँडो	मूँडो	मूँडो
३६	आँख	आँख, नैण	आँख	आँख
३७	दाँत	दाँत	दित्त	दाँत
३८	कान	काँन	कान	कान
३९	बाल	केस, वाळ	केस	वाळ
४०	सिर	माथो	मत्थो	माँथो
४१	जीभ	जीब	जिभ	जीव
४२	पेट	पेट	पेट	पेट
४३	पीठ	मौंड़	पुट्ठी	मगर
४४	लोहा	लो	लो	लो
४५	सोना	सोनो	सोनो	सोनू
४६	चाँदी	रूपो	चाँदी, रूपो	चाँदी
४७	पिता	वाप	वाप	वाप
४८	माँ	मा	मा	मा
४९	भाई	भाई	भाई	भाई
५०	वहन	वैण	वेन	भैण
५१	मनुष्य	मिनख	मनख, माणस, आदमी	मोट्यार, मिनख आदमी
५२	स्त्री	लुगाई	लुगाई	लुगाई
५३	पत्नी	जोड़ायत, वहू	वऊ	भऊ, लुगाई
५४	वच्चा	टावर, वालक	टवर	वाळक, टावर
५५	वेटा	वेटो, दीकरो	दीकरो	वेटो

मेवाती	मालवी (रॉगडी)	मालवी (रॉगडी से भिन्न)	नीमाडी (नीमाड)	अनुक्र
वैह्-को	वर्णी-को-रो, उर्णी-को-रो, वी-को-रो	ओ-को, उना-को, उस-को	उस-को, ओ-को	२७
वेह्-को	,,	,,	,,	२८
वे, वै, वैह	वी	वी	वो	२९
उन-को	वर्णां-को, वर्णा-को	उन-को	उन-को	३०
उन-को	वर्णां-को, वर्णा-को	उन-को	उन-को	३१
हात	हात	—	हात	३२
पॉव, पग	पग	—	पॉव	३३
नाक	नाक	—	नाक	३४
मोह्	मूँडो	—	मुण्डो	३५
आँख्य	आख	—	आँख	३६
दॉत	दॉत	—	दात	३७
कान	कान	—	कान	३८
वाळ	केस	—	बाल	३९
सिर	माथो	—	सिर	४०
जीव	जीभ	—	जीभ	४१
पेट	पेट	—	पेट	४२
मगर, पीठ	पीठ	—	पीट, पूट	४३
लोह्	लोह	लूँवो	लोहो	४४
सोनू	सोनो	सोनो, सुन्नो	सुन्नो	४५
चॉदी	चॉदी	—	चॉदी	४६
वाप, वाबो	बाप, भाभा, पिता	बाप, दादा, दायजी	बाप, दादा, दादो	४७
मा	मॉ	मॉ, जीजी	मा, माय	४८
भाई	भाई	—	भाई	४९
वाहाँण	बैन, बेन	—	बहेण	५०
आदमी, मर्द, मोट्यार	आदमी, मनक	—	आदमी	५१
वैरवाणी वीरवानी, लुगाई	लुगाई	गैरा	अवरत	५२
लुगाई	लुगाई, वऊ	—	लाडी, बायकी	५३
वाळक	बाळक, छोरो	—	बच्चो	५४
वेटो, छोरो	लड़को, वेटो	—	वेटो, छोरो, लड़को	५५

अनु० हिन्दी	मारवाड़ी	मारवाड़ी (जैसलमेर की थळी)	जयपुरी
५६ बेटी	बेटी, दीकरी, धीवड़ी	दीकरी	बेटी
५७ गुलाम	गोलो, चाकर	चाकर	बाँदो
५८ किसान	करसो	हाळी	पाळती
५९ गडेरिया	एवाळियो	गोवाल, गोरी	गुवाळ्यो
६० ईश्वर	ईस्वर, राम-जी	परमेसर, भगवान	परामेसर
६१ शैतान	राकस	सेतान	राकस, परेत, भूत
६२ सूर्य	सूरज-जी	सूरज	सुरज
६३ चन्द्रमा	चन्दरमाजी	चन्दरमा	चाँद
६४ तारा	तारो	तारा	तारो
६५ अग्नि	वासदेव	वास्ते	आग, वास्ते, बैसान्दर
६६ पानी	जळ	पाणी	पॉणी
६७ घर	घर	घर	घर, जगाँ
६८ घोड़ा	घोडो	घोडो	घोडो
६९ गाय	गाय	गाय	गाय
७० कुत्ता	कुतो, गिण्डक	कुत्तो	कूकरो, गंडक, गँडकड़ो
७१ बिल्ली	मिन्नी	बिल्ली, मिन्नी	बिलाई, बलाई, म्याँऊँ
७२ मुर्गा	कूकडो	कुकड़ो	मुरगो
७३ वतक	आड	आड	वतक
७४ गधा	गधो, पुरणियो	गदो	घदो, गदैडो
७५ ऊँट	ऊंठ, पॉगळ, टोडियो, मय्यो, जाखोडो	ऊँट	ऊठ
७६ पक्षी	पखेरू	पखी	चिडी, चडी
७७ जा	जा	जा	जा
७८ खा	जीम	खा	खा
७९ बैठ	बैठ	बैस	बैठ
८० आ	आव	आव, आ	आ, आव
८१ मार	कूट	मार	पीट
८२ खड़ा हो	ऊबो-हो	उठ	ऊबो-व्है

मेवाती	मालवी (राँगडी)	मालवी (राँगड़ी	नीमाडी (नीमाड़)	अनु०
बेटी, छोरी	लड़की, बेटी	—	बेटी, छोरी, लड़की	५६
बाँदो	लोँडो	—	गुलाम	५७
किसान, जिमीदार	करशाँण	किरसान	किसान	५८
गुवाल	गाडरी	—	गडरियो	५९
राम, ईसुर	परमेस्वर	—	देव	६०
भूत, परेत	भूत, जिन्द	—	भूत	६१
सूरज	सूरज	—	सूरज	६२
चाँद	चाँद	—	चाँद	६३
तारो	तारा	—	तारो	६४
आग, आग्य	बासदी	बास्ती	आग	६५
पाणी	पाणी	पानी	पानी	६६
घर	घर	—	घर	६७
घोडो	घोडो	—	घोडो	६८
गाय	गाय	—	गाय	६९
कुत्तो, कूकरो	कुत्तो, कुतरो टेगडो	—	कुत्तो, कुतरो	७०
बिलाई	मिनकी	—	बिल्ली, माँजर	७१
मुरगो	कूँकडो	—	कुकडो	७२
बतक	बदक	—	बदक	७३
गधो, चौपो	गदो, रासबो	—	गधो	७४
ऊँट	ऊँट	—	ऊँट	७५
चिडी	पँखेरू	—	पछी, पँखेरू	७६
जा	जा	—	जा	७७
खा	खा	—	खा	७८
बैठ	बेठ	—	बं'ठ	७९
आ	आ	—	आ	८०
मार	मार	—	मार	८१
खडो–व्है	ऊभो-रे	—	खडो	८२

अनु०	हिन्दी	मारवाड़ी	मारवाडी (जैसलमेरी थळी)	जयपुरी
८३	मर	मर	मर	मर
८४	दे	दे-दो	दे	दे
८५	दौड	दोडो	दौड,	भाग
८६	ऊपर	ऊँचो, ऊपर	ऊपर	ऊपर
८७	पास	कनै नैडो, गोडै	नेडो, कनै	कनै
८८	नीचे	हेटै, नीचै	नीचै	नीचै
८९	दूर	अळगो	आघो	दूर
९०	पहले	आगै, पैले	अगाडी	पैली, आगै
९१	पीछे	लारै, पाछै	पछाडी	पाछै, पाछां-नै
९२	कौन	कुण	कुण	कुण
९३	क्या	काँई, कीँ	की	काँई
९४	क्यो	किऊँ	क्याँ	क्यो
९५	और	नै, ओर	औग, अर	ओर, अर
९६	लेकिन	पिण	पण	पण
९७	यदि	जे	जे	जो, ज्यो, जै
९८	हाँ	हाँ	हाँ, हुवे	हाँ, म्है, हुम्वै, उँ, हु
९९	नही	ना	ना, को-नी	ना, हाँ-आँ
१००	हाय	गजब-रे	अरर, हाय	हाय, राम-राम
१०१	पिता	बाप	बाप	बाप
१०२	पिता-का	बाप-रो	बाप-रो	बाप-को
१०३	पिता-को	बाप-नै	बाप-नाँ	बाप-नै
१०४	पिता-से	बाप-सूँ	बाप-सूँ	बाप-सूँ
१०५	दो पिता	दोय बाप	बे बाप	दो बाप
१०६	(अनेक) पिता	बाप	बापाँ	बाप
१०७	पिताओं-का	बापाँ-रो	बापाँ-रो	बापाँ-को
१०८	पिताओं-को	बापाँ-नै, बापाँ-कनै	बापा-नाँ	बापा-नै

मारवाडी (जैसलमेरी थळी)	जयपुरी	मालवी (रांगडी	नीमाड़ी (नीमाड) अनु० से भिन्न)	
मर	मर	—	मर	८३
दे	दे	—	द,' दे	८४
दौड, भाज	दोड़	—	भाग	८५
ऊपर	ऊपर	—	उपर	८६
नीडो, नीडै, कनै	मेरे	—	पास, नजीक	८७
नीचै	नीचे	—	नीच'	८८
दूर	दूर, वेगळो	—	दूर	८९
अगै	पेला, आगे	—	आग'	९०
पीछै, गैलाँ	पाछे	—	पाछ'	९१
कौण	कूँण	—	कुण, कुन	९२
के	कईं, काँईं	कई कॉईं	काँइ	९३
क्यूँ	काँ, क्यूँ क्यों	—	क्यौं	९४
अर, और	और, ओर, ने	—	अरु, नी, व	९५
पर	पर, परन्त, पण	—	पण	९६
जै	जो	—	अगर	९७
हाँ	हा	—	हाँ	९८
नाँह	नी, नीं	—	नही	९९
हाय	अरे-अरे	—	अर बाप-रे	१००
बाप	बाप	—	बाप	१०१
बाप-को	बाप-को,-रो	—	बाप-को	१०२
बाप नै	बाप-ने,-के	बाप-के	बाप-का	१०३
बाप-तैं,-सैं	बाप-सूँ,-से,-ऊँ	—	बाप-सी	१०४
दो बाप	दो बाप	—	दुइ बाप	१०५
बाप	बाप	बाप, बाप-होर (या-होरो, -होन, -होनो- (इसी प्रकार अनेक रूपो मे)	बाप' ना	१०६
बापाँ-को	बापाँ-को,-रो	बाप-को, बाप-होर-को	बापना-को	१०७
बापाँ-नै	बापाँ-ने, -के	बाप-की, बाप -होर-के	बापना-क'	१०८

अनुक्रम	हिन्दी	मारवाडी	मारवाड़ी (जैसलमेरी थळी)	जय्पुरी
१०९	पिताओं-से	वापाँ-सूँ	वापाँ-सूँ	वापाँ-सू
११०	बेटी	बेटी	दिकरी	बेटी
१११	बेटी-का	बेटी-रो	दिकरी-रो	बेटी-को
११२	बेटी-को	बेटी-नैं,-कनैं	दिकरी-नाँ	बेटी-नैं
११३	बेटी-से	बेटी-सूँ	दिकरी-सूँ	बेटी-सूँ
११४	दो बेटियाँ	दोय बेटियाँ	वे दिकरियाँ	दो बेटी, दो बेट्याँ
११५	बेटियाँ	बेटियाँ	दिकरियाँ	बेट्याँ
११६	बेटियों-का	बेटियाँ-रो	दिकरियाँ-रो	बेट्याँ-को
११७	बेटियों-को	बेटियाँ-नैं, -कनैं	दिकरियाँ-ना	बेट्याँ-नैं
११८	बेटियों-से	बेटियाँ-सूँ	दिकरियाँ-सूँ	बेट्याँ-सूँ
११९	एक अच्छा आदमी	एक भलो आदमी	भलो माणस	एक चोखो मिनख
१२०	अच्छे आदमी-का	एक भला आदमी -रो	भले माणस-रो	एक चोखा मिनख-को
१२१	अच्छे आदमी-को	एक भला आदमी -नैं, -कनैं	भले माणस-नाँ	एक चोखामिनख-नैं
१२२	अच्छे आदमी-से	एक भला आदमी -सूँ	भले माणस-सूँ	एक चोखा मिनख सूँ
१२३	दो अच्छे आदमी	दोय भला आदमी	वे भला माणस	दो चोखा मिनख
१२४	अच्छे आदमी	भलां आदमी	भला माणस	चोखा मिनख
१२५	अच्छे आदमियों-का	भलां आदमियाँ -रो	भला माणसाँ-रो	चोखा मिनखाँ-को
१२६	अच्छे आदमियों-को	भला आदमियाँ -नैं, कनैं,	भला माणसाँ-नाँ	चोखा मिनखाँ-नैं

मेवाती	मालवी (राँगड़ी)	मालवी (राँगडी से भिन्न)	नीमाडी (नीमाड)	अनुक्रम
वापाँ-तैं, सें	वापाँ-सूँ, से, -ऊँ	वाप-से, वाप-होर-से	वापना-सी	१०६
वेटी	लडकी	वेटी	वेटी	११०
वेटा-को	खडकी-को, -रो	वेटी-को	वेटी-को	१११
वेटी-नै	लडकी-नै, -के	वेटी-के	वेटी-क'	११२
वेटी-तैं, -सैं	लडकी-सूँ, -से,-ऊँ	वेटी-मे	वेटी-सी	११३
दो वेटी	दो लडक्याँ	दो वेटी, दो वेटी-होरो	दुइ वेटीना	११४
वेट्याँ	लडक्याँ	वेटी-होरो, वेट्याँ	वेटीना	११५
वेट्याँ-को	लडक्याँ-को, -रो	वेटी-होर-को	वेटीना-को	११६
वेट्याँ-नै	लडक्याँ-ने, -के	वेटी-के, वेटी -होर-के	वेटीना-क'	११७
वेट्याँ-तैं, -सें	लडक्याँ-सूँ,-से,-ऊँ	वेटी-होव्-से, वेटी-होनो से	वेटीना-सी	११८
एक आछ्यो आदमी	आछो आदमी	अच्छो आदमी	एक अच्छो आदमी	११६
एक आछ्या आदमी-को	आछा आदमी-को, -रो	अच्छा आदमी -को	एक अच्छा आदमी -को	१२०
एक आछ्या आदमी -नै	आछा आदमी-ने -के	अच्छा आदमी -के	एक अच्छा आदमी -क'	१२१
एकआछ्या आदमी -तै,-सैं	आछा आदमी-सूँ, से,-ऊँ	अच्छा आदमी से	एक अच्छा आदमी -सी	१२२
दो आछ्या आदमी	दो आछा आदमी	दो अच्छा आदमी	दुइ अच्छा आदमी	१२३
आछ्या आदमी	आछा आदमी	अच्छा आदमी-होरो	अच्छा आदमीना	१२४
आछ्या आदम्याँ -को	आछा आदम्याँ-को, -रो	अच्छा आदमी-होर-को	अच्छा आदमीना -को	१२५
आछ्या आदम्याँ-नै	आछा आदम्याँ-ने, -के	अच्छा आदमी -होरो-के	अच्छा आदमीना -क'	१२६

अनुक्रम	हिन्दी	मारवाड़ी	मारवाड़ी (जैसलमेरी जयपुरी थळी)	
१२७	भले आदमियो से	भला आदमियाँ-सूँ	भला माणसाँ-सूँ	चोखा मिनखाँ-सूँ
१२८	एक भली स्त्री	एक भली लुगाई	भली लुगाई	एक चोखी लुगाई
१२९	एक बुरा लडका	एक भूँडो छोरो	बुरो छोकरो	एक बुरो छोरो
१३०	अच्छी स्त्रियाँ	भली लुगायाँ	भली लुगाइयाँ	चोखी लुगायाँ
१३१	बुरी लड़की	एक भूँडी छोरी	बुरी छोकरी	एक बुरी छोरी
१३२	अच्छा	भलो	भलो	चोखो
१३३	उससे अच्छा	उटीपो	घणो भलो	उ-सूँ चोखो
१३४	सबसे अच्छा	निराट आछो	मुले भलो	सब-सूँ चोखो
१३५	ऊँचा	ऊँचो	ऊँचो	ऊँचो
१३६	उससे ऊँचा	घणो ऊँचो, उण -सूँ ऊँचो	घणो ऊँचो	ऊँ-सूँ ऊँचो
१३७	सबसे ऊँचा	सगळा-सूँ उचो	मुले ऊँचो	सब-सूँ ऊँचो
१३८	घोड़ा	एक घोडो	घोडो	घोडो
१३९	घोड़ी	एक घोडी	घोडी	घोडी
१४०	घोडे	घोडा	घोडा	घोडा
१४१	घोड़ियाँ	घोडियाँ	घोडियाँ	घोड्याँ
१४२	साँड	एक साँड	वळध	साँड, आँकल
१४३	गाय	एक गाय	गाय	गाय
१४४	(अनेक) साँड	साँड	वळधाँ	साँड, आँकल
१४५	गाये	गायाँ	गायाँ	गायाँ
१४६	कुत्ता	कुत्तो, गिण्डक	कुत्तो	कूकरो, गँडकडो
१४७	कुत्तिया	कुत्ती	कुत्ती	कूकरी, गँडकडी
१४८	कुत्ते	कुत्ता	कुत्ता	कूकरा, गँडकडा
१४९	कुतियें,-याएँ	कुतियाँ	कुतियाँ	कूकर्‍याँ, गँडकड्याँ
१५०	वकरा	वकरो	वकरो	वकरो
१५१	वकरी	वकरी, छाळी	वकरी	वकरी
१५२	वकरे	वकरा	वकरा	वकरा-वकरी
१५३	हिरन (एक०)	हिरण	हरण	हिरण

मेवाती	मालवी (रांगड़ी)	मालवी (राँगडी से भिन्न)	नीमाड़ी (नीमाड)	अनुक्रम
आछ्या आदम्यॉ-तँ-सँ	आछ्या आदम्याँ-सूँ,-से,-ऊँ	अच्छा आदमी होन से	अच्छा आदमीना-सी	१२७
एक आछी बैरबाणी	आछी लुगाई	अच्छी बौरा	एक अच्छी अवरत	१२८
एक बुरो छोरो	खोडलो लडको	बुरो छोरो	एक खराव लडको	१२९
आछी बैरबाण्यॉ	आछी लुगायाँ	अच्छी लुगायाँ, -लुगायाँ-होरो, -बौरा-होरो	अच्छी अवरत-ना	१३०
एक बुरी छोरी	खोडली लडकी	बुरी छोरी	एक खराव लडकी	१३१
आछ्यो, चोखो	आछो	अच्छो	आछो	१३२
वैंह-नैं आछ्यो	वणी-सूँ आछो	ओ-से अच्छो	जादो आछा	१३३
सब-तैं आछ्यो	सब-सूँ आछो	सब-से अच्छो	वड़ो आछो	१३४
ऊँचो	ऊँचो	ऊँचो	ऊँचो	१३५
वैह-तैं ऊँचो	वणी-सूँ ऊँचो	उन-से ऊँचो	जादो ऊँचो	१३६
सब-तैं ऊँचो	सब-सूँ ऊँचो	सब-से ऊँचो	वडो ऊँचो	१३७
घोडो	घोडो	—	घोडो	१३८
घोडी	घोडी	—	घोडी	१३९
घोडा	घोडा	घोडा-हानो	घोडा, घोडाना	१४०
घोड्यॉं	घोड्याँ	घोडी-होनो	घोडीना	१४१
विजार	वेल, वळद	सॉड	सॉड	१४२
गाय	गाय	गाय	गाय'	१४३
विजार	वेल बळद्या	सॉंड-होरो	सॉंड-ना	१४४
गायॉं	गायॉं	गाय-होन्	गाय-ना	१४५
कुत्तो	टेगडो	कुतरो	कुत्तो	१४६
कुत्ती	टेगडी	कुत्ती	कुत्ती	१४७
कुत्ता	टेगडा	कुतरा-होरो	कुत्ता, कुत्तानर	१४८
कुत्तीयॉं	टेगड्यॉं	कुतरी-होरो	कुत्तीना	१४९
वकरो	वकरो, खाजरू	—	वकरो	१५०
वकरी	वकरी	—	वकरी	१५१
वकरा-वकरी	वकर्‌या	वकरा-होनो	वकरी-ना	१५२
हिर्ण	हरण	—	हरन	१५३

अनु०	हिन्दी	मारवाड़ी	मारवाड़ी (जैसलमेरी थळी)	जयपुरी
१५४	हिरनी	हिरणी	हरणी	हिरणी
१५५	हिरन (बहु०)	हिरण	हरणाँ	हिरण
१५६	मैं हूँ	हूँ हूँ	हूँ आँई	मैं छूँ
१५७	तू है	तूँ है	तू आँई	तू छै
१५८	वह है	उवो है	ओ आँई	वो छै
१५९	हम हैं	मे हाँ	म्हे आँई	म्हे छाँ
१६०	तुम हो	थे हो	थे आँई	थे छो
१६१	वे हैं	उवे है	ओ आँई	वै छै
१६२	मैं था	हूँ हो	हूँ हँतो	मैं छो
१६३	तू था	तूँ हो	तू हँतो	तू छो
१६४	वह था	उवो हो	ओ हँतो	वो छो
१६५	हम थे	मे हा	म्हे हँता	म्हे छा
१६६	तुम थे	थे हा	थे हँता	थे छा
१६७	वे थे	उवे हा	ओ हँता	वै छा
१६८	हो (आज्ञार्थ)	हो (आज्ञार्थ)	हो	व्हे
१६९	होना	हूँणो	होवणो	व्हैवो
१७०	होता हुआ (Being)	होतो, हूतो	होवतो	व्हैतो
१७१	होकर (Having been)	हूयर	होयर	व्हैर
१७२	मैं होऊँ	हूँ होऊँ	हूँ होवाँ	मैं हूँ
१७३	मैं होऊँगा	हूँ होऊँला	हूँ होईश	मैं हूँ-लो, होस्यूँ
१७४	मैं होना चाहिए (Should be)	—	—	मैं हूँ
१७५	मारो	कूटो	मार	पीट
१७६	मारना	कूटणो	मारणो	पीटवो
१७७	मारता (Beating)	कूटतो	मारतो	पीटतो
१७८	मार कर	कूटर	मारर	पीटर
१७९	मैं मारूँ	हूँ कूटूँ	हूँ माराँ-ई	मैं पीटूँ
१८०	तू मारे	तूँ कूटै	तू मारे-ई	तू पीटै
१८१	वह मारता है	ऊ कूटै	ओ मारे-ई	वो पीटै

मेवाती	मालवी (राँगड़ी)	मालवी (राँगडी से भिन्न)	नीमाड़ी (नीमाड)	अनुक्रम
हिरणी	हरणी	—	हरनी	१५४
हिर्ण	हरण्या	हिरण-होरो	हरन-ना	१५५
मैं छूँ	हूँ हूँ	—	हउँ छे	१५६
तू है, हा	तूँ है, हे	—	तू छे	१५७
वो है	उ है, हे	—	वो छे	१५८
हम हाँ	म्हें हाँ	हम हाँ	हम आय	१५९
तम हो	थें हो	तम हो	तुम छो	१६०
वै है	वी है, हे	—	वो छे	१६१
मैं हो, थो	हूँ थो	—	हउँ थो	१६२
तू हो, थो	तूँ थो	—	तू थो	१६३
वो हो, थो	ऊ थो	—	वो थो	१६४
हम हा, था	म्हें था	हम था	हम था	१६५
तम हा, था	थें था	तम था	तुम था	१६६
वै हा, था	वी था	हो था	वो थे	१६७
व्हा	व्हो	—	हो	१६८
होणू	व्हेणो, वेणो	होणो	होणू	१६९
होतो	व्हेतो वेतो	होतो	होतो	१७०
हो-कर	वई-ने	हुई-ने	हुइ-न'	१७१
मैं हूँ	—	—	—	१७२
मैं हूँगो	हूँ वऊँगा, वूँगा	होऊँगो	हउँ हुइस	१७३
—	—	—	—	१७४
मार	मार	—	मार	१७५
मारणू	मारणो, मारवो	मारणो	मारणू	१७६
मारतो	मारतो	—	मारतो	१७७
मार-कर	मारी-ने	—	मारि-ने	१७८
मैं मारूँ	हूँ मारूँ	—	हउँ मारूँच	१७९
तू मारा	तूँ मारे	—	तू मारच, मारेच	१८०
वो मारा	ऊ मारे	—	वो मार'च मारेच	१८१

अनु० हिन्दी	मारवाडी	मारवाडी (जैसलमेरी थळी)	जयपुरी
१८२ हम मारते हैं	मे कूटाँ	म्हें माराँ-ई	म्हे पीटाँ
१८३ तुम मारते हो	थे कूटो	थे मारो-ई	थे पीटो
१८४ वे मारते हैं	उवे कूटैं	ओ माराँ-ई	वैं पीटैं
१८५ मैंने मारा (भूत०)	म्हे कूटियो	में मार्‌यो	मैं पीट्‌यो
१८६ तूने मारा (भूत०)	थैं कूटियो	तें मार्‌यो	तू पीट्‌यो
१८७ उसने मारा (भूत०)	उण कूटियो	उवे मार्‌यो	वो पीट्‌यो
१८८ हमने मारा (भूत०)	म्हे कूटियो	म्हाँ मार्‌यो	म्हे पीट्‌यो
१८९ तुमने मारा (भूत०)	थे कूटियो	थाँ मार्‌यो	थे पीट्‌यो
१९० उन्होंने मारा (भूत०)	उवाँ कूटियो	उवाँ मार्‌यो	वै पीट्‌यो
१९१ मैं मारता हूँ	हूँ कूटूँ हूँ	हूँ मारॉ-ई	मैं पीटूँ-छूँ
१९२ मैं मारता था	हूँ कूटैं हो	हूँ मारतो-हँतो	मैं पीटैं-छो
१९३ मैंने मारा था	म्है कूटियो हो	हूँ मार्‌यो-हँतो	मैं पीट्यो छो
१९४ मैं मारूँ (I may beat)	हूँ कूटूँ	हूँ माराँ	मैं पीटूँ
१९५ मैं मारूँगा	हूँ कूटूँ-ला	हूँ मारीश	मैं पीटूँ-लो, पीट'स्यूँ
१९६ तू मारेगा	तूँ कूटैं-ला	तूँ मारीश	तू पीटैं-लो, पीट'-सी
१९७ वह मारेगा	उवो कूटैं-ला	श्री मारशे	वो पीटैं-लो, पीट'-सी
१९८ हम मारेंगे	म्हे कूटाँ-ला	म्हें मारशाँ	म्हे पीटाँला, पीट'स्याँ
१९९ तुम मारोगे	थे कूटोला	थे मारशो	थे पीटोला, पीटस्यो
२०० वे मारेंगे	उवे कूटैला	ओ मारशे	वै पीटैंला, पीटसी
२०१ मैं मारूँ (I should beat)	—	—	मैं पीटूँ

मेवाती	मालवी (राँगड़ी)	मालवी (राँगड़ी से भिन्न)	नीमाडी (नीमाड़)	अनुक्रम
हम माराँ	म्हे माराँ, मारा	हम माराँ, मारा	हम माराँच	१८२
तुम मारो	थें मारो	तम मारो	तुम मारोच	१८३
वै मारैं	वी मारे	—,	वो मार'च, मारेच	१८४
मैं मार्‌यो	म्हैं मार्‌यो	म्ह-ने मार्‌यो	म-न' मार्‌यो	१८५
तैं मार्‌यो	थै मार्‌यो	थ-ने मार्‌यो	तू-न' मार्‌यो	१८६
वैह मार्‌यो	वणी-ए मार्‌यो	ओ-ने मार्‌यो	उन-न' मार्‌यो	१८७
हम मार्‌यो	म्हाँ-ए मार्‌यो	हम-ने मार्‌यो	हम-न' मार्‌यो	१८८
तम मार्‌यो	थाँ-ए मार्‌यो	तम-ने मार्‌यो	तुम-न' मार्‌यो	१८९
उन मार्‌यो	वणाँ-ए मार्‌यो	उन-ने मार्‌यो	उन-न' मार्‌यो	१९०
मैं मारूँ हूँ	हूँ मारूँ-हूँ	—	हउँ मारी रह्‌योच	१९१
मैं मारै-हो,-थो	हूँ मारतो-थो	—	हउँ मारी रह्‌यो थो	१९२
मैं मार्‌यो हो,-थो	म्हैं मार्‌यो थो	म्ह-ने मार्‌यो थो	हउँ मार्‌यो थो	१९३
मैं मारूँ	हूँ मारूँ	हूँ मारूँ	—	१९४
मैं मारूँगो	हूँ मारूँगा	हूँ मारूँगो,-गा	हउँ मारीस	१९५
तू मारै-गो	तूँ मारे-गा	तूँ मारेगो,-गा	तू मारीस	१९६
वो मारै-गो	ऊ मारेगा	ऊ मारेगो,-गा	वो मारसे	१९७
हम माराँगा	म्हें माराँगा	हम माराँगा	हम मारसाँ	१९८
तम माराँगा	थें माराँगा	तम मारोगा	तुम मारसो	१९९
वै माराँगा	वी माराँगा	वी मारेगा	वो मारसे, मार'गा	२००
—	—	—	—	२०१

अनुक्रम	हिन्दी	मारवाडी	मारवाडी (जैसलमेरी	जयपुरी थळी)
२०२	मैं मारा गया हूँ	हूँ कुटीजियो हूँ	हूँ मारीज्यो-ई	मैं पिट्यो-हूँ
२०३	मैं मारा गया था	हूँ कुटीजियो हो	हूँ मारीज्यो	मैं पिट्यो छो
२०४	मै मारा जाऊँगा	हूँ कूटियो जाऊँला	हूँ मारियो जाईश	मै पिट्टूँ-लो
२०५	मैं जाता हूँ (I go)	हूँ जाऊँ	हूँ जावाँ ई	मैं जाऊँ
२०६	तू जाता है	तूँ जावैं	तू जावे-ई	तू जाय
२०७	वह जाता है	उवो जावैं	ओ जावे-ई	वो जाय
२०८	हम जाते है	म्हे जावाँ	म्हे जावाँ-ई	म्हे जावाँ
२०९	तुम जाते हो	थे जावो हो	थे जावो-ई	थे जावो
२१०	वे जाते है	उवे जावै	ओ जावे-ई	वै जाय
२११	मैं गया	हूँ गयो	हूँ ग्यो, गयो	मैं गयो
२१२	तू गया	तूँ गयो	तूँ ग्यो, गयो	तू गयो
२१३	वह गया	उवो गयो	ओ ग्यो, गयो	वो गयो
२१४	हम गये	म्हे गया	म्हें गया	म्हे गया
२१५	तुम गये	थे गया	थे गया	थे गया
२१६	वे गये	उवें गया	ओ गया	वै गया
२१७	जाओ (Go)	जावो	जा	जा
२१८	जाता हुआ (Going)	जावतो	जावणो	जातो
२१९	गया हुआ (Gone)	गयो	गयो	गयो
२२०	तुम्हारा नाम क्या है ?	थारो नाँव काँई हैं ?	थाँ-रो नाम की आँई ?	थाँ-को काँई नाँव छै ?
२२१	यहाँ से काश्मीर कितनी दूर है ?	अठा-सूँ कस्मीर कितरी भूँ है ?	कस्मीर इठा-सूँ कित्ती आघी आई ?	कसमीर ऐंडा सूँ कतरीक दूर छै
२२२	इस घोडे की उम्र कितनी है ?	इण घोडा री उमर काई है ?	ए घोड़ो कित्तो वडो आँई ?	यो घोडो कत्तोक वडो छै ?
२२३	तुम्हारे बापके घर मे कितने लडके है ?	थाँरैं बापरैं घर मे कितरा बेटा है ?	थाँ-रे बाप-रे घर-में कित्ता देकरा आँई ?	थाँ-का बाप-का घर-मैं कैयेक बेटा छै ?

मेवाती	मालवी (राँगडी)	मालवी (राँगडी से भिन्न)	नीमाड (नीमाड)	अनुक्रम
मैं पिट्यो-हूँ	हूँ मार्यो जाऊँ हूँ	—	म'-क' मार्यो	२०२
मैं पिट्यो-थो	हूँ मार्यो गयो	—	म'-क' मार्यो थो	२०३
मैं पिटू-गो	हूँ मार्यो जाऊँगो	—	हउँ मार्यो-जाईस	२०४
मैं जाऊँ	हूँ जावूँ	हूँ जाऊँ	हउँ जाउँच	२०५
तू जाय	तूँ जावे, जाय	—	तू जाच, तू जा	२०६
वो जाय	ऊ जावे, जाय	—	वो जाच	२०७
हम जाँह	म्हे जावाँ	हम जावाँ	हम जवाँच	२०८
तम जावो	थें जावो	तम जावो	तुम जावोज, तुम जावा	२०९
वै जायँ ह	वी जावे, जाय	वी जावे, जाय	वो जाज	२१०
मैं गयो	हूँ गयो	—	हउँ गयो	२११
तू गयो	तूँ गयो	—	तू गयो	२१२
वो गयो	ऊ गयो	—	वो गयी	२१३
हम गया	म्हें गया	हम गया	हम गया	२१४
तम गया	थे गया	तम गया	तुम गया	२१५
वै गया	वी गया	वी गया	वो गया	२१६
जा	जा	—	जा	२१७
जातो	जातो	—	जातो	२१८
गयो	गयो	—	गयो	२१९
थारो के नाँव है ?	थारो नाँव काई ?	तमारो नाम काई ?	तुम्हारो नाम काँई छे ?	२२०
कसमीर इत-तैं कितनीक दूर है ?	ह्याँ-सूँ कश्मीर कितरीक दूर है ?	याँ-से कासमीर कित्ती दूर है ?	याहाँ-सी काश्मीर केतरो दूर छे ?	२२१
यो घोडो कितनी उमर-मैं है ?	अणी घोड़ा-की उमर काईं ?	इना घोडा-की उमर काईं ?	इना घोडा-की केतरी उमर छे ?	२२२
थारा बाप का घर-मैं कितनाक बेटा है ?	थाँ-के पिता-के वठे कितरा लडका है ?	थारा बाप का घर-में कितरा लडका है ?	थारा बाप-का घर -म केतरा छोरा छे ?	२२३

अनुक्रम	हिन्दी	मारवाड़ी	मारवाड़ी (जैसलमेरी थळी)	जयपुरी
२२४	मे आज दूर तक चला हूँ।	म्है आज घणो पाइँदो कियो	आज हूँ घणी भउँ गयो।	आज मैं नरी दूर चाल्यो छूँ
२२५	मेरे चाचा का लड़का उसकी बहन को व्याहा है।	म्हारा काका-रो वेटो उणरी वैन परणियो हैं।	उवै-री वैन-सूँ माँ-जे काके-रे दिकरे-रो विया हुओ आंई।	म्हारा काका-का वेटा-को व्याव ऊँ-की भैण-सूँ हुयो छै।
२२६	सफेद घोडे की जीन घर मे है।	लीला घोडा की काठी घर में पडी हैं।	उवे घर-मेँ धउळे घोडे-रो पलाण आंई	धउळा घोडा की जीँद घर-मैं छै
२२७	उसकी पीठ पर जीन सजा दो।	उण-रै मौरां ऊपर काठी मांड दो	उवे-री पूठी माथे पलाण मडो	जीँद ऊँ-का मंगरां माळै मेलो
२२८	मैंने उसके बेटे-को कई कोडे लगाए	म्है उण-रैं वेटँ-रैं घणा चाव-कियां-री दीवी हैं	मे उवे-रे दिकरे-नां घणी सारा बेंतां वाई	मैं ऊँ-का वेटा-नै नरा कोरडा-सूँ मार्‍यो छै
२२९	वह पहाडी की चोटी पर ढोर चरा रहा है	उवो डूँगरी-री चोटी-ऊपर थाव चराय-रयो हैं	उवे टेकरी-माथे ओ धण चरावे-ई	वो डूँगर-माळै ढांडा चरावै-छै
२३०	वह उस पेड के नीचे घोडे पर बैठा है	उणो उण रूँख-हेटैं घौड़ैं-माथै चडियोडो वैंठो है	ओ उवे रुख-रे हेटे घोडे माथे वैठो-ई	वो ऊँ रौंख-नीचै एक घोडा-माळै छड रह्यो-छै
२३१	उसका भाई उसकी वहन से ऊँचा है	उण-रो भाई आप-री वँण-सूँ घणो डीगो हैं	उवे-रो भाई उवे-री वैन-सूँ डीघो आंई	ऊँ-को भाई ऊँ-की भैण-सूँ लम्बो छै
२३२	उसकी कीमत ढाई रुपये है	उणरो मोल अडाई रुपिया हैं	उवे-रो मोल अढाई रुपया आंई	ऊँ-को मोल ढाई रिप्या छै
२३३	मेरा बाप उस छोटे घर मे रहता है	मारो वाप उण छोटैं घर मैं रैंवैं हैं	माँ जो वाप उवे छोटे घर-मेँ रे-ई	म्हारो वाप ऊ छोटा घर-मैं रहै छै
२३४	यह रुपया उसे देदो	ओ रुपियो उण-नै दे-देवो	ए रुपयो उवे-नां दो	यो रिप्यो ऊँ-नै द्यो
२३५	वे रुपये उससे लेलो	उवे रुपिया उण कनां-सूँ ले-लेवो	ओ रुपया उवे-सूँ लो	ऊँ-सूँ वै रिप्या ले ल्यो

मेवाती	मालवी (रॉगडी)	मालवी (राँगडी से भिन्न)	नीमाड़ी (नीमाड़)	अनुक्रम
आज मै भउत दूर चाल्यो हूँ	आज हूँ बहोत दूर फरी-ने आयो	हूँ आज भोत दूर चाल्यो	आज हउँ दूर-तक चाल्यो गयो	२२४
मेरा काका-का वेटा-को व्याह वैँह-की बाहॉण-तैँ हुयो-है	म्हारा काका-का वेटा-ए वणी-की वेन-से व्याव कर्‌यो	म्हारा काका-का बेटा-ने ओ-की बेन-से व्याव कर्‌यो है	म्हारा काका-का एक छोरा-की ओका बहेन-सी सादी हुईच	२२५
सुपेद घोडा-की जीन घर मैँ हैँ	घर-मेँ धोळा घोडा -को खोगीर है	— —	सफेत घोडा-की खोगीर घर-म' छे	२२६
जीन वैँह-की पीठ-पर धरो	वणी-के पीठ पर खोगीर मेलो	ओ-की पीठ पर खोगीर धर	ओ-का पूट-पर खोगीर कस	२२७
मैँ वैँह-को वेटो भोत करड़ा तैँ मार्‌यो-है	म्हैँ वणी-का लडका-ने घणा कोरडा मार्‌या	म्ह'ने ओ-का छोरा-के भोत चापक्या मार्‌या	म'न' ओ-का छोरा-क बहुत-सा सपाटा मार्‌या	२२८
वो पहाड़-कै ऊपर ढोर चरा-रयो है	ऊ वणी टेकरी-का माथा-पर ढाँढा चरावे है	ओ टेकडी-का माथा-पर ढोर चरावे-है	वो वैडी-का माथा -पर ढोर चराई रह्‌योच	२२९
वो वैँह रौँख-कै नीचै घोडा-पर बैठ्यो है	वणी झाड-के नीचे ऊ घोडा-पर वेठे-है	ऊ उना झाड-के नीचे घोडा-पर वेठे-हे	वो उना झाड-का नीच' घोडा-पर ब'ठी रह्‌योच	२३०
वैह-को भाई वैह-की वाहांण-तैँ लम्वो है	वणी-को भाई वणी-की वेण-सूँ ऊँचो है	ओ-को भाई ओ-की वेन-से ऊँचो हे	ओ-को भाई ओ-का बहेन-सी ऊचो छे	२३१
वैँह-को मोल ढाई रपैया हैँ	वणी-को मोल अडी रिप्या है	ओ-की कीमत अडाई रुप्या हे	ओ-की कीमत अढाई रुप्या छे	२३२
मेरो वाप वैँह छोटा घर-मै रहै-है	वणी छोटा घर-मे म्हारो पिता रे-है	म्हारो बाप उना छोटा घर-में रे-हे	म्हारो बाप उना छोटा घर-म' रहेच	२३३
यो रपैयो वैँह-नै द्यो	यो रिप्यो वणी-ने दे	ओ-के यो रूप्यो दे	ये रुप्यो ओ-ख' दे	२३४
वै रपैया वैँह-तैँ ल्यो	वी रिप्या वणी पास-सूँ ले	वी रुप्या ओ-के पास-से ले	वो रुप्या ओ-का-सी ल'	२३५

अनुक्रम	हिन्दी	मारवाडी	मारवाडी (जैसलमेर की थळी)	जयपुरी
२३६	उसको अच्छी तरह मारकर रस्सियो से वांध दो	उण-नैं आछीतरैं-सूं कूटो नैं उण-नैं रांडुवां सूं चसकाय देवो	उवे नॉ भली तरे-ऊँ सूं मारो और रांडुआं-सूं वन्वो दयो	नै गैरो पीटो अर जेवडां-सूं वांद द्यो
२३७	कुंए से पानी खीचो	वेरै मांय-सूं जळ-सीचो	तले-मांह-सूं पाणी कढो	कूवा-मैं सूं पाणी काडो
२३८	मेरे सामने चलो	मारै आगैं आगैं हालो	मां-जे अगाडी वइ	म्हारै आगै चाल
२३९	तुम्हारे पीछे किसका लड़का आ रहा है ?	थारैं लारैं किण-रो छोरो आवैं हैं ?	थां-रे लारे के-रो दिकरो आवे-ई	थां-कै पाछै कुण-को छोरो आवै-छै ?
२४०	वह तुमने किससे खरीदा,-दी ?	उवा[1] थे किण-सूं मोल लिवी ?	थां ओ के-कना मोल लियो ?	थे वो कुण-कनै-सूं मोल लियो ?
२४१	गांव के दूकान-दार से	गांव-रैं हाट-वाळै कना-सूं	हेके गांव-रे हाट-वाणिये-सूं	गांव-का एक दुक-न्दार कनै-सूं

१. अन्तर्हित 'वात' या 'चीज' के लिंगानुसार ।

मेवाती	मालवी (रांगड़ी)	मालवी (रांगडी से भिन्न)	नीमाडी (नीमाड)	अनुक्रम
वैंह-नै खूब मारो अर जेवडां तैं बाँदो	वणी ने खूब मारो ने रसा-सूँ बांधो	ओ-के खूब मार और ओ-के रासी-से वांद	ओ-का आछी तरह-सी मार अरू ओ-का रस्सी-सूँ बांध	२३६
कुवा-तैं पाणी काढो	वणी कूडी में-सूँ पाणी काडो	कूँडी-में-से पाणी निकाळ	कुवा-म'सू पानी खैंच	२३७
मेरै आगै चाल	म्हारे अगाडी चाल	म्हारे अगाडी चाल	म्हारा साम' चाल	२३८
तेरै पाछै कैंह-को छोरो आवै-है ?	कणी को लडको थारे पाछे-सूँ आवे है ?	तमारे पाछे के-को छोरो आवे-है ?	थारा पाछ' कुन-को छोरो आव'ज ?	२३९
तम वो कित-तै मोल लियो ?	ऊ थां-ए कणी-कने-सूँ मोल लीदो ?	ऊ तम-ने के-के पास-से मोल लियो ?	कुन-का-सी तून' मोल लियो ?	२४०
गाँव-का एक हाटवाळा-तैं	वणी गांव-का दूकान्दार-कने-सूँ	उना गाम-का एक दुकान्दार-कने-सूँ	गाँव-का बण्या-सी	२४१

•••